Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

गुरुदत्त

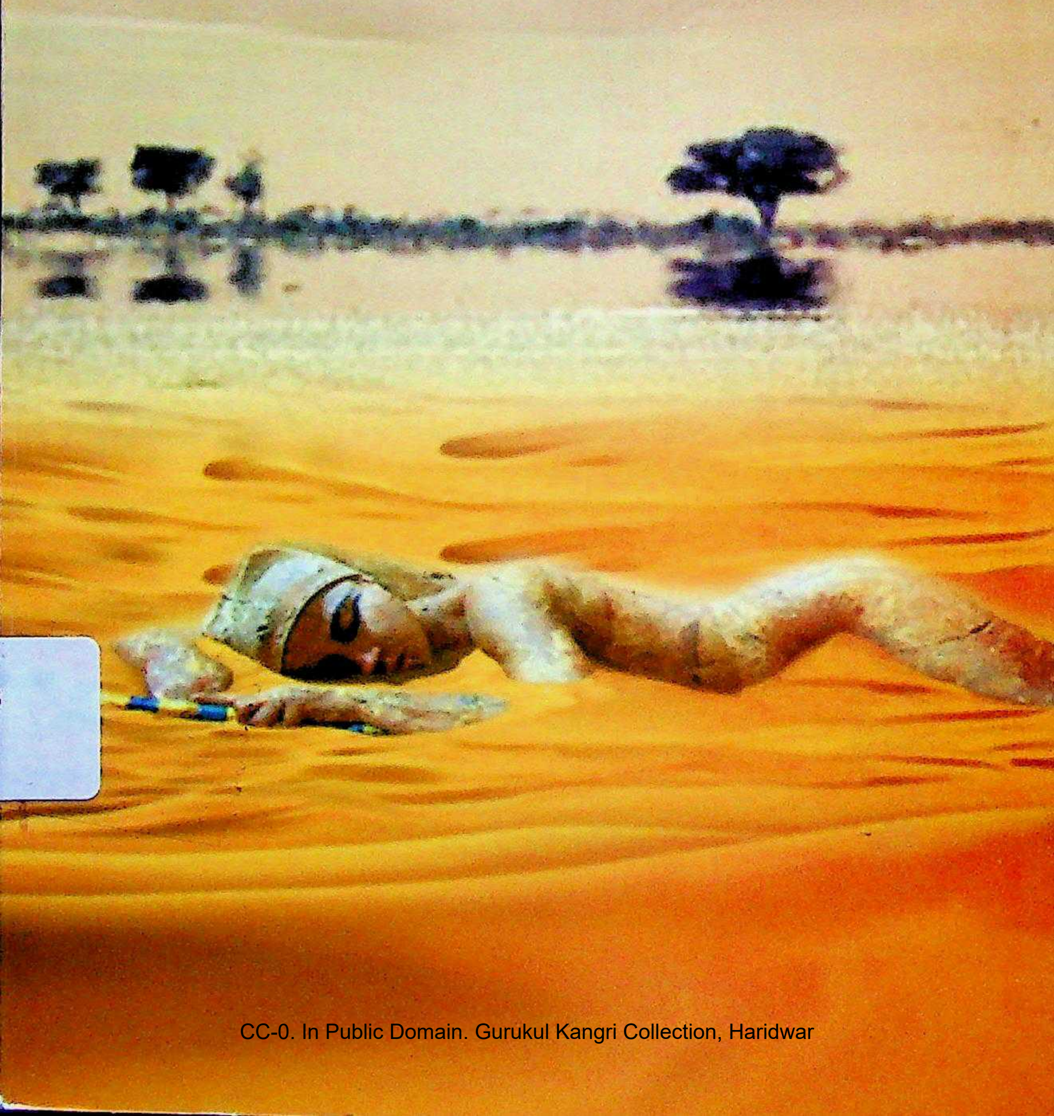

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167965

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

[redacted]

Central Library
167965
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110 005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© ईशान दत्त

R
089.9143
GUR-M

[redacted]

मूल्य : ₹ 250.00

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली–110005
फोन : 23553624, 23551344, 9213527666
email : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
website : www.hindisahityasadan.com

संस्करण : 2016

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, दिल्ली

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

प्रथम परिच्छेद

तराई क्षेत्र में हल्द्वानी के उत्तर की ओर हथियापुर नाम के एक गाँव में एक युवक अखाड़े में व्यायाम और कुश्ती कर स्नान के लिए नदी की ओर जा रहा था। व्यायाम तथा कुश्ती करने से गरम हुए बदन को ठण्डा करने के लिए उसने वस्त्र पहने नहीं थे और उन्हें बगल में दबा गाँव के बाहर बहती नदी की ओर चल पड़ा था। उसने लंगोट कसा हुआ था और शेष शरीर से नंगा था।

गाँव में से निकल रहा था कि एक दुकानदार ने अपनी दुकान पर बैठे-बैठे उसको जाते देखा। दुकान पर ही खड़े गाँव के एक अन्य व्यक्ति से उसने कहा—''पण्डित का लड़का तो खूब तैयार हो रहा है।''

''हाँ।'' दूसरे ने कह दिया, ''भाई, अब पण्डित जी को किस बात की कमी है? रानी साहिबा दयालु हो रही हैं। घर में लहर-बहर लग रही है।''

दुकानदार ने कहा ''मुख पर से ओज टपक रहा है।''

''यह भी बाप की तरह गाँव की किसी लड़की पर हाथ साफ करेगा।''

दुकानदार को समझ आया कि सामने खड़ा व्यक्ति निन्दात्मक भाव में बात कर रहा है। उसने सतर्क होकर कहा, ''तुम्हारे घर में कोई युवा लड़की हो तो उसे बचाकर रखना। अरे, साधु के बच्चे! क्या खराबी देखी है तुमने इस लड़के में?''

साधु जात का जुलाहा था। किसी समय वह गाँव के ज़मींदार सुन्दरसिंह की भूमि पर मेहनत-मजदूरी करता था।

जब ज़मींदारियाँ जब्त होने लगीं तो बाबू सुन्दरसिंह के पुरोहित करुणानिधि उपाध्याय ने बाबू साहब को राय दे दी कि ज़मींदारी तो रहेगी नहीं, यह ठीक होगा कि आप सरकार द्वारा छिन जाने से पहले ही इसे बेच दें।

बाबू सुन्दरसिंह ने पूछा, ''पण्डितजी! जब अंग्रेज़ का राज्य था, तब तो छीनी नहीं गई; अब स्वराज्य होने पर यह क्यों छिन जाएगी?''

''बाबू साहब! यह छिनेगी। आप विश्वास रखें कि अब यह रह नहीं सकती। सरकार लेगी तो मनमाने दाम देगी और आप बेचेंगे तो स्वेच्छा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित दाम पर बेचेंगे। यदि कुछ रियायत से देंगे तो लोग आपके गुण गाएँगे और इससे आपका परलोक सुधरेगा।''

''क्या दाम होना चाहिए?''

''मेरा विचार है कि आप बीस रुपये बीघा से लेकर दस रुपये बीघा पर बेच दें। इतनी सस्ती भूमि कहीं नहीं मिल सकती। यह लगभग दो-तीन पैसा प्रति मुरब्बा गज़ पर होगी और लोग प्रसन्न होंगे। आप भी यश और कीर्ति के भागी बनेंगे।''

सुन्दरसिंह को बात जँच गई। यह सन् 1948 की बात थी। गाँव की भूमि उपजाऊ थी। अतः ज्यों ही यह बात फैली कि बाबू साहब ज़मींदारी बेच रहे हैं, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन सब यत्न करने लगे कि भूमि ले लें। जो भूमि पट्टे पर पहले ही दी हुई थी, उस पर बाबू साहब ने निःशुल्क बयनामा लिख देने का प्रलोभन दिया और दाम भी कम कर दिया।

बहुत-सी भूमि परती पड़ी थी। वह नदी से कुछ ऊँचाई पर थी; पानी वहाँ जा नहीं सकता था। करुणानिधि ने सम्मति दे दी कि वहाँ एक फार्म बना लिया जाए और ट्यूबवेल लगाकर सिंचाई का प्रबन्ध कर दिया जाए।

ज़मींदारी में लगभग पचास हज़ार बीघा भूमि थी। दो फार्म एक-एक हज़ार एकड़ के परती भूमि पर बना लिये गए और शेष भूमि बेच डाली। प्रायः भूमि उन्हीं को दी गई जो वहाँ पहले से ही काश्त करते थे। कुछ काश्तकार बहुत निर्धन थे। उनको करुणानिधि ने धन ऋण पर दिलवाने का प्रबन्ध कर दिया। गाँव के एक बनिये ने ऋण में पचास हज़ार रुपया लगा दिया। बाहर के लोगों ने भी ऋण पर रुपया लगाया था।

सन् 1949 के अन्त तक तीन लाख रुपया बाबू साहब के पास एकत्रित हो गया और उसमें से एक लाख रुपया दो फार्मों पर पम्प इत्यादि लगाने में तथा ट्रैक्टर का प्रबन्ध करने में लग गया। इसमें से एक फार्म बाबू साहब की बड़ी पत्नी के नाम था और दूसरा बाबू साहब ने अपने नाम पर रहने दिया।

सन् 1953 में प्रत्येक फार्म चालीस से पचास हज़ार की आय देने लगा था। इसी समय बाबू साहब एकाएक बीमार हो गए। चिकित्सा होने लगी; परन्तु रोग का निदान ही नहीं हो सका और एक दिन उनको समझ आ गया कि वे अब बच नहीं सकते। उन्होंने अपनी छोटी पत्नी और अल्पवयस्क लड़के के संरक्षण का विचार किया तो उन्हें पण्डित करुणानिधि से अधिक उपयुक्त व्यक्ति कोई नहीं दिखाई दिया।

उन्होंने अपनी वृद्ध माता और दोनों पत्नियों को बुला लिया और कहा, ''देखो, मैं जा रहा हूँ; और मैं चाहता हूँ कि घर की व्यवस्था कर जाऊँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा कोई भाई-बन्धु ऐसा नहीं, जिसको मैं दो-दो फार्म और युवा पत्नी तथा छः वर्ष के लड़के का हाथ पकड़ा सकूँ। मुझे अपना सबसे निकट सम्बन्धी, जिसपर मैं भरोसा कर सकता हूँ, पण्डित सरस्वतीनाथ का लड़का करुणानिधि समझ आ रहा है। बताओ, मैं उसे बुलाकर कहूँ कि वह यह उत्तरदायित्व सम्भाले।"

सुन्दरसिंह की बड़ी पत्नी करुणा ने कह दिया, "वह मानेगा नहीं। आपके जीवनकाल में तो वह सांसारिक झगड़ों से बाहर रहा है। भला आपके मरने पर वह काम क्यों करेगा?"

बाबू साहब बोले, "एक बात तो मैं जानता हूँ कि यदि वह मान गया तो फिर प्रबन्ध रुचि और कुशलतापूर्वक करेगा। मेरे काल में भी जो कुछ उसने मेरे लिए किया है मैं भूल नहीं सकता। दूसरे ज़मींदारों की जो अवस्था है, उससे हमारी अवस्था बहुत अच्छी है और जहाँ उन ज़मींदारों की प्रजा जमीदारों की शत्रु बन रही है, वहाँ मेरी ज़मींदारी के लोग मेरे परिवार का आदर और मान करते हैं।"

करुणा ने कह दिया, "बुलाकर पूछिए।"

करुणानिधि को बुलाया गया। वह मान नहीं रहा था, परन्तु बाबू साहब ने पण्डित जी के चरण छू दिए तो वह इन्कार नहीं कर सका। करुणानिधि फार्मों का प्रबन्धक हो गया। उसके साथ ही बाबू साहब के परिवार का संरक्षक हो गया।

इस प्रबन्ध का एक परिणाम यह हुआ कि बाबू साहब का इकलौता बेटा रघुवीरसिंह पण्डित जी का शिष्य बन गया। पण्डित जी उसे अपने लड़के सुमित्रानन्दन के साथ पढ़ाने लगे।

:: 2 ::

रघुवीर अभी तक एक ट्यूटर से पड़ता था। करुणानिधि ने सर्वप्रथम उसे चलता किया। बाबू साहब की पत्नी रानी सुमति ने पण्डितजी को बुलाकर पूछ लिया, "पण्डित जी, मास्टर जी को छुट्टी दे दी है?"

"हाँ, बहिन जी! यह अनपढ़ था। उससे रघुवीर कुछ भी सीख नहीं रहा था।"

"पर मास्टर तो कहता था कि वह एम.ए. तक पढ़ा है। इसी कारण तो उसका दो सौ रुपया मासिक वेतन के साथ रहने को मकान और चौका-बासन के लिए एक नौकर बाबू साहब ने दे रखा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''बहिन जी! उसने परीक्षा अवश्य उत्तीर्ण की हुई थी, परन्तु वह पढ़ा हुआ नहीं था। मैंने उसकी परीक्षा ली है। वह कुछ नहीं जानता। मैंने उससे पूछा था, 'समाजवाद का नाम सुना है?'

''वह बोला, 'जी, सुना है। पण्डित जवाहरलाल भारत में वह लाना चाहते हैं।'

''बहिन जी, यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं था। यह तो इस प्रकार था जैसे कि मैं किसी से पूछूँ कि बम्बई किधर है तो वह यह बता दे कि जहाँ डाक्टर खड़े रहते हैं।''

सुमति मुस्कराई। पण्डित जी की बात मान उसने रघुवीर के मास्टर को कुछ दे-ले, प्रसन्न कर छुट्टी दे दी।

सन् 1964 आया तो घर पर पढ़ते हुए ही रघुवीरसिंह और उसके साथ-साथ सुमित्रानन्दन ने हायर सेकेण्डरी की परीक्षा दी और फिर दोनों बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश पा गए।

वैसे तो फार्म का सुप्रबन्ध हो रहा था और सुन्दरसिंह की दोनों पत्नियाँ बहुत सुखी थीं। जब दोनों को ज्ञात हुआ कि रघुवीर बनारस पढ़ने जा रहा है तो वे बहुत प्रसन्न हुई थीं।

करुणानिधि दोनों लड़कों को लेकर स्वयं बनारस गया। घर पर दोनों सह-पत्नियाँ करुणानिधि के लगन से काम करने पर चर्चा करने लगीं तो बड़ी रानी करुणा ने कह दिया, ''पण्डित जी बड़ा कष्ट कर रहे हैं। उनका बनारस से कोई पत्र आया है क्या?''

''हाँ, बहिन जी! रघुवीर और सुमित्रानन्दन दोनों प्रवेश पा गए हैं।''

करुणा ने बताया, ''मेरे भाई का लड़का तो लखनऊ विश्वविद्यालय में भी प्रवेश नहीं पा सका। वह वहाँ डीएवी स्कूल में पढ़ता था और सेकेण्ड डिवीजन में ही पास हुआ था और अब उसे भैया मेरठ लेकर गए हैं।

''देखो, बहिन! मैं बताती हूँ। पण्डित जी स्वयं भारी विद्वान् हैं। यदि वे इस समय चाहते तो किसी ऊँचे सरकारी पद पर होते। वे सन् 1942 में आचार्य जी के साथ जेल में रहे हैं, परन्तु उनका राजनीति से मन कुछ ऐसे उचाट हुआ है कि वे अब कांग्रेसियों का मुख देखना भी पसंद नहीं करते।''

''पर क्यों?''

''मैंने पूछा नहीं। मुझे राजनीति में रुचि नहीं। मैं तो भगवद्-भजन में ही दिन व्यतीत करना कल्याणकारी समझती हूँ। पण्डित जी भजन भी करते हैं और कर्म भी।''

''मैं कभी विस्मय करती हूँ कि ये कुछ वेतन क्यों नहीं लेते? भला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहिताई से क्या बनता होगा?''

''वैसे तो मैं अन्न, कपड़ा और अन्य आवश्यक पदार्थ भेजती रहती हूँ। जब वह बनारस जाने लगे तो मैंने पूछा था कि कितना व्यय बैठेगा पढ़ाई का?

''उन्होंने रघुवीर की फीस, खाने इत्यादि का व्यय गिनकर बता दिया, 'पचहत्तर रुपये फीस और भोजन के तथा पचास रुपये पॉकिट खर्च के लिए पर्याप्त होंगे।'

''मैंने पूछा, 'यह एक लड़के का बता रहे हैं या दोनों का?'

''इस पर वे बोले, 'सुमित्रा का कुल व्यय पचहत्तर रुपये तक बैठेगा और वह मैं भेजने का यत्न करता रहूँगा।'

''रघुवीर का सवा सौ और सुमित्रा का पचहत्तर, यह किस प्रकार?'

''इस पर वे बोले, 'रघुवीर का व्यय अधिक होना ही चाहिए। वह रानी बहिन का लड़का है और सुमित्रानन्दन एक निर्धन उपाध्याय का।'

''मैंने निश्चय किया है कि दोनों को व्यय के लिए डेढ़-डेढ़ सौ रुपया भेजा करूँ और वह मैं ही दिया करूँ। मैंने जाते समय सुमित्रानन्दन को बुलाकर कहा था, 'देखो सुमित्रा, रघुवीर को छोटे भाई के समान रखना और सारा व्यय तुम दोनों बराबर-बराबर बाँटकर करना। मैंने उसे तीन सौ रुपया दिया था और कहा था कि रघुवीर का व्यय तुम करना। यदि कम पड़ जाए तो मुझे लिखना।'

''सुमित्रा ने कहा भी कि 'पिताजी उसके लिए भेज दिया करेंगे।'

'' 'तो उनको मना कर देना।' '' मैंने कह दिया।

करुणानिधि भी दोनों लड़कों से स्नेह रखता था। उसका एक बड़ा लड़का भी था। उसे भी वह पढ़ाता रहा था, परन्तु वह आठवीं श्रेणी तक की पढ़ाई ही कर सका था। इस समय वह बड़ी रानी के फार्म पर जमादार का काम करता था। सुमित्रानन्दन को व्यायाम और कुश्ती का शौक था, परन्तु वह पढ़ता भी खूब था और रघुवीर से कुछ अंक ही कम लेकर उत्तीर्ण हुआ था।

करुणानिधि बनारस गया और लड़कों को प्रवेश दिलवा कुछ दिन गंगा के किनारे व्यतीत करने के लिए एक बाबा निखिलानन्द स्वामी की कुटिया पर रहने लगा। जब तक वह रहा, नित्य लड़कों से मिलता रहा।

बनारस से हथियापुर लौटने के समय करुणानिधि ने दोनों लड़कों को पृथक्-पृथक् बुलाकर जीवन चलाने के विषय में समझाया। लौटने से एक दिन पूर्व करुणानिधि रघुवीर को गंगातट पर ले गया और वहाँ रेत पर बैठ उसने कहा, ''देखो रघुवीर! तुम्हारी माताजी तुमसे अति स्नेह रखती हैं और उन्होंने तुम्हारे लालन-पालन में निःसंकोच व्यय किया है। वे तुमसे बहुत बड़ी आशा रखती हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुजी!" रघुवीर ने पूछा, "वे मुझसे क्या आशा रखती हैं?"

"यही कि उनका पुत्र रघुवीर एक श्रेष्ठ मानव का लड़का है और वह अपने पिता से भी श्रेष्ठ मानव बनकर लौटेगा। ये गंगाजी हैं। इनकी सौगन्ध खाकर कहो कि तुम कभी भी कोई मानवेतर कार्य नहीं करोगे।"

"परन्तु गुरुजी! मानवोचित और मानवेतर में भ्रम भी तो हो सकता है?"

"वाह! भला इतनी सरल-सी बात को जानने में क्या भ्रम हो सकता है? तुमने गाय, बैल, कुत्ते, बिल्लियाँ देखी हैं और तुमने अपनी दोनों माताओं को और फिर मुझे भी देखा है। यदि तुम कुछ भी बुद्धि रखते हो तो हममें और गाय-बैल इत्यादि में अन्तर जानना कठिन नहीं। हम मानव हैं और गाय इत्यादि मानवेतर हैं।

"रानी जी आशा करती हैं कि दोनों के व्यवहार का चिन्तन कर तुम श्रेष्ठ मानव बनकर गाँव में लौटोगे।"

इस छोटी-सी बात ने रघुवीर के लिए इस संसार-सागर में प्रकाश-स्तम्भ का काम किया।

करुणानिधि ने अपने पुत्र सुमित्रानन्दन को भी सीख दी थी। उसी दिन प्रातःकाल छात्रावास के आगे घास के लॉन में टहलते हुए उन्होंने अपने पुत्र को कहा था "सौमित्र! तुम कुछ पशु तो पहले ही थे और अखाड़े में जाते हुए तुममें पशुपन बढ़ता ही दिखाई दिया है। देखो, मैं तो सदा तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। गाँव में कई बार तुमको मिथ्या मार्ग पर जाने से मैंने रोका था। अब यहाँ मैं साथ नहीं रहूँगा। मैं तुमसे दो बातों की शपथ लेना चाहता हूँ।"

"पिताजी, बताइए? यत्नपूर्वक उनका पालन करूँगा।"

"एक तो यह कि रघुवीर बहुत ही कोमल और संवेदनात्मक स्वभाव का लड़का है और तुम्हारी माँ ने तुम्हें घी-दूध खिला-खिलाकर हट्टा-कट्टा युवक बना दिया है। देखो, इसकी रक्षा में सदा तत्पर रहना। इनके परिवार का हम पर बहुत अहसान है। मैं इसे तुम्हारे हाथ में छोड़ जाता हूँ।

"दूसरी बात यह है कि तुममें यौवन का पदार्पण समय से पूर्व हो रहा प्रतीत होता है। देखो, मनुष्य में तेज वीर्य ही है। इसको परमात्मा की एक पवित्र धरोहर मान इसकी रक्षा करना। वीर्य के नाश से तेजविहीन हो जाओगे और फिर अतुल शक्ति रखते हुए भी किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकोगे।

"परमात्मा ने इसका निर्माण किसी प्रयोजन-विशेष से किया है। यह अमानत है तुम्हारी पत्नी और तुम्हारी होने वाली सन्तान की। यह धरोहर तुम्हारे पास रहनी है और इसको इधर-उधर फेंक आए तो जीवन-भर तुम अपनी पत्नी और सन्तान के देनदार बने रहोगे और उनकी आत्मा तुमको शाप देती रहेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन इस सीख का अर्थ समझ रहा था। गाँव में एक बार उसने गाँव के एक सुकुमार लड़के से दुराचार करने का यत्न किया था और वह लड़का पण्डितजी के पास आरोप लगाने जा पहुँचा था। पण्डित जी ने सुमित्रा को डाँटा था और फिर समझाया था।

सुमित्रानन्दन तब भी और अब भी उस ओर संकेत किए जाने पर लज्जा अनुभव करने लगा। वह भूमि की ओर देखता हुआ पिताजी के साथ टहल रहा था।

पण्डितजी ने कह दिया, ''देखो, सौगन्धपूर्वक कहो कि तुम मेरी दोनों बातों का पालन करोगे।''

रात के समय जब करुणानिधि दोनों लड़कों से गाँव लौट जाने के लिए विदा माँगने लगे तो उन्होंने दोनों को रेल के स्टेशन पर गाड़ी के समीप प्लेटफार्म पर खड़े हुए कहा था, ''सुमित्रानन्दन और रघुवीर, इस परदेश में सगे भाइयों के समान रहना।''

''गुरुजी, आप निश्चिन्त रहें।'' रघुवीर ने कह दिया, ''सुमित्रा के साथ रहते हुए मुझे किसी बात का भय नहीं रहता।''

''तब ठीक है।'' करुणानिधि ने दोनों की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार दिया और गाड़ी में सवार हो गए।

:: 3 ::

प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण कर दोनों मित्र गाँव में आए हुए थे। इनका कार्यक्रम बनारस की भाँति गाँव में भी उसी प्रकार चल रहा था। बनारस में सुमित्रानन्दन सायंकाल व्यायाम करता था और प्रातःकाल भ्रमण करने जाया करता था। रघुवीर सायंकाल बाबा निखिलानन्द की कुटिया पर स्नान-ध्यान के लिए चला जाता था। अब गाँव में आकर भी रघुवीर नदी तट पर जाने लगा था।

सुमित्रानन्दन अखाड़े से कुश्ती कर नदी के तट पर जा रहा था कि बनिया भवानीदास की दुकान पर वह वार्त्तालाप हो गया जो आरम्भ में लिखा है।

साधु एक जुलाहा था, परन्तु जब सुन्दरसिंह ने भूमि बेची तो साधु ने भवानीदास से ही दो सौ रुपया लेकर बीस बीघा भूमि ले ली थी। रुपया तो पहली फसल पर ही उतर गया था। कारण यह कि सन् 1948 में भी अन्न-अनाज का दाम बहुत बढ़ चुका था और किसानों के घरों में रुपयों की वर्षा होने लगी थी।

यह सन् 1965 का जून मास था। इस वर्ष साधु के खेतों में आठ सौ मन गेहूँ हुआ था और उसे सोलह हज़ार रुपया नकद दाम मिला था। वैसे साधु गाँव की कांग्रेस कमेटी का प्रधान था और गाँव में समाजवाद की डुग्गी पीट रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गाँव में एक बहुमुखी सहकारी समिति का निर्माण कर चुका था और उस समिति के नाम पर देहाती बैंक से पचास हज़ार उधार ले चुका था। वह पचास हज़ार का अधिकांश साधु के घर में ही समा गया था।

भवानीदास का मुख्य काम रुपया ऋण पर देना था। परन्तु अब वह कार्य समाप्त हो चुका था और वह अन्न तथा बिसाती की दुकान करता था। उसके सबसे बड़े ग्राहक दोनों रानियाँ ही थीं। वह उनके फार्मों की उपज भी बेचता था।

अत: जब साधु ने व्यंग्यात्मक भाव में कहा कि यह भी पिता की भाँति किसी गाँव की लड़की पर हाथ साफ करेगा तो भवानीदास को क्रोध चढ़ आया था। उसने क्रोध में कह दिया, ''घर में कोई युवा लड़की हो तो उसे सँभालकर रखना। अबे, साधु के बच्चे! क्या खराबी देखी है इस लड़के में ?''

साधु ने कह दिया, ''इस लड़के में तो नहीं कह सकता, परन्तु इसके पिता की बात तो अब गाँव में विख्यात ही है।''

''क्या बिख्यात है ?''

''छोटी रानी साहिबा इस पर दयालु हो रही हैं। उस दिन पोस्ट मास्टर कह रहा था प्रतिमास तीन सौ रुपया रानी जी का मोदी इसके लड़के को भेजता है।''

''तो फिर क्या हुआ ? ब्राह्मण के लड़के की पढ़ाई करने के लिए देती हैं। बाबू सुन्दरसिंह भी तो पुरोहित जी को देते थे।''

''पर लाला, लोग तो कुछ और कहते हैं।''

''अरे जुलाहे के बच्चे! अपनी औकात को भूल गए हो ? बाबू साहब के पास पाँच रुपये पर नौकरी करते थे और अब उस साधनी पर निराधार आरोप लगाते हो।''

''आधार तो बताया है। तीन सौ रुपया महीने लड़के को मिलता है और पिता को जो कुछ मिलता होगा, सो तो भगवान् ही जाने।''

''अच्छा देखूँगा। तुम्हारी जबान बन्द करानी होगी।''

''लाला! अब अँग्रेज़ी ज़माना नहीं रहा। तनिक तू-तड़ा की तो ज़बान खिंचवा लूँगा।''

''अच्छा, अच्छा! जाओ अपना काम देखो।''

''पर मैं तुमसे सहकारी समिति का पाँच सौ मन गेहूँ खरीदने के लिए कहने आया था।''

''ले लूँगा सरकारी भाव पर। इस वर्ष सरकारी भाव है साठ रुपये क्विण्टल।''

''पर तुम तो 'ब्लैक' में बेचोगे न ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वह क्या होता है ?''

''वाह ! भूल गए हो 'ब्लैक मार्केट' की बात ?''

''भाई समझा दो। समझ जाऊँगा तो विचार कर लूँगा।''

''देखो, पिछले वर्ष भाव था पचास रुपये क्विण्टल और तुमने हमसे खरीदा था सत्तर रुपये, और जहाँ तक मुझे ज्ञात है कि तुमने बेची थी सौ रुपये क्विण्टल।''

''मुझे स्मरण नहीं। पिछले वर्ष की बही देखूँगा तो बता सकूँगा। जो भाव पिछले वर्ष ली थी, वही भाव इस वर्ष ले लूँगा।''

''पर इस वर्ष तो खुली मार्केट में भी दाम बढ़ गया है।''

''पर इस बाज़ार में, जिसकी बात तुम कह रहे हो, भाव वही है।''

''अच्छा, ऐसा करो कि जो भाव पिछले वर्ष लिया था, उसी में पाँच रुपये बढ़ा दो।''

''नहीं, साधु! यह नहीं हो सकेगा। पिछले वर्ष से इस वर्ष बेचने की कठिनाई बढ़ गई है। सरकार ने निगरानी कठोर कर दी है।''

''पर यहाँ गाँव में तो मेरे रहते कौन पूछेगा ?''

''ठीक है। पर गेहूँ तो लखनऊ, मुरादाबाद और दिल्ली जाकर बिकेगा। गाँव में गेहूँ की माँग नहीं है।''

''अच्छा, पिछले वर्ष के भाव से ले लो। आज सायंकाल गेहूँ आएगा ?''

भवानीदास समझ रहा था कि सहकारी फार्म से चुराया हुआ गेहूँ है; इसी कारण इसे चोर-बाज़ारी में बेचना चाहता है। उसने रानी साहिबा का अपमान करने का बदला लेने का विचार बना लिया।

उसने उसी समय बाईसिकल पकड़ी और हल्द्वानी को चल पड़ा। दो घण्टे में वहाँ पहुँच उसने सहकारी समिति के उप-रजिस्ट्रार से बात की। स्टेट बैंक के मैनेजर से बात की कि सहकारी समिति का माल चोरी-चोरी बेचा जा रहा है, परन्तु किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। लाला का विचार था कि ऋण देने वाले बैंक इस बात में रुचि लेंगे कि उनके रुपये से उत्पन्न किया अन्न चोरी न हो जाए। स्टेट बैंक के मैनेजर ने कहा कि यह मामला पुलिस का है। पुलिस तो गाँव में भी थी, परन्तु लाला जानता था कि स्थानीय पुलिस इसमें कुछ कार्यवाही नहीं करेगी। कारण यह कि साधु कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष होने के नाते उनको तंग कर सकता था और वैसे वह पुलिस को रिश्वत दिलाने में दलाली किया करता था।

अत: भवानीदास निराश लौट आया। इस पर भी उसके मन में बात खटकती रही कि साधु ने निर्दोष पण्डित करुणानिधि को और उज्ज्वल चरित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी सुमति को बदनाम करने का यत्न किया है।

वह समझ कि वह साधु को किसी प्रकार का दण्ड देने में असमर्थ है, वह चुप कर रहा। अगले दिन पाँच सौ मन गेंद उसके खत्तों में भर दिया गया। उसने पाँच सौ रुपया, अग्रिम रकम, साधु को दे दी। न तो गेहूँ की लिखत-पढ़त थी, न ही दिए रुपये का कोई रसीद-पर्चा था।

लाला भवानीदास ने वह गेहूँ मुरादाबाद, हापुड़, मेरठ की मण्डियों में भेज दिया।

सुमित्रानन्दन और रघुवीर गाँव में इकट्ठे ही पढ़ते थे। सुमित्रानन्दन रघुवीर के घर पढ़ने जाता था और वहाँ दोनों कॉलेज की श्रेणियों में लिखे नोट्स देख विषयों को व्याख्या सहित लिखा करते थे। प्राय: मध्याह्नोत्तर पण्डित जी लड़कों को कॉलेज की शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षा देते थे।

एक दिन सुमित्रानन्दन ने अपनी विद्यार्थी यूनियन का वृत्तान्त बताया। उसने कहा, ''हमारे एक प्रोफेसर इन्द्रजीत हैं। वे इतिहास के प्राध्यापक हैं और यूनियन के कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं। वैसे यूनियन का एक प्रधान और एक मन्त्री भी हैं, परन्तु चलती प्रोफेसर की ही है।'

पण्डित जी ने पूछ लिया, ''तुम उसके सदस्य बने हो ?''

''मैं सदस्य बन गया हूँ और प्रोफेसर साहब से लेकर प्राय: सभी सदस्य मेरे डील-डौल को देख मुझे रुस्तम के नाम से पुकारते हैं।''

''रघुवीर तुम सदस्य नहीं बने ?''

''गुरुजी, नहीं। मैं इसे अपनी पढ़ाई में विघ्न समझता हूँ। साथ ही मैं सायंकाल गंगा पर सन्ध्योपासना करने और बाबा जी से मिलने जाया करता हूँ और यूनियन की सभाएँ सायंकाल ही होती हैं।''

''परन्तु पढ़ाई में रुचि लेने वाले विद्यार्थियों को तो यूनियन में सम्मिलित होना चाहिए। अन्यथा यूनियन की बेहूदा बातों पर रोकथाम कौन करेगा ?''

''तो वे कुछ अनुचित बातें भी कर सकते हैं ?'' रघुवीर का प्रश्न था।

''एक बात तो तुमने ही बताई है कि वे सभाएँ सायंकाल करते हैं और तुम्हारे पूजा-पाठ में विघ्न पड़ता है। सभाएँ किसी अन्य समय पर और बहुत कम होनी चाहिएँ।

''साथ ही यूनियन में केवल विद्यार्थियों के सुख-आराम की बातें होनी चाहिएँ। उसमें पढ़ाई सम्बन्धी बातें नहीं होनी चाहिएँ।''

इसपर सुमित्रानन्दन ने कहा, ''पर यूनियन तो प्राध्यापकों के कामों पर टीका-टिप्पणी करती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्या टीका की है ?''

''इस वर्ष हमने एक प्रस्ताव पास किया है कि आचार्य देवेन्द्रनाथ अयोग्य हैं और उनको उच्च श्रेणियों की पढ़ाई में नहीं लगाना चाहिए।''

''वे क्या पढ़ाते हैं ?''

''वे संस्कृत के प्राध्यापक हैं। बनारस के एक प्रख्यात महामहोपाध्याय से शिक्षा लेकर उन्होंने दर्शनाचार्य की उपाधि प्राप्त की है।''

''और तुम्हारी यूनियन में संस्कृत पढ़ने वाले कितने हैं ?''

''जहाँ तक मैं जानता हूँ कि मेरे अतिरिक्त कोई भी नहीं।''

''और तुमने यह प्रस्ताव पारित कर दिया ?''

''पिता जी! मैंने कहा था कि ऐसा प्रस्ताव नहीं करना चाहिए। इसपर प्रोफेसर इन्द्रजीत ने कहा, 'हम आचार्य जी को निकाल तो रहे नहीं। एक सुझाव ही दे रहे हैं। विश्वविद्यालय की संस्कृत फैकल्टी और फिर 'एकेडमिक कौन्सिल' ही तो देखेगी और वह हमारे सुझाव पर सतर्क हो जाएगी।

''पिता जी, हुआ भी ऐसा ही। एकेडमिक कौन्सिल ने हमारे प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।''

''सुमित्रानन्दन, इस पर भी तुम पाप के भागी बन गए। तुमने अपने गुरुजनों की निन्दा की। यह अनधिकार चेष्टा थी। तुम पकड़े नहीं गए तो क्या हुआ ? पापी तो तुम हो और इसका फल भी भोगना पड़ेगा।''

''क्या फल हो सकता है, पिता जी ?''

''मैं त्रिकालज्ञ तो हूँ नहीं, इस पर भी इतना जानता हूँ कि किया हुआ प्रत्येक कर्म वायुमण्डल में घूमता रहता है और जिस समय अवसर पाता है, यह अपना फल उत्पन्न करता है। कुछ भी विनष्ट नहीं होता। सबका फल मिलता है।''

इस पर रघुवीर ने एक बात और बता दी। उसने कहा, 'गुरुजी, एक बात तो है कि हमारे कई प्राध्यापक हैं, जो पढ़ाना नहीं जानते। उदाहरण के रूप में अपने इतिहास के प्राध्यापक की बात बताता हूँ। वे कहने लगे, 'ज्ञात इतिहास आज से दो सहस्र वर्ष से अधिक का नहीं। शेष समय को हम प्रागैतिहासिक कहते हैं।'

''मुझे यह बात आपके कथन के विपरीत प्रतीत हुई। मैंने उठकर पूछ लिया, 'सर! क्या यह भारत के विषय में कहा जा रहा है अथवा इंग्लैण्ड के विषय में!'

''वे कहने लगे, 'यह प्रायः भूमण्डल के सब देशों के विषय में कहा जाता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैंने तुरन्त कह दिया, 'यह भारत के लिए सत्य नहीं है।'

''आज से पच्चीस सौ वर्ष पहले की कोई बात बताओ।'

'' 'महाभारत का युद्ध।' मेरा कहना था।

'वह तो 'माइथॉलाजी' है।'

'वह क्या होती है?' मैं अभी अपने स्थान पर खड़ा रहा और मैंने पूछ लिया।

''जिसमें गप्पें हांकी जाएँ और जिसका कोई प्रमाण न हो।'

''इसपर मैंने आपसे बताई बात बता दी। मैंने कहा, 'ऐसी गप्पें तो अकबर के विषय में भी विख्यात हैं। अब्दुल फैजी ने यह लिखा है कि जब अकबर उत्पन्न हुआ था तो आकाश में बाजे बजे थे, आकाश से फूलों की वर्षा हुई थी, फरिश्ते अकबर की माँ की बलैयाँ लेते थे।'

'' 'पर यह बात हम मानते नहीं।'

''तो मैंने कहा, 'सर, इसी प्रकार जो बात आपको महाभारत में गप्प प्रतीत होती है, वह न मानिए। शेष तो मानिए। महाभारत का युद्ध हुए पाँच सहस्र वर्ष हो चुके हैं।''

''इस पर वे बोले, 'बैठ जाओ। तुम कुछ नहीं जानते। देखो, बाम्बे विश्वविद्यालय के वूलर नाम के एक प्रोफेसर हुए हैं। उन्होंने लिखा है कि महाभारत की कथा एक अलंकारमात्र है। यह ऋतुओं के संघर्ष की आलंकारिक कथा है।'

''इस पर मैं कहने लगा कि उसके कथन में प्रमाण नहीं, परन्तु प्रोफेसर ने कह दिया, 'क्लास से बाहर निकल जाओ।'

''मैं बैठ गया, परन्तु उन्होंने क्रोध में कहा, 'गेट आउट।' विवश मुझे बाहर जाना पड़ा। गुरु जी, बताइए कि ऐसे प्रोफेसर को रखना चाहिए क्या?''

''नहीं। परन्तु रघुवीर, मैं तो यह कह रहा हूँ कि उसको निकालने तथा उसको अयोग्य कहने का अधिकार विद्यार्थियों को नहीं है।''

इस प्रकार बातें हुआ करती थीं। यह कॉलेज की पढ़ाई के अतिरिक्त शिक्षा थी।

एक दिन लाला भवानीदास ने पण्डित करुणानिधि को साधु की बात बता दी और पूछ लिया, ''क्या यह सत्य है कि रानी जी आपके पहलवान लड़के को अढ़ाई- तीन सौ रुपये मासिक भेजती है?''

''हाँ, परन्तु यह दोनों के व्यय के लिए होता है। सुमित्रानन्दन के लिए और उनके अपने लड़के रघुवीर के लिए। उनके पति मेरी पढ़ाई का व्यय देते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अब उनकी पत्नी सुमित्रानन्दन के लिए देती हैं। इसमें वैचित्र्य कुछ नहीं।''

''पर यह साधु का बच्चा आपकी और रानी जी की निन्दा करता है। वह गाँव में और कदाचित् राज्य भर में आपके और रानी जी के विषय में कहता फिरता है।''

''देखो, लाला जी, मैं अपने विषय में तो चिन्ता नहीं करता। हाँ, रानी जी की बात अवश्य विचारणीय है। मैं चाहता हूँ कि उनको किसी प्रकार से यह कहला दिया जाए कि मुझ पर विशेष कृपा न किया करें। मैं एक निर्धन ब्राह्मण हूँ। अत: सुमित्रानन्दन को भी निर्धनता में रहना सीखना चाहिए।''

''ठीक है, मैं प्राय: उनसे दुकान के काम से मिलने जाता हूँ। यदि आप कहें तो मैं उनसे संकेत कर दूँ?''

''मेरा नाम बीच में नहीं आना चाहिए, साधु की बात स्वतन्त्र रूप से कह सकते हो।''

इसकी प्रतिक्रिया विलक्षण हुई। भवानीदास ने संकेत किया और उसका परिणाम यह हुआ कि रानी जी ने विद्यार्थियों को दिया जाने वाला रुपया बढ़ा दिया। यह बात दोनों के छुट्टियाँ समाप्त कर वाराणसी जाने से पूर्व हुई। जब वे जाने लगे तो सुमित्रानन्दन रानी जी के चरण-स्पर्श करने हवेली में गया। उस समय रघुवीर भी वहाँ था। जब दोनों चरण-स्पर्श कर चुके तो सुमति ने पूछ लिया, 'रघुवीर, वहाँ निर्वाह कैसे होता है?''

''माँ! निर्वाह तो हो जाता है, परन्तु मैं नित्य अस्सी घाट पर जाता हूँ तो प्राय: भीख माँगने वाले आ जाते हैं और महीने के अन्तिम दिनों में मेरे पास देने को कुछ नहीं रहता।''

सुमति कुछ विचारकर पूछने लगी, ''सुमित्रा, तुम महीने में कितना दान करते हो?''

''मैं तो कुछ नहीं करता। मैं नित्य सायं अतिरिक्त दूध पी जाता हूँ। इसमें ही पचास रुपये के लगभग व्यय बैठ जाता है। मेरे पास तो कुछ देने के लिए बचता ही नहीं।''

''तुम रुपये बाँटते कैसे हो?''

''जितने भी आप भेजती हैं, मैं रघुवीर को दे देता हूँ। वह उनमें से सब प्रकार के देय देकर जो बचता है, उसका आधा मुझे दे देता है और आधा अपने पास रख लेता है। इस आधे में से कपड़ा, धोबी, दूध, मिठाई, कहीं आने-जाने की सवारी और कभी-कभी पिक्चर देखने का व्यय होता है। मेरे पास देने के लिए कुछ बचता ही नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, देखो। आज से तुम्हारा व्यय चार सौ रुपया कर देती हूँ, परन्तु नित्य कुछ न कुछ दान कर दिया करो। जिसको तुम पात्र समझो, दे दिया करो। कम से कम पचास-पचास रुपये मासिक तुम दोनों को बचने चाहिए और वे इसी निमित्त हैं।"

"पर माँ, हम पात्र-कुपात्र की पहचान तो रखते नहीं। इससे यह सब व्यर्थ हो जाएगा।"

"नहीं, इसका अपना फल है। निष्काम भाव से देने में अपना मन और बुद्धि सात्विक होते हैं। सुपात्र को देने का फल तो अतिरिक्त है। इस बात का विचार छोड़कर कि तुम्हें याचक से कभी कुछ लाभ उठाना है, दोगे तो तुम लाभ पा जाओगे।"

रघुवीर और सुमित्रानन्दन मुख देखते रह गए। उसी समय उनको मासिक व्यय, रेल-बस के भाड़े के अतिरिक्त चार सौ रुपया मिल गया। रानी सुमति ने वह सुमित्रानन्दन को ही दिया।

अब डाकखाने से नियमित चार सौ रुपया मासिक सुमित्रानन्दन के नाम भेजा जाने लगा। एक दिन साधु ने भवानीदास से कह दिया, "अब तो चार सौ रुपया मासिक जाने लगा है।"

"मुझे विदित है।"

"तुम कैसे जानते हो ?"

"मैंने एक दिन रानी जी से संकेत किया था कि सुमित्रानन्दन को रुपया डाकखाने द्वारा न भेजा करें।

"उन्होंने पूछ लिया, 'क्यों ?'

"मैंने बताया, डाकपाल महा बदमाश आदमी है और वह इस आधार पर आपकी और सुमित्रा के पिता की निन्दा करता है।"

"इस पर उनका मुख लाल हो गया, परन्तु कुछ विचारकर कहने लगीं, 'कुत्ते भौंका करते हैं। भले आदमियों को उनकी बातें सुनने का अवकाश ही कहाँ है ? सुनो लाला जी! एक दिन डाकपाल तुमको कहेगा कि अब सुमित्रा को चार सौ जा रहा है। उसे कह देना कि मैं कुत्तों के भौंकने की परवाह नहीं करती'।"

:: 4 ::

इस बार हथियापुर के दोनों छात्र विश्वविद्यालय में पहुँचे तो दोनों के दृष्टिकोण परिवर्तित हो रहे थे। सुमित्रानन्दन व्यायाम के अतिरिक्त यूनियन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग लेने लगा था। उसका सम्पर्क एम.ए. फर्स्ट ईयर के एक विद्यार्थी राधेश्याम से हो गया। वह उससे मिलने भी जाने लगा था।

रघुवीर इतिहास पढ़ता था और सुमित्रानन्दन अर्थशास्त्र। दोनों अंग्रेज़ी-संस्कृत इकट्ठे पढ़ते थे। अतिरिक्त विषय दोनों का हिन्दी था।

इतिहास पढ़ाने वाले अब दो प्राध्यापक हो गए थे। एक तो वही थे, जो प्रथम वर्ष में उनको पढ़ाते थे। अब दूसरे वर्ष में सप्ताह में दो घण्टे प्रोफेसर इन्द्रजीत सिद्धान्तात्मक रूप में इतिहास पढ़ाने लगे थे। रघुवीर का स्वभाव था कि वह प्रश्न बहुत पूछा करता था। इन्द्रजीत सदा उसे डाँटता रहता था। उस डाँटने में दो युक्तियाँ हुआ करती थीं। एक तो यह कि अपने संशयों का उत्तर पुस्तकों में से निकालने का यत्न किया करो और दूसरे सिद्धान्त के विषय में जो कुछ गुरुजन कहा करें, वह स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस प्रकार की बात से रघुवीर को शान्ति नहीं मिलती थी। इसपर भी उसने प्रश्न पूछने कम अवश्य कर दिए थे।

अभी इनको गाँव से आए पन्द्रह दिन भी नहीं हुए थे कि एक दिन मध्याह्न भोजनोपरान्त जब सुमित्रानन्दन सोया हुआ था कि रघुवीर कुछ स्मरण कर खाट से उठा और कपड़े बदल कमरे से निकल गया।

सुमित्रानन्दन लगभग तीन बजे जगा और अपनी कुर्सी पर बैठ सुस्ती दूर करने लगा। वह विचार कर रहा था कि आज कौन-सा विषय पहले पढ़ना आरम्भ करना चाहिए। कुछ विचार कर उस दिन के संस्कृत पाठ पर ली गई टिप्पणियों को निकालकर पढ़ने लगा।

पाठ था रघुवंश। सुमित्रानन्दन को लहर आ गई और वह उच्च स्वर में गा-गाकर पढ़ने लगा।

तौ विदेहनगरीनिवासिनां गां गताविव दिवः पुनर्वसु।
मन्यते स्म पिबतां विलोचनैः पक्ष्मपातमपि वञ्चनां मनः॥

आगे वह पढ़ नहीं सका। कमरे का द्वार खट से खुला और रघुवीर पीत मुख लड़खड़ाते पगों से कमरे में प्रवेश कर अपनी कुर्सी पर धम से बैठ गया।

रघुवीर एक सुन्दर कुमार था। गौर वर्ण, चिकना मुख, मोटी-मोटी आँखें, सिर पर अति कोमल, परन्तु घने काले कुण्डलदार बाल देखने में अति आकर्षक। शरीर मध्यम ऊँचाई, दुबला-पतला, परन्तु कठोर और सम-आयाम का था। उसके मुख पर ओज टपका करता था, परन्तु इस समय वह ओज-विहीन हो रहा था।

सुमित्रानन्दन उसकी अवस्था देख उठा और उसके कंधे पर हाथ रख पूछने लगा, ''क्यों ? क्या हुआ है ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर ने सुमित्रानन्दन के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और मन की विक्षुब्धावस्था से व्यथित सामने की दीवार पर देखता हुआ विचार करने लगा कि क्या कहे, कितना कहे और किस प्रकार बताए?

"अरे, कुछ बोलो भी। क्या किसी ने जादू कर जुबान कील तो नहीं दी?"

रघुवीर के मुख पर धीमी-सी मुस्कराहट आई और उसने, मानो यत्न कर, ये शब्द कहे, "दादा, चित्त स्वस्थ नहीं।" इतना कहते-कहते उसने साथी का हाथ कंधे से उठा दिया, मानो, मनों बोझ के नीचे वह दबा जा रहा था।

सुमित्रानन्दन ने कुर्सी उसके समीप खिसकाई और उसपर बैठ पूछा, "क्या रोग हो गया है चित्त को?"

रघुवीर के मुख से निःश्वास के साथ निकल गया, "मैं बता नहीं सकता।"

"अरे, बोलते तो हो। तनिक ज़ोर लगाकर बोलो। क्यों बता नहीं सकते? किसी लड़की ने छेड़छाड़ की है? कहाँ गए थे तुम? मैंने तुमको पहले भी बताया है कि महिला विद्यालय के छात्रावास की ओर मत जाया करो।"

इसपर तो रघुवीर की हँसी निकली, परन्तु गला सूखने से शब्द ऐसा हुआ जैसे कि फटे बाँस से आवाज़ आती है।

सुमित्रानन्दन ने अब रघुवीर की पीठ ठोककर पूछ लिया, "कौन थी वह?"

रघुवीर अब उठा। कमरे में रखी सुराही में से अपने काँच के गिलास में जल ले पीने लगा। इससे उसका गला साफ हो गया। अब आधा गिलास जल पी कुर्सी पर बैठ बोला, "यह लड़की नहीं, दादा! लड़कियाँ मेरे समीप नहीं फटकतीं। कोई अन्य था, परन्तु उससे झगड़ा नहीं हुआ। मैं झगड़े से डरकर भाग आया हूँ।"

"कहाँ गए थे तुम?" सुमित्रानन्दन ने कुर्ते की बाँहें ऊपर चढ़ाते हुए कहा, "भैया बताओ कि कौन है, जिससे झगड़ा होने से डरकर भाग आए हो?"

"नहीं, कोई ऐसी बात नहीं। देखो सौमित्र! मुक्का-मुक्की की बात नहीं है। मानसिक घृणा और तिरस्कार को भीतर दबाकर बिना बोले चले आने के लिए मुझे सघर्ष करना पड़ा था। शारीरिक संघर्ष से डरता नहीं हूँ। अपने मन के उद्गारों को दबाकर रखने की बात थी।"

"भैया! कुछ बताओगे भी। हाँ, अब मुख पर रौनक आने लगी है। देखो, तुम जहाँ भी जाया करो, अपने दादा को साथ ले जाया करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-M
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, दादा! आज इतिहास के घण्टे के उपरान्त प्रोफेसर अपने मनोद्गारों की लय में बोल उठा, 'एक सामान्य हिन्दुस्तानी युवक अंग्रेज युवक से चरित्र और मानसिक विकास में बहुत पिछड़ा हुआ है।"

"कौन था यह?"

"डाक्टर इन्द्रजीत। वे अपनी ऑक्सफोर्ड की एक कथा सुनाने की भूमिका बाँध रहे थे। उस समय वे कमरे के बार के समीप खड़े थे और कुछ लड़के उनको घेरे हुए थे। मैंने यह वाक्य सुना तो कुछ आगे बढ़ पूछ लिया, 'सर! क्या अन्तर देखा है आपने हममें और उनमें?'

"डाक्टर साहब बातें करते-करते चुप कर गए और मेरे मुख पर ध्यानपूर्वक देखने लगे। फिर एकाएक बोले, 'इस समय तो मैं वाइस चान्सलर साहब से मिलने जा रहा हूँ। यदि जानना चाहते हो तो तीन बजे मेरे क्वार्टर में मिलना। मैं तुम्हें व्याख्या सहित बता सकूँगा।'

"मैंने कह दिया, 'मैं उपस्थित हो जाऊँगा।'

"अत: मैं यहाँ से पौने तीन बजे डाक्टर साहब के क्वार्टर को चल पड़ा। तुम सो रहे थे। जाते समय कमरे का द्वार भींचकर चला गया था।

"प्रोफेसर साहब के क्वार्टर का द्वार खुला था। अत: मैं भीतर जा ड्राइंग रूम में खड़ा हो गया। वह खाली था। वहाँ कोई नहीं था। मैंने देखना चाहा कि क्वार्टर खाली क्यों है? इतने में मेरी दृष्टि एक कमरे की ओर गई। कमरा ड्राइंग रूम में ही खुलता था। कमरे का द्वार बन्द था। मैंने ड्राइंग रूम में बैठ प्रतीक्षा करनी उचित समझी। इतने में उस कमरे में से, जिसका द्वार भिंचा हुआ था, ज़ोर-ज़ोर से हँसने तथा बातें करने का शब्द सुनाई दिया। मैं समझ गया कि भीतर लोग सो नहीं रहे। इस कारण मैंने बाहर खड़े हो बहुत धीरे से आवाज़ दे दी, 'डाक्टर साहब!'

"भीतर से किसी ने ज़ोर से पुकारा, 'कौन है बे?'

"यह गँवारू भाषा सुन मुझे विस्मय हुआ। मैंने द्वार पर हाथ रख दबाया तो वह खुल गया और भीतर का दृश्य देख मैं स्तब्ध खड़ा रह गया। किसी ने भीतर से गाली दे मुझसे कहा, 'वहाँ खड़ा क्या देख रहा है? आजा न भीतर।'

"मैं द्वार बन्द कर लौट आया हूँ और जो कुछ वहाँ देखा था, उसी की प्रतिक्रिया तुमने मेरे मुख पर देखी थी।"

"रघुवीर, तुम भी घनचक्कर हो। यह तो तुमने बताया ही नहीं कि क्या देखा और तुम लौट क्यों आए हो?"

"गाँव में एक बार एक पेड़ के नीचे दो कुत्ते-कुतियों को समागम करते देखा था। बस वही समझ लो।"

Central Library
167365
Gurukula Kangri University Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वहाँ उस कमरे में कुत्ते-कुतियाँ भरी थीं?"

"हाँ, परन्तु दो टाँगों वाले। सब अवस्त्र थे और....."

सुमित्रानन्दन ज़ोर से ठहाका मारकर हँस पड़ा और रघुवीर की पीठ पर मुक्का मार बोला, "तो तुम यह देखकर भाग आए हो और दरवाज़ा बन्द कर आए हो?"

"मुझे यह दृश्य अरुचिकर और ग्लानि उत्पन्न करने वाला लगा था। इस कारण बिना विचार किए ही मैंने द्वार बन्द कर दिया था। उस समय तो उस दृश्य को आँखों से ओझल करने की भावना थी। मैं एक-दो क्षण तो ड्राइंग रूम में खड़ा विचार करता रहा; तदुपरान्त मैं भयभीत वहाँ से चला आया।"

"इसमें भय की क्या बात है? ऐसा कृत्य करने वाले किसी चरित्रवान् का अनिष्ट नहीं कर सकते।"

"मैं उनके द्वारा किसी अनिष्ट की आशंका से नहीं डरा। मैं तो अपने चित्त में अपने लिए भयभीत था। मैं डर रहा था और डर रहा हूँ कि किसी ने मुझे वहाँ जाते अथवा वहाँ से आते न देख लिया हो और मुझे भी उन्हीं की श्रेणी का पशु न समझने लगा हो।"

इस पर सुमित्रानन्दन ने गम्भीर हो कह दिया, "हाँ, यह तो है ही। तुम पर तो वहाँ जाने वाले तुरन्त सन्देह कर लेंगे कि तुम उनके साथियों में हो।"

"मुझे यही डर है।"

"परन्तु एक बात है। डाक्टर साहब और उनके सहयोगी तुम्हारे विषय में कुछ नहीं कह सकते; हाँ, वहाँ के व्यवहार का कोई भी जानकार तुमको वहाँ का प्राणी होने का सन्देह कर सकता है और फिर तुम विश्वविद्यालय में एक विख्यात व्यक्ति हो जाओगे।"

"विख्यात क्यों?"

"यह तुम अपना मुख दर्पण में देखकर समझ सकते हो।"

"दादा, दर्पण में मुख तो नित्य देखता हूँ।"

"तो तुमने यह अनुभव नहीं किया कि तुम एक अति सुन्दर कुमार हो?"

"इससे क्या होता है?"

"होता यह है कि तुम्हारे दाढ़ी-मूँछ आने के लक्षण दिखाई नहीं देते और कोई सहज ही तुम्हें लड़कों के पहरावे में एक सुन्दर लड़की समझ सकता है।"

"धत् तेरे की। तुम भी क्या मुझे लड़की समझते हो?"

"नहीं, परन्तु इतना जानता हूँ कि तुम सुगमता से बदनाम, अभिप्राय यह कि नामवर हो सकते हो।"

"तब तो मेरा डरना ठीक था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो रघुवीर, इस विश्वविद्यालय में दो प्रकार के प्राणी स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। एक अपने को प्रगतिशील कहते हैं और दूसरे अपने को भारतीय कह रहे हैं। यह इन्द्रजीत प्रथम श्रेणी का प्राणी है और जो कुछ तुम देख आए हो, वह प्रगति का अंग समझा जा रहा है।"

"यह प्रगति का अंग है क्या?"

"हाँ, यूरोप में यही माना जाता है। यही डाक्टर इन्द्रजीत का अभिप्राय था, जब उसने कहा था कि एक सामान्य हिन्दुस्तानी युवक अँग्रेज़ी युवक से बहुत पिछड़ा हुआ है।"

"पर तुम यह सब कैसे जानते हो? तुमने डाक्टर इन्द्रजीत के घर की यात्रा की है कभी?"

"नहीं, परन्तु सायं तुम गंगा जी के तट पर सन्ध्योपासना करने जाते हो और मैं यहाँ की गंगा में स्नान करता हूँ। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि मैं 'जिमनेजियम' में जाता हूँ। वहाँ व्यायाम तो करता ही हूँ; साथ ही वहाँ किंवदन्तियाँ भी सुनता हूँ।"

"कौन हैं जो वहाँ ऐसी बातें करते रहते हैं?"

"कुछ हैं जो अपने को प्रगतिशील कहते हैं। मैं तुम्हें एक नवीन समाचार बताता हूँ। वह यह कि इस वर्ष विद्यार्थी यूनियन में प्रगतिशील बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। आगामी निर्वाचन दिसम्बर मास में होने वाला है और ये प्रगतिशील विचार के लोग इसपर अधिकार कर लेना चाहते हैं।"

"इससे क्या होगा? क्या ये लोग डाक्टर इन्द्रजीत की बात विद्यार्थीगण में चलाना चाहते हैं?"

"तुम भी सर्वथा गधे ही हो। देखो, मैं बात बताता हूँ। विश्वविद्यालय कैम्पस के बाहर चाट की दुकान है। उसकी चाट बहुत स्वादिष्ट होती है। तुम्हारी जेब में एक पैसा न हो और तुमको कोई वहाँ ले जाकर चाट खिलाकर कहे कि दाम दे दो तो क्या करोगे?"

"उससे लड़ूँगा जो वहाँ खिलाने के लिए ले गया हो और दाम देने के लिए मुझे कहता हो, उसको पीटूँगा।"

"इससे दुकानदार को क्या? उसे तो दाम चाहिए। यदि तुम्हारे पास नहीं हैं और कोई तुम्हें कह दे, 'रघुवीर बाबू! चिन्ता नहीं। दाम नहीं हैं तो न सही। तुम्हारे दाम मैं दे देता हूँ। पर एक कार्य मेरा भी कर दो।' तो क्या यह स्वाभाविक नहीं कि तुम कह दो, 'हाँ बताओ।'

"वह कह दे, 'विद्यार्थी यूनियन में वोट उस बाबू को देना, जिसे मैं बताता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम विवश हो जाओगे वोट उसको देकर अपने दाम न दे सकने की झेंप मिटा दोगे।

"बस, कुछ लोगों को डॉ० इन्द्रजीत तैयार कर रहे हैं, जो विद्यार्थी यूनियन में जाकर ऊधम मचाएँगे।"

"तो वहाँ चाट की दुकान थी?"

"उससे भी बढ़िया। चाट का स्वाद इतना अधिक नहीं, जितना कि उसकी दुकान के पकवान का है और तुमको वहाँ का पकवान बनाने का यत्न किया गया है।"

"यह तो मैं समझ गया हूँ, परन्तु भैया, मैं एक बात नहीं समझ सका। हम दोनों इकट्ठे ही यहाँ भरती हुए थे और तुम यहाँ की जानकारी में इतने आगे निकल गए हो।"

"हाँ, और मैं बताऊँ। मैं विद्यार्थी यूनियन की कार्यकारिणी के लिए प्रत्याशी बनने का यत्न कर रहा हूँ।"

"सत्य? पर तुम्हारा इतना परिचय हो गया है क्या?"

"मैं यत्न कर रहा हूँ और प्रगतिशील प्रोफेसर इन्द्रजीत के साथी मेरी सहायता करेंगे।"

"बहुत दुष्ट हो दादा! तुम?'

"नहीं रघुवीर, दुष्ट नहीं हूँ। मैं 'डिप्लोमेसी, खेल रहा हूँ। और देखो तुमको मेरी सहायता करनी चाहिए।"

"कैसे सहायता करूँगा? मेरी तो जान-पहचान का कोई है नहीं।"

"मैं चाहता हूँ कि तुम यूनियन में आ जाओ। उसके सदस्य बन जाओ। मेरे पक्ष में बहुत बढ़िया व्याख्यान दो। तुम व्याख्यान करना जानते हो। यूनियन की सभाओं में बोलने का ढंग सीख लेना।"

"मैं अभी सेकण्ड ईयर में हूँ। मुझे कोई जानता नहीं। साथ ही मेरा ज्ञान अभी बहुत कम है।"

"तुम तैयार हो जाओ। शेष मैं समझ लूँगा।"

"कैसे समझ लोगे?"

"हाथ निकालो।"

रघुवीर ने बायाँ हाथ बाहर निकाला। इस पर सुमित्रानन्दन ने कह दिया, "अरे बायाँ नहीं, दाहिना निकालो।"

रघुवीर ने दाहिना हाथ निकाला तो सुमित्रानन्दन ने हाथ पर हाथ रखकर कहा, "मैं तुम्हारे साथ और तुम मेरे साथ। सौगन्ध खाओ।"

"किसकी सौगन्ध खाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने इष्टदेव की।"

"वे तो बाबा विश्वनाथ हैं।"

"हाँ, बाबा विश्वनाथ की सौगन्ध खाकर कहो कि हम परस्पर सहायता करेंगे।"

"पर मैं डाक्टर इन्द्रजीत के घर नहीं जाऊँगा।"

"अरे छोड़ो उस बात को। उस गन्दी नाली से बचकर रहेंगे। मैं कुछ और कह रहा हूँ।

"मैं तुम्हारा परिचय एक फिफ्थ ईयर के विद्यार्थी से कराऊँगा। उसके कहने से ही मैं यूनियन में आगे बढ़-चढ़कर भाग लेने लगा हूँ।"

"कौन है वह?"

"एक है, राधेश्याम। वह ठीक वही बात कहता है जो पिता जी एक दिन गाँव में कह रहे थे। उसने एक कथा सुनाई थी। एक बार देवासुर-संग्राम में देवताओं की पराजय हुई। असुरों की विजय से बहुत-से देवता देव-पक्ष को छोड़कर असुर-पक्ष में चले गए थे।

"देवता ब्रह्मा जी के पास गए और वहाँ पूर्ण स्थिति पर विचार होने लगा। ब्रह्मा जी का यह कहना था कि विजय करने से ही विजय प्राप्त होती है। इस कारण विजय प्राप्त करने की शक्ति उत्पन्न करो।

"देवताओं का प्रश्न था कि कैसे विजय प्राप्त करे? हमारी तो संख्या बहुत कम हो गई है। हम दुर्बल और निर्धन हो गए हैं। असुर सब समृद्ध और उर्वरा भूमि के स्वामी बन गए हैं।

"ब्रह्मा ने कहा, 'तुम भी यह सब प्राप्त कर सकते हो। सागर-मंथन करो। सागर के मंथन से अमृत निकलेगा। उससे संख्या और बल में वृद्धि होगी। तब असुरों को पराजित करने से विजय होगी और फिर सुख, शन्ति और कल्याण का मार्ग खुल जाएगा।' "

रघुवीर हँस पड़ा और बोला, "सागर-मंथन के लिए भी तो साधन चाहिए। नहीं तो सागर में ही डूब मरोगे।"

"इसी में तो तुम्हारी सहायता चाहता हूँ। और भी कई लोगों की सहायता की आवश्यकता है। तब देवता एक ओर लगेंगे और असुर दूसरी ओर। हम यूनियन रूपी सागर का मंथन करेंगे। इससे अमृत प्राप्त होगा और फिर युद्ध होगा और विजय होगी।"

युद्ध और विजय से रघुवीर को जोश आ गया और वह कुर्सी से खड़ा हो कहने लगा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

"बस ठीक है। अभी धैर्य रखो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 5 ::

रघुवीर और सुमित्रानन्दन को गाँव से विश्वविद्यालय में आए हुए दो मास हो चुके थे। डॉ० इन्द्रजीत के क्वार्टर की घटना ने रघुवीर के लिए गुरु जी के कथन पर विचार करने का अवसर उपस्थित कर दिया था। उसे प्रोफेसर साहब के घर में व्यभिचार करते लोग पशु समझ आए थे। उसे अपने बचपन की एक घटना स्मरण हो आई थी, जिसका वर्णन उसने सुमित्रानन्दन के सम्मुख किया था। रघुवीर ने कहा था कि डाक्टर इन्द्रजीत के कमरे का दृश्य देख उसे एक पेड़ के नीचे कुत्ते-कुतिया का समागम करना स्मरण हो आया था।

सुमित्रानन्दन बात को समझता था और उसने उसका ध्यान इस घटना से हटाकर विद्यार्थी यूनियन की ओर ले जाने का यत्न किया था।

रघुवीर डॉ० इन्द्रजीत के क्वार्टर की घटना को विस्मरण कर अपनी पढ़ाई के कार्य में लीन हो गया।

श्रेणी में वह इतिहास के घण्टे में डॉ० इन्द्रजीत को धारा-प्रवाह भारत के इतिहास पर बोलते सुनता। वह नोट-बुक पर नोट लिखता और डाक्टर साहब को धारा-प्रवाह बोलते सुन वह भूल जाता था कि उसके सामने दो टाँगों वाला पशु खड़ा है।

इतिहास के उपरान्त वे प्रोफेसर धर्मवीर से अँग्रेज़ी पढ़ते थे। उन दिनों वह लड़कों की टेनिसन की 'पोयट्री बुक' पढ़ाता था।

रघुवीर इस प्रकार कालेज की पढ़ाई करता हुआ अपने जीवन में लीन हो रहा था, परन्तु वह अधिक दिन तक लीन रह नहीं सका। एक दिन ग्यारह बजे पढ़ाई का कार्य समाप्त कर वह पुस्तकालय में एक पुस्तक लौटाने और कोई अन्य पुस्तक लेने गया तो पुस्तकालय में प्रवेश करते ही उसे ऐसा समझ आया कि कोई उसका पीछा करता हुआ उसके साथ ही पुस्तकालय में प्रविष्ट हुआ है। उसने ध्यान से उसको देखा तो समझ गया कि वह लड़का उनमें से एक है, जो इन्द्रजीत के कमरे में बैठे थे।

रघुवीर ने उसे पहचाना और फिर मुख दूसरी ओर कर पुस्तकाध्यक्ष के काउण्टर पर जा पुस्तक वापस करने लगा। वहाँ पुस्तक वापस कर अपने कार्ड पर मोहर लगवा वह इतिहास पर कोई पुस्तक देखने उधर चला गया, जिधर इतिहास की पुस्तकों की आलमारियाँ थीं। वहाँ से वह 'गुप्तकाल' पर एक पुस्तक ले, एक मेज़ पर बैठ पढ़ने लगा। उसने पुस्तक खोली ही थी कि वही लड़का उसकी मेज़ के समीप एक कुर्सी खिसकाकर बैठ गया और रघुवीर के मुख पर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर ने उससे पूछ लिया "इधर क्या देख रहे हो? अपना काम करो।"

"अपना काम ही तो कर रहा हूँ। तुम बहुत सुन्दर हो।"

"तो फिर तुम्हें क्या?"

"मैं यह जानने आया हूँ कि तुम उस दिन वहाँ से लौट क्यों आए, थे?"

"कहाँ से?"

"प्रोफेसर इन्द्रजीत के क्वार्टर से।"

"ओह, तुम कैसे जानते हो कि मैं डाक्टर साहब के क्वार्टर पर कभी गया था?"

सामने बैठा लड़का मुस्कराया और बोला, "मैं वहाँ था।"

"कहाँ?"

"डाक्टर साहब के क्वार्टर पर।"

"वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया था। क्वार्टर खाली देख मैं लौट आया था।"

वह लड़का पुनः मुस्कराया और बोला, "तुमने कमरे का द्वार खोला तो था। वहाँ हम थे।"

"हाँ, कमरे का द्वार खोला था, परन्तु उस कमरे में कुछ कुत्ते-कुतियों को परस्पर समागम करते देख द्वार बन्द कर चला आया था। कोई मानव वहाँ दिखाई नहीं दिया।"

सामने बैठा लड़का अपने को कुत्ता कहा जाता सुन क्रोध से लाल हो उठा। रघुवीर का भी उस दिन का लज्जाजनक दृश्य स्मरण आने पर, मुख लाल हो गया था। उसने मन से बात निकालने के लिए पुनः ध्यान पुस्तक की ओर कर लिया। एक-दो मिनट तक सामने बैठा लड़का मौन रहा और फिर बोला, "मैं तुमसे एक विशेष उद्देश्य से मिलने आया हूँ।"

"क्या उद्देश्य है?"

"पर तुम मुझको कुत्ता अथवा कुतिया समझते हो। इससे मैं विचार करने लगा था कि तुमसे बात कहूँ अथवा नहीं?"

"तो मत कहो। मुझे तुम्हारी बात में रुचि नहीं है।"

"यह इसलिए कि तुम अभी बालक मात्र हो। तुममें यौवन अभी प्रस्फुटित हुआ नहीं।"

"तुम ठीक समझते हो। जिस यौवन की बात तुम कर रहे हो, मैं उसे पशुपन समझता हूँ।"

"देखो रघुवीर! गाली मत निकालो। नहीं तो यहीं मलीदा बना दूँगा।"

"बहुत गड़बड़ की तो लायब्रेरियन से शिकायत कर दूँगा।"

"और वह क्या करेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें विश्वविद्यालय से निकलवा देगा।"

"तुम अभी बच्चे हो। सुनो, मैं तुम्हें विद्यार्थी यूनियन का सदस्य बनाने आया हूँ। मुझे तुम्हारे मित्र सुमित्रानन्दन ने भेजा है।"

सुमित्रानन्दन का नाम सुन रघुवीर ने ध्यान से सामने बैठे लड़के का मुख देखना आरम्भ कर दिया। उसे स्मरण हो आया था कि सुमित्रानन्दन ने उसे विद्यार्थी यूनियन का सदस्य बनने के लिए कहा था। उसने पूछा, "क्या नाम है आपका?"

"अब इन्सान बने हो। यही बात हमारे यूनियन के अध्यक्ष बता रहे थे।"

"क्या बता रहे थे?"

"कि तुम सुमित्रानन्दन की वफादार पत्नी हो और उसका नाम लेकर बात करूँगा तो तुम निष्ठावान् पत्नी की भाँति सभ्यतापूर्वक बात करोगे।"

रघुवीर को सब कुछ अत्यन्त घृणित प्रतीत होने लगा। उसने कहा, "देखो जी! मैं तुम्हारी यूनियन का सदस्य नहीं बनूँगा।"

"सुमित्रानन्दन के कहने पर भी नहीं?"

"वह मुझसे अपने आप बात कर लेगा। अब तुम यहाँ से चल दो।"

"और न जाऊँ तो क्या करोगे?"

"तुम्हारे साथ यहीं कमरे में भिड़ जाऊँगा।"

रघुवीर ने सामने रखी पुस्तक बन्द कर दी और उठ खड़ा हुआ। वह किंचिन्मात्र संकेत पाने पर प्रथम वार कर देने का विचार बना बैठा था। वह नहीं जानता था कि पीछे क्या होगा, परन्तु वह लड़ाई में पीटे जाने की प्रतीक्षा करने का विचार नहीं रखता था।

एक बात रघुवीर के मन में थी; वह यह कि ये वासनाओं में लिप्त पशु भला क्या लड़ेंगे? उसका मन कह रहा था कि यदि पहला मुक्का ही उसने कसकर लगाया तो वह भाग खड़ा होगा।

परन्तु मामने बैठे छात्र ने लड़ने के स्थान पर उठकर चुपचाप वहाँ से चल देना उचित समझा।

उसके चले जाने के उपरान्त रघुवीर ने बैठ पुनः पुस्तक खोल ली, परन्तु वह अपना मन पढ़ने में नहीं लगा सका। उसे सुमित्रानन्दन पर रोष आ रहा था कि उसने इस पशु को उसके पास क्यों भेजा है? कुछ विचारकर उसने पुस्तक बन्द की, उसे पुस्तकाध्यक्ष को देकर अपने कार्ड पर निकलवा ली और अपने कमरे को चल पड़ा।

आज वह सुमित्रानन्दन से लड़ने का विंचार कर रहा था। वह कमरे में पहुँचा तो सुमित्रानन्दन वहाँ बैठा कुछ लिख रहा था। उसने कमरे में प्रवेश करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही कहा, ''दादा, आज तुमसे लड़ूँगा।''

''क्यों? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?'' सुमित्रानन्दन ने अपना ध्यान सामने रखे कागज से ऊपर उठा पूछ लिया।

''तुमने किसी पशु को मेरे पीछे किसलिए लगा दिया है।''

''कौन है पशु?''

''पुस्तकालय में एक मिला है। कहता था कि तुम्हारे पति सुमित्रानन्दन ने मुझे यूनियन का सदस्य बनाने के लिए भेजा है।''

''क्या नाम बताया था?''

''नाम उसने नहीं बताया। मैंने पूछा तो था, परन्तु उसने मुझे अश्लील बातें कहनी आरम्भ कर दीं।''

''क्या कहता था?''

''बताया तो है, कि मुझे तुम्हारी निष्ठावान् पत्नी कहता था।''

सुमित्रानन्दन ने परेशानी अनुभव करते हुए कहा, ''रघुवीर भैया! अवश्य कोई पागल रहा होगा। तुम उसके मुख पर एक घूँसा लगा देते तो तुमको अभी हलवाई की दुकान पर ले चलकर रसगुल्ले खिलाता।''

''मैं इसी मतलब के लिए कुर्सी से उठा था, परन्तु वह बिना एक भी शब्द कहे पुस्तकालय से बाहर चला गया।''

''तो यह बात पुस्तकालय में हुई है?''

''हाँ!''

''तो वह अवश्य यूनियन का सेक्रेटरी होगा। मैंने उसे कहा था कि वह तुमको यूनियन का सदस्य बना ले। वह कहता था कि वह तुम्हें जानता है। तुम पुस्तकालय में प्रायः आते रहते हो। यूनियन का कार्यालय पुस्तकालय के द्वार पर कमरे में ही तो है?''

''पर तुमने उससे कहा क्यों? वह उनमें से एक है, जो उस दिन डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर में पशुपन कर रहे थे।''

''ओह! तो वह भी उनमें था?''

''हाँ! उसी ने मुझे गाली दी थी और कहा था कि मैं भीतर क्यों नहीं आ जाता?''

''भूल हो गई है, भैया! अब मैं स्वयं फार्म लाकर भरवाऊँगा।''

''मैं वहाँ का सदस्य बनना नहीं चाहता।''

''क्यों?''

''जहाँ का सेक्रेटरी ऐसा है, जैसा वह, वहाँ का मैं सदस्य बनकर क्या करूँगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर उत्तेजित अवस्था में था। इस कारण सुमित्रानन्दन कुछ देर तक मौन रहा। कुछ विचारकर उसने कह दिया, "भैया रघुवीर! दुष्ट आदमी तो दुष्टता की बातें विचार किया करते हैं। क्या उनकी बातों में आकर हम परस्पर लड़ पड़ेंगे?"

"पर मैं तुमसे तो नहीं लड़ रहा।"

"तब ठीक है। मैं तुमको अपना छोटा भाई मानता हूँ। रही बात विद्यार्थी यूनियन की; मैं भी इसमें पड़ना नहीं चाहता, परन्तु मुझे राधेश्याम जी की समुद्र-मंथन की बात ठीक समझ आई है। एक समय एक-दूसरे के घोर शत्रु अमृत पाने के लोभ में दोनों परस्पर सहयोग देने लगे थे।

"समुद्र-मंथन में दोनों लग गए थे। बस, मैं यही समझता हूँ कि यूनियन में मंथन होगा और असुरों की तुलना में देवताओं को भी मंथन में सम्मिलित करने का यत्न कर रहा हूँ।"

रघुवीर को बात समझ आने लगी। वह मान गया।

:: 6 ::

रघुवीर सदस्य बन गया। सुमित्रानन्दन की एक ही युक्ति ने उसे सदस्य बनने के लिए तैयार कर दिया था। सुमित्रानन्दन ने कहा था कि विद्यार्थी यूनियन में दो प्रकार के लड़के सम्मिलित हैं। एक वे हैं जो डाक्टर इन्द्रजीत के चेले-चाँटे हैं और दूसरे वे हैं जो विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने आए हैं और माता-पिता की गाढ़े पसीने की कमाई को सार्थक करना चाहते हैं।

डाक्टर इन्द्रजीत कम्युनिस्ट है। उसके साथी भी उसी विचारधारा के लोग हैं। ये अपने समुदाय से वचनबद्ध हैं कि ये प्राचीन ढंग के समाज को नष्ट-भ्रष्ट कर इसके स्थान पर अपने ढंग का समाज स्थापित करेंगे। नए ढंग के समाज का एक चित्र रघुवीर इन्द्रजीत के क्वार्टर पर देख आया था। सुमित्रानन्दन का यह भी कहना था, "भले विचार के छात्रों की संख्या यूनियन में बहुत कम है। कम्युनिस्ट इस विचार के लड़कों को यूनियन में सम्मिलित नहीं होने देते और जो हो चुके हैं, उनमें बिहारी, उत्तर-प्रदेशी, बंगाली, मद्रासी के भेद-भाव खड़े कर उन पर शासन करते हैं।"

"मैं इस विद्यालय में शान्ति से पढ़ाई जारी रखने वालों की संख्या अधिक करना चाहता हूँ। ऐसा करने के लिए मैं कम्युनिस्टों में घुस गया हूँ और उनके द्वारा भले विचार के छात्रों को यूनियन में लाने का यत्न कर रहा हूँ।

"देखो, रघुवीर, तुमको मैं जानता हूँ। मैं समझता हूँ कि तुम मेरे विचारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का समर्थन करोगे। इसी कारण तुमको अपनी सहायता के लिए ले जाना चाहता हूँ।''

''पर अपना विचार क्या है? दूसरों से गाली खाना अपना विचार है क्या?''

''नहीं। हम धर्मानुसार जीवन चलाना अपना लक्ष्य समझते हैं। धर्म दो प्रकार के हैं। सनातन और सामान्य। सामान्य धर्म हैं समान परिस्थितियों में समान रूप से पालन करने योग्य कर्तव्य। हम विद्यार्थी हैं, अतः हमारे लिए सामान्य धर्म विद्या ग्रहण करना है। कम्युनिस्ट पार्टी का प्रचार करना हमारा काम नहीं है।''

''पर सौमित्र! इस कार्य के लिए यूनियन में सम्मिलित होने की क्या आवश्यकता है?''

''यह इस कारण कि सरकार ने एक कानून पास कर रखा है कि विद्यार्थी यूनियन के प्रतिनिधि 'एकेडमिक कौन्सिल' में लिये जाएँ। इस प्रकार यूनियन को एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान मिल गया है कि जिससे ये पूर्ण विश्वविद्यालय के जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं।

''मैं इस बात को रोकना चाहता हूँ।''

''पर दादा, विद्यार्थी पढ़ाई की कौन्सिल में बैठें ही क्यों? उनको भला पढ़ाई के विषय में क्या पता है?''

''उनको तो कुछ पता नहीं, परन्तु उनको कठपुतलियों की भाँति नचाने वाले तो विश्वविद्यालय से बाहर बैठे हैं और वे इस विश्वविद्यालय को समाप्त कर देना चाहते हैं।''

''वे कौन हैं?''

''भारत में एक कम्युनिस्ट पार्टी है। वह देश के समाज को विनष्ट कर रूस जैसे समाज का निर्माण करना चाहती है।''

रघुवीर के लिए यह एक बहुत बड़ा ग्रास था। उसको कई नवीन बातों का ज्ञान सुमित्रानन्दन ने कराया था और वह उन बातों को भलीभाँति समझने के लिए मौन हो सुमित्रानन्दन का मुख देखने लगा।

सुमित्रानन्दन ने आगे बताया, ''देखो रघुवीर! तुम नित्य सायं गंगा-स्नान के लिए चले जाते हो। इससे तुम्हें जब मोक्ष मिलेगा तब मिलेगा, परन्तु मैं वही समय ज्ञान-वृद्धि में व्यतीत करता हूँ और दो ही मास में तुम मुझसे पिछड़ रहे प्रतीत होते हो।''

''पर मैं गंगा-स्नान नहीं छोड़ सकता।''

''क्यों?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्नान के साथ वहाँ तैरने का भी तो आनन्द मिलता है और फिर सायंकाल ही तो सन्ध्योपासना का अवसर प्राप्त होता है। यहाँ तालाब तो है, परन्तु गंगा में तैरने का आनन्द पृथक् है।"

सुमित्रानन्दन मुस्कराकर चुप कर रहा। उसने दूसरे दिन यूनियन के कार्यालय से सदस्यता-पत्र लाकर रघुवीर के सामने रख दिया और कहा, 'रघुवीर भैया! यहाँ हस्ताक्षर कर दो।"

इस समय तक रघुवीर ने सुमित्रानन्दन की बातों को मन में पचा लिया था और वह समझ गया था कि डाक्टर इन्द्रजीत के आचार-विचार के लड़कों को दबाकर रखना चाहिए; अन्यथा ये हीनबुद्धि व्यक्ति क्या अनर्थ करेंगे, कहा नहीं जा सकता।

सदस्यता-फार्म के पीछे यूनियन के उद्देश्य लिखे थे और उन उद्देश्यों के नीचे यूनियन के सेक्रेटरी का नाम था—यदुनाथसिंह।

इसके कुछ दिन उपरान्त की बात है। प्रोफेसर इन्द्रजीत प्राध्यापकों के कमरे से निकल कहीं जा रहा था कि सामने से रघुवीर आता दिखाई दिया। प्रोफेसर उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया और मुस्कराते हुए पूछने लगा, "तुम क्वार्टर पर आए नहीं? तुमने कहा था कि आओगे।"

उस घटना को दो मास से ऊपर चुके थे। रघुवीर इन दिनों बहुत कुछ जानकारी प्राप्त कर चुका था। अत: उसने भी मुस्कराते हुए कहा, "सर! मैं वहाँ गया तो था। आपका क्वार्टर खुला था, परन्तु वहाँ कोई भी मनुष्य दिखाई नहीं दिया।"

मनुष्य शब्द सुन इन्द्रजीत खिलखिलाकर हँस पड़ा। यदुनाथसिंह ने उसे रघुवीर से पुस्तकालय में हुए वार्तालाप को सुना रखा था। अत: हँसकर उसने कहा, "तुम भूल रहे हो, रघुवीर! वहाँ मनुष्य तो थे, परन्तु वे अपने प्राकृतिक स्वरूप में थे। सभ्यता के कृत्रिम आवरण को उतार स्वाभाविक प्रकृति की गोद में बैठे थे।

"इसी बात को बताने के लिए तो तुम्हें बुलाया था और मैं तुमको बताना चाहता था कि यूरोप में नई पीढ़ी किस प्रकार प्रकृति की ओर जा रही है और तुम उस अवस्था को देखकर भाग आए थे।"

"परन्तु सर! वे तो वहाँ कुछ ऐसा कर रहे थे जो पशुओं में ही देखा जाता है।"

"देखे जाने की बात छोड़ो। तुम मुझे यह बताओ कि मानव वह कार्य नहीं करते क्या? नहीं करते तो उनके बाल-बच्चे कैसे उत्पन्न हो जाते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''डाक्टर साहब! वहाँ बच्चे उत्पन्न किए जा रहे थे क्या? पुरुष पुरुष के समागम से भी बच्चे उत्पन्न हो सकते हैं क्या?''

''तुम अभी बालक मात्र हो। नई पीढ़ी की बात को समझने के लिए कुछ प्राकृतिक ज्ञान की आवश्यकता रहती है। देखो, मैं तुमको एक पुस्तक पढ़ने के लिए दूँगा। आज आना। उस पुस्तक के पढ़ने से तुम्हारे ज्ञानचक्षु खुल जाएँगे।''

रघुवीर वहाँ जाने से इन्कार करना चाहता था। वह परेशानी में प्रोफेसर साहब का मुख देखने लगा। इस पर प्रोफेसर साहब ने कह दिया, ''देखो, तुम पाँच बजे आना। तब तुमको 'मैन इन नेचर' (मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में) दिखाई नहीं देगा।''

इस पर रघुवीर को बहाना मिल गया। उसने कहा, ''मैं उस समय रिक्त नहीं होता।''

''क्या करते हो उस समय?''

''मैं नित्य गंगा-स्नान के लिए जाता हूँ।''

''उस गदले पानी में स्नान करते हो?''

''आजकल तो जल सर्वथा निर्मल है। वर्षा ऋतु में स्नान के लिए नहीं जाया करूँगा। इस पर भी पूजा-पाठ में वहाँ चित्त लगता है।''

''तुम कहाँ के रहने वाले हो?''

''जिला हल्द्वानी में एक हथियापुर गाँव है।''

''तभी। उस पिछड़े क्षेत्र के रहने वाले को गंगा का जल, जिसमें बीसियों नगरों का मल-मूत्र पड़ा है, निर्मल दिखाई देता है।''

''नहीं प्रोफेसर साहब! ऐसा नहीं है। अपने होस्टल में नल के जल से तो वह अधिक शीतल और स्वच्छ होता है। आपने कभी स्नान किया नहीं?''

''मैं तो उसमें दुर्गन्ध अनुभव करता हूँ। अच्छा, देखो। मैं तुमको वह पुस्तक यदुनाथसिंह के हाथ भेज दूँगा। वह तुम्हें तुम्हारे कमरे में पहुँचा देगा। तुम पढ़कर वह पुस्तक वापस कर देना और यदि कोई बात समझ न आए तो फिर पूछ सकते हो।''

रघुवीर की जान में जान आई। इन्द्रजीत उसका मार्ग छोड़ अपने काम पर चला गया।

उसी रात वह भोजनशाला से सुमित्रानन्दन के साथ कमरे में आया तो यदुनाथसिंह वहाँ आ पहुँचा। सुमित्रानन्दन रघुवीर से डाक्टर इन्द्रजीत की हुई बात सुन चुका था और वह यदुनाथसिंह को देख समझ गया।

''आइए, सेक्रेटरी महोदय! कैसे आए हैं?'' उसने मुस्कराकर पूछा।

''प्रोफेसर साहब ने रघुवीर के लिए एक पुस्तक भेजी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर ने पुस्तक ले ली। दोनों मित्र अपनी-अपनी मेज़ के सामने कुर्सियों पर बैठ गए थे। यदुनाथसिंह रघुवीर के समीप खाट पर बैठ गया। वहाँ तीसरी कुर्सी नहीं थी। रघुवीर ने यदुनाथ की ओर देखे बिना पुस्तक देखनी आरम्भ कर दी। पुस्तक का नाम था 'प्रेजुडिसेज़' (पूर्वग्रह) साढ़े तीन सौ पृष्ठ की पुस्तक थी और बहुत सुन्दर जिल्द में बँधी थी।

''यह तो बहुत बड़ी पुस्तक है। एक सप्ताह तो पढ़ने में लग ही जाएगा।''

''एक सप्ताह ? मैंने यह पुस्तक एक ही रात में पढ़ डाली थी।''

रघुवीर ने मुस्कराते हुए कहा, ''भाई, तुम मन्त्री हो। तुमको पुस्तकें निगल जाने का ढंग आता है। मैं तो निगलने के पूर्व चबाना चाहता हूँ।''

''तब तो पुस्तक से प्रोफेसर साहब को हाथ धो लेने चाहिएँ।''

''क्यों ?''

''पुस्तक को चबा जाओगे तो फिर दोगे कहाँ से ?''

''जैसे तुम निगल जाने के उपरान्त दे देते हो।''

''पर मैं तो समूची ही निगल जाता हूँ और समूची ही बाहर निकाल देता हूँ।''

''अभिप्राय यह कि तुम उससे कुछ लेते-देते नहीं ? फिर पढ़ते किसलिए हो ?''

''उसका भाव ग्रहण कर लेता हूँ।''

''और पुस्तक पीछे भावविहीन हो जाती है क्या ?''

''निर्बुद्धि यदुनाथसिंह इस विवाद को आगे चला नहीं सका और बोला, ''अच्छा, यह बताओ कि कब तक इसे लेने आऊँ ?''

''एक सप्ताह के उपरान्त।''

''इस गति से तो प्रगति हो नहीं सकेगी।''

रघुवीर ने कह दिया, ''होगी तो प्रगति ही; यद्यपि मन्द गति से।''

''एक ही बात है। देखो, दो रेलगाड़ियाँ समानान्तर जा रही पटरियों पर एक ही ओर जा रही हों और एक तीव्र गति से तथा दूसरी मन्द गति से। तो मन्द गति वाली को प्रगति कर रही नहीं कह सकते। उसे पिछड़ना ही कहेंगे।''

''इस पर भी मन्त्री महोदय, वह प्रगति ही होगी। तीव्र गति से जाने वाली गाड़ी पटरी से उतर विनष्ट भी हो सकती है। मन्द गति वाली मंज़िल पर देर से पहुँचेगी अवश्य।''

यदुनाथसिंह ने हाथ पर बँधी घड़ी में समय देखा और कह दिया, ''यह रोचक वार्तालाप फिर करूँगा। अब मुझे काम है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर ने पुस्तक पढ़ी। सुमित्रानन्दन के पास तो समय ही नहीं था। रघुवीर ने उसे पढ़ने के लिए कहा तो सुमित्रानन्दन ने कह दिया, "मेरे पास समय नहीं। तुम संक्षेप में भावार्थ बता देना।"

पाँच दिन में पुस्तक समाप्त हो गई। रात को सोने से पहने रघुवीर ने बताया, 'प्रेजुडिसेज़' पुस्तक किसी मूर्ख की लिखी प्रतीत होती है।"

"क्यों? क्या मूर्खता की बात उसमें लिखी है?"

"लिखा है कि प्रत्येक नवीन विचार प्रगतिमय होता है। वह पुराने की अपेक्षा उन्नत होता है। कारण यह कि नवीन विचार अनुभवों का परिणाम होता है। पुराने त्याज्य हो जाते हैं।

"जो लोग पुरानी बातों पर डटे रहते हैं, उन्हें पूर्वग्रहों से ग्रसित मानना चाहिए। नवीन विचार ही प्रगति के सूचक होते हैं और प्राचीन पूर्वग्रहों का आश्रय।"

"यह तो बहुत ही सरल सत्य है।" सुमित्रानन्दन ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी।

"क्या सरलता है इसमें?"

"नवीन विचार अनुभवों का परिणाम होते हैं।"

"भले ही अनुभव करने वाला प्रोफेसर इन्द्रजीत जैसा जड़बुद्धि हो?"

"वह जड़बुद्धि है क्या?"

"सर्वथा। वह कहता था कि उस दिन वे प्राकृतिक अवस्था में थे। वर्तमान सभ्यता के कृत्रिम आवरण से रहित।

"मैंने जब उनको यह बताया कि उस अवस्था में तो पशुओं का-सा व्यवहार किया जा रहा था तो वे बोले कि मनुष्य भी तो वही कुछ करते हैं। न करते तो बच्चे कैसे उत्पन्न होते?

"मैंने पूछ लिया, तो उस दिन वे लोग बच्चे उत्पन्न कर रहे थे? इस पर वह जड़बुद्धि निरुत्तर हो कहने लगा कि मैं अभी बच्चा हूँ, मुझे यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

"सौमित्र! मैं निश्चय से कहता हूँ कि वह मेरे इस पुस्तक पर संशयों का उत्तर नहीं दे सकेगा।"

"ओह तो तुम बच्चे नहीं हो?"

"दादा! बच्चा तो हूँ, परन्तु गुरुजी का शिष्य हूँ और उन्होंने एक बात बताई है कि बुद्धि परिमार्जित करने से आयु की सीमा पार की जा सकती है।"

"यह कैसे परिमार्जित होती है?"

"मेरे साथ गंगा-स्नान करने चला करो तो तुम भी सीख जाओगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर व्यायामशाला छोड़नी पड़ेगी।"

"नहीं, यदि तुम चाहो तो मैं व्यायामशाला से छुट्टी पाने के उपरान्त तुमको वहाँ ले चलूँगा। वहाँ गंगाजी में पन्द्रह मिनट तैर लिया करोगे तो व्यायाम का फल वहाँ ही पा जाया करोगे।"

"तुम यहीं बता दो।"

"जो बात करने की है, वह बताने से कैसे आ जाएगी? पुस्तकें पढ़ने का फल व्यायाम द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार बुद्धिमार्जन करने से ही मार्जित होगी, बातों से नहीं हो सकती।"

"अच्छा, पहले एक-दो दिन चलकर देखूँगा।"

"हाँ, और देखो, मैं यह बताता हूँ कि जिनकी बुद्धि मलिन है, उनके अनुभव मिथ्या होते हैं। वे प्रगति की ओर नहीं, अगति की ओर ले जाने वाले होते हैं।

"एक दिन गुरुजी ने बताया था कि मस्तिष्क, जिसे अँग्रेज़ी में 'ब्रेन' कहते हैं, दो मुख्य भागों का बना है। एक भाग कहलाता है मन। इसे 'माइण्ड' कहते हैं। इसका कार्य है ज्ञानेन्द्रियों के अनुभवों को प्राप्त करना, उनसे निर्मित संस्कारों को सुरक्षित रखना और फिर कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य कराना।

"गुरुजी का कहना था कि मस्तिष्क में एक भाग है बुद्धि। बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों द्वारा लाए गए अनुभवों का विश्लेषण करती है और उनको ठीक अथवा गलत मान उन पर उचित कार्य का निर्णय करती है।

"जिनकी बुद्धि मलिन होती है, वे ज्ञानेन्द्रियों के अनुभवों का अर्थ गलत समझकर उन पर गलत प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। इससे गलत कार्य होने लगते हैं। अत: ज्ञान की ठीक प्रतिक्रिया तो निर्मल बुद्धि ही उत्पन्न करती है।"

"पर क्या पिताजी तुमको ये सब बातें बताते थे?"

"हाँ।"

"मुझे उन्होंने कभी नहीं बताया।"

"तुम्हारी इस प्रकार की बातों को जानने में रुचि नहीं थी। तुम एक घण्टा प्रातः और एक घण्टा सायं व्यायाम में व्यतीत करते थे और वे मुझे लेकर रामगंगा के तट पर घूमा करते थे।

"जब हम लखनऊ में हायर सेकेण्डरी की परीक्षा दे रहे थे तो वहाँ गुरुजी के एक परिचितं स्वामी निखिलानन्द मिले थे। उनसे मेरा परिचय हो गया था। पिछले वर्ष पहले ही दिन मैं गंगास्नान करने गया तो वहीं स्वामी जी मिल गए। उन्होंने ही बुद्धि निर्मल करने की विधि बताई है और मैं वहाँ गंगा की रेत पर बैठ अभ्यास किया करता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''देखो रघुवीर! मैं प्रोफेसर इन्द्रजीत को एक बहुत ही विद्वान् प्राध्यापक मानता हूँ। इसी कारण उससे कभी यूनियन के कार्यालय में मिलता हूँ तो अनेकानेक विषयों पर वार्तालाप किया करता था।

''उस दिन तुमने उनके क्वार्टर के दृश्य का वर्णन किया तो मुझे पहले तो यह समझ आया कि तुमको किसी प्रकार का भ्रम हो गया था। पीछे यदुनाथसिंह ने मुझे समझाया था कि वे यौवन प्राप्त कर चुके हैं और यदि उसके दबाव को कम न करें तो उनका मन पढ़ाई की ओर नहीं लगता।

''मैंने जब उसके कथन पर सन्देह प्रकट किया तो उसने मुझे उनकी गोष्ठी में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दे दिया। मैं तैयार नहीं हुआ तो उसने मुझे भी कहा कि मुझे तो एक पत्नी अपने कमरे में ही मिली हुई है। मैंने उसके कथन का बलपूर्वक प्रतिवाद किया तो वह चुप तो कर गया, परन्तु उसे मेरे कहने पर विश्वास नहीं आया।

''परन्तु एक बात तो है कि उसकी बात सुन मेरा मन विचलित हो उठा था।''

''दादा! इन लोगों से मेल-जोल बन्द करो। नहीं तो भारी अनिष्ट होने की सम्भावना है।''

सुमित्रानन्दन कुछ देर तक विचारकर बोला, ''पर मुझे पिताजी की एक बात स्मरण आती रहती है। कहते थे कि मनुष्य का ओज उसकी अपनी पत्नी और सन्तान के लिए उसके पास धरोधर है और यदि मैं इसका नाश करूँगा तो उनसे घोर अन्याय करूँगा।

''मैं इसी बात को स्मरण कर अपने ऊपर नियन्त्रण कर लेता हूँ। यह तुमको विदित ही है कि मेरी सगाई हो चुकी है और मैंने अपनी होने वाली पत्नी को देखा और पसन्द किया है। जब भी मेरा मन विचलित होने लगता है, मुझे पिताजीकी बात स्मरण हो आती है और मेरे सामने दुर्गा; याचना के भाव में सजल नेत्रों से खड़ी मुझे दिखाई देने लगती है।''

:: 7 ::

इस पर रघुवीर को एक बात सूझ पड़ी। उसने पूछ लिया, ''प्रोफेसर इन्द्रजीत का विवाह हुआ है अथवा नहीं?''

''मैंने यदुनाथसिंह से पता किया था। वह कहने लगा कि विवाह तो उनके विलायत जाने से पहले ही हो चुका था, परन्तु उनकी अपनी पत्नी से बनती नहीं। वे कहा करते हैं कि वह बूढ़ी हो चुकी है। इस बात से मुझे समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया है कि कहीं मैंने भी वही मार्ग स्वीकार कर लिया तो मेरी भी दुर्गा से नहीं बन सकेगी। इस कारण मैं प्रोफेसर इन्द्रजीत के क्वार्टर की ओर से गुजरता भी नहीं।''

''परन्तु दादा, तुम इनकी संगत छोड़ क्यों नहीं देते?''

''रघुवीर, इस कुकृत्य से भी अधिक एक अन्य कुकृत्य ये कर रहे हैं। वह है कम्युनिज़्म का विश्वविद्यालय में प्रचार। यह मैं नहीं चाहता और मैं इनसे मेल-मुलाकात रखता हूँ, जिससे उनके विरोधी उनके द्वारा ही भरती करा सकूँ।''

''हमारी पाक्षिक मीटिंग आगामी शनिवार को होगी और मैं तुमको आगे लाना चाहता हूँ। तुम उस यूनियन के सदस्यों के नेता बन जाओगे जो मैंने कम्युनिज़्म के विरोध के लिए वहाँ एकत्रित किए हैं।''

''तुम कम्युनिस्टों के विपरीत क्यों हो?''

''इसलिए कि यह देशद्रोही रूस अथवा चीन के दास निर्माण कर रहे हैं। एक मिस्टर द्विजेन्द्र मण्डल हैं। वे डी०एम० के संकेत से स्मरण किए जाते हैं। उसे वे अपने नेता के नाम से आगे लाना चाहते हैं। वह एक बहुत ही प्रभावशाली वक्ता है। हमारे पास अभी उसकी तुलना का कोई वक्ता नहीं है।''

निश्चित दिन यदुनाथसिंह पुस्तक लेने रघुवीर के कमरे में मध्याह्नोत्तर के समय आया। यह समय होता था, जिस समय रघुवीर और सुमित्रानन्दन कालेज में लिये नोट्स को अपनी कापियों में विस्तारपूर्वक लिखा करते थे। इस कारण रघुवीर को यदुनाथ का इस समय आना रुचिकर नहीं लगा। अत: उसने उसके आते ही पुस्तक निकाल उसे पकड़ा दी।

यदुनाथ ने पूछ लिया, ''कैसी लगी है यह पुस्तक?''

''इस समय हम पढ़ाई कर रहे हैं। फिर कभी मिलेंगे तो बताऊँगा।''

''तो ऐसा करो कि आज सायंकाल सात बजे भोजन के समय से पूर्व यूनियन के कार्यालय में आ जाना। प्रोफेसर साहब भी वहाँ होंगे। उनसे ही बात कर लेना। एक अन्य विषय पर भी बातचीत हो रही है।''

रघुवीर ने विचार किया और सुमित्रानन्दन से पूछा, ''दादा चलोगे?''

''मैं तो वहाँ उस समय जाता ही हूँ।''

''तब ठीक है। मुझे गंगाघाट से रिक्शा में आना पड़ेगा। मैं वहाँ से ठीक सात बजे अवकाश पाता हूँ। सवा सात तक यहाँ पहुँच जाऊँगा।''

यदुनाथ गया तो दोनों पुन: अपना लिखने का कार्य करने लगे। पौने पाँच बजे काम समाप्त कर दोनों अपने-अपने मनोरंजन के लिए चले गए। सुमित्रानन्दन व्यायामशाला को और रघुवीर गंगातट को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन ने कहा था कि व्यायाम के उपरान्त वह एक स्थान पर जाता है, जहाँ वह नई-नई बातें सीखता है। उसका अभिप्राय यूनियन का कार्यालय ही था।

रघुवीर ठीक सवा सात बजे यूनियन के कार्यालय में पहुँचा तो आठ-दस विद्यार्थी और डाक्टर इन्द्रजीत बैठे गरमा-गरम वाद-विवाद कर रहे थे।

इन्द्रजीत ने रघुवीर को आते देखा तो उसे संकेत में अपने समीप बुला एक कुर्सी पर बैठा लिया। डाक्टर साहब ने वहाँ बैठे लोगों को कहा, ''हमारे एक नए 'रिक्रूट' हैं।''

सबने रघुवीर के सुकुमार मुख को देखा तो सन्तोष अनुभव किया। डाक्टर साहब ने बात जारी रखते हुए कहा, ''आज इस विश्वविद्यालय का 'रेड लेटर डे' है। दिल्ली में राज्यसभा ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में यह विधेयक स्वीकार कर लिया है और इसके नाम से हिन्दू शब्द उड़ा दिया जाएगा। अब इसका नाम *मदनमोहन मालवीय विश्वविद्यालय* होगा।''

यदुनाथ ने कह दिया, ''अभी तो बात लोकसभा में जानी है। वहाँ पारित होने के उपरान्त ही यह चल सकेगी।''

प्रोफेसर साहब ने कहा, ''वहाँ भी पारित हो जाएगी। वहाँ भी कांग्रेस का बहुमत है और यदि 'व्हिप' जारी हो गया तो पारित होने में सन्देह ही नहीं। यदि इस समय पण्डित नेहरू जीवित होते तो कोई चूँ भी न करता।''

अब सुमित्रानन्दन ने पूछा, ''प्रोफेसर साहब, उत्तर प्रदेश के कुछ समाचार पत्र इसके विपरीत आन्दोन्लन चला रहे हैं।''

''उनकी कौन सुनता है ? कुछ जनसंघी हैं जो अपने हिन्दू होने का ढोंग रच रहे हैं।''

''मुझे भय है कि पण्डित मालवीयजी की आत्मा उनको प्रोत्साहन दे रही है।''

''कहाँ है वह ? मालवीयजी मर गए तो समाप्त हो गए। सन् 1916 और आज सन् 1965 के बीच उनन्चास वर्ष का काल व्यतीत हो चुका है। आधी शताब्दी के लगभग हो चुकी है। प्रथम तो उनकी आत्मा कहीं है नहीं और यदि है तो उस बूढ़ी आत्मा की बात कौन सुनेगा ?

एकाएक प्रोफेसर साहब ने बात बदल दी। उसने रघुवीर को सम्बोधन कर पूछ लिया, ''क्यों रघुवीर, मेरी भेजी पुस्तक पढ़ी है ?''

रघुवीर बिना बुलाए बात न करने का निश्चय किए हुए था। यद्यपि वह हिन्दू शब्द के विवाद को सुन रहा था और गंगातट पर भी स्वामी निखिलानन्दजी की कुटी में इसकी चर्चा थी। इस पर भी वह वहाँ मौन था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु अब सीधा प्रश्न किए जाने पर उसे उत्तर देना पड़ा। उसने कहा, ''जी, पूर्ण पुस्तक पढ़ी है औ र स्वभाववश पढ़नेवाली पुस्तक के 'नोट्स' ले लिये हैं। इस पुस्तक के विषय में अन्त में मैंने अपनी नोट-बुक पर यह टिप्पणी दी है कि लिखने में समय, स्याही और परिश्रम तथा कागज़ व्यर्थ गँवाया गया है। यह पुस्तक किसी मूर्ख ने मूर्ख पाठकों के लिए ही लिखी है।''

''ओह!'' डाक्टर साहब के मुख से यह शब्द अनायास ही निकल गया। सब इस निर्भीक बात पर विस्मय में रघुवीर का मुख देखने लगे। यदुनाथ ने बात सबको समझाने के लिए कह दिया, ''डाक्टर साहब ने, हैरी डिकेन्स की पुस्तक 'प्रेजुडिसेज़' रघुवीर को पढ़ने के लिए दी थी और उसी पुस्तक के विषय में रघुवीर जी कह रहे हैं।''

अब डाक्टर इन्द्रजीत ने पूछ लिया, ''क्या मूर्खता की बात है उसमें?''

''सर! उसमें निष्कर्ष यह निकाला गया है कि नवीन सदा प्राचीन से श्रेष्ठ होता है और नवीन को छोड़ प्राचीन से चिपटे रहने वाले पूर्वग्रहों से ग्रसित कहे जाते हैं।''

''और यह मूर्खता की बात है?''

''जी! एक पाँच वर्ष का बालक साठ वर्ष के अनुभवी व्यक्ति से अधिक अनुभवी माना जाएगा? बालक एक नवीन प्राणी है और साठ वर्ष का अनुभवी प्राचीन।

''साथ ही आज मैं हूँ और आप हैं। दोनों की आयु में दस वर्ष का अन्तर है इस कारण मेरी बात ठीक और आपकी बात गलत?''

इस पर सब उपस्थित हँसने लगे। प्रोफेसर अनायास बोल उठा, ''वाह रे, बुद्धिमान मेरा पढ़ा-लिखा और विलायत से पाई मेरी शिक्षा व्यर्थ हो गई।''

''सर! मैं यही तो कह रहा हूँ कि विद्या और अनुभव पृथक् बात है और पुराना और नवीन पृथक् बात। नवीन सदा ही प्रगतिशील होगा, यह गलत बात है।''

''तो ठीक क्या है?''

''जो विद्वान् बुद्धिमान् और विवेकी मनुष्य कहें, वही ठीक है और जो विवेकहीन, अनपढ़ और मूर्ख कहें, वह गलत है।''

''देखो, रघुवीर! आज से पचास वर्ष पूर्व जब इस विश्वविद्यालय का नाम हिन्दू विश्वविद्यालय रखा गया था, तब हिन्दू मुसलमानों की प्रतिस्पर्धा चल रही थी। आज स्वतन्त्र राष्ट्र है। हम धर्म-निरपेक्ष हैं और हम हिन्दू-मुसलमान के पचड़े में फँसे रहना नहीं चाहते। इस कारण आज यह कहना कि इसके नाम में हिन्दू रहे, एक पिछड़े काल की बात है और इसका नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालवीयजी के नाम पर रखा जाए तो यह नवीन काल की बात है।''

''डाक्टर साहब, घटनाओं का गलत वर्णन किसी बात को सिद्ध नहीं करता। सुनिए, आपने आधे ही मिनट में कितनी बातें गलत कह दी हैं।''

''एक तो यह कि हम धर्म-निरपेक्ष हैं। संसार में धर्म-निरपेक्ष कोई नहीं रह सकता। धर्म से पृथक् तो अधर्म ही है। धर्म से तटस्थ अधर्मयुक्त ही होगा।

''दूसरी बात आपने कही कि हिन्दू-मुसलमानों की प्रतिस्पर्द्धा मिट चुकी है। यदि मिट गई है तो पाकिस्तान ने आक्रमण क्यों किया है और क्या यह सत्य नहीं कि वे कश्मीर, जहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक है, को पाकिस्तान में मिलाना चाहते हैं। क्या यह सत्य नहीं कि पाकिस्तान में हिन्दुओं की नागरिकता दूसरे दर्जे की है। श्रीमान् यह मुसलमान और गैर-मुसलमान की समस्या तो विश्वव्यापी है। अपनी आँखें मूँदने से समस्या मिट गई, कैसे समझी जा सकती है?

''तीसरी बात जो आपने गलत कही है, वह यह है। हिन्दू तो इस देश में रहते हैं और उनके नाम को मिटाने के पहले अपना नाम बदल लीजिए। इन्द्रजीत तो हिन्दुआना नाम है या फिर किसी मुसलमान का इन्द्रजीत नाम रख दीजिए।''

''तुम तो साम्प्रदायिकता फैलाना चाहते हो।''

''डाक्टर साहब, नहीं। साम्प्रदायिकता आप फैला रहे हैं। पहले अलीगढ़ विश्वविद्यालय से मुस्लिम नाम हटाया जाए तो हिन्दू भी हिन्दू नाम हटा लेने पर विचार कर लेंगे।''

''वह भी हटेगा।''

''जैसे विवाह सम्बन्धी कानून मुसलमानों के विषय में बन रहा है? हिन्दू कोड बिल पास हुए आज ग्यारह वर्ष हो चुके हैं।''

''अधीर होने की आवश्यकता नहीं। हो जाएगा। वैसे तो मैं समझता हूँ कि यह हमारे लिए एक वरदान ही सिद्ध हो रहा है। एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने में बाधा तो है नहीं। बाधा है विवाह की रस्म की। यह स्थिति ठीक ही है।''

इस पर सुमित्रानन्दन ने पूछ लिया, ''सर, तो यह प्रगति है कि बिना विवाह के सम्बन्ध बनाए जाएँ और विवाह न किया जाए?''

''बिल्कुल।'' इन्द्रजीत ने जोश में कह दिया।

इस पर एक अन्य विद्यार्थी ने कह दिया, ''और यदि कोई स्त्री बिना विवाह किए सम्बन्ध बनाने पर राजी न हो तो सहयौन सम्बन्ध बनाए जा सकते हैं।'' इस पर सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन समझ रहा था कि उसकी हँसी उड़ाई जा रही है और उसके रघुवीर से कल्पित सम्बन्ध की ओर संकेत किया जा रहा है। परन्तु रघुवीर ने समझा कि वह लड़का प्रोफेसर साहब पर कटाक्ष कर रहा है। इस कारण सब हँस रहे हैं।

प्रोफेसर समझ रहा था कि उसके एक साथी छात्र ने रघुवीर की हँसी उड़ाई है। इस कारण उसने रघुवीर से कह दिया, ''विवाह की बात छोड़ो, 'शीघ्र ही विवाह की प्रथा की आवश्यकता ही नहीं रहेगी और जब तक तुम विवाह करने योग्य होगे, पुरुष और स्त्री अबाध सम्बन्ध रख सकेंगे।''

''ठीक है। तब की बात तब देख लेंगे, परन्तु यह निश्चय है कि मैं रघुवीर हूँ आप प्रोफेसर इन्द्रजीत हैं। किसी मुसलमान का बेटा ऐसा नाम नहीं रखेगा।''

''बहुत भयंकर जीव हो तुम!''

''इसमें भयंकरता क्या है?''

''तुम मुसलमानों को इन्द्रजीत नाम रखने के लिए कह रहे हो। इससे तो साम्प्रदायिकता फूट पड़ेगी।''

''और यदि मैं अपना नाम रहमान अली रख लूँ तो क्या होगा?''

''होगा क्या? तुम प्रगतिशील माने जाओगे।''

''तब तो ठीक है प्रोफेसर साहब, पहले आप अपना नाम बदलिए और प्रगतिशील होने का तथा पूर्वग्रहों से मुक्त होने का प्रमाण दीजिए।''

इतने में भोजनशाला में खाने के लिए जाने का समय हो गया। सब उठ खड़े हुए। भोजनशाला में पहुँच सुमित्रानन्दन ने रघुवीर से पूछ लिया, ''तुमने हिन्दी का झगड़ा क्यों खड़ा कर दिया था!''

''दादा, मैंने हिन्दी का झगड़ा नहीं चलाया। मैंने तो हिन्दू का झगड़ा चलाया था।''

''वह तो ठीक था, परन्तु देखो, यहाँ कल एक बहुत बड़ी सभा होने वाली है। कल पूर्ण उत्तर प्रदेश में सभाएँ होंगी और तुम्हारे आने से पूर्व यह विचार हो रहा था कि उस सभा में गड़बड़ मचाई जाए।''

''कौन गड़बड़ मचाएगा?''

''यदुनाथ। वह सभा में यह कहेगा कि छात्रों में यूनियन ही छात्रों के विषय में बोलने का और जलसा-जलूस निकालने का अधिकार रखती है।''

''तो यूनियन इसी काम के लिए बनाई गई है कि हिन्दू नाम मिटाया जाए?''

''हाँ, देखो तुम तो आज ही यहाँ आए हो और पहले ही दिन तुम झगड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़े हो। मैं नित्य इनकी बातें चुपचाप सुनता रहता हूँ और इनके भेद की बातें बताता रहता हूँ।''

''किनको बताते रहते हो?''

''जो लोग कल की सभा कर रहे हैं वे अपना पूर्ण कार्यक्रम मुझे बताते नहीं। वे मुझ पर यूनियन का निष्ठावान् सदस्य होने का सन्देह करते हैं, परन्तु मैं उनको यूनियन की बातें बताता रहता हूँ।''

''सौमित्र!'' रघुवीर ने गम्भीर हो कहा, ''तुम एक गम्भीर खतरा मोल ले रहे हो। यूनियन वालों को यदि पता चला कि तुम उनकी बातें किसी बाहरी व्यक्ति को बताते हो तो वे इसका बदला भी ले सकते हैं।''

''परन्तु करूँ क्या? कोई अन्य यह काम करने वाला भी तो नहीं है।''

''देखो, मैं तो पुनः यूनियन के कार्यालय में जाऊँगा नहीं और कदाचित् आज डाक्टर इन्द्रजीत को निरुत्तर करने के कारण मुझे पुनः वहाँ का निमन्त्रण भी नहीं मिलेगा। अतः तुम मुझको बताने योग्य बता दिया करो और मैं उनको बता दिया करूँगा, जिनको तुम बताना चाहते हो।''

''जानते हो वे कौन हैं?''

''तुम बता देना। मैं कल प्रातः ही उनसे मिलकर सब बात बता दूँगा।''

इस समय उनके सामने थाली में साग, भाजी, चटनी, अचार, दाल, भात रख दिया गया था और दोनों भोजन करने लगे थे।

सुमित्रानन्दन बता रहा था कि यह निश्चय हुआ है कि सभा में यदुनाथ जाएगा और मंच पर चढ़कर सभा को अवैधानिक घोषित कर देगा। यूनियन के वामपंथी सदस्य जो इस समय दो सौ से अधिक हैं, सभा में बिखरे हुए बैठे होंगे और यदुनाथ की घोषणा होते ही सब एक साथ उठकर 'चलो-चलो' कहते हुए सभा से बाहर भागेंगे और सभा अस्त-व्यस्त हो समाप्त हो जाएगी।

''हाँ, तो अब बताओ। किसे यह सूचना दूँ?''

''होल्कर छात्रावास में एक राधेश्याम हैं। उन्हें बता दो।''

''कब बताऊँ?''

'रात के दस बजे से पूर्व। पीछे होस्टल बन्द हो जाता है अन्यथा कल प्रातः छः बजे से पूर्व। पीछे दिन में यह काम चोरी-चोरी नहीं हो सकेगा। कल ग्यारह बजे पुस्तकालय के लॉन में सभा करने का विचार है।''

रघुवीर गम्भीर विचार में मग्न हो गया। भोजनोपरान्त रघुवीर ने सुमित्रानन्दन से कह दिया, ''दादा! तुम चलो। मैं शीघ्र ही लौटकर आता हूँ।'' रघुवीर बाबा निखिलानन्द की कुटिया को चल पड़ा।

सुमित्रानन्दन रघुवीर को अपना सहायक पा अति प्रसन्न था। वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में पहुँच एक पुस्तक ले पढ़ने लगा। वास्तव में वह रघुवीर के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

मेज़ पर टाइमपीस पड़ा था और सुमित्रानन्दन कमरे में नौ बजे आकर बैठा था। प्रति पन्द्रह मिनट के उपरान्त वह घड़ी देखता था और रघुवीर को न लौटा देख चिन्ता अनुभव कर रहा था। जब दस बजे तो वह चिन्तित हो उठ खड़ा हुआ। नियमानुसार विश्वविद्यालय का फाटक बन्द होने का यह समय था। अत: चिन्ता व्यक्त करते हुए वह कमरा बन्द कर छात्रावास के फ़ाटक पर जा पहुँचा। वहाँ चौकीदार द्वार बन्द करने के लिए तैयार खड़ा था। मुख्य वार्डन ने उसे आज्ञा दे रखी थी कि पन्द्रह मिनट देर से फाटक बन्द किया करे, जिससे कोई भूला-भटका विद्यार्थी बाहर न छूट जाए।

सुमित्रानन्दन फाटक पर पहुँचा तो चौकीदार ने पूछ लिया, ''किस कारण खड़े हो बाबू?''

''अपना एक मित्र दस मिनट के लिए बाहर गया था और आने ही वाला होगा।''

चौकीदार चुप रहा। सवा दस बजे चौकीदार ने फाटक बन्द कर दिया। सुमित्रानन्दन को बहुत चिन्ता लग गई। फाटक लोहे का जंगलेदार था। सींखचों में से बाहर से आने वाला देखा जा सकता था। सुमित्रानन्दन भीतर खड़ा बाहर जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी, देख रहा था। साढ़े दस बजे तक रघुवीर का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया। चौकीदार ने कहा भी, ''बाबू साहब! जाकर अपने कमरे में बैठो। यदि कोई आया तो उसे वार्डन के सामने ले जाना होगा और तब वे जैसी आज्ञा देंगे, वही होगा। वार्डन साहब बहुत ही दयालु आदमी हैं। वे विद्यार्थी की बात सुन उसे क्षमा कर देंगे।''

इस पर भी सुमित्रानन्दन वहाँ खड़ा रघुवीर की प्रतीक्षा करता रहा। पौने ग्यारह बजे दो छात्र लम्बे-लम्बे पग उठाते हुए सामने से आते दिखाई दिए। सुमित्रानन्दन पहचान गया कि एक उनमें रघुवीर है। दूसरा राधेश्याम था। दोनों को आते देख सुमित्रानन्दन ने चौकीदार को कह दिया, ''वह आ गया है, परन्तु मैं उनके सामने होना नहीं चाहता।''

''क्यों?''

''पीछे बताऊँगा। तुम उचित कार्यवाही करो।''

राधेश्याम के सामने वह आना नहीं चाहता था, जिससे उस पर किया जाने वाला सन्देह रघुवीर पर भी न होने लगे। वह फाटक से एक ओर हटकर एक पेड़ के नीचे छुप गया। राधेश्याम ने फाटक पर पहुँच धीरे से आवाज़ दी, ''रामचरण भैया!'' यह चौकीदार का नाम था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकीदार ने फाटक के पास आकर पूछा, ''क्या है बाबू साहब?''

''द्वार खोलो, इन बाबू साहब को भीतर जाने दो।''

''वार्डन साहब से कहना होगा।''

''मैं कल प्रात:काल आकर सब बता दूँगा। इस समय उनको जगाने की आवश्यकता नहीं। तुम भी कह देना कि मैं एक विद्यार्थी को साथ लेकर आया था। अभी ग्यारह नहीं बजे। अब हमें जाकर आराम करने दो।''

चौकीदार ने द्वार खोल दिया और रघुवीर तथा राधेश्याम सीधे अपने-अपने कमरे को चले गए।

चौकीदार ने फाटक बन्द कर दिया। इस समय सुमित्रानन्दन पेड़ के पीछे से निकल आया और चौकीदार से कहने लगा, ''धन्यवाद भैया!''

''पर तुम छुप क्यों गए थे?''

''मैं राधेश्याम जी के सामने नहीं आना चाहता था।''

''क्यों?''

''यह कल बताऊँगा।'' इतना कह सुमित्रानन्दन भी अपने कमरे को लौट पड़ा।

:: 8 ::

यूनियन के कार्यालय से डॉ० इन्द्रजीत निकला तो यदुनाथ उनके साथ ही चल पड़ा। प्राध्यापकों के क्वार्टरों में से एक में इन्द्रजीत रहता था, परन्तु उसने वहाँ खाना बनाने का प्रबन्ध नहीं किया हुआ था। उसने समीप के 'रामकृष्ण' छात्रावास की भोजनशाला से भोजन करने का प्रबन्ध कर रखा था।

इस छात्रावास में प्राय: प्रोफेसर साहब के साथी रहते थे। कुछ अन्य भी थे, परन्तु उनको यूनियन के उद्देश्यों से अवगत किया जा रहा था।

यदुनाथसिंह भी प्रोफेसर साहब के साथ ही भोजन करता था और वह इसी छात्रावास में रहता था। प्रोफेसर और वह साथ-साथ जा रहे थे। एकाएक यदुनाथ ने कहा, ''यह रघुवीर तो बहुत तेज तबीयत प्रतीत होता है।''

''वह अभी बच्चा है। ऐसा प्रतीत होता है माता-पिता का लाडला लड़का है और अपने बड़ों से जिद करने का अभ्यास रखता है।''

''परन्तु प्रोफेसर साहब, आपने विश्वविद्यालय के नाम में हिन्दू शब्द की बात अनावश्यक उसके सामने कर दी थी।''

''बात यह है कि उसको मेरी भेजी पुस्तक पर आक्षेप ठीक था। उसका उत्तर तो मेरे पास था नहीं। इस कारण बात बदलनी पड़ी थी।''

''तो वह अँग्रेज़ी की पुस्तक गलत है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गलत तो नहीं, परन्तु रघुवीर की बात का भी तो उत्तर नहीं। नवीन सदा प्राचीन से श्रेष्ठ नहीं होता, परन्तु इसमें एक शर्त है जो पुस्तक वाले ने लिखी नहीं। वह यह कि नवीन और प्राचीन के ज्ञान की समावस्था में ही तुलना होनी चाहिए।

"रघुवीर मुझसे दस वर्ष छोटा है। यदि वह भी मेरे समान पढ़-लिखकर अनुभव प्राप्त कर ले तो वह मुझसे निस्सन्देह श्रेष्ठ हो जाएगा।"

"परन्तु प्रोफेसर साहब, वह सदा आपसे आयु में कम होने से अनुभव में भी कम रहेगा।"

"यही तो युक्ति से सिद्ध नहीं हो सका। वास्तव में युक्ति प्रमाण नहीं हो सकती।"

"तो क्या प्रमाण हो सकता था?"

"यूरोपियन दार्शनिक का यह कथन कि ज़माना प्रगति कर रहा है।"

"और हमारे भारतीय दार्शनिक क्या कहते हैं?"

" 'भारत में भी कोई दर्शनशास्त्र है क्या?'

" 'सिक्स स्कूल्ज़ आफ फिलॉसफीज़ जो कहे जाते हैं।'

"यही तो बता रहा हूँ कि आज से दो सहस्र वर्ष की बात को पकड़ रखना 'प्रेजुडिसेज़' है।"

वास्तविक बात न तो डाक्टर समझ रहा था और न ही यदुनाथ। दोनों अपने-अपने पूर्वग्रहों से ग्रसित, बिना एक-दूसरे को समझे बात करते हुए भोजनशाला में जा पहुँचे।

भोजन की प्रतीक्षा करते हुए प्रोफेसर ने यदुनाथ को कहा, "ग्यारह बजे की सभा में ठीक जब प्रधान सभा प्रारम्भ करें, तुम मंच पर चढ़ जाना और सभा को अवैधानिक घोषित कर देना। शेष मैं प्रबन्ध कर रखूँगा। कल प्रातः ही सब साथियों को सूचना और कार्य-विधि समझा दी जाएगी।"

"मैं अब आपसे कल सभा तक मिल नहीं सकूँगा।"

"कल प्रातःकाल कहाँ जा रहे हो?"

"मेरे एक सम्बन्धी मिर्ज़ापुर से आ रहे हैं। मैं उनको स्टेशन पर लेने जा रहा हूँ। उनको धर्मशाला में ठहराकर मैं दस बजे तक लौट आऊँगा और अपने कार्य पर कटिबद्ध हो जाऊँगा।"

भोजन आया तो दोनों खाने लगे। इस भोजनशाला में रात को मांस और मछली बना करती थी। खाना खाते हुए यदुनाथ ने पुनः बात रघुवीर के विषय में आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मुझे यह लड़का अपने अनुकूल होने वाला प्रतीत नहीं होता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी वह सर्वथा अल्हड़ प्रतीत होता है। इसको शिक्षित करना होगा। मैं समझता हूँ कि 'प्रेजुडिसेज़' के उपरान्त इसे 'दि थ्री एसेंशियल्ज़ ऑफ लेफ्ट' पढ़ानी चाहिए। इसे यह पुस्तक देकर कहना कि इसके भी नोट्स ले।"

"पहली पुस्तक की प्रतिक्रिया कुछ ठीक नहीं हुई।"

"हुई है। एक बात तो यह समझ गया प्रतीत होता है कि पूर्वग्रह क्या होते हैं और उनमें फँसे रहना ठीक नहीं। जिस बात पर उसे आपत्ति थी, वह यह थी कि सदा प्राचीन सें नवीन श्रेष्ठ है। न सही, परन्तु नवीन क्या और प्राचीन क्या, किसी भी बात के पूर्वग्रह में फँसना ठीक नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि इस पर समय व्यर्थ गँवाना है।"

"यह कहीं हमारी 'क्लब' का सदस्य हो जाता तो बस पौबारह थे।"

"क्या पौबारह थे?"

"तब यह बिना विचारे हमारी बात मानता। देखो, यदुनाथ! सौ में से अस्सी पत्नियाँ पतियों के अधीन चलती हैं और बिना विचार किए। भला क्यों?"

यदुनाथ कुछ अपने साथ यही बातें अनुभव कर रहा था। उसे डाक्टर साहब की बहुत-सी बातें समझ नहीं आती थीं। इस पर भी वह उनको ब्रह्म वाक्य मान उनका अनुकरण करता था।

यदुनाथ स्वयं भी विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द निकाल देने में कोई तथ्य नहीं समझता था। वह मन में विचार करता था कि हिन्दू शब्द कम्युनिज़्म-विरोधी क्यों है? दूसरे शब्दों में एक कम्युनिस्ट हिन्दू-विरोधी क्यों है? वह यह समझ नहीं सका था, परन्तु डाक्टर साहब ने संसद सदस्यों को एक परिपत्र भेजा था और उसमें उनसे अनुरोध किया था कि विश्वविद्यालय से हिन्दू शब्द निकाल देने से देश धर्म निरपेक्षता के विषय में प्रगति करेगा।

आज यदुनाथ रघुवीर से यह युक्ति सुनकर चकित रह गया था कि धर्म और अधर्म कर्म के दो पक्ष ही हैं। जो धर्म-निरपेक्ष है, वह अधर्म का पक्ष हो जाएगा। डाक्टर साहब इसका उत्तर नहीं दे सके थे। इस पर भी वह डाक्टर साहब के निरुत्तर होने का कारण नहीं जान सका था।

भोजन करते हुए और कुछ बात नहीं हुई। भोजनोपरान्त जब भोजनशाला से निकले तो यदुनाथ ने एक बात पूछ ली, "तो क्या हमें अपने नाम भी बदल लेने चाहिए?"

"किसलिए?"

"विश्वविद्यालय से हिन्दू शब्द निकालने के पक्ष वालों को अपने हिन्दुआना नाम भी बदल लेने चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या हमारे नाम हिन्दुआना हैं ?"

यदुनाथ ने गम्भीर हो कहा, "डाक्टर साहब! यह तो हैं। अब मेरा नाम देखिए। यदुनाथ का अर्थ है यदुकुल नाथ अर्थात् कृष्ण। देवकी पुत्र कृष्ण, जो हिन्दुओं का एक महान् पुरुष हो चुका है।"

"देखो यदुनाथ! यह आन्दोलन भी समय पर चलेगा। जब राज्य अपना होगा, तब यह बात एकाएक बदल जाएगी। फिर मार्क्स कुमार और एंजलानन्द नाम रखे जाने लगेंगे। अभी भी नाम ऐसे हो रहे हैं, पंजाबराव देशमुख इत्यादि।

"अभी तो यह काम है कि प्राचीन को ध्वस्त किया जाए। जो कुछ भी नया हो, वह स्वीकार हो। नवयुग के आगमन के लिए हिन्दू नाम को बदनाम करना प्रथम कर्तव्य है।"

यदुनाथ को डाक्टर की युक्ति अकाट्य प्रतीत हुई और वह उनको नमस्कार कह अपने कमरे की ओर चल पड़ा। डाक्टर साहब का क्वार्टर छात्रावास के पिछवाड़े कैम्पस के बाहर कुछ अन्तर पर था।

इन्द्रजीत का उस दिन का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। वह अपने क्वार्टर में पहुँचा तो द्वार पर एक व्यक्ति खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। डाक्टर साहब ने उसे देखा और पहचान लिया। पहचानते ही उसका अभिवादन किया और कह दिया, "हैलो कामरेड! कैसे आए ?"

कामरेड ने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखते हुए कहा, "मैं आपको सूचना देने आया था कि नगर के बहुत-से लोग विश्वविद्यालय में हो रही सभा में भाषण देने आ रहे हैं। उनके रोकने का कुछ प्रबन्ध करना चाहिए।"

"यदि न रुके तो क्या होगा ?"

"दो बातें होंगी। एक तो विश्वविद्यालय के छात्रों के मन में हिन्दू शब्द की महिमा बढ़ जाएगी। दूसरे, देश भर में यह बात विख्यात हो जाएगी कि विश्वविद्यालय पर संसद् अपने विचार थोप रही है।"

"बात तो कुछ ठीक है। चाहिए यह था कि हिन्दू शब्द को हटाने का प्रस्ताव विश्वविद्यालय की ओर से हो, सरकार की ओर से नहीं।"

"तब तो यह कभी भी नहीं हो सकता। देश का कोई भी सामान्य हिन्दू अपना नाम हिन्दुओं से पृथक् नहीं करना चाहता।"

"हाँ, यह तो है। देखो, मैं तुम्हें आज की एक घटना बताता हूँ। सेकेण्ड ईयर के छात्र ने मुझे कहा कि मेरा नाम हिन्दुआना है। पहले वह बदलूँ, तब विश्वविद्यालय का नाम बदल सकते हैं।"

वह कामरेड एक क्षण तक आँखें मूँद विचारकर बोला, 'पर आपका नाम तो हिन्दुआना नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय दोनों क्वार्टर के ड्राइंगरूम में जा बैठे थे। कामरेड के कहने पर इन्द्रजीत को विस्मय हुआ। वह समझ नहीं सका कि यह संस्कृतमय नाम कैसे हिन्दुआना नहीं?

कामरेड ने बताया, ''यह नाम तो रावण के पुत्र मेघनाद का था। उसने इन्द्र को परास्त किया था और कैद कर लिया था। इस कारण उसका नाम इन्द्रजीत पड़ गया था।''

''तो मेरा नाम रावण के पुत्र का नाम है?''

''डाक्टर साहब! आप तो इतिहास के ज्ञाता हैं। आपको तो यह विदित होना चाहिए।''

''यह प्रागैतिहासिक काल की बात है। यह हमारे ज्ञान के योग्य नहीं मानी जाती।''

कामरेड मुस्कराया और बोला, ''छोड़िए, इस बात को। बताइए, कल की सभा को भंग करने का क्या उपाय है?''

''एक उपाय तो मैंने किया है। सभा में इतनी गड़बड़ मचेगी कि कोई प्रस्ताव पारित नहीं हो सकेगा।''

''बाहर के लोग भीतर आने से रोके जाएँ, तब ही यह सब हो सकेगा।''

''मैं अभी वाइस चान्सलर के पास जाता हूँ और उनको कल पुलिस बुलाकर बाहर के लोगों का भीतर आना रुकवाता हूँ।''

''हाँ, कुछ ऐसा प्रबन्ध हो कि पुलिस विश्वविद्यालय के द्वार पर खड़ी हो जाए और बाहर का कोई व्यक्ति भीतर न आ सके।''

''यत्न करता हूँ।''

''मैं आपकी यहाँ प्रतीक्षा करता हूँ। आप सब बात उपकुलपति से बता प्रबन्ध कर आइए।''

इन्द्रजीत उपकुलपति के निवास-स्थान की ओर चल पड़ा।

कामरेड को वहाँ आधा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। इन्द्रजीत मुख लटकाए हुए लौटा तो कामरेड ने चिन्ता में पूछा, ''क्या हुआ है?''

इन्द्रजीत ने बताया, ''उपकुलपति तो पाँव पर पानी नहीं पड़ने देता। उसका कहना है कि वह कल वाली सभा में नगर के लोगों को आने की स्वीकृति दे चुका है। जब मैंने पूछा कि उन्होंने इस बात की स्वीकृति क्यों दी तो वह पूछने लगे, ''मैं यह स्वीकृति क्यों न देता?''

मैंने बताया, 'यह विश्वविद्यालय के कामों में बाहरी लोगों का हस्तक्षेप हो जाएगा।''

''इस पर वे कहने लगे, 'विश्वविद्यालय के नाम में हिन्दू शब्द रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा न रखना यह विश्वविद्यालय का कार्य नहीं। यह संसद् का काम भी नहीं। यह उन लोगों का काम है जिन्होंने इस विश्वविद्यालय की स्थापना में सहयोग दिया था अथवा जो उन सहयोग देने वालों के उत्तराधिकारी हैं।''

''मैंने कहा, 'मैं इस समय यह कहने आया हूँ कि राज्यसभा ने यह बिल पारित कर दिया है और उसके विरुद्ध यह सभा की जा रही है। इस प्रकार एक सरकारी संस्थान सरकार के कामों का विरोध कर रहा है। यह सरकार के विरुद्ध आन्दोलन समझा जाएगा।''

''उपकुलपति बोले, 'प्रोफेसर इन्द्रजीत! आप कानून नहीं जानते। मैं जानता हूँ। पहली गलती तो आप यह कर रहे हैं कि जो इसे सरकारी काम कह रहे हैं। कोई भी बिल जब तक संसद् के दोनों सदनों से स्वीकृत होकर उस पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर न हो जाएँ, तब तक सरकारी बात नहीं बनती। और जब तक सरकारी बात नहीं होती तब तक यह सार्वजनिक विचार का विषय है। यह बिल अभी तक सरकार की नीति नहीं बना।

''उनका यह भी कहना था, विश्वविद्यालय एक सरकारी संस्थान नहीं है। यह एक स्वतन्त्र संस्थान है।''

''मैंने कहा, 'बाहरी लोग यहाँ आकर विद्यार्थियों को भड़काएँगे।''

''उपकुलपति का उत्तर था, 'भड़काने और समझाने में अन्तर है और इस अन्तर को मैं जानता हूँ। समझाना ज्ञान और प्रेरणा की बात है। बाहर के लोग समय-समय पर, विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करते रहते हैं। यह आयोजन भी कुछ इसी ढंग का है। यदि किसी विश्वविद्यालय में देश का प्रधानमन्त्री आकर राजनीति की चर्चा कर सकता है तो जनता का भी कोई व्यक्ति ऐसा कर सकता है। यह ज्ञानवर्धन के अर्थ ही समझा जाना चाहिए।

'' 'सभा के प्रधान आचार्य देवेन्द्रनाथ होंगे। आचार्य जी को कह दिया गया है कि वह देखें कि किसी प्रकार का कानून-विरुद्ध कार्य न हो। आचार्यजी का कहना है कि यह विचारात्मक गोष्ठी ही होगी।''

''मैंने कहा, 'परन्तु यहाँ वे लोग भी तो हैं जो हिन्दू शब्द का विरोध करते हैं।''

''वे इस सभा में जाकर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं अथवा कल वे एक पृथक् सभा बुला सकते हैं।''

''इस पर मैंने कहा, 'हम बाहर वालों का विश्वविद्यालय के कामों में हस्तक्षेप नहीं चाहते।''

''ठीक है, परन्तु मैंने बताया है न, कि यह विश्वविद्यालय के कार्य में हस्तक्षेप नहीं है। विश्वविद्यालय के किसी काम के विरुद्ध अथवा पक्ष में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा नहीं हो रही। यह तो संसद् में एक प्रस्तावित बिल के विरुद्ध हो रही है।

" 'हिन्दू जनता विश्वविद्यालय' का नाम हिन्दू शब्द के साथ रखने में रुचि रखती है। यह विश्वविद्यालय क्षेत्र में विश्वनाथजी का मन्दिर होना इस बात का प्रमाण है कि इस विश्वविद्यालय ने हिन्दू का नाम लेकर करोड़ों रुपये हिन्दुओं से एकत्रित किए हैं।

" 'मैं यह उनका अधिकार समझता हूँ कि वे अपने उद्गार प्रकट कर सकें और इस उद्गार को प्रकट करने के लिए विश्वविद्यालय के क्षेत्र से अधिक उपयुक्त स्थान नहीं हो सकता।"

"मेरा कहना था, 'सरकार हिन्दू नहीं है।"

"उपकुलपति ने पूछ लिया, 'आपने सरकार का प्रतिनिधि होने का अधिकार कब से प्राप्त किया है?'

" 'देख लीजिए। सभा में बाहरी लोगों के आने से झगड़ा भी हो सकता है।" मैंने कहा। इस पर उपकुलपति ने आवेश में कह दिया, तब तो मुझे पुलिस विश्वविद्यालय के अन्दर बुलानी पड़ेगी। जो गुण्डे लोग शान्ति भंग करेंगे, उनको पकड़ न्यायालय में उपस्थित करेगी और अपराधियों को दण्ड देगी।"

"अत: मिस्टर कामरेड! मैं बिना कुछ भी सिद्ध किए लौट आया हूँ।"

"तो हम भी कल आएँगे और यहाँ सभा में विघ्न डालेंगे।"

"देख लो, बुरी तरह पीटे भी जा सकते हैं। कारण यह कि इस समय विद्यार्थीगण बहुत भड़के हुए हैं। मुझे भय है कि मेरे इतना कहने पर ही सभा में गड़बड़ होने वाली है, उपकुलपति ने पुलिस बुलाने की धमकी दे दी है। मैंने कहा था, विश्वविद्यालय में पुलिस बुलाना उचित नहीं।"

"इस पर वे कहने लगे, 'मैं पुलिस को बाहर का व्यक्ति नहीं समझता। यदि पति-पत्नी घर में बैठे-बैठे फौजदारी करें तो पुलिस क्यों बुलाई जाती है? क्या विश्वविद्यालय का जीवन एक दम्पती के निजी जीवन से भी अधिक गुह्य है? विश्वविद्यालय में चोरी हो जाए तो चोर को पकड़ पुलिस के हवाले करूँगा अथवा नहीं? क्या इस क्षेत्र में फौजदारी करने वाले को कोई भी पकड़कर दण्ड देनेवाला नहीं होना चाहिए?

" 'इस प्रकार तो संसार-भर के गुण्डे कहने लगेंगे कि उनकी हिंसात्मक कार्यवाही को उनके घर में कोई पकड़ने न आए।'

"कामरेड! वैसे तो उपकुलपति ने कहा है कि मैं कल की सभा में जाकर अपने विचार प्रकट कर सकता हूँ, परन्तु मैं नहीं जा रहा। मैं छात्रों की मनोवृत्ति को देख रहा हूँ और मैं वहाँ जाकर अपने विचार प्रकट करना सुरक्षित नहीं समझता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कामरेड ने उठते हुए कहा, 'ठीक है, प्रोफेसर साहब! हमारा बस चले तो हम भी विरोधियों के साथ रियायत नहीं करते; अत: हमें भी विरोधियों से रियायत की आशा नहीं करनी चाहिए।''

''इसपर भी सभा भंग करने का प्रबन्ध विद्यार्थियों की ओर से कराना चाहिए।''

''वह मैं करने का यत्न करूँगा और मैं तो आशा कर रहा हूँ कि कल की सभा में प्रस्ताव पारित नहीं हो सकेगा।

''मैंने उपकुलपति से कहा है कि विद्यार्थियों की सभा तो विद्यार्थियों की यूनियन के तत्वावधान में होनी चाहिए। इसपर वे कहने लगे, 'विद्यार्थी यूनियन के अतिरिक्त भी कुछ अधिकार रखते हैं। यूनियन रूस अथवा चीन का राज्य नहीं जो विद्यार्थी वहाँ की प्रजा की भाँति पूर्ण रूप से अपने को गुलाम समझें।' ''

:: 9 ::

''सुमित्रानन्दन छात्रावास के द्वार से अपने कमरे को लौटा तो रघुवीर कमरे का द्वार खोल कमरे के बीचों-बीच खड़ा खाली कमरे को देख रहा था। सुमित्रानन्दन ने हँसते हुए पूछ लिया, ''सोए नहीं क्या?''

''और दादा! तुम कहाँ गए थे?'' रघुवीर ने चौंककर पूछ लिया।

''तुमको ढूँढ़ने।''

''कहाँ? जहाँ मैं गया था?''

''नहीं, मैं तो विश्वविद्यालय के द्वार तक ही गया था।''

''तो मुझे देखा नहीं?''

''मैं राधेश्याम से छिपा हुआ था। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझे वहाँ देख ले।''

''विश्वविद्यालय का चौकीदार तो तुरन्त ही राधेश्याम की बात मान गया है।''

''यह चौकीदार और हमारा वार्डन दोनों उसके मित्र हैं।''

''मैं राधेश्याम के साथ गंगातट पर स्वामी निखिलानन्दजी की कुटिया पर गया था। वहाँ कुछ लोग बैठे थे और एक गोष्ठी हो रही थी। मुझे कहा गया कि मैं वह सूचना सुना दूँ, जो मैंने राधेश्याम को दी थी। मैंने सुनाई तो फिर बातचीत होने लगी। यह निश्चय हुआ कि किसी प्रकार यदुनाथसिंह को सभा में जाने से अकस्मात् रोक लिया जाए। मैं तो घड़ी में समय देख पौने दस बजे वहाँ से भागना चाहता था, परन्तु राधेश्याम ने कहा कि वह मुझे वार्डन से कहकर क्षमा दिलवा देगा।

''दादा!'' रघुवीर ने आगे पूछा, ''यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्या है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह एक 'वालण्टीयर कोर' है। हिन्दू जाति की सेवा के लिए इसका निर्माण किया गया है।"

"उसी का नाम बार-बार वहाँ आ रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ है कि यही संस्था कल के उत्सव का प्रबन्ध कर रही है।"

सुमित्रानन्दन मुस्करा रहा था। रघुवीर कपड़े बदल सोने लगा तो सुमित्रानन्दन ने पूछा, "तुम कल सभा में जाओगे?"

"राधेश्याम ने कहा है कि मैं वहाँ पौने ग्यारह बजे मंच के समीप पहुँच जाऊँ और कुछ शब्द मैं भी कहूँ।

"मैंने पूछा था कि क्या कहूँ? उसने कुछ बताया है। मैं उसपर विचार कर रहा हूँ कि किस प्रकार कहूँ?"

"देखा रघुवीर! राधेश्याम कहे तो कुछ हिन्दू के पक्ष में कह देना।"

"मैं कहने के लिए मान तो आया हूँ, परन्तु मुझे संकोच होता है।"

"संकोच किस बात का होता है?"

"यही कि मैं विश्वविद्यालय की छोटी श्रेणी का छात्र व्याख्यान देता अच्छा लगूँगा क्या?"

"एक बात तो तुम भी कहा करते हो। पिताजी के शिष्य होते हुए तुम अन्य कई पढ़े-लिखों से अधिक योग्य हो।"

"मैं विचार करता हूँ कि आज पुनः मैंने डाक्टर इन्द्रजीत को निरुत्तर कर दिया था।"

"हाँ, पूर्वग्रहों के विषय में और हिन्दू नाम के विषय में भी। परन्तु रघुवीर, उसका नाम तो एक राक्षस का नाम है।"

"हाँ, परन्तु यह उस राक्षस के पिता रावण ने नहीं रखा था। यह नाम तो वाल्मीकिजी ने उसके एक गुण के लिए रखा था। 'इन्द्रजीत' संस्कृत भाषा का शब्द है। यह राक्षसों की भाषा का नहीं।"

"वैसे मैं विचार कर रहा था कि वह कर्म तो राक्षसों के ही करता है। देखो, एक उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री हुए हैं और उन्होंने अपने उपन्यास 'वयं रक्षामः' में रावण का विषय-वासना में लिप्त होने का एक दृश्य चित्रित किया है। मुझे तुम्हारी उस दिन की कथा सुन यह समझ आया था कि यह राक्षस-पुत्र इन्द्रजीत का अवतार ही है।"

दोनों हँसने लगे और फिर कमरे की बत्ती बुझा सो गए।

प्रातः स्नानादि कर दोनों मित्र चाय पीने भोजनशाला में गए। चाय के उपरान्त सुमित्रानन्दन ने रघुवीर को कहा, "मैं प्रोफेसर साहब से मिलकर आ रहा हूँ। तुम कमरे में चलो। आज रविवार है, पढ़ाई नहीं हो रही।" इतना कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन प्रोफेसर इन्द्रजीत के क्वार्टर की ओर चला गया।

रघुवीर कमरे में गया तो वहाँ कमरे के द्वार पर एक लड़का खड़ा था। रघुवीर ने उसे पहले कभी नहीं देखा था इस कारण वह उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखता हुआ पूछने लगा, "किससे मिलने आए हो?"

"रघुवीरसिंह और सुमित्रानन्दन से।"

"सुमित्रानन्दन तो कहीं गया है। रघुवीरसिंह मैं हूँ।"

"तो चलो, कमरे में बताता हूँ।"

रघुवीर ने ताला खोला और नवागन्तुक को कुर्सी पर बैठाकर पूछा, "हाँ, तो बताइए। क्या काम है?"

"मैं विद्यार्थी यूनियन के प्रधान की ओर से यह सन्देश लाया हूँ कि आपको आज की सभा में उपस्थित हो शान्ति से बैठना चाहिए। सभा के आरम्भ में मन्त्री यदुनाथसिंह मंच पर खड़ा होकर यह कहेगा कि यह सभा अवैधानिक है। उसके ऐसा कहने पर आप सब सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर सब-के-सब एक साथ बोलना आरम्भ कर दें। सब यही कहें कि सभा अवैधानिक है। यह सभा नहीं हो सकती।"

"और आप कोई लिखित आज्ञा लाए हैं?"

"नहीं। मैं यूनियन का 'व्हिप' (Whip) हूँ। यूनियन की अपनी बात मनाने के लिए इस प्रकार के मौखिक आदेश जारी किए जाते हैं। ये सब सदस्यों को पालन करने चाहिए।"

"यह तो बहुत कठिन काम है।"

"क्या कठिनाई है इसमें?"

"सभा भंग नहीं होगी और यदि हमने हो-हल्ला किया तो झगड़ा और मार-पिटाई आरम्भ हो जाएगी।"

"परिणाम वही होगा जो हम चाहते हैं। सभा भंग हो जाएगी।"

"मुझे यह भला प्रतीत नहीं हो रहा।"

"परन्तु अब तो प्रधान का आदेश मानना होगा। इसी में यूनियन और विद्यार्थी समाज की भलाई है। नियन्त्रण किसी भी संस्था में एक अत्यावश्यक शर्त है।"

रघुवीर ने इस व्यक्ति से, जिसे वह जानता तक नहीं था, झगड़ा व्यर्थ समझ कह दिया, "मैं तो सभा में आ रहा हूँ और जैसा अन्य सदस्य करेंगे, वैसा ही करूँगा। सुमित्रानन्दन को भी कह दूँगा।"

"देखो रघुवीर, मैं एम०ए० की प्रथम श्रेणी में पढ़ता हूँ और हमारा प्रधान बी०ए० फाइनल का विद्यार्थी है, परन्तु अनुशासन तो अनुशासन ही है। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई मतभेद की बात होगी तो हम प्रधान पर अविश्वास प्रकट कर उसे हटा सकते हैं।''

रघुवीर ने कह दिया, ''ठीक है। मैं आदेश का पालन करूँगा।''

''सुमित्रानन्दन को भी यह सब बात बता देना।''

''बता दूँगा।''

सुमित्रानन्दन दस बजे के लगभग आया। उसने आते ही पूछा, ''यूनियन का व्हिप आया था?''

''हाँ।''

''क्या कहता था?''

''वही जो तुमने बताया था।''

''तो तुमने क्या कहा है?''

''यही कि अनुशासन के लिए कहना मानूँगा।''

''ठीक है। तुम और मैं पृथक्-पृथक् यहाँ से जाएँगे और पृथक्-पृथक् बैठेंगे। तुम राधेश्याम के समीप चले जाना। यदि डाक्टर के बच्चों ने सभा भंग करने का यत्न किया तो उनमें से एक-दो को मैं तो पीटूँगा।

''एक बात तुमको और बता देना चाहता हूँ। इन लोगों ने यह निश्चय किया है कि यदि सभा भंग न हो सकी तो विश्वविद्यालय में लूटमार मचा दी जाए।''

''यह कैसे?''

''यह मुझे नहीं बताया। इस कार्य के लिए कुछ अन्य लोग तैयार किए गए हैं। मुझे अभी उन जितना विश्वस्त नहीं माना जाता।''

''ये तो बहुत दुष्ट लोग हैं।''

राधेश्याम ने यह सूचना वाइस चान्सलर साहब के पास सभा के प्रधान आचार्य देवेन्द्रनाथ जी के द्वारा कहलवा भेजी है। उपकुलपति कुछ भयभीत हैं। इसपर भी सभा तो होगी। जो कुछ भी हो, हम वहाँ जाएँगे और अपनी रक्षा का यत्न करेंगे।''

साढ़े दस बजे, सुमित्रानन्दन रामकृष्ण छात्रावास की ओर चला गया। उसके जाने के दो मिनट उपरान्त रघुवीर कमरे से निकला। कमरे का द्वार बन्द कर वह सभा-स्थल की ओर चल पड़ा।

पुस्तकालय-भवन के बाहर एक विशाल लॉन में विद्यार्थी और नागरिक एकत्रित होने लगे थे। रघुवीर ने इतनी बड़ी सभा पहले कभी नहीं देखी थी। बीस हज़ार के लगभग लोगों के एकत्र होने की आशा थी।

रघुवीर मंच के समीप खड़े राधेश्याम के पास पहुँचा तो उसने रघुवीर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाँह में बाँह डालकर कहा, "स्वामी निखिलानन्द ने तुम्हारी बहुत सिफारिश की है और कहा है कि तुमको आगे लाना चाहिए। इस कारण मैंने तुम्हारा नाम कार्यक्रम में सबसे पहले रखा है।"

"परन्तु भैया, यदुनाथ सभा भंग करने का यत्न करना चाहता है।"

"मुझे विदित है। और मैंने सभा के सभापति से कह दिया है। वे कहते थे कि इसका प्रबन्ध हो जाएगा। इस कारण तुम मंच पर चलकर बैठो। सबसे पहले सभापति सभा की ओर से पारित किया जाने वाला प्रस्ताव पढ़कर सुनाएँगे। तत्पश्चात् व्याख्यान होंगे और उनमें से सबसे पहले तुम बोलोगे।"

रघुवीर मंच के समीप जा खड़ा हुआ। ठीक ग्यारह बजे आचार्य देवेन्द्रनाथ आए और मंच पर चढ़कर सभापति के आसन पर बैठ गए। सबसे पहले एक बी०ए० फाइनल का विद्यार्थी उठा और सभा आरम्भ करने की घोषणा में कहने लगा, "सभा आरम्भ की जाती है। हमने सभा के सभापतिपद के लिए विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्राध्यापक आचार्य देवेन्द्रनाथ जी का नाम घोषित किया हुआ है और मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि सभा की कार्यवाही आरम्भ करें।"

इसके उपरान्त सभापति उठे और एक संक्षिप्त भाषण के उपरान्त उन्होंने विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू नाम न हटाए जाने का संसद् से आग्रह करने का प्रस्ताव उपस्थित कर दिया। इस सब समय रघुवीर यदुनाथ को ढूँढ़ता रहा था। उसे विश्वास था कि यदुनाथसिंह सभा में गड़बड़ मचाने के लिए आगे आएगा, परन्तु प्रस्ताव पढ़े जाने तक वह कहीं दिखाई नहीं दिया। इसपर सभापति ने कहा, "सबसे पहले विश्वविद्यालय के छात्रों के विचार इस प्रस्ताव पर उपस्थित किए जाते हैं। द्वितीय वर्ष के छात्र रघुवीरसिंह से मैं कहता हूँ कि वह इस प्रस्ताव के विषय में अपना विचार प्रस्तुत करे।"

रघुवीर उठा और नपे-तुले शब्दों में कहने लगा, "पूज्य आचार्यवर और सभापति महोदय! मैं इस प्रस्ताव का अक्षरशः समर्थन करता हूँ। मुझे विस्मय है कि इस विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द हटाने का प्रस्ताव क्यों किया गया है? हिन्दू हिन्दुस्तान में रहने वाले का नाम है। होना तो यह चाहिए था कि स्वराज्य मिल जाने से इस देश के सब विश्वविद्यालयों के नाम में हिन्दू शब्द लगा दिया जाता। उदाहरण के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय का नाम दिल्ली हिन्दू विश्वविद्यालय होना चाहिए। मद्रास विश्वविद्यालय का नाम मद्रास हिन्दू विश्वविद्यालय होना चाहिए। इसी प्रकार अन्य सब विश्वविद्यालयों के नाम से हिन्दू शब्द जोड़ दिया जाता तो हिन्दू नाम सार्थक हो जाता। हिन्दू शब्द के अर्थ हैं इंडियन, अर्थात् हिन्दुस्तान का रहने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं समझता हूँ कि यह राज्यसभा के सदस्यों का अल्प ज्ञान ही है कि जिससे वे बनारस विश्वविद्यालय के नाम में हिन्दू शब्द के पीछे लट्ठ लेकर पड़े हैं। हिन्दू किसी सम्प्रदाय का नाम नहीं है। इसमें भिन्न-भिन्न विचार और आचार के लोग सम्मिलित हैं। यह हिन्दुस्तान में रहनेवालों का नाम है।

"इन शब्दों के साथ मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।"

इसके उपरान्त एक-एक कर सब श्रेणियों के एक-एक, दो-दो विद्यार्थियों ने प्रस्ताव का समर्थन किया और अन्त में बाहर से आए लोगों ने समर्थन किया। सनातन धर्म सभा और बनारस कारपोरेशन के सदस्य तथा अन्य सार्वजनिक सभाओं के सदस्यों ने व्याख्यान दिए और प्रस्ताव का समर्थन किया। अन्त में 'हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दू विश्वविद्यालय रहेगा' के समाघोष में सभा विसर्जित हुई।

यह घोषणा की गई कि हम सब एक विशाल जलूस में परिवर्तित हो यहाँ से गंगातट तक जाएँगे और वहाँ भगवान् से प्रार्थना करेंगे कि वह लोकसभा के सदस्यों को सुमति दे, जिससे वे हिन्दू नाम का विरोध न करें।

जलूस समाघोष करता हुआ विश्वविद्यालय से निकल गंगातट की ओर गया तो सबसे प्रथम हिंसात्मक कार्य सम्पन्न हुआ।

कैम्पस के द्वार के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस खड़ी थी। जलूस में से किसी ने कह दिया कि पुलिस वापस लौट जाए। परिणाम यह हुआ कि जलूस में 'पुलिस गो बैक' के नारे लगने लगे। इसपर भी मुख्य जलूस निकल गया था, जब कुछ लोग पुलिस पर ईंटें बरसाने लगे।

इसके उत्तर में पुलिस ने लाठी चार्ज किया। कई लोग घायल हुए। कुछ लोग पत्थर फेंकने के आरोप में पकड़कर हवालात में डाल दिए गए।

मध्याह्नोत्तर रघुवीर, जो जलूस के साथ था, अपने कमरे में लौटा तो सुमित्रानन्दन वहाँ पहले से ही उपस्थित था। रघुवीर के आने पर सुमित्रानन्दन के मुख से अकस्मात् निकल गया, "तो तुम आ गए हो?"

"हाँ।"

"देखो, तुम्हारा नाम यूनियन की सदस्यता से काट दिया गया है।"

"क्यों?"

"तुमने हिन्दू शब्द के पक्ष में व्याख्यान जो दिया है।"

"परन्तु दादा, क्या यूनियन का कोई आदेश था कि ऐसा न किया जाए?"

सुमित्रानन्दन हँस पड़ा और बोला, "यूनियन के 'व्हिप' का मौखिक आदेश था कि सभा भंग की जाए और तुम सभा के प्रस्ताव का समर्थन करने लगे थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो क्या दोनों बातें साथ-साथ नहीं चल सकती थीं ?''

''कैसे ?''

''यदि यदुनाथसिंह संकेत करता कि सभा असंवैधानिक है तो मैं सभा भंग करने का यत्न करता।''

सुमित्रानन्दन हँस पड़ा। फिर एकाएक गम्भीर हो वह पूछने लगा, ''यदुनाथसिंह के विषय में जानते हो कि वह कहाँ गया है ?''

''मुझे पता नहीं। मैं तो प्रतिक्षण उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि वह मंच पर लपककर चढ़ आएगा और माइक पर खड़ा हो यह घोषणा कर देगा कि सभा असंवैधानिक है। वह तो कहीं दिखाई ही नहीं दिया।''

''देखो, तुम कमरे में बैठो। भीतर से द्वार बन्द रखना। जब मैं बाहर से आवाज़ दूँ, तब द्वार खोलना। डाक्टर इन्द्रजीत घायल बाघ की भाँति घात लगाए बैठा है और किसी पर भी आक्रमण कर सकता है।''

''तो वह घायल हो गया है ?''

''शरीर से नहीं। मानसिक आघात लगे हैं। प्रथम तो यदुनाथसिंह कहीं लापता है और वह सन्देह कर रहा है कि राधेश्याम ने उसे मरवा डाला है। दूसरी बात, सभा भंग नहीं हो सकी। तीसरी बात यह हुई है कि पुलिस पर ईंट-पत्थर फेंकने वाले एक दर्जन लोग पकड़े गए हैं। उनमें डाक्टर साहब के साथियों में से सात हैं।

''डाक्टर साहब वाइस चान्सलर साहब के पास गए थे। मुझे तुम्हारी चिन्ता लग गई थी। इस कारण तुम्हें देखने यहाँ चला आया हूँ। अब तुम बैठो और मैं आगे का समाचार लेना चाहता हूँ।''

''पर दादा, मुझे भूख लगी है। मैं तो आया था कि तुमको साथ लेकर खाने चलूँगा।''

''रघुवीर भैया, अब तीन बज रहे हैं। भोजनशाला बन्द हो चुकी हैं। तनिक ठहरो, दोनों इकट्ठे कैम्पस के बाहर किसी रेस्तरां में खाने चलेंगे।''

:: 10 ::

यह ठीक था कि यदुनाथसिंह के सभा मंच पर न पहुँच सकने से सभा भंग नहीं हो सकी और फिर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय पर तथा पुलिस पर पथराव से कुछ विशेष हानि नहीं हुई थी, परन्तु एक दर्जन के लगभग कामरेड पकड़े गए थे, जिनमें से सात विश्वविद्यालय के छात्र थे और ये सब-के-सब प्रोफेसर इन्द्रजीत के प्रिय विद्यार्थी थे।

प्रोफेसर इन्द्रजीत की योजना सर्वथा विफल हो गई थी और इस पर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घायल साँप की भाँति फुंकारें मारता हुआ अपने साथियों को सुना-सुनाकर राधेश्याम तथा आर०एस०एस० को गालियाँ दे रहा था। सुमित्रानन्दन सभा से सीधा प्रोफेसर साहब के निवास-स्थान पर चला गया था। वह जलूस में सम्मिलित नहीं हुआ था।

जब जलूस की सफलता का समाचार आया तो पुलिस की लाठियों से घायल लड़कों को देख उसके मन में विचार आया कि कुछ और हाथ विश्वविद्यालय को दिखाने चाहिए। अतः वह एक एम०ए० प्रीवियस के विद्यार्थी को लेकर अपने कमरे में चला गया और वहाँ दो-तीन मिनट तक उससे बात कर बाहर निकला तो वह विद्यार्थी भी कमरे से निकला और बाहर आँगन में रखी एक बाइसिकल पकड़ रामकृष्ण छात्रावास की ओर चला गया।

उसके जाते ही प्रोफेसर साहब ने वहाँ खड़े अन्य विद्यार्थियों को यह कहा कि वह यदुनाथ के विषय में पता करने जा रहा है, वह उपकुलपति के निवास-स्थान की ओर चला गया।

इस समय सुमित्रानन्दन को रघुवीर की याद आ गई। वह डाक्टर साहब के क्वार्टर पर रघुवीर की निन्दा सुन चुका था। अतः वह उसकी सुरक्षा के विषय में चिन्ता करने लगा। प्रोफेसर साहब के जाते ही वह भी अपने छात्रावास की ओर चला आया था।

अपने कमरे में पहुँच वह रघुवीर की प्रतीक्षा करने लगा। वह उसे सचेत करना चाहता था। रघुवीर जलूस के साथ-साथ था। सुमित्रानन्दन अभी बैठा ही था कि उसको कमरे के बाहर हल्ला सुनाई दिया। वह कमरे से निकल देखने लगा कि क्या हुआ है ? उसने देखा कि बहुत से लड़के कमरे के बाहर बरामदे में खड़े देख रहे थे। सुमित्रानन्दन भी उनमें जा खड़ा हुआ। उसने भी देखा कि दूर आयुर्वेदिक फार्मेसी की ओर से धुआँ उठ रहा है। स्पष्ट था कि किसी भवन को आग लगी है।

सुमित्रानन्दन को स्मरण हो आया कि एक लड़का डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर से रामकृष्ण छात्रावास की ओर बाइसिकल पर गया था। डाक्टर साहब से सम्मति कर जाने का रहस्य उसे समझ आने लगा।

उसने वहाँ खड़े लड़कों को कह दिया, "यह आग उन लड़कों ने लगाई है जो आज की सभा की सफलता पर निराश हुए हैं।"

"कौन हैं वे ?"

"जो विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द निकलवाना चाहते हैं।"

"तो ऐसे भी कुछ लोग हैं ?"

"पथराव भी तो किसी ने किया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''परन्तु वह तो पुलिस पर था। पुलिस ने जलूस को रोकने का प्रयत्न किया था।''

''तो तुम वहाँ थे?''

''नहीं, मैंने सुना है।''

''मैं भी प्रोफेसर इन्द्रजीत के क्वार्टर पर सुनकर आया हूँ कि कुछ कामरेडों ने पुस्तकालय के भी शीशे तोड़े हैं और पुलिस पर अकारण पत्थर फेंके हैं।''

''पुलिस वालों को कैम्पस में नहीं आना चाहिए था।''

''पर सुना है कि वे कैम्पस में नहीं थे। वे तो कैम्पस के बाहर खड़े थे और जलूस प्रायः सब का सब निकल चला था कि कुछ लोगों ने पुलिस वालों के सामने खड़े होकर नारे लगाने आरम्भ कर दिए। इसपर भी पुलिस वहाँ से हटी नहीं तो उन लोगों ने, जो जलूस का अवशेष थे, पुलिस पर ईंट-पत्थर फेंकने लगे।''

इस समय तक धुआँ कम होने लगा था। ऐसा प्रतीत हुआ कि आग बुझ रही है। धुएँ को निःशेष होते देख सब समझ गए कि आग बुझा दी गई है। विश्वविद्यालय की अपनी आग बुझाने की कल थी। कदाचित् उसी ने आग बुझाई होगी।

अब सुमित्रानन्दन अपने कमरे में लौट आया। लगभग दो बजे रघुवीर गंगातट पर जुलूस पहुँचाकर लौटा।

सुमित्रानन्दन रघुवीर को सचेत और सतर्क कर पुनः प्रोफेसर इन्द्रजीत के क्वार्टर को चला गया। यद्यपि रघुवीर को भूख लगी थी, परन्तु वह कमरे को भीतर से बन्द किए बैठा रहा। उसने फार्मेसी के बाहर पड़ी लकड़ी को आग लगी देखी थी और सुमित्रानन्दन का यह कथन, कि इन्द्रजीत घायल बाघ की भाँति किसी पर भी वार करने के लिए व्याकुल हो रहा है, सत्य प्रतीत हो रहा था।

लगभग चार बजे सुमित्रानन्दन लौटा। वह कमरे का द्वार खुलवा भीतर आने लगा तो उसे कमरे के द्वार के नीचे एक पत्र पड़ा मिला। ऐसा पहले भी हुआ करता था। डाक वार्डन के पास जाती थी और वह सब डाक को एक रजिस्टर में दर्ज कर चपरासी के हाथ वितरण करवाता था।

वार्डन का विचार था कि डाक को लिख लेने से बहुत-सी पेचीदगियों से बचा जा सकता है।

सुमित्रानन्दन जब द्वार में प्रवेश करने लगा तो उसे भूमि पर पड़ा पत्र दिखाई दिया। उसने पत्र उठाया और उसपर रघुवीर का नाम व पता रघुवीर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता जी के लेख में लिखा पहचान, रघुवीर को दे दिया और कहा, ''रानी जी का पत्र अपने प्रिय पुत्र के नाम है।''

रघुवीर सुमित्रानन्दन को डाँटने वाला था कि उसने उसे दो घण्टे तक भूख से व्याकुल किया है, परन्तु माँ का पत्र देख वहीं द्वार के समीप खड़ा-खड़ा पढ़ने लगा। पत्र पढ़ उसने जेब में डाल लिया और कहा, ''दादा, आज कुछ खाना-पीना नहीं होगा?''

सुमित्रानन्दन कुर्सी पर बैठा था। वह भी भूखा था। अत: रघुवीर के कहते ही उठा और चलने को तैयार हो गया। दोंनों कमरे से बाहर निकले। उन्होंने कमरे में ताला लगाया और कैम्पस से बाहर उपाहार गृह की ओर चल पड़े।

मार्ग में सुमित्रानन्दन ने बताया, ''प्रोफेसर इन्द्रजीत उपकुलपति से मिलकर आए थे और वहाँ पर हुए वार्तालाप को सुना रहे थे। वहाँ आचार्य देवेन्द्रनाथ और विश्वनाथन आयंगर भी थे। वे भी सभा और उसके उपरान्त की घटनाओं का वृत्तान्त उपकुलपति को बता रहे थे।

''ऐसा प्रतीत होता है कि डाक्टर इन्द्रजीत और प्रोफेसर आयंगर में वहाँ उपकुलपति के समक्ष ही झड़प हुई है। दूसरे, इन्द्रजीत वहाँ से अधिक क्रुद्ध होकर ही लौटा है।

''यह पता चला है कि आग लगाने वालों में मण्डल भी पकड़ा गया है और आग तो विश्वविद्यालय की आग बुझाने वाली कल ने बुझाई है, परन्तु आग लगाने वालों को राधेश्याम और उसके साथियों ने पकड़ा है। वे तो आग लगा भागजानेवाले थे, परन्तु इन्होंने उनको पकड़ लिया और पुलिस के आने तक हाथ-पाँव बाँधे बैठाए रखा।

''हाँ, एक बात का और पता चला है कि यदुनाथ जीवित है और वह पुलिस थाने में रोका हुआ था।

''आज प्रात: वह किसी काम से स्टेशन पर गया था। कुछ स्त्रियों को वह स्टेशन पर लेने गया था और जब उनको ले स्टेशन से लौटा तो पुलिस उसे पकड़कर ले गई थी।

''एक बजे के लगभग पुलिस ने उसे छोड़ दिया था और वह थाने से उन स्त्रियों को धर्मशाला में देखने गया था। उनको सान्त्वना दे, वह अभी-अभी प्रोफेसर साहब के क्वार्टर पर आया था और यह सब आप-बीती सुना गया है।''

''पुलिस ने उसे क्यों पकड़ा था?''

''उसने तो बताया नहीं, परन्तु रघुवीर, रात जो सूचना तुमने राधेश्याम को दी थी, यह उसी का परिणाम प्रतीत होता है। सभा में शान्ति भंग न हो; इस कारण उसे रोका गया प्रतीत होता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अब सब समझ आ गया है। सभा आरम्भ होने से पहले मैंने यदुनाथ की बात पुनः राधेश्याम को स्मरण कराई थी। उसने मुस्कराकर यह कहा था, ''वह कुछ नहीं कर सकेगा।''

सुमित्रानन्दन ने एक और सूचना दे दी, ''प्रोफेसर इन्द्रजीत कहता था कि आचार्य जी तथा अन्य उसके विचार के लोगों को सीधा करने के लिए वह दिल्ली जाएगा।''

''बहुत दुष्ट है।''

''वह तो भैया! है ही। मेरे बस की बात होती तो पाँच-छह व्यक्तियों को विश्वविद्यालय से निकाल देता और तब सब शान्ति हो जाती।''

उपाहार-गृह में दोनों गए और एक मेज़ पर बैठ रघुवीर ने बताया, ''माँ का पत्र है। उसमें एक अन्य झगड़े की बात लिखी है।''

''क्या लिखा है?''

रघुवीर ने पत्र निकाल दिखा दिया। सुमित्रानन्दन ने पढ़ा।

सामान्य स्वास्थ्य-समाचार के उपरान्त रघुवीर की माताजी ने लिखा था—

> ''मेरी एक सहेली मिरजापुर में विवाही हुई है। वह बनारस आ रही है और तुमको देखने का प्रबन्ध करेगी। देखने का अभिप्राय समझ गए होगे। रघुवीर, यद्यपि इस काम में मैंने उसे प्रोत्साहन नहीं दिया, मैं तुम्हारा विवाह अभी पाँच वर्ष तक करना नहीं चाहती, परन्तु वह आग्रह कर रही है। कुछ भी हो, एम०ए० तक पढ़ाई करने के उपरान्त ही यह हो सकेगा।
>
> ''उपाध्याय जी लड़की के परिवार को जानते हैं और उनको उनसे सम्बन्ध बनाना रुचिकर है। अतः मैं इस विषय में निरपेक्ष हूँ।''
>
> ''यह पत्र लिखने में मेरा यह प्रयोजन है कि यदि कोई प्रमिला देवी तुमको देखने आए अथवा देखने का प्रबन्ध करे तो उसके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करना। वह मेरी सहेली है। इस कारण तुम्हारी मौसी लगती है। भविष्य में जैसा ईश्वर को स्वीकार होगा, देखा जाएगा।''

सुमित्रानन्दन ने पत्र पढ़ा और पत्र लौटाते हुए कहा, ''यह कोई अनहोनी बात तो है नहीं। ऐसा सब लड़कों के साथ एक न एक दिन होता ही है। विचार करने की बात तो यह है कि रानी जी की सहेली ही आएँगी अथवा सहेली की सुपुत्री जी भी साथ होंगी।''

''इससे क्या होगा? कोई भी हो, मैंने प्रकट नहीं करना कि मुझे किसी प्रकार की पूर्व सूचना है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यदि पता चल जाए कि भाभी बनने की प्रत्याशी कौन है तो मुझे तो लाभ होगा।"

"तुम्हें क्या लाभ होगा?"

"यदि विवाह हुआ तो भाभी की हँसी उड़ाने का मज़ा आया करेगा। विवाह से पूर्व तुम्हारी हँसी उड़ाऊँगा और पीछे उसकी।"

"अभिप्राय यह कि मैं तुम्हारे सामने उससे मिलूँ ही नहीं। इस प्रकार तुमको मज़ा लेने से वंचित कर दूँ।"

"रघुवीर, यह तुम्हारे बस की बात नहीं। यदि तुम्हें कोई देखने आया तो मैं तो तुम्हारे साथ हूँगा ही। मुझसे छुपकर उससे कहाँ जाकर मिलोगे?"

ये अभी बैठे उपाहार-गृह में बैरे की प्रतीक्षा ही कर रहे थे कि उपाहार-गृह के बाहर से यदुनाथ एक रिक्शा पर बैठा नगर की ओर जाता मिला।

रघुवीर ने उसे देख कह दिया, "ये लोग भाग-दौड़ मचा रहे हैं मानो, इनके माता-पिता का रुपया मूल्यहीन है और इनका पढ़ाई से कोई सरोकार नहीं।"

सुमित्रानन्दन ने कहा, "इसने प्रोफेसर साहब को बताया कि इसे उन सम्बन्धियों को, जिन्हें वह प्रातःकाल स्टेशन पर लेने गया था, विश्वनाथ जी के दर्शन कराने के लिए लेने जाना है।"

"खैर, अब तो यह घर के काम पर जा रहा है, परन्तु ये लोग आज की सभा को भंग करने में ऐसे यत्न कर रहे थे, मानो कोई महाकल्याण का कार्य कर रहे हों। ये हिन्दू नाम को हटवाकर देश और उसमें रहने वाले हिन्दुओं को निःशेष कर देंगे।"

"पर आज इस देश में कोई हिन्दू है भी?" सुमित्रानन्दन ने कह दिया।

"तो तुम भी हिन्दू नहीं रहे सौमित्र?"

"मैं विचार करता हूँ कि हिन्दूपन की क्या बात है मुझमें? चोटी तो गाँव में ही नहीं रही थी। यज्ञोपवीत यहाँ आकर छूट गया है। सन्ध्या-उपासना तो मैं कभी करता ही नहीं था। गाँव में वही समय मेरा व्यायाम करने का होता था और यहाँ भी मैं करता हूँ।"

रघुवीर ने चिन्तित भाव से कहा, 'चोटी, यज्ञोपवीत तो मेरे भी नहीं है, परन्तु एक दिन माताजी ने कहा था कि यह तो हिन्दू होने के बाहरी लक्षण हैं। ये हिन्दूपन के तत्व नहीं हैं।"

उपाहार-गृह में दक्षिण निवासियों के लिए वड़े और बौण्डे बने थे। साथ में सांभर और चटनी थी। इन्होंने एक-एक प्लेट का आर्डर दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर ने अपनी बात जारी रखी। उसने कहा, "मैंने माँ से पूछा था कि यदि यह हिन्दुत्व नहीं तो फिर हिन्दुत्व क्या है?"

"माँ ने बताया था कि, 'यह अग्नि का धुआँ है। यह अग्नि नहीं है। परन्तु वास्तविक अग्नि का ज्ञान चाहते हो तो गुरु जी से पूछ लेना।"

"अतः एक दिन मैंने गुरु जी से पूछ लिया कि हिन्दू किसे कहते हैं? इसपर वे विचारकर बोले, 'जो वेदों को ज्ञान का स्रोत मानता है।"

" 'मेरा प्रश्न था, 'और वेद क्या कहते हैं?'

" 'वेद धर्म का मूल बताते हैं।'

" 'वह क्या है?'

" 'वर्णाश्रम धर्म। तुम्हारे लिए वर्णाश्रम धर्म है पढ़ाई करना।'

" 'यदि कोई हमारे धर्म में विघ्न डाले तो फिर धर्म क्या कहता है?'

" 'उस अवस्था में हमारा प्रथम धर्म होगा, उसका नाश करना। परन्तु जो स्वयं अपने धर्म का पालन नहीं करेगा तो उसका ही नाश होगा। धर्म अपना विरोध करने वाले को स्वयं मार डालता है।' "

इस समय साम्भर और वड़े तथा बौण्डे आ गए थे। खाते हुए सुमित्रानन्दन ने कहा, "इन्द्रजीत के साथी समझते हैं कि पढ़ाई इत्यादि पीछे हो जाएगी, पहले देश में साम्यवाद ले आना चाहिए। वे समझते हैं कि ऐसा करने में विद्यार्थी ही सक्षम हैं। उनका कहना है कि इस युग का यही धर्म है।"

"गुरु जी का कहना था कि हमें ज्ञानवृद्धि तो करनी चाहिए और साम्यवाद को जानना भी ज्ञानवृद्धि के अन्तर्गत है, परन्तु ये तो ज्ञान-प्राप्ति के अतिरिक्त कुछ और कर रहे हैं। आज जो कुछ हुआ है, वह इसकी ज्ञान वृद्धि के अतिरिक्त हुआ है।"

सुमित्रानन्दन ने गम्भीर भाव बना कहा, "प्रोफेसर कहता था कि यदि किसी कारण हिन्दू नाम न हटा तो इस विश्वविद्यालय को ही मिटा देंगे।"

"हमें इसका विरोध करना चाहिए। यही प्रथम धर्म है।"

"कैसे विरोध करना चाहिए?"

"वह तो हम दोनों कर रहे हैं। मैं कमरे में बैठा यही विचार कर रहा था कि यह सब गड़बड़ किसने और क्यों मचाई है?"

"यह प्रोफेसर इन्द्रजीत महादुष्ट है।" सुमित्रानन्दन ने एक बौण्डा साम्भर में भिगो मुख में डालते हुए कहा।

"स्वामी निखिलानन्द ने कल बताया था कि इन्द्रजीत तो एक बहुत बड़ी संस्था का एक छोटा-सा पुर्जा है। वह संस्था भी यूरोप में सोलहवीं, सत्रहवीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में उत्पन्न हुए कुछ दार्शनिकों की शिक्षा का परिणाम है।''

''तो निखिलानन्द भी कोई पढ़ा-लिखा विद्वान् है ?''

''दादा, आज तुम मेरे साथ चलो। गंगा-स्नान करेंगे और फिर स्वामीजी से बातें करेंगे।''

''मैं समझता हूँ कि क्या लाभ होगा ? आज व्यायामशाला में तो जाऊँगा नहीं। पेट भरकर अब व्यायाम नहीं हो सकेगा। हाँ, यूनियन के कार्यालय में जाना चाहता हूँ। वहाँ कई नई बातें पता चलती रहती हैं।''

''दादा, गंगातट से होकर यूनियन के कार्यालय में जा सकोगे। मैं तो वहाँ जाऊँगा नहीं। तुम सवा सात बजे यूनियन के कार्यालय में चले जाना।''

''नहीं, तुम गंगातट पर जाना और मैं यूनियन के कार्यालय में जाऊँगा। रात को मिलने पर दोनों स्थानों की बात बताएँगे और तदुपरान्त उनपर विवेचना करेंगे।''

बाबा निखिलानन्द की कुटिया अस्सी घाट के कुछ ऊपर की ओर सर्वथा एकान्त स्थान में एक टीले पर थी। स्वामी जी के भक्त सायंकाल वहाँ एकत्रित हो जाया करते थे। गंगा में स्नान और तैरना उनका एक कार्यक्रम होता था। इन तैरने वालों में कुछ नदी के पार जा सन्ध्योपासना, प्राणायाम इत्यादि भी करते थे। रघुवीर इनमें से एक था। नौका से गंगा पार करने और लौटने में पर्याप्त व्यायाम हो जाता था। आधा घण्टा वहाँ सन्ध्योपासना तथा प्राणायाम होता था। तदनन्तर आधा घण्टा वहाँ स्वामीजी से बातचीत होती थी। रघुवीर कभी-कभी इसके उपरान्त भी स्वामीजी के पास ठहर उनसे विभिन्न विषयों पर बातचीत करता रहता था।

स्वामी निखिलानन्द बनारस में इस कुटिया में पिछले चालीस वर्ष से रह रहे थे। करुणानिधि सन् 1935 से 1941 तक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ा था और उन दिनों ही वह स्वामी जी के सम्पर्क में आया था।

जब करुणानिधि अपने लड़के सुमित्रानन्दन और रघुवीर को हायर सेकेण्डरी की परीक्षा दिलाने लखनऊ ले गया था, वहाँ एक दिन स्वामी जी से भेंट हुई तो पण्डितजी ने स्वामीजी से रघुवीर का परिचय कराया था। विश्व-विद्यालय में प्रवेश के समय करुणानिधि ने रघुवीर को बाबा जी की कुटिया दिखा दी थी। कुटिया में दो कमरे थे। एक में स्वामीजी धारणा-ध्यान और समाधि लगाते थे। दूसरा कमरा स्वामीजी के उपासक प्रयोग करते थे।

उस दिन रघुवीर वहाँ पहुँचा तो इस दूसरे कमरे में जा स्नान के लिए वस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदल कुटिया के सामने तट पर खड़ी कुटिया की नौका की ओर चल पड़ा। प्रायः तीन-चार युवक उसके साथ और होते थे। ये सब-के-सब तैरने में और सन्ध्योपासना में रुचि रखते थे। उन युवकों में से आज केवल दो ही आए हुए थे। अन्य जलूस में भाग लेने के कारण घरों से यहाँ पहुँच नहीं सके थे। जब रघुवीर वहाँ पहुँचा तो उनमें से एक ने उसको देख कहा, "ओह! मैं समझा था कि तुम भी आज नहीं आ सकोगे।"

"क्यों?"

"तुम जलूस में जो थे।"

"हाँ, परन्तु जलूस तो गंगातट पर दो बजे पहुँच गया था। देखो माणिक!" यह उस युवक का नाम था—"मुझे जलूस इत्यादि में विशेष रुचि नहीं। किसी कारणवश मैं वहाँ फँस गया था। इस कारण गंगातट तक चला आया था।"

"पर तुमने व्याख्यान तो बहुत सुन्दर दिया था। सब कह रहे थे कि सबसे पहले बोलने वाले विद्यार्थी का भाषण सबसे बढ़िया था।"

"क्या बढ़ियापन देखा था उन्होंने?"

इस समय सब नौका में बैठे तो रघुवीर चप्पू पकड़ किश्ती किनारे-किनारे कुछ दूर तक ऊपर को ले गया और फिर पार करने के लिए धारा में जा पहुँचा।

इस सब समय माणिकलाल जलूस में हो रही चर्चा को बता रहा था। वह कह रहा था, "यह आम चर्चा थी कि तुमने सबसे बढ़िया भाषण दिया था। उसमें एक विशेषता समझ आई है। तुमने कहा था कि देश के सब विश्व-विद्यालय हिन्दू विश्वविद्यालय हैं। यही कहा था न तुमने?"

"हाँ, यह तो कहा था।"

"और यह भी कहा था कि सब विश्वविद्यालयों के साथ 'हिन्दू' शब्द लगना चाहिए।"

"हाँ, इसलिए कि सब हिन्दुस्तान देश में हैं।"

"लोग कह रहे थे कि यह एक नवीन विचार है, जो बहुत ही उपकारी सिद्ध हो सकता है। एक तो यह कहने लगा कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय का क्या होगा? दूसरा बोल उठा कि जैसे इण्डियन मुसलमान होते हैं, वैसे ही हिन्दू-मुस्लिम विश्वविद्यालय हो जाएगा।"

रघुवीर ने चप्पू चलाते हुए कहा, "देश में ऐक्य उत्पन्न करने का यह एक प्रभावी उपाय हो सकता था।"

"पर यह हुआ नहीं और अब होगा भी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''देखो माणिक, नौका को बाबा जी की कुटिया के सामने ही पार लगाने के लिए पहले किनारे के साथ-साथ बहाव के ऊपर को ले जाना पड़ा है। जानते हो, यह क्यों ?''

''किनारे पर धारा का वेग कम होता है और ऊपर ले जाना सहज होता है।''

''इसी प्रकार जब स्वराज्य मिला ही था, उस समय यदि यह बात की जाती तो सहज थी। उस समय धारा का वेग कम था। यही बात भाषा की है। यदि सन् 1948 में हिन्दी वाले कुछ भी ज़ोर लगाते तो हिन्दी राष्ट्रभाषा स्वीकार हो जाती। अब तो राजनीति का वेग बढ़ गया है और प्रत्येक बात राजनीति में बहती चली जाती है।''

:: 11 ::

सुमित्रानन्दन ने खूब डटकर वड़े और बौण्डे खाए थे। अतः वह व्यायामशाला में नहीं गया और नित्य के समय से पूर्व ही यूनियन के कार्यालय में पहुँच गया। यह कार्यालय आजकल 'डिबेटिंग क्लब' का रूप ले रहा था और नित्य की बातों पर खूब चर्चा होती थी। वाद-विवाद भी चलता था और कभी-कभी गाली-गलौज की नौबत भी आ जाती थी।

आज सुमित्रानन्दन वहाँ पहुँचा तो मन्त्री की कुर्सी खाली देख पूछने लगा, ''यदुनाथ कहाँ है आज ?''

एक ने बताया, ''वह तुम्हारे विषय में पूछ रहा था। तुम कहाँ थे ?''

''मैं तो आज उपाहार-गृह में खाने गया था। मध्याह्न भोजन नहीं कर सका और पेट भरने वहाँ चला गया था।''

''अपने 'कैफेटेरिया' में क्यों नहीं जाते ?''

''वहाँ पेट भरने के लिए कुछ मिलता नहीं और जो कुछ मिलता है, वह बहुत महँगा होता है।''

''पर वह तो हमारी कोआपरेटिव सोसाइटी चला रही है।''

''तभी तो तली मूंग की दाल, गुलाब जामुन और मठरी होती है, जिनसे पेट भरने के लिए तीन-चार रुपये चाहिए। उपाहार-गृह में एक रुपये में पेट ठसाठस भर जाता है। रघुवीर साथ था।''

''क्या काम है तुमको यदुनाथ से ? वह भी तुमको पूछ रहा था।''

''मुझे विदित नहीं कि वह किस प्रयोजन से पूछ रहा था। मैं तो वैसे ही उसकी कुर्सी खाली देख पूछ रहा हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर एक अन्य ने पूछ लिया, "तुम्हारे कमरे के साथी रघुवीर को क्या हुआ है?"

"क्या हुआ है?"

"वह व्याख्याता बन गया है।"

"आचार्यजी ने कहा कि वह बोले, तो वह खड़ा हो गया।"

"परन्तु क्या पागलपन की बात कही थी कि भारत के सब विश्वविद्यालयों के नाम के साथ 'हिन्दू' शब्द लगना चाहिए।"

एक अन्य बोल उठा, "उसके इस कहने पर तो खूब तालियाँ बजी थीं।"

मूर्ख की बात पर मूर्खों ने तालियाँ बजाई थीं। इसमें विस्मय करने की बात क्या है?"

आज यूनियन में एक नया व्यक्ति भी बैठा था। वह बोल उठा, "विस्मय करने की बात यह है कि दूसरों को मूर्ख कहने वाले जानते नहीं कि वे स्वयं मूर्खता की बात कर रहे हैं।"

"तो मैं मूर्ख हूँ?" जिसने रघुवीर को मूर्ख कहा था, वह बोल उठा।

"तो तुमने कहा है बीस सहस्त्र तालियाँ बजाने वालों को मूर्ख? मैंने तो समझा था कि कोई अन्य मूर्ख है।"

इसपर तो वहाँ आठ-दस बैठे हुए लोग हँसने लगे। सुमित्रानन्दन का विचार था कि इस बात पर मुक्का-मुक्की भी हो सकती है। वह विस्मय कर रहा था कि रघुवीर की हिमायत करने वाला यह कौन व्यक्ति है? अतः बात बदलने के लिए उसने उस नवीन प्राणी से पूछ लिया, "आपके पहले कभी दर्शन नहीं हुए। आपका शुभ नाम क्या है?"

"मैं रामविलास पाठक हूँ। बी०ए० थर्ड ईयर का विद्यार्थी हूँ।"

सुमित्रानन्दन ने हाथ बढ़ा उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "आपका परिचय प्राप्त कर बहुत प्रसन्नता हुई है।"

इस प्रकार मूर्ख बनने और बनाने की कटुता समाप्त हो गई। रामविलास ने बताया, "यूनियन का सदस्य बनने के लिए फार्म भरकर दिए मुझे तीन महीने होने जा रहे हैं। न तो मुझे सदस्य बनाया गया है और न ही बनाने से अस्वीकार किया गया है।

"कल रघुवीर ने कहा था कि उसकी सदस्यता तो अविलम्ब स्वीकार कर ली गई थी। इसी कारण मैं आज पता करने आया था और मन्त्री जी की प्रतीक्षा में बैठा हूँ।"

"ओह! तो यह बात है, परन्तु आपने सदस्यता फार्म किसके द्वारा भरा था?" सुमित्रानन्दन ने ही पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"द्वारा का क्या मतलब?"

"किसी की साक्षी होनी चाहिए थी कि आप विश्वविद्यालय के 'बोनाफाइड' (प्रमाणित) छात्र हैं।"

"यह तो था। ट्यूटर आचार्य देवेन्द्रनाथजी के हस्ताक्षर थे।"

"तभी।"

"तभी क्या?"

"इस 'तभी' का अभिप्राय मन्त्री बताएँगे।"

"मैं तो आज वाइस चांसलर से शिकायत करने वाला हूँ।"

"किस बात की?"

"यही कि मुझे सदस्य नहीं बनाया जा रहा।"

इस पर सुमित्रानन्दन चुप कर गया। मन ही मन वह प्रसन्न हो रहा था कि वाइस चान्सलर के पास मामला जाएगा। और भी कई विद्यार्थी थे जिनको सदस्यता नहीं दी जा रही थी।

एक अन्य छात्र बोल उठा, "यह यूनियन विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर के अधीन नहीं है। यह विद्यार्थियों का स्वतन्त्र संगठन है।"

"मैं इसे पूर्णरूप से स्वतन्त्रता दिलवाने का यत्न कर रहा हूँ।" नवीन प्राणी ने कह दिया।

बात पुनः तेज होने लगी तो सुमित्रानन्दन ने पुनः पारा नीचे करने के लिए बात को रोककर पूछ लिया, "आपने कौन-कौन से विषय लिये हैं।"

"इतिहास, संस्कृत, अँग्रेज़ी और हिन्दी।"

"यही विषय तो रघुवीर ने लिये हैं।"

"हाँ, हमारे 'ट्यूटोरियल ग्रुप' में वह प्रायः व्याख्यान दिया करता है। इसी कारण मैं उसे जानता हूँ। वह बात सदा युक्तियुक्त और संक्षेप में किया करता है। आचार्य जी उससे बहुत प्रसन्न हैं।"

"परन्तु पाठक जी, यहाँ तो प्रायः अर्थशास्त्र के विद्यार्थी आते हैं। यूनियन का शौक उनको ही है।"

"परन्तु यह अर्थशास्त्रियों की यूनियन नहीं है। न ही मैंने अर्थशास्त्र की किसी क्लब की सदस्यता की माँग की है।"

"तो अर्थशास्त्रियों की कोई क्लब भी है?"

"हाँ, सुना है। रघुवीर ने एक दिन उसका वर्णन किया था।"

सुमित्रानन्दन समझ गया कि यह पाठक आज तो लड़ने के लिए तैयार होकर ही आया है; परन्तु वह अपना कर्तव्य समझता था कि झगड़ा होने न दे और यदि हो तो रघुवीर के मित्र का पक्ष ले। इस पर उसने कह दिया, "पाठक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी, यहाँ झगड़ा करने का कोई कारण नहीं। मैं समझता हूँ कि यदुनाथ से आप फिर कभी मिल लीजिएगा; अन्यथा वाइस चान्सलर का द्वार खटखटाया जाना चाहिए।''

इसके साथ ही वह यदुनाथ के पकड़े जाने की चर्चा करने लगा, ''मैं तो यदुनाथ जी से हवालात के विषय में जानकारी प्राप्त करने आया था।''

''क्या जानकारी चाहते हैं ? मैं भी तो वहाँ आधा घण्टा बैठ आया हूँ। आप मुझसे ही पूछ सकते हैं।'' एक अन्य ने कह दिया।

''सुना है कि थाने के साथ हवालात बहुत गन्दी है।''

''नहीं, सुगंध की लपटें उठती रहती हैं। मूत्रालय और निवासालय एक ही हैं।''

''यह क्यों है ?''

''इत्र-फुलेल की सुगंध से हमारा स्वागत करने के लिए।''

''और भाई साहब, आप क्यों पकड़े गए थे ?''

''मुझ पर आरोप है कि मैंने एक पत्थर मारकर पुलिस वैन का 'विण्ड स्क्रीन' फोड़ डाला है।''

''और यह सत्य नहीं है न ?'' पाठक ने पुनः पूछ लिया।

''क्या सत्य नहीं ?''

''कि तुमने पुलिस वैन का शीशा तोड़ डाला है ?''

''वह पुलिस वैन थानेदार के बाप की थी जो उसे दुःख हुआ था! सरकारी माल था; मैंने तोड़ डाला तो तोड़ डाला।''

''और तुम सरकार के मामा लगते हो कि मामी का आँचल फाड़ डाला तो फाड़ डाला ?'' पाठक ने कह दिया।

इस पर सुमित्रानन्दन उठ बैठा और पाठक की बाँह में बाँह डाल बोला, ''आइए, मैं आपसे एक बात करना चाहता हूँ।''

पाठक इन्कार करता, परन्तु सुमित्रानन्दन उससे अधिक बलशाली था और वह उसे घसीटता हुआ यूनियन के कार्यालय से बाहर ले गया।

बाहर आकर वह उसे अपने छात्रावास की ओर लेकर चल पड़ा। मार्ग में उसने कहा, ''पाठक जी, आप यहाँ किसी ज्योतिषी से पूछकर नहीं आए।''

''क्या मतलब ?''

''मतलब यह कि यहाँ ये गुण्डे आपकी मरम्मत करने वाले हैं।''

''तो यहाँ यही कुछ होता है ?''

''नहीं, नित्य तो नहीं। आज विशेष बात है। ये घायल सिंह की भाँति बैठे हैं और तुम अकेले इनकी मांद में आ गए थे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं तो वाइस चान्सलर के पास जाने वाला था, परन्तु आचार्य जी ने कहा कि मैं एक बार यदुनाथ से मिल लूँ। यदि उसने किसी प्रकार की बहानेबाजी की तो फिर रिपोर्ट करने की बात पर विचार करेंगे।''

''देखिए, पाठक जी, मैं बता देता हूँ। आपका पहला मामला नहीं कि आपको सदस्यता नहीं दी गई। सम्भव तो यह है कि आपके फार्म को दियासलाई लगाकर जला डाला होगा। वह इसी कारण कि आप आचार्य जी के शिष्यों में से हैं। उनके लिए यहाँ स्थान नहीं है।''

''यह गुण्डों का जमघट यहाँ कैसे एकत्रित हो गया है?''

''यह इस कारण कि इनके अतिरिक्त विद्यार्थी तो यहाँ पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करने आए हैं और ये लोग राजनीतिक उद्देश्यों से भरती हुए हैं।''

''यही बात तो आचार्य जी कहते थे। इसपर भी वे समझते थे कि ये इतनी धृष्टता नहीं कर सकते कि फार्म ही फाड़ डाला हो।''

''पर यह तो यहाँ एक साधारण घटना है। नित्य होती रहती है।''

''हमको भी संगठित होना चाहिए।''

''मैं समझता हूँ कि आप होल्कर छात्रावास में राधेश्याम से मिल लीजिए। वह भी कुछ इसी प्रकार का प्रयास कर रहा है।''

''वह क्या है?''

''एम०ए० की श्रेणी का विद्यार्थी है।''

पाठक ने परेशानी में पूछ लिया, ''मुझे आचार्य जी को बताना चाहिए कि यदुनाथ ने क्या उत्तर दिया है।''

इतने में यदुनाथ सामने से आता दिखाई दिया। वह उसके ही छात्रावास की ओर से आ रहा था। सुमित्रानन्दन ने कह दिया, ''लो, वह यदुनाथ जी आ रहे हैं।''

इन दोनों ने उस ओर पग बढ़ा दिए। वास्तव में यदुनाथ उनकी ओर ही आ रहा था। यदुनाथ ने दूर से ही पूछा, ''किधर से आ रहे हो?''

''यदुनाथ जी, पहले इनकी बात सुन लो।''

''इनकी क्या बात है?''

पाठक ने कहा, ''मुझे यूनियन का सदस्य क्यों नहीं बनाया जा रहा? मैं यह पूछने के लिए आया हूँ।''

''पर तुम हो कौन?''

''मैं रामविलास पाठक हूँ। बी०ए० तृतीय वर्ष का विद्यार्थी हूँ और फार्म भरकर दिए तीन महीने हो चुके हैं।''

''किसके द्वारा फार्म भेजा था?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आचार्य देवेन्द्रनाथ जी से हस्ताक्षर कराकर स्वयं कार्यालय में आपको दे गया था।''

''देखो जी, मैं आपको नहीं जानता। मेरे पास आपके नाम का कोई सदस्यता-पत्र न आया है और न है। यदि आप सदस्य बनना चाहते हैं तो एक फार्म कार्यालय से ले लीजिए और भरकर तथा आचार्य जी के हस्ताक्षर कराकर दे जाइए। मैं उसे यूनियन की कार्यकारिणी में उपस्थित कर दूँगा।''

पाठक क्रोध से भर रहा था, परन्तु उसके कुछ कहने से पूर्व ही सुमित्रानन्दन ने कह दिया, ''पाठक जी, आप यह सब बात आचार्य जी को बता दीजिए। मुझे उनसे एक काम भी है। मैं मिलकर सब बात समझा दूँगा।''

पाठक गया तो यदुनाथ ने कहा, ''मैं आधे घण्टे से तुम्हें ढूँढ़ रहा हूँ।''

''क्यों, क्या काम है? यूनियन के कार्यालय में भी एक साहब यही कह रहे थे।''

''मिर्ज़ापुर से कुछ लोग आए हैं और तुमसे मिलना चाहते हैं।''

''मुझसे?''

''वैसे तो वे रघुवीर से मिलने आए हैं, परन्तु तुम भी तो उसके मित्र हो।''

''तो तुम मेरी उससे अदला-बदली करना चाहते हो?'' सुमित्रानन्दन ने हँसते हुए पूछ लिया।

यदुनाथसिंह भी हँस पड़ा और बोला, ''मेरे बस में होता तो कर देता, परन्तु भाई, मामला कुछ दूसरा है। वारण्ट रघुवीर के हैं।''

''वारण्ट?''

''हाँ, 'डोमेस्टिक' वारण्ट हैं। उसे 'डोमेस्टिकेट' करने के लिए।''

''भाई, मनुष्यों की भाषा में बात करो। मैं कुछ नहीं समझा।''

''एक स्त्री है और उसके साथ दो लड़कियाँ हैं। वह एक का एक के साथ विवाह-सम्बन्ध करने का विचार कर रही है।

''मैं विवाह को गाय के गले में रस्सा डालना मानता हूँ और रघुवीर के गले में रस्सा डालने का उनका विचार है। इसको मैं 'डोमेस्टिक वारण्ट' मानता हूँ और विवाहित व्यक्ति को 'डोमेस्टिक एनिमल'।''

''यदुनाथ, तुम तो बहुत सुन्दर विचार रखते हो। मैं तो तुमको एक सर्वथा नीरस व्यक्ति समझा करता था। तुम तो भाई! कवि हो।''

यदुनाथ मुस्कराया और बोला, ''वह स्त्री और उसकी लड़कियाँ आपके छात्रावास के वार्डन साहब के ड्राइंगरूम में बैठी हैं। मैं तो एक आवश्यक कार्य से डाक्टर इन्द्रजीत के पास जा रहा हूँ। मैंने उनको कहा है कि वे आपको और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर को लेकर मिनर्वा रेस्तरां में चली जाएँ। मैं उनको वहाँ ही मिलूँगा।''

''पर रघुवीर तो वहाँ है नहीं।''

''जहाँ हो, उसको साथ ले लो।''

सुमित्रानन्दन ने रघुवीर की माँ का पत्र पढ़ा था और वह सब बात समझ रहा था। इस कारण वह भी उस लड़की को देखना चाहता था, जिसका सम्बन्ध रघुवीर से बनाने का विचार किया जा रहा था। इतना तो उसे विश्वास था कि रघुवीर के न पसन्द किए जाने का प्रश्न ही नहीं है। पसन्द तो लड़की की होनी है और उसमें वह भी सम्मति देना अपना अधिकार मानता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा परिच्छेद

हथियापुर में भवानीदास ने साधु का सारा गेहूँ बेच रुपया बटोर लिया था। साठ रुपये क्विण्टल के हिसाब से दो सौ क्विण्टल का दाम बारह हज़ार रुपया बनता था। वह रुपया उसकी तिज़ोरी में आकर एक ढंग से हिसाब-किताब में जमा हो चुका था।

सितम्बर के दिन थे। साधु लाला भवानीदास से तकाजा करने जा पहुँचा।

''लाला, अब रुपया दे देना चाहिए।'' उसने कह दिया।

''मैं समझता हूँ कि तुम्हारा सब दाम चुकता हो चुका है।''

''क्या दिया था तुमने?''

लाला ने बही निकाली और बताने लगा, ''तुम्हारा जमा है साढ़े तीन सौ क्विण्टल गेहूँ, दाम सत्रह हज़ार पाँच सौ रुपया। अब देखो, दस हज़ार दिया है मई पन्द्रह तारीख को। पाँच हज़ार दिया है दस जून को। फिर ढ़ाई हज़ार दिया है जुलाई की बीस तारीख को। सब रकमों के सामने तुम्हारे हस्ताक्षर हैं।''

''लाला, यह तो मेरे अनाज का दाम था। मैं सहकारी समिति के गेहूँ की बात कर रहा हूँ।''

''तो वह तुमने सहकारी बैंक में जमा नहीं कराया था?''

''देखो लाला, सीधी तरह बात करो, नहीं तो बरबाद हो जाओगे।''

''तो मैंने हिसाब में कुछ गलती की है?''

''देखो, मैं तुमसे आपसदारी की बात कर रहा हूँ। मैंने तुमको दो सौ क्विण्टल गेहूँ दिया था।''

''वह तुम्हारे खेत की पैदावार थी क्या?''

''वह सहकारी समिति के खेतों की पैदावार थी।''

''पर उस समिति वाले तो लिखत-पढ़त के बिना गेहूँ देते नहीं। मेरी रसीद दिखाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु कुछ देर तक लाला भवानीदास का मुख देखता रह गया। फिर एकाएक बोला, ''लाला, तुम्हारी मौत आई है।''

लाला ने दुकान पर बैठे-बैठे ही आवाज़ें लगानी आरम्भ कर दीं—''ओ मुहम्मदू! ऐ रमजान!! ऐ भूरे!!! आना भाई, आना।''

ये पड़ोसियों के नाम थे और लाला की पुकार सुन सब अपने-अपने घरों से निकल आए। गाँव के कुछ अन्य लोग भी हल्ला सुन एकत्रित हो गए। साधु सबको इकट्ठा देख अपनी लीडरी के अभिमान में लाला की दुकान पर चढ़ गया और वहाँ पर खड़ा हो कहने लगा, ''सुनो भाइयो! यह लाला भवानीदास अभी भी यहाँ अँग्रेज़ी राज्य समझता है और इसके दिमाग में यह बात घुस ही नहीं रही कि अब स्वराज्य काल है। यह आज भी दो रुपये सैकड़ा मासिक के हिसाब से ब्याज माँगता है। मैंने इसे कहा है कि इतनी अंधेरगर्दी क्यों मचा रखी है तो यह पड़ोसियों को आवाज़ें देने लगा है।''

लाला भी समझ रहा था कि वास्तविक बात यह किसी के सामने नहीं कह सकता। इस कारण वह साधु को अपनी पूर्ण बात कह देने का अवसर देने के लिए चुप था।

साधु ने लाला को चुप देख कह दिया, ''मैं इसे थाने में पकड़कर ले जाना चाहता था कि यह बचने के लिए हल्ला करने लगा है।''

लाला ने कहा, ''साधुराम, झूठ क्यों बोल रहे हो? परमात्मा से डरो। ईश्वर की कृपा से स्वराज्य मिला है और तुम यहाँ की सहकारी समिति के प्रधान हो गए हो। अब तो ईश्वर से भय करो।''

एकत्रित लोगों में कई साधु के सहायक और कांग्रेस के भक्त थे। उनमें से एक बोल उठा, ''लाला, तुम ही बता दो न कि हल्ला क्यों मचाया है?''

''देखो, भाइयो!'' अब भवानीदास ने खड़े हो कहना आरम्भ किया। वह बोला, ''यह बात गलत है कि यह मुझसे रुपया उधार माँगता था। आज सारा गाँव जानता है कि साधुराम को रुपयों की आवश्यकता नहीं है। इसे रुपया देने के लिए सहकारी बैंक है, जिसकी कमेटी में यह है। न इसने मुझसे रुपया माँगा है और न मैंने ब्याज की बात की है।

''भाइयो, बात कुछ और ही है। जब मैंने इसे कहा कि यदि ऐसी बात की तो मैं थाने में रिपोर्ट कर दूँगा तो यह बोला कि थाना क्या होता है? मैं कांग्रेस का प्रधान हूँ। यह मुझे कहता था कि साले, राज्य हमारा है। यहाँ क्या हो सकता है?''

इस पर साधु का एक हिमायती बोल उठा, ''पर बात भी तो बताओ। हुआ क्या है, जो वह तुमको और तुम उसको थाने ले जाना चाहते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्यों, साधुराम, कह दूँ? बताओ, यहाँ कहूँ अथवा थाने में चलकर?''

साधुराम डर रहा था कि यह चोरी के गेहूँ की बात न कह दे। उसने कहा, ''कुछ बात हो तो कहो।''

''लो, सुनो भाई! हमारे पड़ोस में मुहम्मदू की जवान लड़की है और यह कहता था कि वह कभी सौदा-सुल्फ लेने आए तो उसे इसका संदेश दे दूँ। इसका सन्देश यह है कि वह मुहम्मदू के घर से भागकर साधु के घर में चली जाए तो यह उसे अपने घर की पटरानी बना देगा।''

लाला भवानीदास के मुख से बात समाप्त भी नहीं हुई थी कि मुहम्मदू के लड़के रमज़ान ने आगे बढ़ साधु को गले से पकड़ एक मुक्का उसकी कनपटी पर लगा दिया और कहा, ''अबे जुलाहे के बेटे, तेरी शामत आई है।''

वह उसे पीटने लगा। साधु के साथियों ने उसे छुड़ाना चाहा। मुहम्मदू और उसके साथियों ने समझा कि रमज़ान पीटा जाने वाला है। अत: दोनों गुटों में मुक्का-मुक्की होने लगी। कई घायल हो गए। आखिर पुलिस आई तो शान्ति हुई। पुलिस साधुराम तथा रमज़ान को पकड़कर ले गई।

दोनों ने बयान लिखाए और धारा 107 'क्रिमिनल प्रोसीजर कोड' के अनुसार दोनों दलों के दस-दस व्यक्तियों को पकड़कर बीस लोगों पर पुलिस ने बलवा कर परस्पर लड़ने का आरोप लगा, मुकदमा चला दिया। भवानीदास नहीं पकड़ा गया।

हल्द्वानी जिला कचहरी थी। वहाँ मुकदमा दायर हो गया। रमज़ान, मुहम्मदू और उसके आठ अन्य साथी पकड़े गए थे। उनकी अस्थायी जमानत होनी थी। मुहम्मदू की बीवी लाला के पास आई और बोली, ''लाला, अब क्या होगा?''

''बहिन, मुहम्मदू इत्यादि की जमानत का प्रबन्ध करना है।''

''तो यह तुम कर दो।''

''सब हो जाएगा। तुम निश्चिन्त रहो।''

भवानीदास पण्डित करुणानिधि के पास पहुँचा और मुहम्मदू की जमानत का प्रबन्ध कर आया। करुणानिधि और बड़ी रानी अगले दिन जिला कचहरी में गए और मुहम्मदू के साथियों की दो-दो हज़ार रुपये की हाजिर जमानत दे आए। साधु और उसके साथियों की जमानत का प्रबन्ध हल्द्वानी के एक कांग्रेसी वकील ने कर दिया।

जब सब छूटकर आ गए तो दोनों पक्ष ठण्डे दिल से विचार करने लगे कि यह क्या हो गया है? साधु ने सबसे पहले थानेदार से जाकर पूछा, ''क्यों चौधरी साहब, झगड़ा तो मेरा और लाला का था और तुमने उसको पकड़ा ही नहीं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साधुराम, मुहम्मदू की लड़की तुम निकालने वाले थे। लाला पैंसठ वर्ष का बूढ़ा क्या खराबी कर सकता था?"

"पर किसने कहा है कि मैं लड़की निकालने वाला था?"

"मैं क्या जानूँ? मैं तो झगड़े के समय वहाँ था नहीं। जब तुम लोग लड़कर घायल हो चुके थे, तब ही तो पुलिस वहाँ पहुँची थी। हमने जिनको घायल देखा, उनको पकड़ लिया।"

साधु करुणानिधि उपाध्याय के पास पहुँचा और बोला, "पण्डित जी! यह सब भवानीदास की बदमाशी है। उसने लड़ाई करा दी है। आप बीच में क्यों पड़ गए थे? सबसे विचित्र बात तो यह है कि रानी जी एक धर्मात्मा हिन्दू विधवा हैं और उन्होंने जमानत दी है मुसलमानों की। इधर हमारी ओर सब हिन्दू थे। उनकी जमानत नहीं दी।"

"साधु भाई, तुम भी गाँव के आदमी हो और मुहम्मदू भी गाँव का आदमी है। पर तुम्हारे आदमियों को जमानत तो हल्द्वानी के लोग दे रहे थे। इस बेचारे मुहम्मदू के लिए गाँव में से ही कोई जा सकता था। वह कांग्रेस का नेता तो था नहीं।

"अब देखो न, मुहम्मदू ने बयान दिया है कि उसको भय है कि तुम अपने साथियों से मिलकर उसकी लड़की का अपहरण न कर लो।"

"पर आपको विश्वास है कि मैं ऐसा करूँगा?"

"तुम मद्य का सेवन तो करते हो। अतः मद्य के नशे में तुम कुछ भी कुकर्म करने की बात विचार कर सकते हो।"

"पर पण्डित जी, वास्तविक बात यह नहीं है।"

"तो वह क्या है?"

साधु विचार करने लगा था कि बताए अथवा नहीं। उसे विश्वास था कि यदि फार्म के गोदाम में अनाज की चोरी की बात बताई तो पण्डित जी इसे लड़की के अपहरण से भी अधिक गम्भीर समझेंगे। इससे वह झिझक रहा था।

उसे चुप देख करुणानिधि ने कहा, "हाँ, तो बताओ साधु, वास्तविक बात क्या है?"

साधु को एक बात सूझी। उसने कहा, "पण्डित जी! बता तो सकता हूँ, परन्तु दो शर्तें हैं। एक तो बात भवानीदास के सामने हो और दूसरे तब हो जब दोनों पक्षों में घर पर सुलह कर लेने की बात हो जाए।"

"इसके लिए तो दोनों पक्ष वालों को इकट्ठा करना होगा।"

"तो कर लीजिए।"

"मैं क्यों करूँ? तुम लड़ो-मरो, मुझको क्या? हाँ, रानी जी का बीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार जमानत का जाएगा और तुम सब लोग हवालात में होगे। साथ ही जिस वकील ने तुम लोगों की जमानत दी है, वह भी हानि उठाएगा।''

''पर कोई तो सुलह कराएगा ही।''

''तो सब मिलकर यहाँ आ जाओ, मैं यत्न कर दूँगा।''

''ऐसा करिए। मैं अपने सब लोगों को लेकर आ जाऊँगा और आप मुहम्मदू इत्यादि को बुला लें। लाला की बात तो पीछे होगी।''

''तो बताओ, कब आओगे?''

''आज सायंकाल ही। कल से कचहरी में मुकदमा शुरू हो रहा है।''

''अच्छा, एक बात करो। सायंकाल छः बजे दसों व्यक्ति आ जाओ और मैं मुहम्मदू इत्यादि को बुला लूँगा।''

साधु इतनी बात से सन्तुष्ट था। वास्तविक बात थी साढ़े ग्यारह हज़ार रुपये की। वह अब हो नहीं सकती थी, जब तक मुकदमा समाप्त न हो जाए। अतः वह अपने पक्ष के लोगों को यह सूचना देने चल पड़ा कि सबको सायंकाल छः बजे पुरोहित जी के घर पर एकत्रित होना चाहिए।

वह अभी घर से निकला ही था कि छोटी रानी की नौकरानी पण्डित जी को बुलाने आ गई। जब भी किसी प्रकार का काम होता था, वे बुला लिये जाते थे। पंडित जी साधु के जाने पर अभी घर की बैठक में ही बैठे थे। पंडित जी ने सुखिया को देखा तो पूछ लिया, ''सुनाओ, सुखिया बहिन, कैसे आई हो?''

''छोटी रानी जी बुला रही हैं।''

करुणानिधि ने एक क्षण तक विचार किया कि क्या काम हो सकता है? प्रायः रघुवीर इत्यादि का पत्र आया करता था तो उसकी किसी समस्या के विषय में ही पूछने के लिए उन्हें बुलावा आया करता था।

पण्डित जी ने पूछ लिया, ''क्या बात है?''

''कोई उनसे मिलने आई है और उनकी ही बात है।''

पण्डित जी ने समझा कि साधु के पक्ष वालों में से किसी की पत्नी वहाँ जा पहुँची है। अतः उन्होंने सुखिया को कहा, ''तुम चलो, मैं आ रहा हूँ।''

करुणानिधि वहाँ पहुँचा तो सुमति रानी के पास एक अन्य स्त्री बैठी दिखाई दी। पण्डित जी ने हाथ जोड़ने पर उसे आशीर्वाद दिया तो सुमति ने सामने रखी कुर्सी पर बैठने का संकेत कर दिया, ''पुरोहित जी, यह बहिन जी रघुवीर के विषय में कुछ कह रही हैं।''

''क्या कह रही हैं?''

''यही कि उसका विवाह हो जाना चाहिए। अपनी लड़की का सम्बन्ध करना चाहती हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यह बहिन जी कौन हैं ?"

"आप जानते हैं, हमारे गाँव में सुमेरसिंह ज़मींदार थे ?"

"ओह, स्मरण आ गया है। यह बहिन प्रमिला हैं। बताओ, बहिन! कहाँ रहती हैं आप ? बहुत दिन के बाद दर्शन हुए हैं।"

"हाँ पण्डितजी! मैं पिछली बार सन् 1952 में अपने पिता जी के देहान्त के समय आई थी। इसके उपरान्त घर-गृहस्थी में लीन रहने के कारण यहाँ आना नहीं हो सका। इधर भी भाइयों ने कभी बुलाया नहीं। अब कुछ वर्षों से उनकी स्थिति कुछ सुधरी है और उनका आग्रह होने लगा था कि मुझे आना चाहिए। सो इस बार यहाँ आई हूँ। मेरा एक लड़का है और चार लड़कियाँ हैं। शेष आप समझ सकते हैं। लड़कियों के माता-पिता को कितनी चिन्ता रहती है!"

"लड़के को देखा है ?"

"उसका चित्र देखा है।"

"लड़की कितनी बड़ी है ?"

"मैं तो किसी एक लड़की से भी सम्बन्ध करना चाहती हूँ। सबसे बड़ी का विवाह हो चुका है। वह अपने नगर मिर्ज़ापुर में ही विवाही गई है। अब छोटी इस वर्ष बनारस विश्वविद्यालय में भरती हुई है। दो और छोटी हैं। एक नवीं श्रेणी में पढ़ती है और सबसे छोटी आठवीं श्रेणी में।"

"और उनके पिता क्या काम करते हैं ?"

"मिर्ज़ापुर में वकालत करते हैं। लखनऊ की विधान परिषद् के सदस्य हैं। नाम है बाबू बिहारीसिंह।"

"ओह! वे तो जाने-पहचाने हैं। हम साथ लखनऊ जेल में रहे हैं।"

"तब तो बात बन जाएगी।"

"हाँ, ऐसा करो बहिन! लड़कियों में से किसी को रानी जी से पसन्द करा लो और मैं तुम्हारे परिवार की इनसे सिफारिश कर दूँगा।"

प्रमिला ने हाथ जोड़ नमस्कार कर दी।

प्रमिला एक सप्ताह के लिए ही आई थी और अब वापस जाने वाली थी। जाने से एक दिन पूर्व वह अपनी सहेली रानी सुमति से मिलने आई तो बच्चों की बातें चल पड़ीं। प्रमिला ने बताया, "लड़का सबसे बड़ा है। इस समय बनारस विश्वविद्यालय में 'थर्ड ईयर' में पढ़ता है। चार लड़कियाँ हैं। सबसे बड़ी का विवाह हो चुका है।"

इस पर सुमति ने कहा था, "अपने यहाँ तो बस एक ही है। आजकल बनारस विश्वविद्यालय में द्वितीय वर्ष में पढ़ता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी लड़की राधा भी वहाँ पढ़ती है। इस वर्ष 'फर्स्ट ईयर' में भरती हुई है। कैसा है लड़का?"

"देखोगी उसे?"

"बनारस जाकर?"

सुमति मुस्कराई और बोली, "नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं। मैं तो उसका चित्र दिखाने की बात कर रही थी।"

"तो दिखा दो।"

"सुमति ने रघुवीर का चित्र दिखा दिया। प्रमिला ने पसन्द किया तो सुमति ने पुरोहित जी को बुला भेजा।"

प्रमिला मिर्ज़ापुर लौटी तो उसने अपने पति से बात की और वे लड़का देखने बनारस जा पहुँचा। बनारस में वे निखिलानन्दजी की कुटिया में जा ठहरे। बिहारीसिंह ने वहाँ आने का प्रयोजन बताया तो स्वामी जी कहने लगे कि लड़का सायंकाल आया करता है। यहाँ ही देख सकोगे। बिहारीसिंह ने रघुवीर को देख पसन्द किया, परन्तु उससे बातचीत नहीं की और करुणानिधि से पत्र-व्यवहार होने लगा।

पूर्व इसके कि बात आगे चले, प्रमिला ने लड़के को स्वयं देखने का विचार बना लिया। वह राधा से उसके शारीरिक गुणों की तुलना करना चाहती थी। इस कारण राधा को और उसे साथ-साथ देखने का विचार रखती थी। अतः वह अपनी विवाहिता लड़की सावित्री और सबसे छोटी लड़की विन्ध्यवासिनी को लेकर बनारस जा पहुँची। राधा तो विश्वविद्यालय के महिला होस्टल में ही रहती थी।

:: 2 ::

यदुनाथसिंह को विदित नहीं था कि उसकी माँ और बहन किस निमित्त बनारस आई हैं। गंगास्नान तो मिर्ज़ापुर में भी हो सकता था। मिर्ज़ापुर गंगा के किनारे बसा हुआ था।

स्टेशन पर माँ ने यदुनाथ को अभी तक बताया भी नहीं था कि वे किस प्रयोजन से आई हैं कि यदुनाथ पकड़ा गया। जब वह छूटकर आया तो उसने माँ और बहनों को धैर्य बँधाया और फिर बातचीत हुई। सब गंगास्नान के लिए गए। स्नान कर उन्होंने बाज़ार से पूरी लीं और वहीं अमेठी के मन्दिर में बैठ पूरी खाने लगे। पूरी खाते हुए माँ ने कहा, "यदु, मैं एक विशेष कार्य से यहाँ आई हूँ।"

"क्या कार्य है, माँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विश्वविद्यालय में एक लड़का है, रघुवीरसिंह। सेकेण्ड ईयर में पढ़ता है। उसका पता करना है।"

"पता करके क्या करोगी माँ?" यदुनाथ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"उसके कान ऐंठने हैं।"

"है तो वह इसी योग्य।"

"तो तुम उसे जानते हो?"

"हाँ माँ।"

"उससे मिला दो।"

"पहले काम बताओ।"

"राधा के लिए उसकी बात हो रही है।"

"राधा क्या करेगी उसका? वह तो एक खिलौना-मात्र है।"

माँ हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "उससे खेलेगी।"

"माँ! वह तो बहुत ही कोमल, सर्वथा लड़कियों की भाँति है।"

"अब उसे देखने आई हूँ तो दिखा दो। यदि राधा से छोटा प्रतीत हुआ तो उसकी दो छोटी बहनें और भी तो हैं।"

आखिर यदुनाथ से यह निश्चय हुआ कि वह साढ़े चार बजे धर्मशाला में पहुँचेगा। वहाँ से वह उनको विश्वनाथजी का मन्दिर दिखाने ले जाएगा और फिर रघुवीर से मिला देगा।

वह यह विस्मरण कर गया था कि रघुवीर सायं गंगातट पर चला जाया करता है। अत: साढ़े पाँच बजे वह माँ और बहिनों को लेकर बिड़ला छात्रावास में जा पहुँचा। वहाँ रघुवीर के कमरे को ताला लगा था। इस पर उसे स्मरण आया कि रघुवीर का मित्र यूनियन के कार्यालय अथवा 'जिमनेज़ियम' में मिलेगा।

अत: वह वार्डन साहब के कमरे में जा पहुँचा। मिस्टर बाँके बिहारी मिश्रा से माँ का परिचय कराकर बोला, "आप रघुवीर से मिलने आई हैं। मैं उसे देखने जा रहा हूँ और यदि आप स्वीकृति दें तो ये रघुवीर की प्रतीक्षा यहीं बैठकर कर सकती हैं?"

"हाँ, इनको बैठा दो। माता जी, क्या चाय इत्यादि भिजवाऊँ?"

चाय तो हम अभी कैम्पस के बाहर होटल से पीकर आ रहे हैं।" यदुनाथ ने कहा और सुमित्रानन्दन की तलाश में चला गया। माँ और बहनें वहाँ प्रतीक्षा करने लगीं। यदुनाथ उनको कह गया था कि वह रघुवीर के एक मित्र को ढूँढ़ रहा है, जो सबको रघुवीर के पास ले जाएगा, रघुवीर इस समय गंगातट पर भ्रमण करने चला जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदुनाथ गया तो पाँच-छः मिनट में ही सुमित्रानन्दन वार्डन के बैठकघर में आ पहुँचा। वहाँ वह एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री को दो लड़कियों के पास बैठा देख समझ गया। यदुनाथ ने बताया था कि लड़कियों में एक विवाहिता है और दूसरी अविवाहिता। सुमित्रानन्दन की मोटी बुद्धि में यह बात आ गई कि छोटी ही रघुवीर के लिए प्रस्तावित पत्नी है।

सुमित्रानन्दन ने हाथ जोड़ नमस्ते कही और पूछने लगा, ''आपके विषय में ही भाई यदुनाथ कह रहा था क्या?''

''हाँ बैठो। रघुवीर कहाँ है? और तुम कौन हो?''

''रघुवीर तो इस समय गंगातट पर जाया करता है। उसके लौटने में अभी एक घंटे से अधिक समय है। मैं सुमित्रानन्दन हूँ। रघुवीर के गाँव के पण्डित करुणानिधि उपाध्याय जी का लड़का हूँ।'

''ओह! तो तुम पण्डित जी के लड़के हो? कौन-सी श्रेणी में पढ़ते हो?''

''मैं बी०ए० के द्वितीय वर्ष में पढ़ता हूँ। मैंने संस्कृत के साथ अर्थशास्त्र ले रखा है।''

''बेटा सुमित्रानन्दन! मैं हथियापुर गई थी और पण्डित जी से मिल आई हूँ। उनकी विद्वत्ता की बात तो मेरी सखी सुमति बताती थी। तुमसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हो रही है।

''देखो, ऐसा करो कि तुम रघुवीर को लेकर होटल मिनर्वा में आ जाओ। हम वहाँ रात का भोजन करेंगे। तुम भी करना। रघुवीर भी वहाँ ही भोजन करेगा। यदि आज वह मिल जाए तो हम कल मिर्ज़ापुर लौट जाना चाहेंगी।''

''माता जी, आप वहाँ पहुँचिए, मैं रघुवीर को ढूँढ़कर लाने का यत्न करता हूँ। वह प्रायः गंगा पार जाकर स्नान करता है और फिर सन्ध्या-उपासना कर ही लौटा करता है। मैं उसे शीघ्र लाने का यत्न करता हूँ।''

सुमित्रानन्दन अस्सी घाट से ऊपर निखिलानन्द जी की कुटिया की ओर गया तो प्रमिला भी जाने के लिए वार्डन का धन्यवाद कर उठ पड़ी। विन्ध्यवासिनी ने कहा, ''माँ, अभी तो छः भी नहीं बजे। इतनी जल्दी होटल में जाकर क्या करोगी?''

सावित्री ने कह दिया, ''बिन्दु ठीक ही तो कहती है। वहाँ बन्द कमरे में बैठकर क्या करेंगी?''

इसी समय यदुनाथ प्रोफेसर इन्द्रजीत से मिल लौट आया। वह माँ को जाने के लिए तैयार देख पूछने लगा, ''मिला है?''

''उसका मित्र लड़का मिला है। यह रघुवीरसिंह को ढूँढ़ने गया है। हमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे कहा है कि वह रघुवीर को लेकर रात के खाने के लिए मिनर्वा में आए। तुम भी राधा को लेकर वहाँ आ जाना।''

''आ जाऊँगा। राधा को अपने छात्रावास से छुट्टी दिलवानी पड़ेगी। इसमें कुछ देर भी लग सकती है। हम ठीक आठ बजे होटल में पहुँच जाएँगे।''

''मैं भी विचार करती हूँ कि हम गंगातट पर चलकर बैठें। वहाँ से समय पर लौट आएँगे।''

सुमित्रानन्दन गंगा पार नहीं जा सका। वहाँ बाबा जी की एक ही नौका थी और वह रघुवीर और उसके साथी ले गए थे। इस कारण सुमित्रानन्दन इधर तट पर कुटिया के बाहर बैठ प्रतीक्षा करने लगा। ठीक सात बजे नौका लौटी और रघुवीर नौका से उतरा तो सुमित्रानन्दन सामने जा खड़ा हुआ।

''सौमित्र! तुम यहाँ? चलो, बाबा जी से तुमको मिलाऊँ।''

''मैं तो तुम्हारी खोज में आया हूँ।''

''क्यों, क्या बात है?''

''वह मिर्ज़ापुर वाली आई है।''

''अकेली है?''

''नहीं। उसकी माँ और बड़ी बहन साथ हैं। वे तुमसे मिलने के लिए व्याकुल प्रतीत होती हैं।''

''इसमें जल्दी क्या है?''

''वे कल लौट जाने वाली हैं।''

''तो लौट जाएँ।''

''तुमको देखे बिना ही?''

''देखना है तो एक दिन ठहर जाएँ।''

''पर तुम किसी को देखने के लिए लालायित नहीं हो?''

''सगाई के उपरान्त देख लूँगा।''

''अबे उल्लू पहले क्यों नहीं?''

''इसलिए कि चलेगी तो माँ की बात। फिर मैं देखकर क्या करूँगा?''

''पर तुम अपनी सम्मति तो लिख सकते हो। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी इच्छा के विपरीत नहीं करेंगी।''

''तुमने उसे देखा है?''

''हाँ, और पसन्द किया है।''

''तो तुम विवाह कर लेना।''

''वाह भैया! पसन्द की तुम्हारे लिए और विवाह कर लूँ मैं? यह पाप-कर्म की मुझसे आशा कैसे करते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैंने अभी पसन्द नहीं की।"

"तो कर लो। पश्चात्ताप नहीं करोगे। अभी ग्यारह-बारह वर्ष की प्रतीत होती है। विवाह के लिए पाँच वर्ष ठहरेंगे और तब तक मिठाइयाँ खाते रहेंगे।"

रघुवीर गम्भीर हो गया फिर बोला, "कहाँ चलना होगा?"

"मिनर्वा में रात के भोजन के लिए।"

"तो अभी पर्याप्त समय है। आओ, तनिक बाबा जी के चरण-स्पर्श कर लें।"

दोनों कुटिया में चले गए। सुमित्रानन्दन ने देखा कि स्वामी निखिलानन्द सत्तर वर्ष के वृद्ध, सर्वथा श्वेत बाल, छरहरा शरीर, ओजस्वी मुख, चार-पाँच शिष्यों से घिरे बैठे हैं।

रघुवीर और सुमित्रानन्दन कुटिया में गए और दोनों ने आगे बढ़ स्वामी जी के चरण-स्पर्श किए तो स्वामी जी ने दोनों को आशीर्वाद दे दिया, चिरंजीव रहो!"

जब वे दोनों बैठ गए तो स्वामी जी ने कह दिया, "रघुवीर! तुम्हारे व्याख्यान की चर्चा हो रही है।"

"क्या चर्चा है स्वामी जी?"

"यही कि तुम भारत के सब विश्वविद्यालयों में हिन्दू नाम चाहते हो।"

"यह तो स्वाभाविक ही है। इसमें वैचित्र्य कुछ भी नहीं।"

"हाँ, यह तो हम भी समझते हैं, परन्तु किसी को कहने का इतना साहस नहीं है।"

"स्वामी जी, साहस की बात तो तब पता चले, जब कोई इसे उपयुक्त और सम्भव मानता हो। इसको कोई भी सम्भव नहीं मानता है और न ही लाभप्रद।"

"लाभ की बात छोड़ो। लाभ तो इसमें अपार है। हाँ, सम्भव की बात अवश्य विचारणीय है। कम से कम वर्तमान सरकार के काल में यह सम्भव प्रतीत नहीं होता। यह तो हिन्दू शब्द जहाँ है, वहाँ से भी हटा रही है।

"इस पर भी तुमने सुझाव बहुत सुन्दर दिया है। जब भी सम्भव होगा कि इस नाम पर विश्वविद्यालयों के नाम रखे जाएँ, तब तक इस विचार को उपस्थित करने और प्रचार करने का श्रेय तो तुमको है।

"हाँ, एक बात है। इस प्रचार में हिन्दू नाम की महिमा प्रथम पग है। अब तो देश में हिन्दू शब्द की साख इतनी कम हो रही है कि पढ़े-लिखे अपने को हिन्दू कहने में संकोच करते हैं।

"यह नहीं कि वे इसको बुरा मानते हैं। आज उत्तर प्रदेश में विशेष रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से और भारत भर में सामान्य रूप में इस विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द उड़ा देने का प्रबल विरोध हुआ है। इस पर भी पढ़े-लिखे लोग वर्तमान युग के सभ्य समाज में अपने को हिन्दू कहलाने में लज्जा अनुभव करते हैं। इसमें कारण यह है कि इस शब्द की महिमा और इसके लिए त्याग, तपस्या तथा बलिदानों की बात साम्प्रदायिक मान निन्दनीय मान ली गई है।

"देखो रघुवीर, सुझाव सुन्दर है। स्वीकार होने पर यह देश में एक नवीन स्फूर्ति उत्पन्न कर सकता है, परन्तु इसके स्वीकार किए जाने से पूर्व हिन्दू नाम की महिमा उज्ज्वल करने का कोई उपाय करो। इसके लिए त्याग, तपस्या और बलिदानों की एक नवीन श्रृंखला प्रस्तुत करो।"

सुमित्रानन्दन ने स्वामी जी के दर्शन प्रथम बार किए थे और वह उनकी ओजस्वी वाणी के ये शब्द सुन अपने हृदय को आनन्दित हो रहा अनुभव कर रहा था। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "इसके लिए क्या करना चाहिए, महाराज?"

"क्या नाम है तुम्हारा?" स्वामी जी ने प्रश्न कर दिया।

"महाराज, सुमित्रानन्दन।"

"किसके लड़के हो और कहाँ के रहने वाले हो?"

महाराज, हथियापुर के श्री करुणानिधि उपाध्याय का लड़का हूँ।

"ओह! तो तुम हो। परन्तु तुम कभी पहले नहीं आए?"

"सायंकाल मैं व्यायाम करता हूँ।"

"ठीक है। परन्तु व्यायाम तो साधन है। यदि यह कहा जाए कि साधन का भी साधन है तो गलत नहीं होगा। ध्येय क्या है? यह भी जानना आवश्यक है। क्या जीवनभर साधन ही बटोरते रहोगे?"

"देखो, हिन्दू नाम की महिमा को उज्ज्वल करने के लिए प्रथम पग है अपने को हिन्दू कहने में संकोच न करना। कभी किसी ईसाई अथवा मुसलमान को अपने को ऐसा मानते हुए संकोच करते देखा है? और फिर हिन्दू का अर्थ तो बहुत श्रेष्ठ है।"

"पर महाराज! क्या यह श्रेष्ठता नहीं कि देश में ऐक्य उत्पन्न करने के लिए इस नाम का त्याग कर दिया जाए?"

बाबा जी हँसे तो अन्य सब बैठे भी हँसने लगे। सुमित्रानन्दन ने समझा कि उसकी युक्ति ने स्वामी जी को निरुत्तर कर दिया है। इस कारण वह भी हँस पड़ा।

स्वामी जी ने हँसते हुए कहा, "बहुत बुद्धिमत्ता की बात की है! श्रेष्ठता को प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ वस्तु का त्याग! तुमने ठीक वही बात कही है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासना से बचने के लिए वासनामय होना। ऐसा तो 'फ्रॉयडिस्ट' कहते हैं।

''बालक! यदि हिन्दू बनना श्रेष्ठ है तो इसका त्याग कर तुम क्या श्रेष्ठता पाना चाहते हो?''

''नाम श्रेष्ठ है अथवा कर्म?''

''है तो कर्म ही श्रेष्ठ, परन्तु उस श्रेष्ठता का कुछ नाम भी तो होना चाहिए। देखो, हिन्दू देशभक्ति, पितृभक्ति, ऋषिभक्ति, सत्य और न्याय की भक्ति, उदारता और सहृदयता की भक्ति है। बताओ, इन सबको और इनसे भी अधिक ईश्वरभक्ति को प्रकट करने के लिए अन्य किस शब्द की कल्पना करोगे? यह नाम तो देश के चालीस करोड़ से ऊपर मानवों के हृदयों में स्थापित है। अन्य कौन-सा नाम इतने हृदयों में स्थापित कर सकोगे? साथ ही कितना काल इसमें लगेगा?

''जो मुट्ठीभर अँग्रेज़ी पढ़े-लिखे इस नाम की निन्दा करते हैं, उनसे भयभीत हो अपनी इतनी बड़ी निधि को नाली में बहा दोगे?''

सुमित्रानन्दन इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। वह चाहता था कि कह दे 'सेक्युलर' शब्द। परन्तु इसकी धज्जियाँ तो रघुवीर ही उड़ा चुका था। इस कारण वह चुप कर रहा। इस समय रघुवीर ने कह दिया, ''महाराज! अब हम जा रहे हैं। सुना है कि कोई मिर्ज़ापुर से मिलने के लिए आया है।''

''कोई पुरुष है क्या? एक तो कुछ दिन हुए तुमको देख गया था।''

''सत्य महाराज! आपने बताया नहीं।''

''उसने कहा था कि वह स्वयं बताएगा।''

''इस समय कोई स्त्री है।''

''ठीक है। कल बताना कि क्या कह गई है? पण्डित करुणानिधि का एक पत्र आया था कि सम्बन्ध ठीक है। वे ठाकुर बिहारीसिंह को जानते हैं।''

''बिहारीसिंह कौन?''

''वही जो तुमको छुपे-छुपे देख गए हैं और अब कदाचित् उनकी धर्मपत्नी देखने आई होंगी।''

''पर महाराज, मुझे अभी विवाह के लिए अवकाश नहीं।''

''यह बात कल बताना। फिर उपाध्याय जी को लिख दूँगा।''

इस पर सुमित्रानन्दन और रघुवीर पुनः चरणस्पर्श कर बाहर निकल आए। कुटिया के बाहर आ और वहाँ से मिनर्वा होटल की ओर जाते हुए रघुवीर ने कहा, ''बात दूर तक पहुँच चुकी प्रतीत होती है।''

''हाँ, यदुनाथ कहता था कि विवाह रस्सी है, जो गाय को कीले से बाँधकर रखने के लिए है। इसे वह 'डोमेस्टिकेट' करना कहता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यदुनाथ का इससे क्या सम्बन्ध है ?"

"यह तो उसने बताया नहीं, परन्तु वह ही इन स्त्रियों को लेकर हमारे कमरे में आया था। हम दोनों को वहाँ न देख इन स्त्रियों को हमारे छात्रावास के वार्डन साहब के कमरे में बैठा, मुझे ढूँढ़ने चल पड़ा था। उसके कहने पर ही मैं वहाँ गया था और तुम्हारे लिए प्रस्तावित पत्नी को देख आया हूँ। भैया, बहुत सुन्दर है वह।"

:: 3 ::

रघुवीर लड़की की प्रशंसा मित्र के मुख से सुन उससे ईर्ष्या करने लगा था। उसने माथे पर त्यौरी चढ़ा कह दिया, "तुम उस पर मोहित हो गए प्रतीत होते हो ? यह तो बहुत बुरी बात है।"

"भैया, छोटी भाभी के रूप में पसन्द कर आया हूँ। इसमें बुरा कुछ नहीं है।"

"तो तुम भी मुझको 'डोमेस्टिकेट' करने में लग गए हो ?"

"वह यदुनाथ तो पशु है। जो कुछ तुमने उसके विषय में बताया है, वह निरा पशुपन है और उसको सब पशु ही दिखाई देते हैं।"

"मेरा विचार है कि रिक्शा कर लें। अन्यथा मिनर्वा तक पहुँचते देर लग जाएगी।"

"हाँ, पौने आठ हो रहे हैं। परन्तु यहाँ रिक्शा कहाँ मिलेगा ?"

"थोड़ी दूर चलना पड़ेगा। चौक पर मिल जाएगा।"

"तो फिर वहाँ से दूर ही कितना रह जाएगा। मैं समझता हूँ कि मेरे वर्णन से उत्सुकता तुम्हारे मन में भी जाग पड़ी है।"

"तुमने मन में कुछ हलचल तो मचाई है।"

"तो सुनो। वहाँ कुछ देर से पहुँचना चाहिए। तनिक उसके मन में भी उत्सुकता बनने दो।"

यही निश्चय हुआ कि रिक्शा नहीं लिया जाए। ये वहाँ पैदल ही आठ बजकर बीस मिनट पर पहुँचे। यदुनाथ बेचैनी से होटल के द्वार पर खड़ा इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब वे वहाँ पहुँचे तो यदुनाथ ने छूटते ही पूछा, "कहाँ रहे हो सुमित्रानन्दन ?"

"क्यों, बहुत देर हो गई है क्या ?"

"तुम्हारा सिर हो गया है। चलो, भीतर।"

"तीनों भीतर गए। प्रमिला देवी एक बड़ी-सी मेज़ के बीचोंबीच बैठी थी। मेज़ के चारों ओर कुर्सियाँ लगी थीं। प्रमिला के दाहिनी ओर उसकी छोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लड़की विन्ध्यवासिनी बैठी उत्सुकता से कमरे के द्वार की ओर देख रही थी। प्रमिला के बाईं ओर पहले उसकी दूसरी लड़की राधा और राधा के साथ सबसे बड़ी लड़की सावित्री बैठी थी। सावित्री के साथ यदुनाथ बैठ गया। यदुनाथ के साथ सुमित्रानन्दन और उसके आगे रघुवीर बैठ गया। इस प्रकार रघुवीर विन्धयवासिनी के साथ की कुर्सी पर था।

नमस्ते इत्यादि कहने के बाद सब कुर्सियों पर बैठ गए। यदुनाथ ने बैरा को भोजन लगाने का आदेश दे दिया। बैरा सबके सामने 'टोमाटो सूप' रख गया। सूप लेते हुए यदुनाथ ने कहा, "माँ! देखो, यह रघुवीर है। इस पुस्तकों के कीड़े को तो यह समय भी व्यर्थ जा रहा प्रतीत होता है।"

"तो इसको तुम बुरी बात समझते हो?" प्रमिला देवी का प्रश्न था।

"बुरी न सही, परन्तु यह शिक्षा का पूर्ण अंग नहीं है। हमें जीवन के सब पहलुओं की शिक्षा लेनी है।"

इस पर सुमित्रानन्दन बोल उठा, "हाँ, विवाह की शिक्षा भी पहले ही प्राप्त करनी चाहिए।"

रघुवीर खिलखिलाकर हँस पड़ा।

इस असभ्य बात को सुन प्रमिला का मुँह लाल हो गया। राधा हँस पड़ी। सावित्री गम्भीर हो गई। रघुवीर ने यह समझा कि उसके मित्र के असभ्य व्यवहार का प्रभाव उसके साथ बैठी छोटी लड़की पर नहीं होना चाहिए। वह उसी को अपनी होने वाली पत्नी समझ रहा था। सुमित्रानन्दन ने उसे बताया था कि लड़की ग्यारह-बारह वर्ष की है। उसने उसकी ओर ध्यान से देखा तो लड़की ने पूछ लिया, "यह आपके क्या लगते हैं।"

"पुरोहित जी के लड़के हैं। सहपाठी हैं और मित्र भी हैं। परन्तु यदुनाथ के परम मित्र हैं। इसी कारण उनसे हँसी कर रहे हैं।"

"दादा से क्या हँसी कर रहे हैं?"

"यदुनाथ आपके दादा हैं?"

"हाँ, बड़े भाई हैं।"

"तभी।"

"तभी क्या?"

"तब तो उससे हँसी करने का उसको अधिकार है।"

पूर्व इसके कि लड़की कुछ और प्रश्न करे, रघुवीर ने पूछना आरम्भ कर दिया, "आप कौन-सी कक्षा में पढ़ती हैं?"

"आठवीं श्रेणी में।

"कितना और पढ़ेंगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जितना माता जी पढ़ाएँगी।"

"आप प्रतिवर्ष परीक्षा पास करती जाएँगी तो वह पढ़ाएँगी ही।"

"सावित्री दीदी भी तो परीक्षा पास कर रही थीं, पर माँ ने विवाह कर दिया और अब जीजाजी उनको पढ़ने नहीं देते।"

"पर आपके साथ वह ऐसा नहीं करेंगी।"

"क्यों?"

"जिससे आपका विवाह होगा, वह आपकी पढ़ाई में बाधा नहीं डालेगा।"

"यह आप कैसे जानते हैं?"

"मैं जानता हूँ। शेष माता जी से जाकर पूछ लेना।"

इस प्रकार की बातें रघुवीर और विन्ध्यवासिनी में होने लगी थीं। दूसरी ओर यदुनाथ ने सुमित्रानन्दन से कहा, "बहुत बेहूदा बात की है तुमने?"

"सत्य? परन्तु तुमने माँ के सामने रघुवीर की निन्दा क्यों की?"

"मैंने तो प्रशंसा के भाव में कहा था।"

"पर शब्द तो प्रशंसा का भाव प्रकट नहीं करते थे। वे तो घृणा के सूचक थे।"

"तुमसे तो बाहर चलकर निपट लूँगा। अब चुप रहना।"

सूप समाप्त हो चुका था।

प्रमिला राधा के हँसने पर विस्मय कर रही थी। वह कुछ ऐसा समझी थी कि विद्यालय में पढ़नेवाले इस प्रकार की बातें करते ही हैं। इस पर भी वह राधा को डाँटना चाहती थी। अपने मन में वह राधा को दिखाने ही वहाँ लाई थी। सूप समाप्त कर उसने प्लेटों के उठाए जाने की प्रतीक्षा करते हुए राधा से पूछ लिया, "तुम हँसी क्यों थीं?"

"माँ, इसमें कुछ बात है। तुम समझी नहीं।"

"क्या समझी नहीं?"

"भैया से पूछ लेना। वह ही तुमको बताएँगे।"

"तो तुमको वह बात पसन्द आई है?"

"कम से कम सतर्क उत्तर तो है। यह तीव्र बुद्धि का लक्षण है।"

माँ को राधा की बात का सिरपैर समझ नहीं आया। उसने धीरे से कहा, "कुछ भी हो, सभ्यता का व्यवहार तो रखना चाहिए। तुमको इस स्थान पर मौन रहना चाहिए।"

राधा को यदुनाथ ने बताया था कि माँ तीन बहिनों में से किसी के लिए लड़का देखने आई हैं। इससे वह समझी थी कि सावित्री के उपरान्त उसी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारी है। अतः उसी के लिए लड़का देखा जा रहा है। और वह दोनों लड़कों में से सुमित्रानन्दन को ही अपने साथ विवाह का प्रत्याशी समझ रही थी। अब प्रत्याशी को सतर्क उत्तर देते देख उसे प्रसन्नता हुई थी। जहाँ तक पठनकाल में विवाह की बात थी, वह यह समझी थी कि विद्यार्थी जीवन में ही विवाह कर, इस दिशा में ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। यही उसकी हँसी का सहायक कारण हुआ था।

सुमित्रानन्दन के उक्त वाक्य से अब वह उसको ध्यानपूर्वक देखने लगी। यद्यपि, माँ के कहने पर वह मौन थी, परन्तु उत्सुकतावश वह उसे अपने लिए एक उपयुक्त पति होने की बात पर विचार करने लगी थी।

खाने के लिए प्लेटें लगीं और सागभाजी, चटनी, अचार, दाल, चावल इत्यादि लग गए। सब खाने लगे, अब विन्ध्यवासिनी ने रघुवीर से पूछ लिया, ''आप किस कक्षा में पढ़ते हैं?''

''मैं बी०ए० द्वितीय वर्ष में हूँ।''

''कितना और पढ़ेंगे?''

''कम से कम एम०ए० तक। चार वर्ष तो पढ़ूँगा ही और यदि माँ ने स्वीकृति दी तो डाक्टरेट भी करूँगा।''

''अभिप्राय यह कि छह वर्ष तक।''

''इससे भी अधिक समय लग सकता है।''

''और विवाह कब करेंगे?''

रघुवीर तो समझ रहा था कि यही लड़की है, जिससे उसके विवाह का विचार हो रहा है। इस कारण उसने उसे चिढ़ाने के लिए कह दिया, ''इसकी अभी जल्दी नहीं।''

''तब तो बहुत बुरा होगा।''

''तो फिर, जब तुम कहो।''

''यह तो माँ से पूछकर ही बता सकती हूँ।''

''अच्छी बात, पूछकर बताना। कैसे बताओगी?''

''आप अपना पता दीजिए, आपको पत्र लिखूँगी। हम कल सुबह यहाँ से जा रही हैं।''

''बहुत सुन्दर।''

''क्या सुन्दर है?''

रघुवीर ने समझा कि उसका यह कहना कि बहुत सुन्दर है, उसे भला प्रतीत नहीं हुआ। इस कारण उसने कहा, ''तुम्हारा मेरा पता पूछने का ढंग बहुत सुन्दर समझ आया है। देखो, क्या नाम है तुम्हारा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विन्ध्यवासिनी।"

"तुम अपनी माँ से पूछोगी कि मेरा विवाह कब होगा और फिर तुम लिखोगी। मुझे यह जान बहुत प्रसन्नता होगी। देखो विन्ध्या! मेरा नाम है रघुवीरसिंह। कमरा नम्बर है 31, बिड़ला छात्रावास, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय। स्मरण रख सकोगी इतना कुछ?"

"वाह, यह भी कुछ कठिन है। रघुवीर जी, कमरा नम्बर 31, बिड़ला छात्रावास, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।"

"बहुत अच्छी लड़की हो तुम। जिसके घर में जाओगी, उसका परम कल्याण करोगी।"

"बस रहने दीजिए।" विन्ध्यवासिनी ने बात बदलने के लिए माँ से कह दिया, "मैंने इनका पता पूछ लिया है और इनको पत्र लिखा करूँगी।"

इस पर सब हँसने लगे। सुमित्रानन्दन भी हँस पड़ा। यदुनाथ ने सुमित्रानन्दन से अब रघुवीर का विस्तृत परिचय प्राप्त करना उचित समझा। उसने यह पूछ लिया, "रघुवीर के माता-पिता की आर्थिक स्थिति कैसी है?"

"इसके पिता नहीं हैं। उनका देहान्त हुए पन्द्रह वर्ष हो चुके हैं। इसके पिता तो ज़मींदार थे, परन्तु अब ज़मींदारी नहीं है। इनका एक फार्म है, जिससे चालीस-पचास हज़ार रुपये वार्षिक आय होती है।"

"तो यह बूर्जुआ है?"

सुमित्रानन्दन ने चुप रहना ठीक समझा। वह बिना उत्तर दिए चावल खाने लगा। वह अर्थशास्त्र का विद्यार्थी होने से बूर्जुआ का अर्थ जानता था और यह भी जानता था कि कम्युनिस्ट इस शब्द को गाली के रूप में प्रयोग करते हैं। वह अपने को यूनियन का प्रमुख सदस्य घोषित कर चुका था और वह यह भी नहीं चाहता था किसी को बूर्जुआ की गाली दी जाती सुन क्रोध प्रकट करे।

सावित्री ने राधा से पूछ लिया, "जानती हो, तुमको यहाँ किसलिए बुलाया गया है?"

"किसलिए बुलाया गया है? माँ ने कहा है कि मुझे यहाँ चुप रहना चाहिए। क्यों, मैं समझी नहीं।"

"माँ की इच्छा है कि तुम लड़के को देख लो और फिर तुम अपनी सम्मति देना।"

"देख लिया है। सम्मति दे दूँगी।"

"कब?"

"कुछ दिन विचार करने के उपरान्त।"

"अच्छी बात। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा की जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अपने आप कुछ नहीं लिखूँगी। जब माँ पूछेगी तो बता दूँगी।"

"ठीक है। माँ अथवा मैं पूछूँगी।"

इस पर राधा ने पुनः जी भरकर सुमित्रानन्दन को देखा। उसने मन में कौतूहल उत्पन्न होता अनुभव किया। माँ ने अपने समीप बैठी विन्ध्यवासिनी से पूछ लिया, "रघुवीर जी से बहुत घुलकर बातें कर रही हो?"

"माँ, बहुत मज़ेदार हैं।"

"अच्छा। क्या मज़े की बात की है इन्होंने?"

"मैंने पूछा कि कितना पढ़ेंगे तो कहने लगे कि अभी छः वर्ष तक और पढ़ाई चलेगी।

"मैंने पूछा कि विवाह कब होगा? तो बोले उसकी अभी जल्दी नहीं।

"इस पर मैंने कहा कि तब तो बहुत कठिनाई होगी। वे कहने लगे कि जब मैं कहूँ, वे मान जाएँगे।"

"मैंने कहा कि माँ से पूछकर बता सकूँगी।

"इस पर कहने लगे कि बहुत अच्छी बात है। माँ से पूछकर बताना। फिर पूछा कि कैसे बताऊँगी?"

"मैंने पता पूछ लिया। इन्होंने पता बता दिया है।"

"तुम तो बहुत चतुर हो गई हो?"

"ये भी कहते थे कि मेरे पूछने का ढंग बहुत सुन्दर है।"

यदुनाथसिंह रघुवीर की आर्थिक स्थिति के विषय में अभी और अधिक जानना चाहता था। उसने सुमित्रानन्दन से पूछ लिया, "तुम रघुवीर को कब से जानते हो?"

"हम बचपन के साथी हैं। हमारा घर इनकी हवेली के पिछवाड़े में है। पिता जी बाबू साहब के पुरोहित हैं और उनके घर में पूजा-पाठ कराते रहते हैं। रघुवीर उनसे ही पढ़ा है। मैं और रघुवीर किसी स्कूल में नहीं पढ़े। हमने घर पर ही तैयारी की और फिर प्राइवेट परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो गए थे।"

"तब तो तुम रघुवीर को बहुत अच्छी तरह जानते हो।"

"वह मेरा घनिष्ठ मित्र है।"

"अच्छा, यह बताओ कि इसकी कोई बहन भी है?"

"न भाई है, न बहन है। इसकी एक विमाता है। उनके घर कोई सन्तान नहीं हुई तो बड़ी अवस्था में जाकर इनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था। उससे रघुवीर का जन्म हुआ है।"

"इनकी माँ सच्चरित्रा हैं?"

सुमित्रानन्दन मुख देखता रह गया। उसको क्रोध आ गया था, परन्तु वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस भोज में विघ्न बनना नहीं चाहता था। इस कारण उसने मुख मोड़ रघुवीर से पूछ लिया, "क्यों, कैसी लगी है?"

इस समय विन्ध्यवासिनी माँ से बातें कर रही थी। रघुवीर ने कहा, "है तो बहुत सुन्दर, परन्तु अभी बच्चों की-सी बातें करती हैं।"

"यह दोष कुछ ही वर्षों में ठीक हो जाएगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम सबसे पसन्द किए जा रहे हो। यहाँ तक कि यदुनाथ पर भी तुम्हारी रूपराशि का प्रभाव हुआ प्रतीत होता है।"

रघुवीर ने मुस्कराकर कहा, "यदुनाथ से पसन्द किए जाने को मैं गुण नहीं मानता। यह अवगुण ही कहा जा सकता है।"

"नहीं, भैया! जब विपक्षी प्रशंसा करे तो समझो कि गुण इतना प्रबल है कि वह भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।"

"मैं उसके विपक्षी होने की बात नहीं कह रहा। मैं उसके विकृत-बुद्धि होने की बात कह रहा हूँ। मैंने उस दिन डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर में देखे दृश्य का संकेत रूप में वर्णन स्वामी जी से किया था और वे बोले, 'वे सब बुद्धिहीन पशु हैं।' इन पशुओं से प्रशंसा तो निन्दा ही होगी।"

सुमित्रानन्दन भी इस बात को अनुभव तो करता था, परन्तु वह यदुनाथ की माँ को प्रशंसाभरी दृष्टि से रघुवीर की ओर देखने का अर्थ समझ रहा था। वह इस प्रशंसा में किसी प्रकार की कटुता उत्पन्न करना नहीं चाहता था। अत: उसने रघुवीर के कान में कह दिया, "वकील साहब की पत्नी की आँख में तो तुम्हारी प्रशंसा भर रही प्रतीत होती है।"

इस पर रघुवीर ने प्रमिलादेवी की ओर देखा और उसे अपनी ओर मुस्कराते हुए देखकर सन्तुष्ट हो गया। उसने दूसरी ओर विन्ध्यवासिनी की ओर मुख कर पूछ लिया, "तो माताजी ने कुछ कहा है?"

"किस विषय में पूछ रहे हैं?"

"यही कि मुझे विवाह कब करना चाहिए?"

"यह बात वे घर जाकर पिताजी से सम्मति कर बताएँगी।"

"तुमने तो माताजी से पूछने की बात कही थी?"

"मैं तो माता जी से ही पूछूँगी, परन्तु वह तो पिताजी से ही पूछकर बताएँगी।"

"तब तो मुझे प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी।"

इस समय भोजन समाप्त हुआ तो सब सामने रखे 'बाउल' के पानी में हाथों की उँगलियाँ धो और नैपकिन से पोंछ उठने लगे। यदुनाथ बिल देखने लगा तो राधा ने सुमित्रानन्दन से कह दिया, "मैं आपसे बाद में मिलना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन ने समझा कि वह रघुवीर के विषय में किसी प्रकार की सूचना चाहती होगी। इस कारण उसने पूछ लिया, "कब मिलना चाहेंगी?"

"कल ही; परन्तु मैं कमरे में नहीं आना चाहती।"

सुमित्रानन्दन भी इसको पसन्द नहीं करता था। उसने कहा, "तो जहाँ कहें, मिल सकता हूँ।"

"यह आप बताइए। मैं क्या जानूँ कि कहाँ मिल सकते हैं? मैं अपने छात्रावास से सायं चार बजे से छः बजे तक बाहर आ सकती हूँ।"

"तो ऐसा करिए कि उपाहार-गृह में...."

राधा ने बात बीच में ही काटकर कहा, "नहीं, वहाँ लड़कों की भीड़ रहती है। कल ठीक पाँच बजे उपाहार-गृह के बाहर ठहरिएगा और वहाँ से मैं आपको गंगातट की ओर ले जाऊँगी।"

जब सब बाहर निकल आए तो यदुनाथ और प्रमिलादेवी ने सुमित्रानन्दन और रघुवीर का धन्यवाद किया और कहा, "भगवान् को जैसा स्वीकार होगा, वैसा आपकी माताजी को लिख दिया जाएगा।"

यदुनाथ राधा को रात के दस बजे तक की छुट्टी दिलवाकर लाया था और वह उसे छात्रावास तक छोड़ने चला गया। स्वयं वह रामकृष्ण छात्रावास में रहता था। यदुनाथ के जाने से पूर्व उसकी माँ ने पूछ लिया, "यदु, हम कल दस बजे की गाड़ी से लौट जाएँगे। बताओ, आओगे स्टेशन पर?"

"माँ, मैं नौ बजे धर्मशाला में पहुँच जाऊँगा।"

इस प्रकार होटल से तो राधा, यदुनाथ, सुमित्रानन्दन और रघुवीर इकट्ठे ही विश्वविद्यालय की ओर चले, परन्तु मार्ग में कोई बात नहीं हुई।

कैम्पस में पहुँच यदुनाथ राधा को लड़कियों के छात्रावास में छोड़ने उस ओर घूमा तो सुमित्रानन्दन ने रघुवीर से कहा, "मैं आज के कार्यक्रम से सन्तुष्ट हूँ।"

"किस कार्यक्रम से?" रघुवीर दिन की सभा की बात के विषय में विचार कर रहा था।

"पूर्ण दिन के कार्यक्रम से। देखो, मध्याह्न पूर्व सभा हुई। सभा सफल रही। जलूस भी बहुत बड़ा था। इन्द्रजीत सभा के शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो जाने पर क्रुद्ध था। यह भी सन्तोष का विषय है। पीछे आज तुम्हारे स्वामी निखिलानन्दजी के दर्शन हुए। उनका यह कहना मुझे बहुत पसन्द आया है कि हमें अपने को हिन्दू कहने से संकोच नहीं करना चाहिए। यदि अँग्रेज़ी पढ़े-लिखे हँसी उड़ाएँ तो हमें उनकी हँसी उड़ानी चाहिए। इससे हिन्दू शब्द की महिमा बढ़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब मैं कभी स्वामीजी से जाकर पता करूँगा कि जितनी श्रेष्ठ बातें उन्होंने हिन्दुओं के बारे में कही हैं, वे कहाँ हैं?"

"ठीक है। तुम भी मेरे साथ चला करो।"

"कल तो मैं एक स्थान पर जा रहा हूँ। फिर किसी दिन चलूँगा।"

"कहाँ जा रहे हो?"

"बताऊँ?"

"नहीं बताना चाहते तो मत बताओ।"

"बताने की बात तो तुम्हें ही है, परन्तु तुम कहो तो बताऊँ।"

"मुझको बताने की है तो बता दो।"

"तुम्हारी साली से बातचीत करने जा रहा हूँ।"

"किस विषय पर?"

"उसने बताया नहीं, परन्तु अवश्य तुम्हारे विषय में पूछना चाहती होगी। अन्यथा मुझसे उसका क्या काम हो सकता है?"

"तो मेरी निन्दा करोगे?"

"भैया, नहीं। तुम्हारी प्रशंसा के पुल बाँध दूँगा। मेरी उत्कट इच्छा है कि तुम्हारा यहाँ विवाह हो जाए। कहो तो एक पत्र पिताजी को लिख दूँ और वे रानी साहिबा को बता देंगे।"

"क्या लिखोगे?"

"यही कि एक घण्टा-भर तुम अपनी भावी पत्नी के सम्मोहन में फँसे हुए मुझे भूल गए थे और उससे घुल-मिलकर बातें करते रहे हो।"

"यह सब व्यर्थ है। गुरुजी से और माताजी से भी डाँट पड़ जाएगी।"

"तो फिर इस प्रकार लिख देता हूँ कि वकील साहब की लड़की तुमसे बहुत घुल-मिलकर बातें करती रही है। तुमको पसन्द है, परन्तु अभी बच्चों की-सी बातें करती है।"

"पहले से यह ढंग अच्छा है, परन्तु अभी भी उचित से कुछ भिन्न है।"

"तो भैया, तुम बता दो, कैसे लिखूँ?"

"यह लिखो कि मिर्जापुर वाली मौसी आई थीं। वह हमें एक होटल में खाना खिलाने ले गई थीं। उनकी तीन लड़कियाँ भी साथ थीं। सब-की-सब सभ्य और सुशिक्षित लगी हैं। आप भी इस परिवार को जानते हैं। अतः यह सम्बन्ध बन जाए तो ठीक ही होगा। परन्तु पढ़ाई का विचार भी करना ही होगा। विवाह पाँच वर्ष तक नहीं होना चाहिए। रघुवीर तो कुछ बताता नहीं परन्तु मेरा विचार है कि उसे इस सम्बन्ध में प्रसन्नता ही होगी।"

"बहुत खूब। कल लिखूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 4 ::

अगले दिन रघुवीर समय से पूर्व लैम्प जला अपनी कुर्सी पर बैठ पढ़ने लगा था। लैम्प जलने से सुमित्रानन्दन की आँख खुल गई। उसने मेज़ पर रखे टाइमपीस की ओर देखा तो अभी पौने तीन बजे थे।

सुमित्रानन्दन लेटा-लेटा ही पूछने लगा, "क्या बात है ? स्वास्थ्य तो ठीक है ?"

"नहीं।"

इस पर तो सुमित्रानन्दन तमककर उठ बैठा, परन्तु रघुवीर को पुस्तक सामने रखे देख पूछने लगा, "तो पढ़ने की बीमारी लग रही है ?"

"नहीं दादा, बीमारी तो यह है कि रातभर नींद नहीं आई। जब लेटे-लेटे पीठ दर्द करने लगी तो उठकर बैठ गया हूँ। पढ़ने का यत्न कर रहा हूँ, परन्तु पढ़ा नहीं जाता।"

सुमित्रानन्दन हँस पड़ा और पूछने लगा, "इस बीमारी के दूसरे लक्षण क्या हैं ?"

"क्या मतलब ?"

"सिर-दर्द है, दिल धड़कता है, टट्टी-पेशाब बन्द है इत्यादि ?"

"हाँ, न सो सकने के कारण सिर भारी हो रहा है। दिल धड़कता तो नहीं, हाँ, चित्त में प्रसन्नता है। चित्त करता है शेष चार-पाँच वर्ष की पढ़ाई आज ही समाप्त कर दूँ, परन्तु पुस्तक के पृष्ठों पर शब्द नृत्य करते दिखाई देते हैं और पंक्तियाँ एक-दूसरे से इस प्रकार मिल रही हैं, जैसे परस्पर कल्लोल कर रही हों।"

सुमित्रानन्दन ठहाका मार हँस पड़ा। हँसकर बोला, "भैया रघुवीर, तुम्हारी बीमारी सत्य ही बहुत भयंकर है। इस करण मेरा विचार है कि कल ही प्रातःकाल किसी वैद्य से सम्मति करनी चाहिए और औषध लाकर खानी चाहिए।"

"किस वैद्य से चिकित्सा हो सकेगी ?"

"यह तो छोटी रानी जी ही कर सकेंगी। मेरा विचार है कि सीधे हथियापुर के लिए चल दो। यहाँ तो बहुत कठिनाई उपस्थित हो सकती है। कहीं बीमारी का प्रकोप बढ़ गया तो 'मेण्टल हास्पिटल' में भेजना पड़ जाएगा।"

"मैं एक दूसरी प्रकार की चिकित्सा का विचार कर रहा हूँ।

"क्या ?"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दिन निकलते ही गंगा जी में स्नान करूँ और आधा घण्टा-भर तैरूँ। तदनन्तर आकर दो घण्टे सोऊँ। रात का खाना पचा नहीं और उसने ही विकार उत्पन्न किया प्रतीत होता है।"

"मुझे तो कुछ नहीं हुआ।"

रघुवीर हँस पड़ा और बोला, "तुमको भी खाने का विकार तो होगा, परन्तु बिहारीसिंह की पत्नी के भोज में नहीं। हाँ, दुर्गा के बाप के घर का खाने से।"

"ओह! तो यह बात है। तुम ठीक कहते हो। उनके घर से उसके भाई की सगाई की मिठाई आई थी तो मैं मात्रा से अधिक खा गया था, परन्तु मैंने डटकर दण्ड बैठक लगाए थे और खाना हज़म हो गया था।"

"तो मैं तैरने जाऊँगा।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे विषय में रानी माँ को पत्र लिख डालूँ। इससे भी तुम्हारे चित्त को शांति मिलेगी।"

पढ़ाई दस बजे के उपरान्त आरम्भ होती थी। सुमित्रानन्दन ने एक बार पत्र लिखा। वह उसे पसन्द नहीं आया। वह पुनः लिखने बैठ गया। तीसरी बार पत्र लिख वह बन्द करने लगा तो रघुवीर ने कहा, "सुना दो।"

"क्यों?"

"अच्छा, मत सुनाओ।"

"वाह, यह भी क्यों?'

"तो फिर क्या करोगे?"

"अभी जाकर डाक के डिब्बे में डाल आऊँगा।"

"अभिप्राय यह कि मेरी निन्दा की है?"

"नहीं भैया, ऐसी कोई बात नहीं। बात यह है कि लड़की की प्रशंसा की है, परन्तु तुमको सुनाना नहीं चाहता।"

"क्यों?"

"इस कारण कि तुम्हारा रोग कहीं बढ़ न जाए।"

रघुवीर ने कमरे का द्वार खोल दिया। इससे बाहर की ठण्डी हवा भीतर आने लगी। रघुवीर स्नान करने के कपड़े ले गंगास्नान के लिए चला गया। साढ़े सात बजे वह लौटा। सुमित्रानन्दन कमरे में नहीं था। उसने एक-दो क्षण कमरे में खड़े-खड़े विचार किया कि कहाँ गया होगा वह? फिर वह कपड़े बदल अपने बिस्तर में घुस सो गया।

सुमित्रानन्दन आया और रघुवीर को खर्राटे भरते देख चुपचाप भोजन करने भोजनशाला में चला गया। आज रघुवीर न तो भोजन करने गया और न ही पढ़ाई करने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढ़ाई बजे मध्याह्न सुमित्रानन्दन पढ़ाई कर लौटा तो रामविलास पाठक उसके साथ था। इस समय रघुवीर अपनी मेज़-कुर्सी पर बैठा हुआ एक पुस्तक पढ़ता हुआ उसमें से उद्धरण कापी पर लिख रहा था।

''सुनाओ, रघुवीर! कैसे हो?'' सुमित्रानन्दन ने पूछ लिया।

''दादा! पाँच घण्टे सोने पर ठीक हो गया हूँ। अब शब्द और पंक्तियाँ स्थिर हैं और मैं उनको पढ़ उनका अर्थ समझ रहा हूँ।''

पाठक एक कुर्सी पर बैठ गया और सुमित्रानन्दन अपने तख़्तपोश पर। पाठक ने कहा, ''तुम श्रेणी में आए नहीं। इस कारण सौमित्र से पूछा तो पता चला कि स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मैं इसके साथ ही चला आया हूँ। एक बात और भी थी।''

''क्या?''

''यूनियन द्वारा विद्यार्थियों की एक सभा बुलाई गई है और उसमें हिन्दू नाम के विरुद्ध प्रस्ताव किया जाने वाला है।

''आचार्य जी ने कहा है कि भारी संख्या में विद्यार्थियों को वहाँ जाना चाहिए और ऐसा प्रस्ताव पारित नहीं होने देना चाहिए। रघुवीर भैया, आज के समाचार-पत्रों में अन्य स्थानों पर भी सभाओं के समाचार छपे हैं। इलाहाबाद और लखनऊ में तो ईंट-पत्थर भी चले हैं। जहाँ तक जनता का सम्बन्ध है, उसने तो हिन्दू शब्द का प्रबल समर्थन किया है, परन्तु यह दूसरा दौर आरम्भ हुआ है। हिन्दू शब्द के विरोधी अब अपने जलसे-जलूस और प्रदर्शन करेंगे। हमें इनको रोकना चाहिए।''

''तो चलना चाहिए।'' रघुवीर ने कहा।

इस पर सुमित्रानन्दन ने बताया, ''पुस्तकालय में एक नोटिस लगा है कि उपकुलपति महोदय ने कल के सब अनुशासनहीनता के मामले विश्वविद्यालय कोर्ट के पास भेज दिए हैं और इसमें तुरन्त जाँच आरम्भ होने वाली है।''

''यह भी ठीक बात ही है।''

''तुम भी अपना नाम साक्षी देने वालों में दे दो।''

''में अभी लिखकर कार्यालय में जाकर दे आता हूँ।''

''हाँ। और आचार्य जी ने कहा है कि तुम उनसे मिल लेना। उनका यह यत्न है कि विश्वविद्यालय से वामपंथियों को निकलवा देना चाहिए।''

''यह सम्भव है क्या? प्रतिवर्ष नए विद्यार्थी भरती होते हैं और प्रत्येक वर्ष एक संख्या में ये लोग आते रहेंगे। आचार्यजी निकलवाते रहेंगे और प्रतिवर्ष नए भरती होते रहेंगे।''

पाठक ने कह दिया, ''पर कुछ तो करना ही चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका एक ही उपाय है। देश का वातावरण बदला जाए। एक दिन स्वामी निखिलानन्द जी कह रहे थे कि कम्युनिज़्म की खेती तो विश्वविद्यालय के बाहर होती है। वहाँ से एक बहुत बड़ी संख्या में ये लोग विश्वविद्यालयों में आते हैं और फिर यहाँ ऊधम मचाते हैं। इनका बीजनाश करना चाहिए। राज्य के संरक्षण में ये देशद्रोही पनप रहे हैं और फिर सर्वत्र पूर्ण वातावरण दूषित कर देते हैं।"

"पर आचार्य जी का कहना इसके विपरीत है," पाठक ने कहा, "वे कहते हैं कि यह विष, जिसके कई नाम हैं, वर्तमान शिक्षा-पद्धति में निहित है। अतः विष इस शिक्षा से निर्माण हो रहा है। ज्यों-ज्यों यह शिक्षा विस्तार पा रही है, यह देशभर में फैल रहा है और अराजकता बढ़ रही है।"

"पर यह विद्यालयों में गड़बड़ तो एक नई घटना है। कुछ ही वर्षों से यह उत्पन्न हुई है और अब दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है।"

"एक दिन आचार्य जी से इस विषय पर विस्तृत वार्तालाप हुआ था। उन्होंने कहा था कि वर्तमान शिक्षा पद्धति इस देश में सन् 1832 में मैकाले के प्रयासों से आरम्भ हुई थी। धीरे-धीरे एक पेड़ के अंकुर के समान यह फूटी और फिर भूमि में जड़ पकड़ती गई।

"सन् 1885 तक पर्याप्त संख्या में अँग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोग हो गए और तब एक अन्य अँग्रेज़ नीतिज्ञ ने इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की। अर्थात् उसने इस दूषित शिक्षा में पढ़े-लिखे लोगों को संगठित करने का आयोजन कर दिया। इन पढ़े-लिखे लोगों ने संस्कृत के विद्वान् लोकमान्य तिलक को कांग्रेस में घुसने नहीं दिया और पण्डित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय तथा अन्य हिन्दू पक्ष वालों को धक्के दे देकर कांग्रेस से बाहर निकाल दिया। इसी शिक्षा वालों ने डुग्गी पीटी महात्मा गांधी की, पण्डित मोतीलाल नेहरू की, पण्डित जवाहरलाल की। उनकी व अन्य अनेकों इन्हीं की परम्परा वालों की पतंग आकाश में चढ़ा दी है।

"बात यह है कि देशद्रोहियों का स्रोत है यह शिक्षा-प्रणाली और देश में अपनी संस्कृति, अपना धर्म और अपनी मर्यादा के प्रभाव को इस शिक्षा से उत्पन्न होने वाले लाखों देशद्रोही मिटा रहे हैं।

"आचार्य जी का कहना है कि ये देशद्रोही अब अपने स्रोत को ही विनष्ट करने के लिए कटिबद्ध हो गए हैं। कुछ वर्षों से ही यह प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है।

"विश्वविद्यालयों की शिक्षा का उद्देश्य ही मिथ्या हो गया है। शिक्षा है कामनाओं को भड़काने वाली और उनकी पूर्ति के उपाय बताने वाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साधारण भाषा में इसे जीविकोपार्जन की शिक्षा कहते हैं, परन्तु वास्तव में यह है मनुष्य का 'स्टैण्डर्ड आफ लाइफ' ऊँचा करने वाली शिक्षा। 'स्टैण्डर्ड आफ लाइफ' का ही दूसरा नाम है कामनाओं में वृद्धि करना।

"कामनाओं का अन्त नहीं और फिर उनकी पूर्ति के साधनों में भी विस्तार का अन्त नहीं हो रहा। कामनाओं की पूर्ति में कर्तव्याकर्तव्य, भक्ष्याभक्ष्य, धर्माधर्म और उचित-अनुचित का विचार नहीं रहा। सर्वत्र यही हो रहा है।

"इन्हीं कामनाओं की वृद्धि की उपज है प्रजातन्त्रवाद, समाजवाद और साम्यवाद। इस सबका अन्त हो रहा है पशुवाद में।"

"तो क्या यह अन्य देशों में भी हो रहा है ?"

"हाँ, जहाँ-जहाँ शिक्षा का उद्देश्य 'स्टैण्डर्ड आफ लाइफ' ऊँचा करना है, वहाँ सब प्रकार के दुराचार, अनाचार, बलात्कार एवं अवैधानिक कार्य हो रहे हैं। साम्यवाद इन सबके मिश्रण का एक नाम है।

"देखो रघुवीर, जब कामनाएँ बढ़ जाती हैं तो मनुष्य उनकी पूर्ति के साधन ढूँढ़ता है। साधन कामनाओं के अनुसार उपलब्ध नहीं हो सकते। इसी कारण वर्तमान युग में हलचल मची है।"

रघुवीर ने कहा, "मैंने अभी भोजन नहीं किया और भूख लगी है।"

"पर इस समय भोजन कहाँ करोगे ?" पाठक ने पूछ लिया।

"चलो रघुवीर, आज कैफेटेरिया में खाने चलते हैं। मैं तो एक प्याला चाय ही पिऊँगा।" सुमित्रानन्दन ने कहा।

रघुवीर उठा और तीनों कमरे से निकल आए। पाठक ने छुट्टी लेनी चाही, परन्तु सुमित्रानन्दन ने उसे चाय का निमन्त्रण दे दिया। पाठक के माता-पिता इतने सम्पन्न नहीं थे, जितने कि रघुवीर के थे। वह संकोच करता था इनके साथ वहाँ चाय लेने में। उसने कहा, "मैं इस समय चाय नहीं पीता।"

"कुछ हानि नहीं होगी। मठरी खाकर ठण्डा पानी तो पी सकते हो।"

रघुवीर ने कह दिया, ठण्डे और गर्म पानी में अन्तर ही क्या है ?"

पाठक चुप कर रहा। तीनों कैफेटेरिया में जा पहुँचे।

कैफेटेरिया में होने वाली विद्यार्थी-सभा की गर्मागर्म चर्चा थी। कुछ लोग कह रहे थे कि, "हम अपने को हिन्दू कहलाने में आपति करते हैं।"

इस पर दूसरे पक्ष के लोग कह रहे थे, "हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने से कोई हिन्दू क्यों हो जाएगा ?"

पहले पक्ष का कथन था, "हम ऐसे संस्थान में पढ़ना नहीं चाहते, जिसके नाम के साथ हिन्दू शब्द लगा हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे पक्ष का उत्तर था, "यह आपकी इच्छा है। हम समझते हैं कि आपको 'ट्रान्सफर सर्टिफिकेट' मिल जाएगा।"

अब एक अन्य बोला, "पर हमें कहीं अन्यत्र प्रवेश भी तो नहीं मिल सकेगा।"

"तो क्या किया जाए? आपको यहाँ से जाने के लिए विवश नहीं किया जा रहा। जो जाना चाहते हैं, वे अपना प्रबन्ध स्वयं कर लें।"

"और विश्वविद्यालय में क्यों नहीं करें?"

"इसमें विश्वविद्यालय का क्या दोष है?"

सुमित्रानन्दन, पाठक और रघुवीर ने यह निश्चय कर लिया था कि वे वहाँ झगड़ा नहीं करेंगे। ये तीनों एक मेज़ पर बैठ खाने लगे। रघुवीर ने अपने लिए मिठाई और मठरी मँगवा ली और उसके साथियों ने केवल चाय और दो-दो मठरी।

इस समय कैफेटेरिया विद्यार्थियों से खचाखच भरा हुआ था और नौकर भाग-भागकर खाने का सामान और चाय लगा रहे थे।

एकाएक एक व्यक्ति ने उठकर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा, "साथियो, हमें आज की सभा में नहीं जाना चाहिए।"

इस पर सर्वत्र चर्चा बन्द हो गई और सब इस वक्ता का मुख देखने लगे। वे इसमें उसकी युक्ति सुनना चाहते थे।

रघुवीर भी उस व्यक्ति की बात सुनने के लिए उसका मुख देखने लगा था। वह उसे पहचान गया। वह उनमें से एक था जो प्रोफेसर इन्द्रजीत की 'न्यूड क्लब' का सदस्य था। उसने सुमित्रानन्दन से कह दिया, "दादा, यह भी उनमें से एक है। यह भी 'न्यूड क्लब' में था।"

वह व्यक्ति कह रहा था, "साथियो, हमको इस सभा में नहीं जाना चाहिए। वहाँ झगड़ा हो जाएगा और विद्यार्थियों को परस्पर झगड़ा नहीं करना चाहिए।

"हमें एक महान् आन्दोलन आरम्भ करना है और उस आन्दोलन की तुलना में हिन्दू शब्द पर परस्पर झगड़ा कर लड़ पड़ना एक बहुत ही छोटी बात हो जाएगी।"

यद्यपि इन तीनों ने यह निश्चय कर लिया था कि ये इस स्थान पर बोलेंगे नहीं, परन्तु पाठक के मन में एक बात आई और उसने उठकर कहा, "साथियो, एक बात मेरी भी सुन लो। यह कामरेड आपको सभा में न जाने को कह रहा है, परन्तु इसके ही साथियों ने कल की सभा के प्रभाव को विलीन करने के लिए आज की सभा बुलाई है। यहाँ इसका आपको न जाने की सम्मति देना इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण है कि आप लोग वहाँ न जाएँ और ये दस-बीस कामरेड वहाँ एकत्रित हो मनमानी करें। अपनी इच्छानुसार प्रस्ताव पारित कर यह घोषणा कर दें कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी विश्वविद्यालय के नाम में हिन्दू शब्द रखना पसन्द नहीं करते।''

इस पर सब उपस्थित विद्यार्थियों ने तालियाँ बजा दीं।

वह कामरेड बोल उठा, ''यह पाठक आर०एस०एस० का आदमी है और यह विद्यार्थियों में फूट डलवाकर विश्वविद्यालय में कार्य बन्द करवाना चाहता है।''

इस पर लोग हँसने लगे। पाठक अभी खड़ा था। उसने कह दिया, ''मैं इस कामरेड से 'टाई' करना चाहता हूँ। यह भी सभा में न जाए और मैं भी नहीं जाऊँगा।''

''मैं इसके लिए तैयार हो जाता, यदि हम दोनों के न जाने से सभा न हो सकती।''

इस पर पुनः हँसी उठी। पाठक ने कह दिया, ''आज की सभा तो होगी और सबको अपने मन से खुलकर बात कहने का अवसर मिलेगा। यह सभा बुलाई तो इस कामरेड के भाई-बन्धुओं ने है, परन्तु प्रस्ताव इनके मन का नहीं हो सकेगा।''

:: 5 ::

सुमित्रानन्दन ठीक पाँच बजे कैम्पस के बाहर निकल उपाहार-गृह के बाहर जा खड़ा हुआ। उपाहार-गृह में खाने-पीने वालों की भीड़ लगी थी। वह पुनः लौटा और महिला विद्यालय से आने वाली सड़क की ओर बढ़ गया और एक ऐसे स्थान पर जा खड़ा हुआ, जहाँ से विद्यालय से आने वाले व्यक्ति देख सकें और जहाँ से वह उपाहार-गृह के द्वार पर भी दृष्टिपात कर सके।

उसे आधा मिनट भी प्रतीक्षा करनी नहीं पड़ी और महिला विद्यालय की ओर से राधा निकलती दिखाई दी। ज्यों ही राधा समीप आई कि सुमित्रानन्दन उसके साथ-साथ चलता हुआ पूछने लगा, ''किधर चलेंगे?''

''गंगातट की ओर।''

''ठीक है।''

दोनों चुपचाप चलते गए। पाँच मिनट में ही वे गंगा की ओर जाने वाले निर्जन मार्ग पर जा पहुँचे।

''आपका नाम क्या है?'' लड़की ने पूछ लिया।

''सुमित्रानन्दन ने नाम बता पूछ लिया, ''और आपका?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं राधा हूँ। यदुनाथ की बहन।"

"हाँ, तो आपने मुझे किसलिए बुलाया है?"

"मुझे पता चला है कि मेरा आपसे विवाह का विचार किया जा रहा है। मेरी माता जी ने कहा है कि वह मुझसे पत्र द्वारा पता करेंगी कि मुझे यह सम्बन्ध पसन्द है अथवा नहीं। इस पत्र के आने से पूर्व मैं आपसे परिचय प्राप्त करना चाहती हूँ। इसीलिए आपसे मिलना चाहती थी।"

सुमित्रानन्दन को यह बात सुन अति विस्मय हुआ। उसने परेशानी अनुभव करते हुए कहा, "यह आपको किसने कहा है?"

"माता जी ने कल भोज के समय संकेत किया था।"

सुमित्रानन्दन को यह समझ आया कि कदाचित् यदुनाथ की माता जी का दोनों लड़कियों को हथियापुर में विवाह देने का विचार बन गया है। छोटी लड़की के लिए रघुवीर को पसन्द किया है और बड़ी लड़की के लिए उसको पसन्द कर लिया है। वह इस नवीन परिस्थिति से बहुत परेशानी अनुभव करने लगा था। उसने स्वयं इन्कार करने के स्थान पर कह दिया, "मैं समझता हूँ कि यह बात मेरे माता-पिता निश्चय करेंगे और आपकी माता जी को भी चाहिए कि पहले मेरे माता-पिता से सब वृत्तान्त जान लें।"

"तो कुछ रहस्य है आपके विषय में जिसका विवाह के निश्चय से पूर्व जानना अत्यावश्यक है?"

"मैं समझता हूँ कि है।"

"मुझे बता सकते हैं क्या?"

"तो फिर वह रहस्य ही नहीं रहेगा। यदि माता जी उचित समझेंगी तो उस रहस्य को खोल देंगी। यह रहस्य उनका ही है। मैं इसमें क्यों पड़ूँ?"

इस रहस्य के विषय में सुन राधा विचार करने लगी। उसने समझा कि कदाचित् यह लड़का अपने पिता का पुत्र नहीं है। इस कारण ही यह विवाह में बाधा अपनी माता के एक रहस्य को समझता है। वह गम्भीर हो गई। एकाएक उसको समझ आया कि भगवान् जाने इसकी माँ का क्या रहस्य है, परन्तु उस रहस्य से इसका क्या सम्बन्ध है? माता-पिता के पापों का भला बच्चों को फल क्यों भोगना पड़े ऐसा विचार कर वह बोली, "देखिए जी! आपकी माता जी का जो रहस्य है, वह मैं अपनी माता जी को पता करने के लिए कह दूँगी। परन्तु मैं तो आपके रहस्य को जानना चाहती हूँ।"

"तो ऐसा करिए, विवाह की बात मत करिए। पहले पूछिए कि मेरे विषय में आप क्या जानना चाहती हैं? जहाँ तक मुझे ज्ञात है, कोई बात छुपी हुई नहीं है। आप जो बात भी पूछेंगी, मैं बता दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप किस श्रेणी में पढ़ते हैं?"

"द्वितीय वर्ष में।"

"आपने हाई स्कूल कौन-सी डिवीज़न में उत्तीर्ण की थी?"

"फर्स्ट डिवीज़न में।"

"फर्स्ट ईयर की परीक्षा में आप कैसे रहे हैं?"

"यहाँ भी मैं फर्स्ट क्लास घोषित किया गया हूँ। अर्थशास्त्र में मैं अपनी श्रेणी में प्रथम रहा हूँ।"

"आप देखने में तो हट्टे-कट्टे प्रतीत होते हैं।"

"यह इस कारण कि बचपन से व्यायाम करता रहा हूँ और जी भरकर दूध पीता हूँ।"

"अच्छा, यह बताइए कि जीवन-यापन के लिए आप क्या करेंगे?"

"मैं तो घर का काम ही करूँगा। नौकरी करना हमारे परिवार की प्रथा नहीं।"

"बहुत खूब, आप सत्य ही विवाह करने के योग्य हैं।"

"धन्यवाद।" सुमित्रानन्दन ने मुस्कराते हुए कहा।

"तो आपको मेरा प्रस्ताव पसन्द है?"

"आपका प्रस्ताव क्या है? आपने तो मेरे गुणों का वर्णन किया।"

"इसी गुण के वर्णन से प्रस्ताव भी हो गया।"

"देखिए जी, आपने कहा है कि मैं विवाह करने के योग्य हूँ। यह तो ऐसा ही है, जैसे किसी दुकान पर पड़े आमों को देख कोई कह दे कि ये आम खाने के योग्य हैं। परन्तु खाएगा तो वही जो दाम देकर खरीदेगा।"

"तो यह बात है। अर्थात् आपकी माँ से आपका दाम निश्चय करना पड़ेगा।"

"हाँ, परन्तु यह भी हो सकता है कि वह अपने बगीचे के सबसे बढ़िया फल को किसी अनधिकारी के पास बेचना चाहें ही नहीं।"

"जब बेचने की बात आई तो प्रश्न दाम का हो गया है। दाम से ही अधिकारी निश्चय होता है। मैं माँ से कहूँगी कि आपकी माता जी से पूछ लें कि किस भाव पर हथियापुर के आम बिकते हैं?"

इस पर दोनों हँसने लगे। हँसकर राधा ने पूछ लिया, "अच्छा, आप यह बताइए कि आप मेरा भी कुछ मूल्य समझते हैं अथवा मैं बे-मोल की वस्तु हूँ?"

इस समय दोनों गंगातट पर नदी की ओर मुख किए खड़े थे। बनारस में नदी का बहाव दक्षिण से उत्तर की ओर है अतः उनका मुख पूर्व की ओर था। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा के बाएँ किनारे पर खड़े थे। सूर्य अस्ताचल की ओर जाता हुआ आकाश को लाल किए हुए था और गंगा के जल में आकाश का प्रतिबिम्ब होने के कारण वह प्रज्वलित-सी हो रही दीखती थी। दृश्य अति सुन्दर था।

सुमित्रानन्दन उसकी तुलना दुर्गा से कर रहा था। दुर्गा उसके गाँव की ही लड़की थी। वह अभी अल्प आयु थी। उसकी आयु दस वर्ष की होगी। जब सुमित्रानन्दन की माँ ने घर पर बात की थी कि वह दुर्गा की माँ से सौमित्र के विवाह की बात कर आई है तो सुमित्रानन्दन छुप-छुपकर दुर्गा को देख आया था। उस समय वह उसे अति भोली और सरलचित्त लड़की लगी थी।

अब वह उसकी तुलना राधा से कर रहा था। राधा दुर्गा से अधिक गौरवर्णीय थी। दुर्गा के रंग में किंचिन्मात्र भूरा रंग मिला था। इस पर भी कुछ बात थी जो उसे दुर्गा की पसन्द थी और वह उसका राधा में अभाव पाता था। वह दुर्गा की तुलना राधा से कर रहा था। राधा को बातें करने का ढंग आता था। दुर्गा से तो वह बात नहीं कर सका था। राधा बी०ए० में पढ़ती थी और दो-ढाई वर्ष में बी०ए० पास करने वाली थी। इसकी मुस्कराहट में भी विशेषता थी।

उसे अपने मुख पर देखते हुए राधा ने पूछ लिया, ''क्या देख रहे हैं?''

''यही कि क्या दाम कहूँ आपका? वैसे मैंने इस प्रकार की वस्तुओं के विषय में कभी विचार नहीं किया, परन्तु मैं मन में विचार करता हूँ कि सामने खड़ी राधा एक अनमोल वस्तु है। दाम पर नहीं मिल सकेगी। यह तो आराधना करने से ही प्राप्त की जा सकेगी।''

राधा हँस पड़ी और बोली, ''आप तो कविता करने लगे हैं। देखिए जी! मैं आपके लिए बेदाम की वस्तु बन सकती हूँ। कोई दूसरा भले ही मुझे अनमोल कहे, परन्तु आपको कुछ दाम नहीं देना पड़ेगा।''

''क्यों?'' सुमित्रानन्दन ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''प्रायः बहुमूल्य वस्तुएं अधिकारियों को भेंटस्वरूप दी जाती हैं।''

''परन्तु मैं तो माँ द्वारा गिरवी रखा हुआ हूँ।''

''वह सब ठीक हो जाएगा। आपकी माँ की स्वीकृति मिल जाएगी। आपका मोल-तोल तो आपकी माँ करेंगी और मैं बिना मूल्य भेंट में मिल सकूँगी। अब छोड़िए इस बात को। मैं एक बात यह चाहती हूँ कि आपसे प्रायः मिल लिया करूँ और मिर्ज़ापुर तथा हथियापुर के भीतर हो रही वार्ता का ज्ञान प्राप्त करती रहूँ। मिर्ज़ापुर से मेरा सम्पर्क है और हथियापुर से आपका रहता ही होगा। मैं समझती हूँ कि यह स्थान हमारे मिलने का उचित स्थान है। अब आप बताइए कि हम किस प्रकार यहाँ मिलने का समय और दिन निश्चय किया करेंगे?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन को पुनः दुर्गा का भोला-भाला मुख स्मरण आ रहा था और वह राधा की बात को सुन नहीं रहा था। जब राधा चुप कर प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी तो उसको चेतना हुई कि राधा ने कुछ पूछा है। उसने पूछ लिया, "क्या पूछा है आपने?"

"तो आप कहाँ थे?"

"हथियापुर में अपनी माँ के आशय और भाव को समझने का यत्न कर रहा था। आप बताइए कि क्या बात थी?"

"मैं यह जानना चाहती थी कि पुनः कब मिलेंगे?"

"देखिए, आप मिर्ज़ापुर अपनी बात लिख दीजिए। मिर्ज़ापुर से आपकी माँ हथियापुर लिखेंगी। हथियापुर में मेरी माँ मुझसे बात करेंगी। इस सब प्रक्रिया में पन्द्रह दिन तो लग ही जाएँगे। आज सोमवार है अतः एक सोमवार छोड़कर अगले सोमवार इसी समय हम यहाँ मिल सकेंगे।"

"बहुत दूर है यह दिन!"

"अभी तो हम पढ़ते हैं और मैं समझता हूँ कि यदि किसी प्रकार की बाधा खड़ी न हो गई तो आपकी इच्छा-पूर्ति में चार वर्ष लगेंगे ही। इतने लम्बे काल में पन्द्रह दिन का अन्तर नगण्य है।

"देखिए, अब मुझे सभा में जाना है। मैं समझता हूँ कि मुझे वहाँ पहुँचने में पहले ही देर हो चुकी है।"

"ओह! सभा में तो मुझे भी जाना है। दादा ने कहला भेजा है कि लड़कियों को लेकर वहाँ अवश्य आऊँ।"

"तो फिर जल्दी चलना चाहिए।"

दोनों लम्बे-लम्बे पग उठाते हुए कैम्पस की ओर चले आए। महिला छात्रावास की ओर मुड़ने से पूर्व राधा ने कहा, "मैं अपनी साथिनों को लेकर आ रही हूँ। आप चलिए।"

:: 6 ::

विश्वविद्यालय के नाम में हिन्दू शब्द पर विश्वविद्यालय में बहुत जोश था। यह जोश साधारण-सा मनोद्गार ही बना रह जाता, यदि उत्तर प्रदेश भर में इस शब्द के हटाए जाने का विरोध न हुआ होता और साथ ही इस आन्दोलन का विरोध वामपंथी न कर रहे होते। पी०एस०पी० वाले तो कम्युनिस्टों से भी आगे थे। इस शब्द का विरोध वे क्यों कर रहे थे, विद्यार्थियों को समझ नहीं आ रहा था। इस दल से सहानुभूति रखने वाले कुछ विद्यार्थी भी थे। इस दल में एक त्रिपाठी नाम के नेता लखनऊ से इस दिन आए और वे यूनियन के कुछ सदस्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिले। यूनियन के अधिकारी तो पहले दिन की सभा और जलूस की सफलता देख निराश हुए बैठे थे, परन्तु त्रिपाठी के कहने से कि वे एक विरोधी सभा करें तो पहले उत्सव का प्रभाव बहुत अंशों में मिट जाएगा, उनमें उत्साह भर आया था।

यूनियन के अधिकारियों का विचार था कि दस-बीस लोग एकत्रित हो प्रस्ताव पारित कर देंगे और कह दिया जाएगा कि विद्यार्थियों की प्रतिनिधि यूनियन की सभा में यह प्रस्ताव हुआ है और पहले दिन की सभा विद्यार्थियों की नहीं, वरंच आर०एस०एस० द्वारा आयोजित बाहरी लोगों की थी।

यूनियन के अधिकारियों ने 'नोटिस बोर्ड' पर एक कोने में छोटा-सा नोटिस पेंसिल से लिखकर लगा दिया और वे विचार कर रहे थे कि सामान्य विद्यार्थियों को तो पता ही नहीं चलेगा, परन्तु उस नोटिस पर रामविलास पाठक की दृष्टि पड़ गई। उसने आचार्य से बात की और आचार्य जी ने पूर्ण विश्वविद्यालय में हल्ला कर दिया। परिणाम यह हुआ कि विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा हॉल समय से पूर्व ही लड़कों से खचाखच भर चुका था।

सभा साढ़े छः बजे आरम्भ होने वाली थी और हॉल छः बजे ही छात्रों से भर गया था। यदुनाथ वहाँ छः बजे पहुँचा था और पिछले द्वार से ही मंच पर पहुँच सका था। भीतर पहुँचते ही वह समझ गया कि उनकी यह योजना भी विफल जाएगी। इस पर भी वह समझ रहा था कि यदि सभा में किसी प्रकार की गड़बड़ मचाई जा सकी तो यह सभा प्रभावहीन हो सकती है।

इस समय उसे सुमित्रानन्दन की याद आई। वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। उसने यह भी देखा कि सुमित्रानन्दन का मित्र रघुवीर रामविलास पाठक के साथ मंच पर बैठा है और मंच पर हिन्दू शब्द के पक्ष वालों का बाहुल्य है।

यदुनाथ बेचैनी अनुभव करता हुआ हॉल के बाहर आ गया और सुमित्रानन्दन की प्रतीक्षा करने लगा।

सुमित्रानन्दन छः बजकर पच्चीस मिनट पर आता दिखाई दिया। यदुनाथ आगे बढ़ उससे मिला और पूछने लगा, "कहाँ गए थे?"

"नगर में कुछ काम था।" सुमित्रानन्दन ने यह बताना उचित नहीं समझा कि वह उसकी बहन से ही मिलने गया था।

"पर आज तो सभा थी और यूनियन की ओर से थी।"

"मैं समय पर आ तो गया हूँ।"

"पर कुछ प्रबन्ध भी तो करना चाहिए। देखो, मैंने सभा-भवन में कुछ अपने साथियों को नियुक्त कर रखा है, परन्तु वे कब सभा में गड़बड़ करें, यह तुमको निश्चय करना है। तुम मेरे साथ मंच पर चलो और जब सभा आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाली हो तो उसी समय तुम उठकर वही कुछ कह दो जो कल की सभा में मुझे कहना था, परन्तु तुमसे पहले मैं बोलूँगा। मैं तो हिन्दू शब्द के विरोध में कहूँगा और तुम्हें यह कहना है कि आज की सभा की कुछ भी आवश्यकता नहीं थी, अतः यह अब भंग की जाती है। शेष मैं समझ लूँगा।''

''ठीक है, परन्तु यदुनाथ! मैं पहले मंच पर जाता हूँ और तुम पृथक्, मेरे उपरान्त आना। इकट्ठे जाने में लाभ कुछ नहीं। हानि होने की सम्भावना तो है।''

''ठीक है, तुम चलो और तुम्हारे दो मिनट उपरान्त मैं आऊँगा।''

सुमित्रानन्दन पिछले द्वार से सभा-भवन में प्रवेश कर मंच पर जा पहुँचा। उस समय सभा का प्रधान रघुवीर बनाया जा चुका था और सभापति के आसन पर उसे बैठाया जा चुका था।

सुमित्रानन्दन आगे बढ़ रघुवीर की कुर्सी के समीप एक अन्य कुर्सी पर जा बैठा। रघुवीर ने उसकी ओर झुककर पूछा, ''किधर गए थे?''

''बताया तो था कि कल भोज के उपरान्त किसी ने मिलने के लिए बुलाया था।''

''ओह! यदुनाथ की दूसरी बहन ने।''

''हाँ।''

''ठीक है। फिर बात करेंगे।''

इस समय पाठक ने उठकर बोलना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, ''आज की सभा का उद्देश्य श्री रामेश्वरदयाल श्रीवास्तव वर्णन करेंगे।''

रामेश्वरदयाल मंच के नीचे बैठा था। वह भी देर से आया था और अभी मंच पर चढ़ नहीं सका था कि यदुनाथ मंच पर चढ़े बिना प्रधान से पूछे सभा को सम्बोधन करने लगा। उसने कहा, ''मैं यूनियन का मन्त्री हूँ। यूनियन के प्रधान श्री ब्रजकिशोर जी यहाँ बैठे हैं। मैं समझता हूँ कि उनको सभापति का आसन ग्रहण करना चाहिए।''

ब्रजकिशोर मंच पर ही था। वह आगे बढ़ रघुवीर की बगल में बैठ गया।

इस पर रामविलास पाठक खड़ा हो कहने लगा। यदुनाथ अभी भी खड़ा था। यदुनाथ ने पाठक को रोकने का यत्न किया, परन्तु रामविलास ने ऊँची ध्वनि में कहा, ''मैं व्याख्यान देने नहीं आया, परन्तु एक संवैधानिक बात कहने आया हूँ।''

''यह सभा विद्यार्थी यूनियन ने आमन्त्रित अवश्य की है, परन्तु यह सभा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की है। केवल यूनियन के सदस्यों की नहीं। अतः यूनियन के प्रधान की उपस्थिति में इस सभा ने श्री रघुवीरसिंह को सभा का प्रधान निर्वाचित किया है। सभा के प्रधान के निर्वाचन के समय कोई आपत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं की गई थी। मैं यूनियन के प्रधान का भी सम्मान करता हूँ और उनके सभा के प्रधान के समीप बैठना और सभा के संचालन में सभापति को सहायता देना उचित ही मानता हूँ। इस पर भी सभा के प्रधान का ही शासन सभा पर होगा। यदि किसी बात में मतभेद हुआ तो दोनों प्रधान परस्पर बात कर निश्चय कर लेंगे।''

इतना कह पाठक बैठा तो यदुनाथसिंह ने अपना वक्तव्य पुनः आरम्भ कर दिया। यदुनाथ ने कहा, ''यूनियन को अधिकार है कि वह इस सभा का संचालन करे। इस कारण मैं मन्त्री के नाते इस सभा का उद्देश्य वर्णन करता हूँ।

''कल जो विशाल सभा विश्वविद्यालय कैम्पस में हुई थी, वह वास्तव में बनारस के नागरिकों की थी। इस कारण आज केवल मात्र छात्र-छात्राओं की सभा बुलाई गई है और यूनियन की ओर से मैं इसका प्रस्ताव उपस्थित करता हूँ।''

इस पर रघुवीर ने उठकर कहा, ''प्रस्ताव पहले मुझे दिखा दीजिए।''

''मैं आपको सभापति स्वीकार नहीं करता।''

इस पर एक ने भवन के कोने से यह आवाज़ लगा दी, ''सभापति स्वीकार नहीं तो सभा से बाहर निकल जाओ।''

इस पर रघुवीर ने आगे बढ़ यदुनाथसिंह के समीप खड़े हो कहा, ''मैं भाई यदुनाथ से यह कह देना चाहता हूँ कि मैं सर्वसम्मति से इस सभा का सभापति चुना गया हूँ। मैं यूनियन के प्रधान होने का दावा नहीं कर रहा। मैं तो केवल इस सभा की बात कर रहा हूँ। यदि इसमें कोई प्रस्ताव आना है तो मैं उस प्रस्ताव को देखे बिना प्रस्तुत करने की स्वीकृति नहीं दे सकता।''

''परन्तु रघुवीरजी को भ्रम हो गया है कि वह इस सभा के प्रधान हैं।''

''तो इसकी परीक्षा हो जाए। अब पुनः मतदान हो जाए।''

एक ने नारा लगा दिया, ''रघुवीरसिंह की....!'' पूर्ण हॉल गूँज उठा, ''रघुवीरसिंह की, जय हो! रघुवीरसिंह की, जय हो!''

''क़ई बार समाघोष हुए। आखिर रघुवीर ने कहा, ''जो मुझको सभापति बनाना नहीं चाहते, वे भी हाथ खड़ा करें। एक ने नारा लगाया, ''ब्रजकिशोर की....।'' कुछ ही विद्यार्थियों ने समर्थन किया और जयघोष किया, परन्तु दस-बीस से अधिक आवाज़ें नहीं थीं।

अभी यदुनाथ और रघुवीर खड़े ही थे कि पाठक उनके समीप आ खड़ा हुआ और बोला, ''बहुमत श्री रघुवीरसिंह के पक्ष में है। इस कारण सभापति वही होंगे।''

यदुनाथ ने कह दिया, ''नहीं, यह बात गलत है। मैं आज्ञा देता हूँ कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग जो यूनियन के अध्यक्ष के सभापतित्व में सभा नहीं चाहते, सभा-भवन छोड़ दें।''

पाठक ने यदुनाथ की बात की ओर ध्यान न देते हुए कहा, ''सभा की कार्यवाही रघुवीर जी के सभापतित्व में आरम्भ होती है।''

अब यदुनाथ ने पाठक को धकेलकर मंच के नीचे फेंकना चाहा। पाठक नीचे गिरता-गिरता बचा। सुमित्रानन्दन अब आगे आ रघुवीर और यदुनाथ के बीच खड़ा हो गया। यदुनाथ ने समझा कि सुमित्रानन्दन ब्रजकिशोर के पक्ष में कुछ कहने वाला है। इसीलिए वह सभा भंग करने का आदेश देने वाला था, परन्तु सुमित्रानन्दन को देख उसके बोलने का अवसर देने के लिए चुप कर गया।

सुमित्रानन्दन ने रघुवीर के कान में कहा, ''तुम सभापति के आसन पर बैठो।''

रघुवीर समझ गया और वह पीछे हट अपने स्थान पर बैठने लगा कि ब्रजकिशोर ने उसको बैठने नहीं दिया और खिसककर स्वयं उसके स्थान पर हो गया। यदुनाथ ने रघुवीर की बाँह पकड़कर पीछे घसीटना चाहा। सुमित्रानन्दन ने एक घूँसा यदुनाथ की कनपटी पर लगाया तो यदुनाथ को चक्कर आ गया। वह दोनों हाथों में सिर पकड़ वहीं ब्रजकिशोर के पास बैठ गया।

परन्तु इस समय हॉल के एक कोने में मुक्का-मुक्की आरम्भ हो गई थी। एक दूसरे कोने में झगड़ा आरम्भ हुआ और फिर मंच पर तथा मंच के नीचे मार-पीट होने लगी।

हॉल खाली होने लगा। लड़ते-लड़ते विद्यार्थी बाहर निकलने लगे।

यूनियन के पक्ष में कम लड़के थे और विरोध में अधिक। यूनियन के पक्ष में झगड़ा करने वाले प्रायः सब छात्र पीटे गए। वे घायल हो बाहर निकल रहे थे। इस समय सुमित्रानन्दन ने यदुनाथसिंह को आश्रय दे उठाया और उसकी रक्षा करता हुआ मंच के नीचे और फिर भवन के बाहर ले गया।

रामविलास अभी भी मंच पर खड़ा विद्यार्थियों को कह रहा था, ''इन शोर मचाने वालों को बाहर कर दो। सभा होगी, 'शेष बैठे रहिए। सभा होगी, बैठे रहिए!''

भवन के बाहर राधा के नेतृत्व में लगभग बीस लड़कियाँ सभा-भवन में प्रवेश पाने के लिए खड़ी थीं। उनको भीतर जाने का मार्ग नहीं मिल रहा था। वे अभी देख ही रही थीं कि भीतर किधर से प्रवेश करें और कहाँ बैठें कि भीतर हो-हल्ला सुनाई दिया और फिर घायल लड़के निकलने लगे। सुमित्रानन्दन भी यदुनाथ का हाथ पकड़े हुए बाहर आ गया। यदुनाथ को हस्पताल की ओर जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख अपनी साथिनों को छोड़ राधा यदुनाथ की ओर लपककर पहुँची और बोली, ''दादा, क्या हुआ है?''

''इस बैल-बुद्धि ने पीट दिया है।''

''दादा चुप रहो, बोलने से पीड़ा अधिक होगी।''

''मैं इन्हें हस्पताल में लिये जा रहा हूँ। आप यहाँ ही ठहरें।'' सुमित्रानन्दन ने राधा को कह दिया।

मार्ग में चलते हुए यदुनाथ ने पूछा, ''तुमने मुझे ही पीट दिया?''

''दादा, मैं तो पाठक को मुक्का लगाने वाला था। तुम क्यों बीच में आ गए?''

''अबे नहीं। पाठक तो मुझसे दूर खड़ा था।''

''मैं समझा था कि वह ब्रजकिशोर को पकड़ने लपका है। मैंने उस पर ही घूँसा ताना था, परन्तु तुमने रघुवीर से झगड़ा करने का यत्न क्यों किया? ब्रजकिशोर ने उसका स्थान ले लिया था। वह उसके रिक्त किए स्थान पर बैठ जाता। यही तो तुम चाहते थे।''

यदुनाथ सुमित्रानन्दन का मुख देखता रह गया। उसे पीड़ा बहुत हो रही थी और वह अधिक बोल नहीं पा रहा था।

हस्पताल में चौदह के लगभग घायल आए और उनकी मरहम-पट्टी की जाने लगी। एक लड़का सर्वथा अचेत अवस्था में लाया गया था। कम्पाउण्डर तो इन घायलों की मरहम-पट्टी कर रहा था और डाक्टर अचेत विद्यार्थी को सचेत करने का यत्न कर रहा था।

हस्पताल में चौदह घायल और एक अचेत के नाम रजिस्टर में दर्ज किए गए। अचेत विद्यार्थी भी सचेत हो गया। उसके अचेत होने का कारण यह समझा गया कि उसके सिर पर आघात हुआ है और उसे सचेत करने में दस मिनट लगे।

मरहम-पट्टी होते आधा घण्टा लग गया। इस सब समय सुमित्रानन्दन यदुनाथ के साथ रहा। जब पट्टी कर दी गई तो यदुनाथ और सुमित्रानन्दन हस्पताल से बाहर निकले। सामने से राधा लम्बे-लम्बे पग उठाती हुई आती दिखाई दी। वह यदुनाथ और सुमित्रानन्दन के सामने खड़ी हो पूछने लगी, ''दादा, कैसे हो?''

''देख लो। पट्टी बँधवा आया हूँ।''

''और किधर जा रहे हो?''

''सभा-भवन में।''

''सभा तो विसर्जित हो चुकी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो होनी ही थी।"

"पर दादा, प्रस्ताव पारित हो गया।"

"क्या प्रस्ताव पारित हो गया।"

"यही कि विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द न निकाला जाए।"

"और किसी ने विरोध नहीं किया।"

"विरोध करने वाले तेरह-चौदह तो घायल हो चले गए थे।"

"और पक्ष में कितने थे?"

"सभा-भवन खचाखच भरा था। रघुवीरसिंह सभापति के आसन पर थे। पाठक ने प्रस्ताव पढ़ा और पारित हो गया।"

"सौमित्र!" यदुनाथ ने कहा, "तुमने आज सब काम बिगाड़ दिया।"

"पर दादा, तुमने योजना भंग की थी। प्रस्ताव उपस्थित होने देना था अथवा अपना प्रस्ताव प्रधान को दिखा देते। तब मैं उठकर कहता जो तुमने मुझे कहने को बताया था। फिर सभा भंग कर दी जाती।

"तुमने गलत बात की और फिर मैं पाठक को मुक्का मारने वाला था और लपक पड़े बीच में तुम।"

"मैं तो रघुवीर को बाँह से पकड़कर नीचे फेंकने वाला था।"

"क्यों?"

"वह सभापति के आसन पर बैठना चाहता था।"

"पर दादा! सभापति का आसन तो ब्रजकिशोर ने ले लिया था। जब रघुवीर ने आपसे प्रस्ताव माँगा था तो मुझे संकेत कर देते और मैं सभा भंग कर देता। तुम व्यर्थ में रघुवीर की ओर लपके।"

:: 7 ::

अगले दिन रघुवीर अपना बयान लिखकर विश्वविद्यालय के कार्यालय में दे आया। उसने कहा कि यह बयान विश्वविद्यालय कोर्ट से नियुक्त जाँच-समिति के समक्ष उपस्थित करने के लिए है।

उक्त घटना के तीन दिन उपरान्त रघुवीर का बयान उसे वापस मिल गया और उस पर लिखा था, "नई दिल्ली से विश्वविद्यालय के कुलपति की ओर से यह आदेश मिला है कि जाँच नहीं होगी। पूर्ण बात कुलपति के पास विचाराधीन है।"

इस पत्र के मिलने पर रघुवीर और सुमित्रानन्दन आचार्य देवेन्द्रनाथ के क्वार्टर में जा पहुँचे और पूछने लगे, "आचार्य जी! यह क्या हुआ है?"

"डाक्टर इन्द्रजीत यहाँ से अपने गाँव जाने के लिए छुट्टी लेकर गया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री और कुलपति के पास जा पहुँचा है। उनसे कुछ झूठ-सच कह जाँच रुकवा आया है।''

''साथ ही यह पता चला है पूर्ण घटनाचक्र पर विचार किया जा रहा है। उपकुलपति ने अब अपना बयान लिखना आरम्भ कर दिया है। उसमें वे जो कुछ जैसा जानते हैं, लिखेंगे। साथ ही उन्होंने जो हिंसात्मक एवं अनुशासन-विरुद्ध कार्य करते रहे हैं, उन लड़कों के रस्टिकेशन की आज्ञा दे दी है। उनमें यदुनाथसिंह, ब्रजकिशोर, द्विजेन्द्र मण्डल इत्यादि लड़के भी सम्मिलित हैं।''

सुमित्रानन्दन को इससे सन्तोष हुआ। उसने यत्न किया और यूनियन के सदस्य बनने की विद्यार्थियों से अपील कर दी। यदुनाथसिंह विद्यार्थी न रहने से स्वयमेव मन्त्री नहीं रहा था, अतः सुमित्रानन्द बिना किसी निर्वाचन के मन्त्री बन गया। यह आचार्य जी की सम्मति से हो रहा था।

एक दिन वह यूनियन के कार्यालय में बैठा हुआ था कि यदुनाथसिंह आया और सुमित्रानन्दन को मन्त्री के स्थान से उठने के लिए कहने लगा।

''तो तुम आ गए हो?'' सुमित्रानन्दन ने पूछ लिया।

''डाक्टर इन्द्रजीत कह रहे हैं कि कोई भी लड़का निकाला नहीं जाएगा। इस कारण मुझे यूनियन के मन्त्री पद पर आसीन रहना चाहिए।''

सुमित्रानन्दन ने एक क्षण तक विचार किया और अपनी कुर्सी से उठ मन्त्री की कुर्सी के साथ की कुर्सी पर बैठ गया। यदुनाथ बैठा तो सुमित्रानन्दन ने वहाँ रखी नई 'मेम्बरशिप' की फाइल उठा अपने सामने रख ली। यदुनाथ ने पूछा, ''यह क्या है?''

''मेम्बरशिप के लिए नए भरे गए फार्म हैं।''

''कितने हैं?''

''एक सहस्र से ऊपर हैं।''

''इतने तो मेम्बर बनने के योग्य विद्यार्थी विश्वविद्यालय में हैं नहीं।''

''यह कैसे कहते हो?''

''देखो सौमित्र! प्रत्येक कार्य की योग्यता होती है और अयोग्यों को सदस्य नहीं बनाया जा सकता।''

''यह तो मैं जानता हूँ, परन्तु भैया, इसका निश्चय मैं नहीं कर सकता।''

''विस्मय इस बात का है कि तुम अर्थशास्त्र के ज्ञाता होते हुए यूनियन को चलाने का ढंग नहीं जानते।''

''जानता हूँ भैया! विश्वविद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी यूनियन का सदस्य बनने का अधिकार रखता है। यूनियन की कार्यकारिणी किसी की याचना 'रिजेक्ट' करते समय उसमें कारण बता देती है। यह मैं अकेला नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। कार्यकारिणी की बैठक में सब फार्म उपस्थित कर दूँगा।''

''देखो सौमित्र, मन्त्री ही सब कुछ है। इस कारण मन्त्री के नाते मैं ही सदस्यता अस्वीकार कर सकता हूँ और कारण लिखने से बचने के लिए मैं फार्म ही जला दिया करता था।''

''दादा, मैं ऐसा नहीं कर सकता।''

''अब मैं आ गया हूँ। इस कारण यह फार्म मुझे दे दो। मैं सबको ठीक कर दूँगा।''

''पर तुम क्या हो? एक विद्यार्थी, जिसका नाम विश्वविद्यालय के रजिस्टर पर दर्ज ही नहीं, वह यूनियन का मन्त्री कैसे हो सकता है?''

''छोड़ो इन बातों को।'' यदुनाथ ने सुमित्रानन्दन के आगे से फाइल उठा लेने के लिए हाथ बढ़ाया। सुमित्रानन्दन ने अपना सुदृढ़ हाथ फाइल के ऊपर रख कहा, ''दादा, अनुशासन भंग करने से यूनियन में फूट पड़ जाएगी।''

''पर सौमित्र, तुम अनुशासन की रक्षा करने वाले कौन हो?''

''मुझे उपकुलपति महोदय ने कार्यवाहक मन्त्री बनाया है। यह तब तक है, जब तक निर्वाचन से नियमित मन्त्री नहीं बन जाता।''

''और उपकुलपति का यूनियन पर क्या अधिकार है?''

सुमित्रानन्दन खड़ा हो गया। वह समझने लगा था कि नौबत हाथापाई की आ सकती है। यदुनाथ समझ रहा था कि सुमित्रानन्दन से लड़कर वह कोई कार्य कर नहीं सकता। उसे सभा में लगे मुक्के की स्मृति अभी तक थी। फिर वह अभी तक सर्वथा ठीक नहीं हुआ था। अतएव वह बातों से ही उसको समझाना चाहता था। यदि कार्यालय में उसके एक-दो साथी और होते तो वह बलपूर्वक फाइल छीनने का भी यत्न करता।

सबसे कठिन बात यह थी कि वह सुमित्रानन्दन की युक्ति का उत्तर नहीं दे सका था। तीन व्यक्ति बैठे यह देख रहे थे और समझ नहीं रहे थे कि यदुनाथ इतना उतावला क्यों हो रहा है!

सुमित्रानन्दन ने फाइल बगल में दबाई और कमरे से बाहर निकलने के लिए द्वार की ओर घूमा कि रामविलास पाठक भीतर आता हुआ दिखाई दिया। पाठक ने यदुनाथ को कुर्सी पर बैठे और सुमित्रानन्दन को जाते देखा तो वह सुमित्रानन्दन से पूछने लगा, ''किधर जा रहे हो?''

''भाई यदुनाथसिंह व्यर्थ में झगड़ा करने लगे हैं। ये समझते हैं कि यह कमरा और यह कुर्सी यूनियन है। मैं भाई यदुनाथ का भ्रम-निवारण करने के लिए यूनियन का कार्यालय कहीं अन्यत्र लिये जा रहा हूँ।''

''नहीं सौमित्र! हम यहीं बैठेंगे। इधर आओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पाठक जी, मैं भाई से लड़ना नहीं चाहता।"

"क्यों?"

इस समय कार्यालय के द्वार पर राधा आ खड़ी हुई और वहाँ से ही आवाज़ देने लगी, "सौमित्र जी!"

"पाठक जी, यह कारण है। आइए राधा जी, मैं आपका पाठक जी से परिचय करा दूँ।"

राधा भीतर आ गई। उसने यदुनाथ को कुर्सी पर बैठे देख पूछ लिया, "दादा, कब आए?"

"मैं गया ही कहाँ था? कुछ दिन के लिए लापता हो गया था।"

"मैंने पिता जी को एक पत्र में पूर्ण विवरण लिखा है कि दादा घर आ रहे हैं। उन्हें समझा दें।"

"पर पिता जी का इससे क्या सम्बन्ध है?"

"किससे क्या सम्बन्ध है?"

"इस यूनियन के कार्य से।"

"यूनियन के साथ तो कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु दादा, तुम और तुम्हारी पढ़ाई से तो सम्बन्ध है न? मैंने उसी विषय में लिखा है।"

"तुमने ठीक नहीं किया।"

पाठक समझ गया कि राधा यदुनाथ की बहन है। दोनों की आकृति में भी कुछ समानता थी। अब सुमित्रानन्दन ने कह दिया, "अब मैं जा रहा हूँ। मुझे राधा जी के साथ कहीं जाना है।"

पाठक ने पूछा, "और यह फाइल?"

"यह मैं किसी मित्र के पास रख जाऊँगा। भाई यदुनाथ कह रहे थे कि ये फार्म जला देने के योग्य हैं।"

सुमित्रानन्दन को राधा के साथ कमरे से निकलते देख यदुनाथ उठा और उन दोनों के पीछे चल पड़ा। रामविलास पाठक यदुनाथ से छोड़ी कुर्सी पर बैठ गया। वहाँ तीन विद्यार्थी और बैठे थे। वे तीनों चुपचाप सुमित्रानन्दन और यदुनाथ के वाद-विवाद का रस ले रहे थे। ये तीनों ही यूनियन की कार्यकारिणी के सदस्य थे। ये पहले यदुनाथ और ब्रजकिशोर के पक्ष में थे, परन्तु सभा के दिन इन दोनों के व्यवहार से विक्षुब्ध हो अपनी निष्ठा इनमें खो चुके थे। इस पर भी वे अभी तक दूसरे पक्ष के उद्देश्यों को समझे नहीं थे। उनके अर्थशास्त्र के प्रोफेसर यह बताते रहते थे कि अर्थ ही संसार के पूर्ण कार्यों में 'मोटिव फोर्स' (चालक शक्ति) का कार्य करता है। अतः उनका यह स्वभाव बन गया था कि प्रत्येक समस्या को वे अर्थ से सम्बन्धित समझते थे। इस पर भी वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द निकाल देने से कौन-सा अर्थ सिद्ध होने वाला है, समझ नहीं सके थे।

इस प्रकार ये तीनों ऐसे थे, जैसे कि खेतों की मेड़ पर बैठा व्यक्ति। पाठक ने पूछ लिया, ''सुनाओ कृष्ण, क्या समझे हो इस सबका अर्थ?''

''हम तो यह समझे हैं कि एक घोर संघर्ष चल रहा है, पैसे वाले और निर्धनों में।''

''इन दोनों में मेरा अभिप्राय है कि सुमित्रानन्दन और यदुनाथ में कौन धनी है और कौन निर्धन?''

''हम इनके घरवालों की आर्थिक स्थिति को नहीं जानते। परन्तु सुमित्रानन्दन धनिकों का पक्ष लेता है, यदुनाथ निर्धनों का।''

''सत्य? यदुनाथ ने कितने निर्धन विद्यार्थियों को सहायता दिलवाई है?''

''कहाँ से दिलवाता?''

''जिनके समक्ष यह निर्धनों की सहायता का दम भर रहा है।''

''वे भी तो निर्धन हैं।''

''देखो कृष्ण! यह किसी निर्धन के सामने किसी भी बात का दम नहीं भर रहा। यह सरकार की विश्वविद्यालय के कार्य में हस्तक्षेप की सहायता कर रहा है और सरकार से ही इसे यहाँ के निर्धन विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियाँ दिलवानी चाहिएँ।''

''पर सरकार विश्वविद्यालय के कार्यों में हस्तक्षेप कर रही है क्या?''

''यह हिन्दू नाम के हटाने का प्रयास क्या है? अब यहाँ के प्रबन्ध में भी कुलपति जाँच करेंगे, उपकुलपति अथवा विश्वविद्यालय का कोर्ट नहीं। सबसे बड़ी बात यह है कि 'यूनिवर्सिटी ऐक्ट' का अर्थ क्या यह विश्वविद्यालय के कार्य में हस्तक्षेप नहीं?''

''देखो कृष्ण, सरकार के पास करों से धन एकत्रित होता है और उस धन से वह विश्वविद्यालयों को अनुदान देती है, परन्तु उस अनुदान के साथ ऐसे सूत्र बाँध रखे हैं, जिनसे यहाँ की शिक्षापद्धति में भी हस्तक्षेप होता है।''

''पाठक जी, हम विद्यार्थियों को इन उच्च स्तरीय बातों का ज्ञान नहीं। अभी हम विद्यार्थी हैं।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ कि हमारी यूनियन को इन बातों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, परन्तु यदुनाथ इत्यादि तो उपकुलपति और आचार्य देवेन्द्रनाथ को हटाने के लिए प्रस्ताव कर रहे हैं।''

''नहीं तो।''

''भाई, इन्होंने यूनियन की ओर से एक 'मेमोरेण्डम' तैयार किया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पर मन्त्री तथा प्रधान के नाते हस्ताक्षर कर भेज दिया है। उस 'मेमोरेण्डम' में न केवल उपकुलपति तथा कुछ अन्य प्राध्यापकों को हटा देने की माँग की है, वरंच उसमें यह भी लिखा है कि यहाँ संस्कृत और हिन्दी की पढ़ाई बन्द कर देनी चाहिए।''

कृष्ण और उसके साथी मुख देखते रह गए। इस समय कुछ अन्य सदस्य भीतर आ गए और वे वहाँ रखी बेंचों पर बैठ पूछने लगे, ''क्या निकाले हुए विद्यार्थियों को सरकार के आग्रह पर पुनः प्रवेश मिल रहा है ?''

''ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय सरकार और विश्वविद्यालय के अधिकारियों में पत्र-व्यवहार चल रहा है।''

''परन्तु यदुनाथ तो कह रहा था कि आज्ञा आ गई है कि उसके विरुद्ध आज्ञा रद्द कर दी जाए।''

''जहाँ तक मुझे सूचना मिली है, केन्द्रीय सरकार आज्ञा दे सकती ही नहीं। वह अपनी सम्मति ही दे सकती है। वह उसने दी है। उपकुलपति ने उसकी सम्मति में दोष वर्णन कर उनको लिखा है। अभी स्थिति वही है, जो कल थी।''

एक अन्य विद्यार्थी ने पूछा, ''हमारे सदस्यता-फार्मों का क्या हुआ ?''

''वे कार्यकारिणी की बैठक में रखे जाएँगे। यदि स्वीकार हुए तो यूनियन की सदस्य-संख्या दो सहस्र के लगभग हो जाएगी और तब कार्यकारिणी का नया निर्वाचन होगा और यदि कार्यकारिणी ने किसी विद्यार्थी को अकारण सदस्य बनाने से न की तो उस विद्यार्थी की ओर से विश्वविद्यालय कोर्ट के समक्ष अपील की जाएगी। ऐसी स्थिति में कार्यकारिणी भी भंग की जा सकती है।''

''हम आज कार्यकारिणी की बैठक की घोषणा कर देंगे और उसमें सदस्यता-फार्म स्वीकार करवाने का यत्न करेंगे।''

इस समय ब्रजकिशोर कार्यालय में आ गया। एक कुर्सी ले पाठक के सामने बैठ उसने पूछ लिया, ''आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?''

''मैं यूनियन की कार्यकारिणी समिति की बैठक बुलाने के लिए विज्ञप्ति निकाल रहा हूँ।''

''पर मेरा तो प्रश्न है कि किस अधिकार से ? जहाँ तक मेरा ज्ञान है, आप तो यूनियन के सदस्य भी नहीं।''

''मुझे उपकुलपति महोदय ने इस कार्य के लिए अपना प्रतिनिधि मानकर यहाँ भेजा है।''

''हम उपकुलपति का अधिकार नहीं मानते कि वह यूनियन के काम में हस्तक्षेप करे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु आप यूनियन के क्या हैं?"

"मैं प्रधान हूँ। नियम से प्रधान निर्वाचित हुआ हूँ।"

"परन्तु आप तो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी नहीं।"

"उपकुलपति ने अनियमित आज्ञा देकर मुझे 'रस्टिकेट' किया है, मैंने इसकी अपील की है।"

"किसके सामने?"

"कुलपति के समक्ष।"

"सीधी अथवा किसी के द्वारा?"

"सीधी।"

"तो अभी आप विश्वविद्यालय के विद्यार्थी नहीं हैं। अत: यूनियन के सदस्य और प्रधान भी नहीं हैं। अब यहाँ से जाने की कृपा करें, जिससे हम वैध कार्य कर सकें।"

"यदि न जाऊँ तो क्या होगा?"

पाठक के कहने के पूर्व ही नए आए विद्यार्थियों में से एक ने कहा, "ब्रजकिशोर जी, हम आपको धक्के दे-देकर केवल इस कार्यालय से ही नहीं, विश्वविद्यालय कैम्पस से भी निकाल देंगे।"

"ओह! है आपकी हिम्मत?"

इस पर तीन लड़कों ने ब्रजकिशोर को बाँहों और गरदन से पकड़ा और कमरे से बाहर धकेल दिया।

इस पर पाठक ने यूनियन के छपे फार्म पर यूनियन की कार्यकारिणी के सदस्यों के नाम आज्ञा जारी कर दी और उनके नाम नीचे लिख दिए।

:: 8 ::

सुमित्रानन्दन और राधा कैम्पस के बाहर चले तो यदुनाथ भी उनके साथ-साथ था। कैम्पस के भीतर तो तीनों चुपचाप चलते गए। बाहर निकल वे गंगातट की ओर घूम गए। जब एक एकान्त स्थान पर पहुँचे तो राधा ने सुमित्रानन्दन से कहा, "मैं आपसे एक आवश्यक विषय पर बात करने के लिए बिना समय-स्थान निश्चय किए आई हूँ।"

"यह तो देख रहा हूँ।"

"पर दादा साथ हैं।"

"तो क्या करूँ?"

"इनको धमकाकर भगा दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह देवीजी के भाई हैं। यदि कोई विशेष बात न हो तो इनको साथ रहने दिया जाए।''

अब यदुनाथ ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''राधा, तुम परिवार के विरुद्ध किसी प्रकार का षड्यन्त्र कर रही हो, जो मुझसे चोरी कुछ करना अथवा कहना चाहती हो।''

''नहीं दादा, मैं परिवार के विरुद्ध कुछ नहीं कर रही, परन्तु तुम परिवार का विरोध कर रहे हो। पिताजी खर्चा भेजते हैं पढ़ाई करने के लिए और तुम समय व्यर्थ गंवा रहे हो राजनीति के कामों में। षड्यन्त्र तो तुम कर रहे हो।''

''शिक्षा के विषय में तुम मुझे पाठ पढ़ाने की योग्यता नहीं रखतीं। जो कुछ तुमको कहना है, वह पिताजी को लिख दो। वह स्वयं राजनीति में भाग लेते हैं और लेते रहे हैं, मेरी बात को वह भली-भाँति समझ लेंगे।

''तुम अपनी बात बताओ। सुमित्रानन्दन से क्या बात करने आई हो? अपने परिवार की एक लड़की को एक अपरिचित ब्राह्मण कुमार से क्या काम है, जो वह उससे एकान्त में सम्मति करने चली आई है, मैं यह जानने का अधिकार रखता हूँ।''

''मैं जानने के अधिकार पर सन्देह नहीं कर रही। मैं तो आपके अनधिकार हस्तक्षेप से डर रही हूँ। मैं यह भी जानती हूँ कि आप लड़कर इनसे पार नहीं पा सकेंगे और कहीं पीटे गए तो दुःख मुझको भी होगा।''

''देखो राधा! मुझे जो कुछ कहना होगा, वह माताजी को लिख दूँगा। तुमको यहाँ से इस अनधिकारी के साथ भाग जाने से रोकूँगा।''

राधा और सुमित्रानन्दन हँस पड़े। हँसते हुए सुमित्रानन्दन ने कह दिया, ''यदु भैया, इस प्रकार की बात करने में मैं तुम्हारा दोष नहीं मानता। यह तुम्हारा उस पशु-प्राध्यापक की संगत का फल ही है। इस कारण मैं तुमसे रुष्ट नहीं हूँ। रही राधा जी से तुम्हारे सामने बात करना, इसमें मैं हानि नहीं मानता और पहले भी कह चुका हूँ कि तुम इस देवी के भाई हो अतः तुम्हारे सामने बात करने में हानि नहीं है।''

राधा ने सुमित्रानन्दन से बात आरम्भ कर दी। इस समय वे गंगातट पर रेत के ऊपर जा खड़े हुए थे। राधा ने बैठते हुए कहा, ''मुझे आज सावित्री दीदी का पत्र मिला है। उसमें उन्होंने पूछा है कि मेरा आपसे विवाह के विषय में क्या विचार है? अब आप बताइए क्या कहते हैं?''

दोनों लड़के भी राधा के सामने बैठ गए। सुमित्रानन्दन ने कहा, ''मैंने तुम्हें उस दिन भी बताया था कि इस विषय में मेरी माताजी ही उत्तर दे सकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। उनसे बात पूछी जानी चाहिए।''

''यह तो ठीक है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि यदि पीछे आप इन्कार करेंगे तो व्यर्थ में आपकी माताजी को कष्ट क्यों दिया जाए?''

''यह कष्ट व्यर्थ नहीं होगा। इससे लाभ होने की सम्भावना ही है। मैं इस समय कुछ भी नहीं कह सकता। कारण यह कि यदि मैं अब मानता हूँ कि मैं तुमसे विवाह करूँगा तो मैं तुम्हारे प्रति पत्नी की भावना रखूँगा, और अगर एक बार किसी लड़की के प्रति पत्नी की भावना बना लूँगा तो फिर सूर्य टरे, चन्द्र टरे, पर मेरी बात नहीं टर सकेगी। मैं माता-पिता से भी इसके लिए भिड़ जाऊँगा और यदि पीछे तुमने विवाह करने से इन्कार किया तो फिर तुम्हारा बलपूर्वक अपहरण भी कर सकता हूँ।''

''बहुत भयंकर जीव हैं आप!''

''हाँ, इसी कारण मैं ये शब्द कि मैं तुमसे विवाह करूँगा, कहने में संकोच अनुभव करता हूँ। एक बार कही बात से पीछे हटना थूककर चाटने के समान है।''

''तब तो बात ठीक है, परन्तु मैंने आपके प्रति पति की भावना बना ली है और यदि मैं आपका अनुकरण करूँ तो मैं यह कहूँगी कि अब विवाह होगा तो आपसे ही होगा। मैं अपने माता-पिता के विरुद्ध भी विद्रोह करूँगी और यदि आप नहीं माने तो आपका अपहरण कर लूँगी।''

इस पर सुमित्रानन्दन हँस पड़ा। यदुनाथ विस्मय में बहन का मुख देखता रह गया। वह बहन को पागल हो गई मानने लगा था। उसके ज्ञानानुसार यह वासनामय अज्ञान का आवरण है, जिसकी छाया में राधा अपने-आपको शौर्यवान मान रही है। वह स्वयं विवाह को जीवन में एक सुविधा का साधन-मात्र मानता था।

सुमित्रानन्दन ने जी-भर हँसकर कहा, ''कैसे मेरा अपहरण करेंगी?''

''बलपूर्वक।''

अब यदुनाथ भी सुमित्रानन्दन की हँसी में सम्मिलित हो गया। हँसकर सुमित्रानन्दन ने कहा, ''मुझे इस प्रकार के अपहरण किए जाने पर प्रसन्नता होगी। परन्तु देवी! आप कर नहीं सकेंगी और फिर जब अपने प्रयास में असफल हुई तो आत्महत्या करने का विचार करने लगेंगी।''

''जी नहीं, मैं भीरु नहीं हूँ। इस पर भी एक बात आप नहीं समझे कि शरीर में पशुबल से अधिक भी एक बल है। मैं उसी का प्रयोग करूँगी।''

''अभिप्राय यह कि वासनाओं को उभारेंगी।''

''वासनाएँ भी तो शारीरिक योग्यता का ही लक्षण हैं। मैं यह नहीं कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही। स्त्री में कुछ अन्य शक्तियाँ भी हैं। उनसे मैं आपको परास्त करने का यत्न करूँगी।''

''परन्तु राधा देवी! मैं समझता हूँ कि अभी इसके लिए अवसर भी उपस्थित नहीं। अभी तो आप अपनी बहन को लिख दें कि वह मेरी माता जी से बात कर लें। पीछे मैं भी मान जाऊँगा।''

''ठीक है, आपसे यही चाहती हूँ। आपने कहा है कि माताजी के मान जाने के उपरान्त आप इन्कार नहीं करेंगे और मैं कह रही हूँ कि मैं आपसे ही विवाह करूँगी। बस, मैं अब जाना चाहती हूँ।''

राधा उठी तो यदुनाथ ने कहा, 'राधा, बैठो। इस प्रकार नहीं।''

''देखो दादा, तुम्हें जो कुछ कहना है, माताजी को लिख दो। मैंने अपने मन में निश्चय बना लिया है।''

इतना कह वह वापस कैम्पस की ओर चल पड़ी। दोनों लड़के इसको जाते हुए देखते रह गए।

जब राधा उनकी आवाज़ के दायरे से कुछ दूर चली गई तब यदुनाथ ने सुमित्रानन्दन से कहा, ''तुम राधा से विवाह करना चाहते हो?''

''मैंने जो कुछ तुम्हारी बहन को कहा है, वही मैं तुमको कहता हूँ। यह विचार करना मेरी माताजी का काम है। जहाँ तक मुझे विदित है, मेरी माताजी पहले ही किसी से वचनबद्ध हैं। यद्यपि यह बात उन्होंने मुझे नहीं बताई; इस पर भी मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है। यदि माताजी ने उचित समझा कि मेरा विवाह वहाँ होना चाहिए तो वहाँ ही होगा।''

''सौमित्र, तुमने उस लड़की को देखा है?''

''हाँ।''

''उसे पसन्द किया है?''

''अभी तो इतना ही देखा है कि वह लड़की सरल चित्त, सुन्दर, सभ्य और छोटी आयु की है। मुझे विवाह भी अभी पाँच-छः वर्ष तक नहीं करना। इस कारण मेरे मन में इसके विपरीत कुछ नहीं। इस पर भी यदि अन्य गुणों से माताजी ने उसे मेरे योग्य नहीं समझा तो मैं वहाँ विवाह नहीं करूँगा।''

''तुम्हारी माताजी कितनी पढ़ी हैं?''

''पढ़ाई से क्या अभिप्राय है?''

''पढ़ाई का अभिप्राय तो पढ़ाई है। मैट्रिक, बी०ए०, एम०ए० अथवा प्राज्ञ, विशारद, 'शास्त्री अथवा अन्य कोई परीक्षा?''

''ऐसा कुछ भी वह नहीं पढ़ीं; इस पर भी कुछ तो पढ़ी हैं। परन्तु मैंने पूछा नहीं। मेरे पिताजी एम०ए० संस्कृत में हैं और वह माताजी से सम्मति किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करते हैं। अतः उन्होंने भी अवश्य किसी बात में एम०ए० किया ही होगा।''

''तुम कुछ नहीं जानते, सौमित्र! यह पढ़ाई की बात नहीं। यह यौन-सम्बन्ध की बात है। जब यौन-सम्बन्ध बन जाता है, तब एक-दूसरे के प्रति निष्ठा भी बन जाती है।''

''यह भी तो शिक्षा ही है। मैं जानता हूँ कि कई पति-पत्नियों में जीवनभर लट्ठबाजी होती रहती है। जहाँ नहीं होती, यहाँ यह उनके शिक्षित होने का ही प्रतीक है।''

''अच्छा, यह बगल में दबाई 'फाइल' मुझे दे दो।''

''क्यों?''

''मैं इसको जला डालना चाहता हूँ। देखो, यह लेनिन ने विधान बनाया था कि देश पर अधिकार जमाने के लिए पूर्ण जनता के सहयोग की आवश्यकता नहीं। प्रायः लोग तो गधे होते हैं। वे लाठी से हाँकने योग्य हैं। जो समाज में बुद्धिमान हैं, उनकी संख्या बहुत कम है।

''रूस में यह देखना सोवियत रूस के मन्त्री का काम है कि कौन-कौन उनके सोवियत का सदस्य बनने योग्य है? देखो, जल्दी कर दो। मैं समझता हूँ कि वह पाठक का बच्चा कुछ गड़बड़ करने वाला है।''

''मैं यह फाइल तुमको नहीं दूँगा।''

''तो यह समझ लो कि तुम हमारे दल में नहीं रह सकते।''

''तुम्हारा दल? वह कौन-सा है?''

यदुनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, ''जिसके नेता डाक्टर इन्द्रजीत हैं।''

''मैं तो डाक्टर साहब के दल में कभी भी नहीं था। जब पहले ही मैं उसमें नहीं, तो मुझे निकालोगे कहाँ से?''

''देखो, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। विश्वविद्यालय में हुकूमत हमारी होने वाली है। हमारी पीठ पर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय, केन्द्रीय सरकार और कुलपति भी हैं। यह जो घास-फूस राधेश्याम, पाठक, रघुवीर शास्त्री, धर्मवीर इत्यादि लोगों का यहाँ उत्पन्न हो गया है, सब उखाड़कर गंगा में बहा दिया जाएगा।''

''यह तुम कर सकते हो, मुझे इसमें सन्देह है। इस पर भी मैं एक बात करना चाहता हूँ।''

''क्या?''

''मैं अभी डाक्टर साहब से मिलने के लिए जा रहा हूँ। उनसे बात कर लूँ, तब इन सदस्यता फार्मों के विषय में विचार कर लूँगा।''

''तो चलो। देखो, डाक्टर साहब दिल्ली से लौटकर एक बात में संलग्न हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अपने दल का पुनर्गठन करें। हम उन लोगों को दल में रखना नहीं चाहते जो दल की छाया में सुख पाएँ और अवसर आने पर मन्त्री को ही एक मुक्का लगा दें।''

''देखो, यदु भैया, जब तुम्हारी बहन से विवाह की बात हो रही है और यह सम्भावना बनी हुई है कि मेरी माताजी तुम्हारी माताजी का और पिताजी का आग्रह मान जाएँ, तो मैं तुमसे लड़ सकता ही नहीं। इसी कारण मैं चाहता हूँ कि डाक्टर साहब से कहकर दल में अपने लिए स्थान बना लूँ। इसी कारण चल रहा हूँ।

''रही बात मुक्के की। उसमें मैं अपना दोष नहीं मानता। तुमने अपना मुख एकाएक और व्यर्थ में आगे कर दिया था।''

''अच्छा चलो।''

दोनों उठ पड़े और पुनः कैम्पस की ओर चले आए। ये स्टाफ क्वार्टरों की ओर घूमने ही लगे थे कि सुमित्रानन्दन ने कहा, ''मुझे दो मिनट का काम रघुवीर से है। उसे कुछ कहकर डाक्टर साहब के क्वार्टर पर चलूँगा।''

''उससे पीछे मिल लेना।''

''नहीं भाई, तनिक जल्दी का काम है। दो मिनट लगेंगे। आओ।''

यदुनाथ चाहता था कि सुमित्रानन्दन शीघ्रातिशीघ्र फाइल लिये हुए डाक्टर साहब के क्वार्टर पर पहुँच जाए। इस कारण वह आग्रह कर रहा था कि वह स्टाफ क्वार्टरों की ओर चले। सुमित्रानन्दन भी समझ रहा था कि वहाँ पर फाइल उससे बलपूर्वक छीनी जा सकती है। अभी ये परस्पर आग्रह ही कर रहे थे कि रामविलास पाठक कैम्पस के फाटक के भीतर से आता दिखाई दिया। वह इन दोनों को परस्पर आग्रह करते देख इनकी ओर चला आया। उसने दूर से ही आवाज़ देकर पूछ लिया, ''सौमित्र, क्या हो रहा है ?''

''एक समस्या पर विचार हो रहा है।'' सुमित्रानन्दन ने कहा।

''तो कुछ निर्णय हुआ है ?''

''हाँ, अब आपके आ जाने से हो गया है। भाई, इस फाइल को ले जाकर रघुवीर को दे दो। यदि वह कमरे में न हो तो अभी अपने पास ले जाओ। मैं किसी समय मिलकर ले लूँगा।''

''मैंने कल सायं पाँच बजे यूनियन के कार्यालय में कार्यकारिणी की बैठक बुलाने का नोटिस जारी कर दिया है। कुछ हस्ताक्षर तो मैंने वहीं कार्यालय में करवा लिये हैं और कुछ मैंने चपरासी को रात नौ बजे उनके कमरों में जाकर करवाने के लिए कह दिया है।''

''मैं डाक्टर साहब से अत्यावश्यक विषय पर बात करने जा रहा हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक सदस्यता-फार्मों की फाइल ले छात्रावास की ओर लौट गया और यदुनाथ तथा सुमित्रानन्दन डाक्टर साहब के क्वार्टर की ओर चल पड़े। यदुनाथ समझ गया कि फाइल हाथ से निकल गई है।

:: 9 ::

सुमित्रानन्दन तथा यदुनाथसिंह डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर पर पहुँचे तो डाक्टर ने इनको देखते ही आवेश में कहा, "इसे किसलिए ले आए हो?"

"यह आपसे कुछ शंका-समाधान करना चाहता है।"

"समाधान तो उनका हो सकता है जो कुछ बुद्धि रखते हों। इस बैल-बुद्धि का समाधान कैसे हो सकेगा?"

सुमित्रानन्दन मुस्करा रहा था। यदुनाथ ने ही बात की। उसने कहा, "प्रोफेसर साहब, यह कहता है कि उपकुलपति की आज्ञा से यूनियन का सेक्रेटरी यह बन गया है।"

"तो इसका अभिप्राय यह है कि उपकुलपति ने एक मुकाबले की यूनियन बनवा दी है। तब दो यूनियनों में परस्पर संघर्ष होगा।"

"संघर्ष की तो बात है ही नहीं, प्रोफेसर साहब।" सुमित्रानन्दन ने गम्भीर मानयुक्त वाणी में कहा।

"तुम हमारे पक्ष में होते हुए भी कैसे यह साहस कर सके थे कि हमें विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया समझने लगे और हमारे स्थान पर स्वयं कार्य सम्भाल लिया?"

"देखो सुमित्रानन्दन, मैं यह जान चुका हूँ कि तुम आचार्य देवेन्द्रनाथ और प्रोफेसर धर्मवीर की अंगुलियों पर नाच रहे हो। अतः मैं तुमको और रघुवीर को विश्वविद्यालय से निकलवाकर ही साँस लूँगा।"

"तो यह आपका अन्तिम विचारित मत है?"

"तो क्या मैं बिना विचार किए भी कभी बात किया करता हूँ?"

"मेरा तो यही विचार था। खैर, जब आप कहते हैं तो फिर आप समाधान क्या करा सकेंगे और मेरे संशयों के समाधान की आपको आवश्यकता भी क्या हो सकती है? मेरा अब आपसे कुछ काम नहीं हो सकता। गुड नाइट सर!" इतना कह सुमित्रानन्दन खड़ा-खड़ा ही वहाँ से चला आया।

यदुनाथ ने आवाज़ दी, "सुमित्रानन्दन! तनिक, ठहरो तो।"

"यदुनाथ! यूनियन के कार्यालय में मिलूँगा।"

यदुनाथ ने प्रोफेसर साहब को कहा, "यह आपने क्या किया? इस प्रकार तो आप अपने शत्रु बढ़ा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदुनाथ! तुम नहीं जानते। ये सब कुचल दिए जाने योग्य हैं। मैं वही कर रहा हूँ।"

"इस बात से मैं आपको मना नहीं कर रहा। मैं तो आपकी कटु वाणी के विषय में कह रहा हूँ। साथ ही मैं इस स्पष्टवादिता से मना कर रहा हूँ। आप स्वयं दूसरों से पृथक् हो रहे हैं।"

जब से इन्द्रजीत केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों से मिलकर आया था, वह अपने-आपको 'हवाई घोड़े' पर सवार हुआ अनुभव कर रहा था। वह कुलपति से हुई वार्तालाप में अपने को विजयी मान बहुत प्रफुल्लित हो रहा था। वह अपनी बहादुरी की बात यदुनाथ को बताए बिना नहीं रह सका। उसने यदुनाथ पर अपने कार्य की बड़ाई बताने के लिए कहा, "देखो यदुनाथ, दिल्ली में सब उच्चाधिकारी अपना दृष्टिकोण रखते हैं। मैं जब वहाँ के शिक्षा मन्त्री से मिला और उनको यहाँ की बात बताई तो वे मेरे कथन से अति प्रभावित हुए। उन्होंने मुझे विद्यालय के विज़िटर से मिलने के लिए कहा और मैं उनसे भी मिलकर आया हूँ।

"यह आज्ञा वहाँ से आ चुकी है कि सब निकाले गए छात्र पुनः ले लिये जाएँ। इसके अतिरिक्त सब प्राचीन विचार के प्राध्यापकों की बदली कर दी जाए। वर्तमान उपकुलपति भी कहीं अन्यत्र भेजे जा रहे हैं।"

"मैं यहाँ आकर उपकुलपति से भी मिला हूँ। उसने विज़िटर को लिख भेजा है कि इस प्रकार शान्ति-व्यवस्था के विषय में विज़िटर तथा शिक्षा मन्त्री हस्तक्षेप नहीं कर सकते। अभिप्राय यह कि अब कुलपति और उपकुलपति में ठन गई है।

"उपकुलपति एक-दो मास में अपनी अवधि समाप्त कर जाने वाले हैं और तब तक दोनों में अपने-अपने अधिकारों के लिए झगड़ा होगा।"

"उपकुलपति यह चाहते हैं कि मैं उनके यहाँ रहने तक के लिए छुट्टी ले लूँ और मैं उनको समय से पूर्व चले जाने के लिए कह आया हूँ।

इस पर यदुनाथ ने पूछ लिया, "पर सर! हमारे निकाल दिए जाने का क्या हुआ?"

"दिल्ली से यह आज्ञा आ चुकी है कि किसी को निकाला न जाए और यदि किसी के विरुद्ध शिकायत है तो उपकुलपति विज़िटर को लिखें।

"उपकुलपति समझते हैं कि विश्वविद्यालय कोर्ट जाँच कर सकता है, परन्तु जब विज़िटर ने जाँच स्थगित कर दी है तो वह नहीं होगी।"

"तो हम अपने को क्या समझें?"

"विश्वविद्यालय के विद्यार्थी समझो। हाँ, जो लिखित आज्ञा तुम सबको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल देने की हो चुकी है, उसकी सीधी विज़िटर के पास अपील कर दो। एक बार अपील कर दी तो जब तक उस अपील पर आज्ञा जारी नहीं होती, तब तक उपकुलपति की आज्ञा अमान्य मानी जाएगी।

"मैंने यहाँ की वर्तमान स्थिति एक लम्बे तार में विज़िटर साहब को लिख भेजी है और उसकी एक प्रतिलिपि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को भी लिखी है।"

"यूनियन में हमारा क्या अधिकार है?"

"तुम अभी मन्त्री हो। उपकुलपति ने यह समझ कर नया मन्त्री नियुक्त किया था कि तुम विश्वविद्यालय के छात्र नहीं रहे। जब तुमने अपील कर दी है तो तुम अभी छात्र हो; अतः स्वतः तुम मन्त्री भी हो।

"मेरे पास ब्रजकिशोर भी आया था और मैंने उसे भी यही सम्मति दी है।"

ब्रजकिशोर प्रोफेसर साहब को अपने कार्यालय से पकड़कर बलपूर्वक निकाल दिए जाने की बात बता गया था और प्रोफेसर साहब ने उसे भी साहस बँधा वापस कर दिया था। अब यदुनाथ और सुमित्रानन्दन आए तो सुमित्रानन्दन को वहाँ से डाँटकर भगा इन्द्रजीत मन में सन्तोष अनुभव करने लगा था। इस समय यदुनाथ ने अपनी सम्मति दे दी कि प्रोफेसर साहब को अपने मन की बात छुपाकर और मीठे शब्दों में बात करनी चाहिए।

अपने एक विद्यार्थी से नीति की बात सुन वह झेंप गया और अपने क्रोध की सफाई देने लगा। उसने कहा, "मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर बात करना चाहता था और तुम इस शत्रुपक्ष के आदमी को लेकर आ गए।"

"सर, यह तो स्वेच्छा से आया था। मैं तो इसके साथ इस कारण आया था कि यह कहीं आपसे झगड़ा न कर दे। विचार था कि मैं और आप दोनों इस पर नियन्त्रण पा ही लेंगे।"

"अच्छा छोड़ो इस बात को। मैं समझता हूँ कि हम 'हिन्दू' शब्द के मोर्चे पर असफल रहे हैं। मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि लोकसभा में यह संशोधन स्वीकार नहीं होगा। वहाँ के अधिकारी समझ रहे हैं कि इस चाल से भारत के हिन्दू पुनः संगठित होने लगे हैं।"

"हिन्दू शब्द को हटाने की योजना निरर्थक और गलत थी। इस कारण मैं विचार करता हूँ कि हम अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए नई योजना का निर्माण करें।"

"बट सर, हमारा उद्देश्य क्या है?"

"देखो यदुनाथ, हिन्दू समाज में पुरानी गली-सड़ी बात के अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ कुछ नहीं। यह ही समाज की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। अत: सबसे पहले इसी को नि:शेष करना है। हमारा काम बहुत बड़ी सीमा तक वर्तमान शिक्षा ने कर दिया है। आज पढ़े-लिखों में कोई मन से हिन्दू रहा नहीं। बाहरी आडम्बर में अभी भी हिन्दू शब्द से मोह है। यह हमने देख लिया है कि सब दलों के लोग इस शब्द के समर्थन में एकमत हो गए हैं।

''अत: हमें अब एक दूसरी बात करनी चाहिए। वह बात जो हिन्दुओं में दूसरे दर्जे पर है, वह भाषा की है। यह भारत सरकार निश्चय कर चुकी है कि अँग्रेज़ी तब तक हटाई नहीं जाएगी, जब तक अहिन्दी भाषी इसके लिए मानते नहीं। हिन्दी वाले इस पर मौन हो गए हैं। अत: अब हिन्दी भाषा की जड़ों में तेल देने के लिए एक नया आन्दोलन चलाने का संकेत हुआ है। वह है क्षेत्रीय भाषाएँ। क्षेत्रीय भाषाओं को हिन्दी भाषा का विरोधी सिद्ध करने के लिए और हिन्दी के स्थान पर उनको प्रोत्साहित करने के लिए सरकार से माँग की जाए।

''हमारे विश्वविद्यालय में देश की प्राय: सब भाषाओं को बोलने वाले प्रोफेसर और विद्यार्थी हैं। भाषा के विचार पर इन सबमें फूट पड़ सकती है और तब हम पुन: अपना साम्राज्य स्थापित कर सकेंगे।''

''प्रोफेसर साहब, यह कैसे हो सकेगा?''

''सुमित्रानन्दन जैसे गधों में से किसी को उत्साहित करो कि वह हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी करने का आन्दोलन चला दें। इस पर हमारे ही कुछ लोग उसका विरोध आरम्भ कर दें। हमें यह विरोध क्षेत्रीय भाषाओं के नाम पर करना चाहिए। परिणाम यह होगा कि विद्यार्थियों का एक मत जो हिन्दू शब्द पर हुआ है, टूट जाएगा और तब हम यहाँ से उन लोगों को निकालना आरम्भ करेंगे जो हमारी नीतियों का विरोध कर रहे हैं।''

यदुनाथ डाक्टर साहब की नीति की बात समझ गया और कहने लगा, ''इसीलिए तो कह रहा था कि इस गधे को इस प्रकार नहीं डाँटना चाहिए था। ऐसे गधे भी कभी बहुत ही उपकारी काम कर सकते हैं।''

''अच्छा, तुम इससे मिलो और इससे सहानुभूति प्रकट कर इसे कुछ इसी प्रकार के आन्दोलन के लिए तैयार कर दो।''

''पर डाक्टर साहब, वह एक सहस्र से ऊपर यूनियन के सदस्यता-फार्म भरवा चुका है और अभी और भरवा रहा है। मैंने बहुत समझाया है कि वह मन्त्री नहीं, मन्त्री मैं हूँ। परन्तु वह कहता है कि मैं अब विश्वविद्यालय का विद्यार्थी नहीं हूँ; इस कारण मैं यहाँ की विद्यार्थी यूनियन का मन्त्री नहीं हो सकता।''

''देखो, मैं कहता हूँ कि दिल्ली से आज्ञा आ चुकी है कि पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन में कोई भी दण्डित न किया जाए। तब तक तुम धैर्य से प्रतीक्षा करो।''

''कल कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई है, जिसमें नए फार्म स्वीकार किए जाएँगे।''

''करने दो। जितने अधिक सदस्य होंगे, उतनी ही सुगमता से उनमें फूट डलवाई जा सकेगी।''

सुमित्रानन्दन अपने कमरे में बैठा विचार कर रहा था कि उसका जासूसी का काम अब चल नहीं सकेगा। अब तो उसे खुलकर विश्वविद्यालय में पढ़ाई जारी करने और शान्ति-व्यवस्था स्थित रखने के लिए आन्दोलन में लग जाना चाहिए। वह रघुवीर की प्रतीक्षा में था।' उसे आने में कुछ देर हो गई थी। आजकल यूनियन का कार्यालय छः बजे बन्द कर दिया जाता था। अब पहले की भाँति वहाँ राजनीति और अर्थव्यवस्था पर विवाद के लिए क्लब का नाम नहीं लिया जाता था। अतः वहाँ जाने में भी कोई तथ्य नहीं था।

आज रघुवीर रात आठ बजे आया। आने पर सुमित्रानन्दन ने पूछा, ''आज देर कर दी है?''

''हाँ दादा, गाँव से गुरुजी का एक पत्र आया था। उसमें उन्होंने स्वामी जी के लिए प्रणाम लिखा था। अतः वह प्रणाम करने स्वामी जो के पास गया तो वहाँ राधेश्याम और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ अन्य कार्यकर्ता बैठे थे। उनकी बात समाप्त हुई तो फिर मैंने गुरुजी के पत्र की बात कर दी।

''स्वामी जी के पूछने पर मैंने यह भी बता दिया कि गुरुजी ने मेरे विवाह के विषय में पूछा है। कुछ दिन हुए मिर्ज़ापुर से एक स्त्री और उसकी तीन लड़कियाँ आई थीं। वे देख गई हैं और गुरुजी ने पूछा है कि उनमें एक राधा नाम की लड़की से मेरा विवाह होना निश्चय किया जा रहा है। यदि ठीक है तो मैं उनको लिखूँ।

''इस पर स्वामी जी पूछने लगे, 'तो क्या लिखा है?'

''मैंने कहा, 'पत्र तीन बजे की डाक से मिला है। मैंने अभी उत्तर नहीं लिखा। पर स्वामी जी, मैं लिखने वाला हूँ कि मेरा निर्वाचन छोटी लड़की विन्ध्यवासिनी है, राधा नहीं।''

''इस पर स्वामी जी कुछ परेशानी अनुभव करने लगे। मैंने कारण पूछा तो उन्होंने कहा, तुम्हारे गुरुजी ने मुझे कहा है कि मैं राधा के विषय में किसी प्रकार से जाँच कराकर लिखूँ कि उससे तुम्हारा सम्बन्ध ठीक रहेगा अथवा नहीं?''

''मैंने स्वामी जी से कह दिया, ''आप अभी जाँच न करवाइए। पहले मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनको लिखता हूँ! तदन्तर कदाचित् वे राधा के स्थान पर विन्ध्यवासिनी की जाँच के विषय में लिख भेजें।''

''इसे वे मान गए हैं और चाहते हैं कि मुझे तुरन्त उत्तर देना चाहिए।''

सुमित्रानन्दन हँस पड़ा। रघुवीर ने इस हँसने का कारण पूछा तो उसने बताया, ''आज तुम्हारी बनने वाली साली से दूसरी भेंट हुई है और वह कह गई है कि वह विवाह मेरे साथ ही करेगी। यदि उसके माता-पिता न मानेंगे तो वह उनसे संघर्ष करेगी और यदि मैं न माना तो मेरा बलपूर्वक अपहरण करेगी।''

इस पर तो रघुवीर भी हँस पड़ा। हँसकर बोला, ''बात तो ठीक है। लड़कियाँ लड़कों का अपहरण किया करें, यही समयोचित है।''

''मैंने उसे कहा है कि वह अपनी माँ को लिख दे कि वे मेरी माँ को राज़ी कर लें।''

''और तुम क्या समझते हो?''

''मेरे मन में तो दुर्गा बसी है, परन्तु भैया, मेरी दुर्गा से बातचीत नहीं हुई। वह अभी विवाह की बात को समझती भी नहीं। मैंने उसे दूर से ही देखा है। हाँ, यदि किसी कारण से दुर्गा से सम्बन्ध न बना तो राधा कुछ खराब लड़की प्रतीत नहीं होती। वह बात युक्तियुक्त और सभ्य भाषा में करती है।''

''पर दादा,'' रघुवीर ने बात बदलकर कहा, ''यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से स्वामी जी का क्या सम्बन्ध है?''

''यह तो मैं जानता नहीं। यहाँ 'लॉ कालेज' के आगे एक कमरा बना है। वहाँ इस संघ का कार्यालय है और उसके बाहर घास के मैदान में उनकी शाखा लगा करती है। मैं एक-दो बार उनकी शाखा में गया हूँ। प्रत्यक्ष रूप में उनकी बातें पसन्द आई हैं।

''वे संस्कृत भाषा में नित्य प्रार्थना करते हैं। उनकी प्रार्थना भारत माता के प्रति और हिन्दू राष्ट्र के प्रति होती है। वे हमारे विचार के अनुकूल ही प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं जानता। जानना चाहते हो तो राधेश्याम से पूछ लो।''

''मैंने एक दिन उससे पूछा था। वह तो कहता था कि मैं वहाँ आया करूँ। उनकी शाखा में रहते-रहते मुझे सब कुछ पता चल जाएगा। उसका कहना था कि हिन्दू एक अति व्यापक संगठन है। इसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। यह अनुभव की बात है और अनुभव से ही मैं भी जान सकूँगा। हिन्दू के अर्थ जान लेने पर ही हिन्दू राष्ट्र और फिर स्वयंसेवक संघ का प्रयोजन समझ में आ सकता है।''

''तो फिर क्या विचार है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं स्वामी जी से पता करूँगा।"

"मुझे तो उनकी यह बात ठीक समझ में नहीं आई। इस पर भी जिस दिन तुम स्वामी जी से पूछना चाहो तो मैं भी साथ चलूँगा।"

"अब तो यूनियन का कार्यालय छह बजे बन्द हो जाता है। तुम उस समय वहाँ आ जाया करो तो फिर स्वामी जी की बातें सुनने का अवसर तुम्हें भी मिल जाएगा। अब सूर्यास्त जल्दी होने लगा है; इस कारण मैं गंगा पार से जल्दी लौट आता हूँ।"

"हाँ, कल यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक सायंकाल पाँच बजे बुलाई गई है। कल तो जा नहीं सकूँगा। पीछे किसी दिन देखूँगा।"

"दादा, यूनियन का मन्त्रीपद किसी अन्य को दे दो। इससे पढ़ाई में भारी हानि हो रही है।"

"यह आचार्य जी से कहूँगा। वैसे तो पाठक और मैं आधा-आधा काम बाँटकर कर रहे हैं। साथ ही हमने निश्चय किया है कि हम किसी प्रकार का अनावश्यक आन्दोलन नहीं चलाएँगे।"

:: 10 ::

अगले दिन यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक हुई। इस बैठक में पन्द्रह के पन्द्रह सदस्य उपस्थित थे। पाठक इत्यादि समझते थे कि यदुनाथ और ब्रजकिशोर नहीं आएँगे। पिछले दिन यूनियन के कार्यालय में उन दोनों का अपमान किया गया था और उनकी किसी ने सहायता नहीं की थी। परन्तु वे भी उपस्थित थे।

सुमित्रानन्दन मन्त्रीपद पर था। उसने कहा, "उपकुलपति ने संयोजक मुझे नियुक्त किया है। इस सम्बन्ध में नियुक्ति-पत्र मुझे मिल चुका है। अतः संयोजक के नाते मैं चाहता हूँ कि प्रधान और मंत्री का नवीन निर्वाचन किया जाए। पुराने दोनों पद रिक्त हो गए हैं।"

यदुनाथ ने कहा, "क्योंकि मैंने और ब्रजकिशोर जी ने अपने विश्वविद्यालय से न निकाले जाने के लिए अपील की हुई है, इस कारण इन पदों के लिए निर्वाचन का काम तब तक स्थगित रखा जाए, जब तक कि मेरी अपील का निर्णय नहीं हो जाता।"

अब तक यदुनाथ इत्यादि को पता चल चुका था कि कुलपति को लिखा जा चुका है कि इन विद्यार्थियों के विपरीत, जिनको निकाला गया है, क्या-क्या आरोप हैं? साथ ही उसने लिखा है कि यदि इस प्रकार के अनुशासनात्मक कार्यों में कुलपति ने हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया तो उपकुलपति का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक चपरासी अथवा क्लर्क का रह जाएगा।

इससे इन दोनों को वह आशा नहीं रही थी जो पिछले दिन वे बना बैठे थे। इनके साथ प्रोफेसर डाक्टर इन्द्रजीत ने भविष्य में कार्यशैली ही बदल दी थी और उस कार्यशैली के लिए यह आवश्यक था कि ये लोग पुन: विद्यार्थियों में अपना दबदबा स्थापित करें।

यदुनाथ ने कहा, जब से यूनियन बनी है, इसकी सदस्यता सीमित रखने का यत्न किया गया है। इसमें कारण यह है कि हम यूनियन का ढंग रूस में सोवियत राज्य के अनुसार रखना चाहते थे। वहाँ यह सिद्धान्त स्वीकार किया गया है कि सोवियत सदस्यता की भी योग्यता निश्चय कर उसके अनुसार ही सदस्य बनाए जाएँ। अत: मैं समझता हूँ कि इसी नीति का पालन किया जाए।''

इस पर रामविलास पाठक ने कहा, ''हम सोवियत रूस की राज्य-पद्धति का अनुकरण करने में कोई कारण नहीं मानते। हमारे देश में प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का चलन है। यहाँ प्रत्येक नागरिक को राज्य के निर्माण में मत देने का अधिकार है। इसी का हम अनुकरण करेंगे और केवल विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होना ही सदस्यता का अधिकारी होना माना जा सकता है।''

इस पर यदुनाथ ने कह दिया, ''यदि भारत की राज्य-प्रणाली का अनुकरण करना है तब तो सदस्यता-फार्म भरवाने की आवश्यकता भी नहीं। जिस किसी को भी विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल जाए, उसे ही सदस्य मान लिया जाए।''

यह बात स्वीकार कर ली गई और यह निश्चय किया गया कि जैसे देश के नागरिकों पर 'इनडायरेक्ट कर' की व्यवस्था होती है वैसे ही विद्यार्थियों पर किसी प्रकार से यूनियन के व्यय के लिए धन प्राप्त किया जाए। इसके लिए विश्वविद्यालय के अधिकारियों से लिखा-पढ़ी की जाए।

इस प्रकार सदस्य स्वीकार अथवा अस्वीकार करने की समस्या का पार पाया गया। अब पाठक ने कहा, ''यदि इस बात को हम स्वीकार करते हैं कि सब विद्यार्थी इसके सदस्य हैं तो मन्त्री, प्रधान और कार्यकारिणी का नवीन निर्वाचन किया जाए।''

यह भी स्वीकार कर लिया गया। अब यदुनाथ ने यह प्रस्ताव कर दिया कि यूनियन की सार्थकता को सिद्ध करने के लिए किसी प्रकार का आन्दोलन चलाया जाए।

पाठक ने कहा, ''यह आवश्यक नहीं कि किसी संस्था की सार्थकता सिद्ध करने के लिए आन्दोलन किया जाए। मेरा सुझाव है कि 'आन्दोलन' के स्थान पर 'कार्य' शब्द का प्रयोग किया जाए। मैं भी किसी प्रकार का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने की बात का समर्थन करता हूँ।''

''क्या कार्य करना चाहते हैं?''

''उदाहरण के रूप में विद्यार्थियों की ज्ञान-वृद्धि के लिए यूनियन की ओर से उन विषयों पर विशेष व्यक्तियों से भाषण कराए जाएँ, जो विषय हमारी पाठ्य-प्रणाली के सम्बन्ध नहीं रखते।''

''उसके लिए प्रत्येक फैकल्टी की पृथक्-पृथक् सभाएँ हैं। हिन्दी, अँग्रेज़ी, मराठी, गुजराती इत्यादि भाषाओं की सीमाएँ हैं। इसी प्रकार गणित, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि की सभाएँ हैं। यूनियन के कार्य इन पढ़ाई सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त हैं।''

''क्या अतिरिक्त हैं?'' एक सदस्य कृष्णचन्द्र ने पूछ लिया।

''विद्यार्थियों की सुख-सुविधाओं का प्रबन्ध करना।''

''सुख-सुविधा में क्या हिन्दू शब्द का विरोध भी आता है?'' उसी सदस्य का अगला प्रश्न था।

सुमित्रानन्दन का कहना था, ''इस कार्य के लिए विश्वविद्यालय की ओर से वार्डन नियुक्त है और सुख-सुविधा का सम्बन्ध व्यक्तिगत है; अतः इसके लिए सामूहिक योजना की आवश्यकता नहीं।''

''कई ऐसी बातें हैं,'' यदुनाथ का सुझाव था, ''जिनका सम्बन्ध विद्यार्थियों की सामूहिक सुविधाओं से भी हो सकता है। उनमें और फिर व्यक्तिगत सुविधाओं के लिए भी यूनियन सहायक हो सकती है।''

कृष्णचन्द्र ने पुनः पूछ लिया, ''कोई उदाहरण देखकर बताइए?''

यदुनाथ ने कह दिया, ''कोई प्राध्यापक ऐसा भी हो सकता है, जिसकी पढ़ाई विद्यार्थियों को समझ ही न आए।''

इस पर सुमित्रानन्दन ने कहा, ''यदि विद्यार्थियों की यूनियन पढ़ाई और पढ़ाने वालों के विषय में सम्मति देने लगी तब तो एक अति भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हो जाएगी।''

''यह तो संसार में सब स्थान पर है।''

''रूस में भी?''

''हाँ।'' दावे से यदुनाथ ने कहा।

''यदुनाथ जी, यह किसी ने आपको भ्रम में डाल रखा है। जब जनता के लिए लिखने वाले साहित्यकारों को वहाँ लिखने की स्वतन्त्रता नहीं तो भला विद्यार्थियों को अपनी ही पढ़ाई के विषय में कुछ कहने का अधिकार कैसे दिया जा सकता है? विद्यार्थी तो सीखने के लिए होता है, सिखाने के लिए नहीं।''

''पर मैं यह बात निश्चित रूप से जानता हूँ कि वहाँ विद्यार्थी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राध्यापकों की पढ़ाई के विषय में टीका-टिप्पणी करते हैं।''

''पर मैं यह निश्चित रूप से जानता हूँ कि ऐसा नहीं है। वहाँ तो विद्यार्थी और प्राध्यापक दोनों भयभीत रहते हैं कि कहीं उनके मुख की आकृति से भी कोई ऐसा भाव प्रकट न हो जाए, जिससे सरकार नाराज़ हो जाए।''

''तुम कैसे जानते हो? क्या तुम कभी वहाँ गए हो?'' ,यदुनाथ ने पूछ लिया।

सुमित्रानन्दन ने कह दिया, ''हाँ, कृष्णचन्द्र जी और यदुनाथ जी इकट्ठे ही तो मास्को की यात्रा पर गए थे। यदुनाथ जी भूल गए प्रतीत होते हैं।''

इस पर सब हँसने लगे।

कार्यकारिणी की बैठक समाप्त हुई। नवीन निर्वाचन के लिए यह निश्चय हुआ कि यदुनाथ और ब्रजकिशोर की अपीलों का निर्णय हो ले, तब ही निर्वाचन हो सकते हैं। इसका अभिप्राय यह लिया गया कि पाठक और सुमित्रानन्दन संयुक्त संयोजक बने रहेंगे।

जब कार्यकारिणी का यह निर्णय घोषित किया गया कि विश्वविद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी यूनियन का सदस्य माना जाएगा तब विद्यार्थियों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, परन्तु इसके साथ ही एक ज्ञापन-पत्र तैयार किया गया कि नई कार्यकारिणी का और नए पदाधिकारियों का निर्वाचन होना चाहिए। यह 'मेमोरेण्डम' उपकुलपति को दिया गया। इसमें यह भी कहा गया कि यदि उपकुलपति द्वारा नियुक्त संयोजक नया निर्वाचन नहीं कराएँगे तो इस ज्ञापन-पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले स्वत: एक सभा बुलाकर पुरानी कार्यकारिणी के स्थान पर नई कार्यकारिणी निर्वाचित कर लेंगे। इसी ज्ञापन-पत्र के लिखे जाने में मुख्य भाग राधेश्याम इत्यादि विद्यार्थियों ने लिया था।

डाक्टर इन्द्रजीत के साथियों की मण्डली जो पहले यूनियन पर अधिकार जमाए थी, अब धकेलकर यूनियन से बाहर कर दी गई। नई कार्यकारिणी में उसके साथियों में कोई भी नहीं लिया गया। एक बात हो गई। कुलपति और उपकुलपति में पत्र-व्यवहार का यह परिणाम हुआ था कि हिन्दू शब्द आन्दोलन के सब लोग, जिन पर अनुशासनहीनता का आरोप था, पुनः विश्वविद्यालय में ले लिये गए।

इस स्थिति में डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर में गोष्ठियाँ होती थीं कि किस प्रकार विश्वविद्यालय के वातावरण को गर्म किया जाए?

डाक्टर साहब के साथियों में अब सुमित्रानन्दन के लिए स्थान नहीं रहा था। अत: अब वह इन लोगों पर जासूसी नहीं कर सकता था। डाक्टर साहब के कहने पर यह निश्चय किया गया कि बिरला होस्टल में रहने वालों में कुछएक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी तैयार किए जाएँ जो सुमित्रानन्दन पर जासूसी करें और पता करें कि वह किन-किन से मिलता रहता है।

यदुनाथ का प्रश्न था, "डाक्टर साहब, क्या लाभ होगा इससे? यह बात निश्चय ही है कि वह हमारे पक्ष में नहीं है। इसमें मुख्य कारण है रघुवीर। वह एक धनी ज़मींदार का लड़का होने से पूँजीपतियों की मानसिक प्रवृत्ति रखता है और सुमित्रानन्दन उसके आश्रय से ही यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहा है।"

डाक्टर साहब का कहना था, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि ये लोग भी आर०एस०एस० से सम्बन्धित हैं क्या?"

इस बात ने यदुनाथ को मौन कर दिया। आर०एस०एस० इनके लिए एक भय का कारण था। उन्हीं के कारण डाक्टर साहब के साथियों का यूनियन से बहिष्कार हुआ था। अतः आर०एस०एस० उनके मस्तिष्क पर भूत के समान सवार था।

यदुनाथ भी सुमित्रानन्दन और रघुवीर के विषय में नरम पड़ रहा था। उसको विदित हो रहा था कि उसकी एक बहन का तो निश्चय ही और कदाचित् दूसरी का भी, विवाह हथियापुर में होने वाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Central Library
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167365
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

तीसरा परिच्छेद

रहमान और मुहम्मदू तथा साधु के ऊपर दफा 107 'क्रिमनल प्रोसीजर कोड' का मुकदमा न तो निश्चय होने में आता था और न ही दोनों पक्षों में सुलह होने में आती थी।

एक समय पण्डित करुणानिधि ने दोनों पक्षों में सुलह कराने का यत्न किया था, परन्तु सुलह हो नहीं सकी थी। साधुराम गाँव की कांग्रेस कमेटी का प्रधान और हथियापुर ग्रामीण सहकारी समिति का भी प्रधान था। एक दिन उसने पण्डित जी से कहा, "पण्डित जी, न तो मैं मुहम्मदू की लड़की पर कुदृष्टि रखता हूँ और न ही लड़की मेरे साथ कहीं भाग जाने का विचार रखती है। वास्तविक बात यह है कि लाला भवानीदास को मेरा बारह हज़ार रुपया देना है और वह उसे हज़म कर जाना चाहता है। उसके लिए ही भवानीदास ने गाँव में यह झगड़ा खड़ा कर रखा है।"

"किस हिसाब में तुम्हें रुपया लेना है?" पण्डितजी का प्रश्न था।

"मैंने कुछ गेहूँ इसे बेचने के लिए दिया था। यह बेचकर दाम हज़म कर गया है।"

करुणानिधि ने लाला से पता किया तो वह अपनी बही उठा पण्डित जी के घर में पहुँच गया। उसने बताया, "साधु ने अपनी कितनी भूमि पर गेहूँ बोया था। यह पटवारी के खाते से पता किया जा सकता है। उस पर जितना भी गेहूँ उत्पन्न हुआ, वह सब-का-सब बेचने के लिए मुझे दिया गया। वह मैंने अपनी बही में दर्ज किया है और उसका मूल्य मैंने साधु को दिया है। उसकी मेरे पास रसीद है।"

वह सब हिसाब--किताब पण्डित करुणानिधि ने देखा तो साधु को बुलाकर पूछा कि अपने खेत में उत्पन्न गेहूँ का दाम उसने प्राप्त किया है और भवानीदास की बही पर उसने हस्ताक्षर किए हैं। ठीक है अथवा नहीं?"

"मैंने हिसाब के अतिरिक्त गेहूँ उसे दिया था।"

"पर वह तुम्हारे पास आया कहाँ से?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका उत्तर साधुराम दे नहीं सका। इस पर करुणानिधि ने कहा, "साधुराम, इससे तो यह सिद्ध हुआ कि रहमान और मुहम्मदू का कहना सत्य है कि तुम उनके घर में कुछ गड़बड़ी करने वाले हो और तुम्हारी तथा तुम्हारे साथियों की जमानत होनी ही नहीं चाहिए।"

इस प्रकार मुकदमा चलता रहा। न्यायालय भी लम्बी-लम्बी तारीखें देता चला जा रहा था। मैजिस्ट्रेट का कहना था दोनों पक्ष बदमाश प्रतीत होते हैं, इस कारण केवल जमानत पर छोड़ देने से ये सीधे नहीं होंगे। इनको बार-बार हल्द्वानी बुलाकर इनका समय नष्ट करना इनके लिए उचित दंड होगा।

जनवरी 1966 आ गया। मुहम्मदू इत्यादि की ओर से भवानीदास मुकदमे में हल्द्वानी आने-जाने तथा वहाँ पर खाने-पीने का व्यय दे रहा था। दूसरी ओर सब व्यय साधुराम कर रहा था। वास्तव में दोनों पक्षों का व्यय एक ही स्रोत से हो रहा था। इसके विषय में एक दिन बात हल्हानी में हो गई। मैजिस्ट्रेट दोनों पक्षों को दस बजे न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा देता था, परन्तु मुकदमा प्रायः चार बजे मध्याह्नोत्तर लिया जाता था और लगभग बीस व्यक्ति न्यायालय की गंदी जगह पर बैठ खाते-पीते और दिन-भर बेकार रहते थे।

उस दिन भवानीदास भी वहाँ पर आया हुआ था और अपने पक्ष के लोगों के खाने-पीने का प्रबन्ध देख रहा था। साधुराम ने भवानीदास को अपने पक्ष वालों के खाने-पीने का प्रबन्ध करते देख पूछ लिया, "लाला, तुम तो इनका ऐसे प्रबन्ध कर रहे हो, जैसे कि घर में लड़की की बारात आई हो।"

"हाँ भैया, साधुराम के घर बारात आई तो मैंने देखा कि अपने गाँव के एक निर्धन जुलाहे का बेटा है। इस कारण उसकी सहायता कर देनी चाहिए।"

"यही तो पूछ रहा हूँ लाला कि तुम क्यों व्यय कर रहे हो? साधुराम इनके लिए व्यय कर देगा। वह अब निर्धन नहीं और न ही अब वह जुलाहे का काम करता है।"

"हाँ, वास्तव में यह व्यय भी उसके हिसाब में ही लिखा जा रहा है। अगले जन्म में जब मेरा उससे लेन-देन का हिसाब होगा तो आशा करता हूँ कि मेरा कुछ भी देना नहीं निकलेगा।"

"तो तुम्हें मेरा कुछ देना है?"

"हाँ, परन्तु वह कम हो रहा है।"

"तो तुम वैसे ही दे दो। में मुकदमा एक दिन में उठवा दूँगा।"

"वह तो ठीक है। इससे जो कुछ साधुराम अपने पास से व्यय कर रहा है, वह भी तो बच जाएगा। मैं समझता हूँ कि उसने काग्रेस कमेटी और सहकारी समिति का जो चुराया है, वह भी व्यय होना चाहिए। अन्यथा भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने, अगले जन्म में क्या कुछ उसे देना पड़ेगा?''

साधु समझ गया था कि दोनों ओर से उसी का व्यय हो रहा है। परन्तु वह कुछ कर नहीं सकता था।

एक बार उसने पण्डित करुणानिधि से कहा कि भवानीदास को भगवान् शिव की सौगन्ध दिला कर पूछा जाए कि उसे मेरा कुछ देना है अथवा नहीं? पण्डित जी ने लाला से पूछ लिया। लाला का उत्तर था, ''पण्डित जी! साधु को कहिए कि अपने इकलौते पुत्र की सौगन्ध खाकर बताए कि उसके पास यह धन अथवा गेहूँ कहाँ से आया?''

''तो यह धन उसके पास कहीं से आया है?''

भवानीदास हँस पड़ा। उसने सब बात बता दी और साथ ही कहा, ''मैं उसी धन में से इस मुकदमे पर व्यय कर रहा हूँ। प्रति पेशी एक सौ रुपया व्यय हो जाता है। बारह पेशियाँ हो चुकी हैं और इस पर बारह सौ रुपये से ऊपर व्यय हो चुका है। मेरे समय का मूल्य पृथक् है।''

इसपर करुणानिधि गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने पूछ लिया, ''लाला, सब रुपया इस मुकदमे पर तो व्यय हो नहीं सकेगा?''

''उस अवस्था में मैं इस पर कोई नया मुकदमा चलवा दूँगा। मैं इन हराम के रुपयों में से अपने पास एक पाई भी नहीं रखूँगा। जब तक इस खाते में एक पाई भी बची रहेगी, मैं इसको तंग करने में व्यय करता रहूँगा।''

''देखो भवानीदास, इससे तो कुछ लाभ नहीं होगा। हानि तो हो ही रही है। यदि इस रुपये को किसी धर्म-कार्य में, दान-दक्षिणा में व्यय करो तो पुण्य के भागी बन जाओगे।''

भवानीदास ने कहा, ''यह तो तब ही हो सकता है, जबकि साधु भी, जो वह अपनी ओर से मुकदमा लड़ रहा है, इतना कुछ दान करे।''

''इसमें कोई युक्ति नहीं। यह धन जो तुम व्यय कर रहे हो, यह तो उनकी अनियमित आय है, परन्तु जो वह अपनी ओर से मुकदमे पर व्यय कर रहा है, वह भी अनियमित है क्या?''

''पण्डितजी,'' भवानीदास ने कहा, ''यह व्यय उस धृष्टता का दण्ड है, जो साधु ने छोटी रानी और आप पर अनुचित सम्बन्ध रखने का आरोप लगाकर की थी।''

''पर लाला, तुम परमात्मा हो, जो इस प्रकार दूसरों को दंड देने पर कमर कसे हुए हो?''

''पण्डितजी, मैं परमात्मा तो नहीं, परन्तु उसका एक अनुचर तो हूँ। आप कैसे कहते हैं कि मैं यह परमात्मा की इच्छा से नहीं कर रहा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दिखाई नहीं देता न।"

"पण्डितजी, दिखाई देगा, जब यह मुकदमे में उजड़ जाएगा और अपने दल वालों से छल-कपट का व्यवहार करने से पीटा जाएगा।"

"तो सुलह नहीं हो सकती?"

"हो सकती है। मुझे साधु को साढ़े बारह सहस्र रुपया देना था। पाँच सौ पेशगी दे चुका हूँ और इस मुकदमे पर बारह-तेरह सौ रुपया व्यय हो चुका है। शेष मेरे पास साढ़े दस सहस्र के लगभग है। वह मैं किसी धर्मार्थ कार्य के लिए दे सकता हूँ। यदि वह भी उतना ही उसी कार्य के लिए दे।"

"वह मानेगा नहीं।"

"तो पण्डितजी, मैं उसे दाने-दाने के लिए मोहताज कर दूँगा।"

"देख लो। वह इस समय शासक दल का प्रतिनिधि है। तुम लोगों ने अपने मत दे-देकर उस दल को शासक बनाया है और वह दल ही तुम सबको निस्तेज करने की सामर्थ्य रखता है।"

"पण्डितजी, हम, मेरा अभिप्राय है कि मैं, आप, रानीजी और इसी प्रकार अन्य सब जो कांग्रेस से मतभेद रखते हैं, निस्तेज हो चुके हैं। परन्तु जनता में यह सिद्ध करने का मेरा यह प्रयास कि कांग्रेसी हम पैसे वालों से अधिक बेईमान हैं, जारी रहेगा।"

पण्डित करुणानिधि ने सुलह कराने का यह दूसरा प्रयास भी छोड़ दिया। वे अपने घर की समस्याओं में लीन थे। इन्हीं दिनों में उनकी पत्नी को बुलाकर सुमति रानी ने एक पत्र दिया। यह मिर्ज़ापुर से बाबू बिहारीसिंह की धर्मपत्नी प्रमिला देवी का आया था। पत्र इस प्रकार था :

"बहिन सुमति! राधा ने बनारस से लिखा है कि उसने सुमित्रानन्दन को देखा है और उससे विवाह करना स्वीकार कर लिया है। वह उससे मिली भी है और सुमित्रानन्दन ने यह कहा है कि यदि उसकी माताजी यह सम्बन्ध स्वीकार करेंगी तो वह भी मान जाएगा। बिना उनकी स्वीकृति के वह कुछ नहीं कह सकता। अतः बहन, तुम स्वीकृति लिखकर भेज दो; फिर हम यहाँ निश्चिन्त हो जाएँ। जब लड़का बी०ए० पास करेगा और किसी काम को करने लगेगा तो विवाह की तिथि निश्चित कर देंगे।"

सुमति ने यह पत्र पण्डित करुणानिधि की पत्नी को देते हुए कहा, "प्रमिला का एक पत्र पाँच-छः दिन पहले आया था और उसने लिखा था कि वह अपनी दो लड़कियों के साथ बनारस गई थी और रघुवीर को देखकर पसन्द कर आई है। राधा, जिसका विवाह करने की चिन्ता हम कर रहे हैं, कहती थी कि वह लड़के के विषय में अपनी सम्मति विचारकर बताएगी। उसके उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्र आया है। इस पत्र के आने से पूर्व मैंने रघुवीर को एक पत्र लिखा था कि वह भी लड़की के विषय में अपनी प्रतिक्रिया लिखे। राधा इस समय सत्रह वर्ष की लड़की है और उसके माता-पिता इसका विवाह चार-पाँच वर्ष पीछे करना स्वीकार कर रहे हैं।

"रघुवीर का उत्तर अभी आया नहीं और यह पत्र आ गया है।"

गौरी पत्र लेकर अपने घर आ गई और अपने पति को बताने लगी कि वह दुर्गा की माँ से सुमित्रानन्दन से सगाई के लिए कह रही है और इधर यह पत्र आ गया है। बताइए, क्या किया जाए?"

दुर्गा के विषय में पति-पत्नी दोनों जानते थे। दोनों ने लड़की को पसन्द किया था और लड़की इस समय संस्कृत भाषा का अध्ययन तथा जप-स्तोत्र इत्यादि स्मरण कर रही थी। दुर्गा की माँ से भी बात हो चुकी थी और यह लगभग निश्चय ही था कि अब आगामी अवकाश के दिनों में सौमित्र गाँव में आएगा तो उसकी दुर्गा से सगाई कर दी जाएगी।

अतः उनकी पूर्ण योजना पर यह बम आ गिरा था। करुणानिधि यह विचार करने लगा था कि वह स्वयं वाराणसी जाए और राधा को देखकर निश्चय करे। वह यह भी कल्पना करता था कि यदि वह दुर्गा के गुणों का वर्णन करेगा तो सुमित्रानन्दन अपना विचार बदल भी सकता है।

ये सब समस्याएँ थीं कि एक दिन सुमति रानी ने पण्डित करुणानिधि को बुला भेजा। वैसे तो एकादशी, पूर्णिमा और अमावस्या के दिन वह यज्ञ कराने रानीजी के घर में जाता था और दान-दक्षिणा पाया करता था। इस प्रकार विशेष बुलाया जाना किसी विशेष कार्य का सूचक ही होता था।

सुमति ने पण्डितजी को सदा की भाँति बैठकघर में बैठाकर कहा, "इन दोनों लड़कों ने बनारस में कुछ गड़बड़ कर दी है। पहले एक पत्र प्रमिला का मिर्ज़ापुर से आया था और वह लड़के को देख पसन्द कर आई थी। उस पत्र में प्रमिला ने लिखा था कि लड़का पसन्द है। उसने नाम नहीं लिखा था। पीछे इसी बहन का एक अन्य पत्र आया कि राधा और सुमित्रानन्दन में बातचीत हुई है और दोनों ने एक-दूसरे को पसन्द किया है, परन्तु सुमित्रानन्दन बिना माँ की स्वीकृति के विवाह स्वीकार नहीं कर सकता। मैंने एक पत्र रघुवीर को लिखा था कि वह राधा के विषय में अपना मत लिखे तो सगाई का प्रबन्ध कर दूँ। आज रघुवीर का पत्र आया है। आप पढ़ लीजिए।"

सुमति ने पत्र पण्डितजी के हाथ में दे दिया। लिखा था, "माँ, मैंने छोटी लड़की विन्ध्यवासिनी को पसन्द किया है। यदि उससे सगाई हो तो मुझे प्रसन्नता होगी। वैसे जो आप करेंगी, उससे इन्कार नहीं कर सकता। परन्तु एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात बता दूँ तो ठीक होगा। वह यह कि राधा की रुचि मुझसे अधिक सुमित्रानन्दन में है। वे दोनों दो बार परस्पर मिल भी चुके हैं।

''इन सब बातों को विचार कर ही निश्चय करना। विवाह तो मैं करूँगा। मैं अभी संन्यास लेने का विचार नहीं रखता, परन्तु यदि कोई अन्य विघ्न-बाधा न हुई तो एम०ए० तक पढ़ूँगा ही। इस विचार से भी विन्ध्यवासिनी ही ठीक रहेगी।''

करुणानिधि ने पत्र पढ़ा और कहा, ''मैं समझता हूँ कि आप यह पत्र अपनी सखी प्रमिलादेवी के पास भेज दीजिए और साथ लिख दें कि वह अपना विचार लिखें। मैं आज सुमित्रानन्दन को लिख रहा हूँ और उससे सब बात जानने का प्रयत्न करूँगा।

''एक बात और भी है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कुछ असुर लोग घुस गए प्रतीत होते हैं और वहाँ गड़बड़ के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। मैं गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा हूँ कि सुमित्रानन्दन को पढ़ाई जारी रखने की अनुमति दूँ अथवा नहीं।

''वह उस कीचड़ में निर्लेप रह सकेगा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। इस कारण मैं वाराणसी की यात्रा करने का विचार रखता। हूँ। इस विषय में वहीं जाकर निश्चय करूँगा।''

''ठीक है। आप जाइए और सब बात देख आइए। यदि आप चाहें तो पहले प्रमिला के विचार भी जान ले।''

''हाँ, यदि हो सके तो ठीक है। साथ ही एक बात और है। सौमित्र की माँ ने पण्डित भुवनकीर्ति की लड़की पर दृष्टि रखी हुई है। लड़की की माँ से एक-दो बार बात भी हो चुकी है। इस विषय में भी विचार करना है।''

''आप तैयार हो जाइए। इस दुर्गा का भी विचार करना चाहिए। मैं समझती हूँ कि दुर्गा से सम्बन्ध खराब नहीं है।''

अब मिर्ज़ापुर से पत्र की प्रतीक्षा होने लगी।

:: 2 ::

यदि साधुराम का व्यय वैसा ही होता, जैसाकि लाला भवानीदास का था तो मुकदमा चलता, परन्तु साधु के जीवन में दो अन्य छिद्र उत्पन्न हो चुके थे। वह राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगा था। इससे उसे जिले भर में और कभी-कभी लखनऊ तक भी जाना पड़ता था। अब तो वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य भी हो चुका था। पिछले वर्ष वह भुवनेश्वर में कांग्रेस अधिवेशन पर भी गया था और वहाँ समाजवाद पर अपनी सम्मति दनदनाते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दे आया था। समाजवाद का कार्यक्रम तो पाकिस्तान के आक्रमण के कारण चल नहीं सका, इससे उसे भारी निराशा हुई थी। इस पर भी व्यय तो हो रहा था। यह लीडरी का मूल्य था।

एक अन्य क्षेत्र में उसने पदार्पण कर रखा था। वह था नाच-रंग, खाना-पीना। इसके द्वारा उसने गाँव के सब छोटे दर्जे के लोग अपने चारों ओर एकत्रित कर रखे थे।

ये लोग साधुराम की नेतागीरी का स्तम्भ थे और इस क्षेत्र में भी खूब व्यय हो रहा था। यह जीवन राजनीति के जीवन का सहायक था। अतः इस पर व्यय वास्तविक राजनीति के जीवन से अधिक होता था।

यही कारण थे कि साधु बहुत कष्ट में हो गया था। उसका कोष धन से रिक्त होता दिखाई देने लगा था। इस पर यह मुकदमा था, जो शैतान की आँत की भाँति लम्बा हो रहा था।

साधु का व्यय मुकदमे पर अधिक हो रहा था। उसे अपने साथियों को साग, पूरी, हलुआ के अतिरिक्त शराब भी पिलानी पड़ती थी।

एक दिन मुकदमे की पेशी भुगतकर ये सब लोग बस के अड्डे पर खड़े थे कि भवानीदास के साथी भी वहाँ आ गए। उन्हें देख साधु को अपनी विवशता स्पष्ट दिखाई देने लगी। साधु आज पुनः भवानीदास से मिला और पूछने लगा, ''आज कैसा रहा है, लाला?''

भवानीदास समझ नहीं सका कि क्या पूछ रहा है। इस कारण उसने पूछ लिया, ''हाँ साधु भैया, किस विषय में पूछ रहे हो?''

''यही मुकदमे के विषय में।''

''आज तो मैजिस्ट्रेट ही नहीं आया। मुकदमे का क्या होना है?''

''लाला, यह सब तुम्हारे हठ के कारण चल रहा है।''

''मैं तो भैया, इसमें निर्लेप भाव से कार्य कर रहा हूँ।''

''पर मैं निर्लिप्त नहीं रह सकता। मेरा तो दिवाला पिट रहा है।''

''भगवान् की कृपा है कि इधर कोई ऐसी बात नहीं।''

''यही तो विचार कर रहा हूँ कि भगवान् भी पैसे वालों की हिमायत कर रहा है। हमें उससे भी दो-दो हाथ करने पड़ेंगे।''

''तब भैया, मैं भी मान जाऊँगा। कारण यह कि मैं तो अपने को उसका अनुचर-मात्र मानता हूँ। जब उससे तुम निपट लोगे तो फिर मैं भी हथियार डाल दूँगा।''

''हाँ, कुछ करना ही पड़ेगा, कठिनाई यह है कि वह स्वयं तो कहीं दिखाई देता नहीं। आखिर दो-दो हाथ करने कहा जाऊँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वह सर्वत्र व्यापक है। भगवान् ने गीता में भी कहा है कि वह धनियों में कुबेर है। वह नरों में राजा है, विद्वानों में बृहस्पति है। अत: भैया, जहाँ धनी, प्रतिष्ठित, मान-सम्मानयुक्त और विद्वान दिखाई दे, बस समझो कि वह भगवान् ही है। उससे वहाँ ही निपट लो।''

इसने साधु के सम्मुख सुझाव उपस्थित कर दिया। वह एक बात समझ गया कि समाजवादी होना भगवान् से दो-दो हाथ करना ही है। अत: उसने कह दिया, ''लाला बहुन धन्यवाद है। आज तुमने अपने भगवान् का घर बता दिया है और मैं उसको अब कभी भी कहीं भी पकड़ सकता हूँ।''

बस के आने में अभी देर थी। हथियापुर से बस आती थी तो वहीं से फिर लौटकर हथियापुर जाती थी। ये सब लोग टिकट लिये आगामी बस की प्रतीक्षा में खड़े थे।

इस समय साधु के कुछ साथी शराबखाने से शराब पी आ गए थे। भवानीदास को देख वहीं आ खड़े हुए और साधुराम की अन्तिम बात सुन रहे थे। एक ने पूछ लिया, ''साधु भैया! किसका घर पता चल गया है?''

साधु ने मुस्कराते हुए कह दिया, ''भगवान् का।''

''कहाँ है वह?''

''यह सामने जो खड़ा है। कहता है कि भगवान् कृष्ण ने कहा है कि धनियों में धन वही है।''

''तो भैया! कहो तो हम ही इस भगवान् से दो-दो हाथ कर लें!''

साधु उनको मना करना चाहता था, परन्तु नशे में धुत वे लोग साधु के मना करने का अर्थ समझे नहीं। एक ने एक चपत लाला के मुख पर लगा कह दिया, ''निकल तेरे भगवान् की....'' आगे उसने एक गाली दे दी। लाला जान के भय से भागने लगा तो एक दूसरे ने भरपूर लात दे मारी। लाला गिर गया और पूर्व इसके कि लाला के कुछ साथी उसे छुड़ाने के लिए आएँ, लाला की लातों, मुक्कों और जूतों से पर्याप्त मरम्मत हो गई।

भवानीदास अर्ध-चेतनावस्था में हो गया और दोनों पक्ष के लोग परस्पर भिड़ जाने वाले थे कि बस आ गई। वे जिन्होंने अभी मद्य नहीं पी हुई थी, अपने मद्य पिए साथियों को पकड़-पकड़ बस में चढ़ाने लगे।

लाला के साथी बस में नहीं चढ़े। वे लाला को अचेत देख उसे बस के अड्डे से एक खाट ले, उस पर उसे डाल हस्पताल ले गए। कुछ लोग थाने में रिपोर्ट लिखाने चले गए और बस साधु के आदमियों को लेकर गाँव को चली गई।

जब पुलिस में यह बताया कि एक व्यक्ति मरणासन्न हस्पताल में है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुलिस थाने पर नियुक्त मैजिस्ट्रेट को ले मृतप्राय व्यक्ति के बयान लेने हस्पताल में जा पहुँची।

साधु वहाँ से बस में जाता हुआ समझ रहा था कि इस बलवे से जमानतें जब्त हो सकती हैं और वे सब हवालात में हो सकते हैं। अतः वह हथियापुर पहुँचते ही बरेली के लिए चल पड़ा। वह वहाँ से पत्र ले अपना किसी अन्य स्थान पर होना सिद्ध करना चाहता था और फिर लखनऊ से किसी बड़े नेता की सहायता से मामला रफा-दफा करवाना चाहता था।

साधु का एक लड़का था गरीबदास। वह मिडल तक पढ़ा था और आगे पढ़ नहीं सका था। उसकी रुचि जीवन के भोगों में थी। वैसे गरीबदास को साधु ने सहकारी समिति के फार्म का सुपरिण्टेण्डेण्ट बना रखा था और वह फार्म के तीस से ऊपर कर्मचारियों में राजा बना घूमता था। उसने अपने रहने को घर फार्म में ही बनवा लिया था।

साधु भवानीदास के पीटे जाने की रात को हुथियापुर से फार्म के ट्रैक्टर में सवार हो पुनः हल्द्वानी को लौट पड़ा। वह रात के नौ बजे हल्हानी में पहुँचा और दस बजे रात की गाड़ी में टिकट लेकर बरेली को चल पड़ा। ट्रैक्टर वापस हथियापुर फार्म पर पहुँचा तो वहाँ एक अन्य झगड़ा खड़ा था। फार्म के कर्मचारी गरीवदास के लिए आस-पास के निर्धन और छोटी जाति के लोगों की स्त्रियाँ पकड़कर लाया करते थे। उस रात भी गाँव की एक लड़की को पकड़ लाए थे और गरीबदास ने उससे बलात्कार किया था। लड़की चीखती-पुकारती रही, परन्तु फार्म पर सुनने वाला कोई नहीं था।

व्यभिचार करते समय लड़की अचेत हो गई तो चिन्ता होने लगी कि उसका क्या किया जाए? अब प्रश्न उपस्थित हुआ कि यह लड़की है कौन? पहरावे से वह किसी 'कामे' के घर की प्रतीत नहीं होती थी।

जो लोग उसे पकड़कर लाए थे, बुलाए गए और उन्होंने बताया कि रानी जी की हवेली से निकलकर यह लड़की हवेली के पिछवाड़े को जा रही थी कि वे उसके मुख पर हाथ रख उठा लाए हैं।

गरीबदास को समझ आ गया कि हो न हो यह पण्डित करुणानिधि की लड़की है। अतः वह उस अचेत लड़की को शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से हटवाने का यत्न करने लगा। उस समय फार्म का ट्रैक्टर उसके पिता को हल्द्वानी छोड़ लौटा था। उसका शब्द सुन वह अपने फार्म वाले घर से बाहर निकल आया और पूछने लगा, "यह ट्रैक्टर कहाँ गया था?"

ड्राइवर ने बताया, "प्रधान जी को हल्द्वानी छोड़ने गया था।"

"वहाँ क्या था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो उन्होंने बताया नहीं। वह उतरकर रेल के स्टेशन को चले गए थे।''

''तो ऐसा करो एक बण्डल यहाँ पड़ा है, उसे उठा हल्द्वानी हस्पताल के दरवाजे पर छोड़ आओ।''

''किसके हवाले करना है ?''

''किसी के नहीं। वहाँ अस्पताल के बाहर एक तरफ फुटपाथ पर लिटा चले आना।''

''लिटा ? तो क्या कोई....''

गरीबदास ने मुख पर अंगुली रख कहा, ''मरी नहीं। केवल अचेत है।''

ड्राइवर मुख देखता रह गया। गरीबदास ने पचास रुपये ड्राइवर को दिए और कहा, ''यह पेट्रोल इत्यादि के लिए हैं। जल्दी करो।''

लड़की को उठाया गया। उसको ट्रैक्टर के ड्राइवर के पाँव में डाल दिया गया। ड्राइवर ट्रैक्टर लेकर पुनः हल्द्वानी को चल पड़ा।

यह पण्डित करुणानिधि की लड़की ही थी। वह सायंकाल सुमति रानी से मिलने गई थी। ऐसा पहले भी हुआ करता था, परन्तु रात के नौ बजे के लगभग वह रानी जी के घर से भोजन कर हवेली से निकल अपने घर की ओर चली तो दो-तीन लोगों ने उसके मुख पर हाथ रख कमर से पकड़ उठा लिया और सरकारी फार्म की ओर भाग खड़े हुए।

पण्डित की पत्नी गौरी ने लड़की की प्रतीक्षा रात के दस बजे तक की और फिर रानी जी के घर जाकर पता किया। वहाँ से पता चला कि उसे गए एक घण्टे से ऊपर हो चुका है। इस पर गौरी भागी-भागी आई और पण्डित जी को बताने लगी, ''शालिनी लापता है।''

जब पण्डित जी ने सब बात सुनी तो वह अपने घर से निकले और लाला भवानीदास के घर पहुँचे। वहाँ से पता चला कि लालाजी अपने सब-के-सब साथियों के साथ हल्द्वानी से लौटे ही नहीं। वे बस के अड्डे पर पहुँचे। वहाँ उस ड्राइवर और कण्डक्टर ने, जो आखिरी बस लेकर आते थे, बताया कि हथियापुर के दो दलों में लड़ाई हो गई थी और उनमें एक अचेत हो गया था। कुछ लोग उस अचेत आदमी को लेकर हस्पताल चले गए थे।

दूसरी ओर सुमति रानी को जब शालिनी के लापता होने का समाचार पता चला तो उसने हवेली के दस-बारह कर्मचारियों को गाँव में घर-घर में पता करने भेज दिया। उसको सन्देह हो गया था कि गाँव के किसी व्यक्ति ने लड़की का अपहरण किया है। वह सुन रही थी कि गाँव में मद्य का सेवन बढ़ रहा है और इस प्रकार के अपराध होने लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित करुणानिधि थाने में पहुँचे और उन्होंने रिपोर्ट लिखवा दी। साथ ही धारा 107 के अपराधियों में हल्द्वानी में हुए झगड़े का समाचार भी दे दिया। वहाँ से पता चला कि थानेदार भी उनके साथ ही गया था और अभी तक आया नहीं।

पण्डितजी थाने से निकल ही रहे थे कि हवेली का जमादार भागता हुआ आया और रिपोर्ट लिखाने लगा। पण्डित करुणानिधि वहीं ठहर सुनने लगे।

जमादार ने लिखाया, ''पण्डितजी की लड़की की खोज में सहकारी फार्म पर गरीबदास के मकान पर मैं पता करने गया था। वहाँ दूसरे-तीसरे दिन स्त्रियों के साथ दुराचार के समाचार आते रहते हैं। वहाँ पर एक व्यक्ति ने यह समाचार दिया है कि शाम के सात बजे से पूर्व फार्म का ट्रैक्टर किसी को लेकर हल्द्वानी गया था और वह दस बजे के लगभग लौटा है और एक लड़की का शव लेकर पुनः हल्द्वानी गया है। उस आदमी का, जिसने यह समाचार दिया है, नाम पूछा गया तो उसने दो गालियाँ देकर कह दिया है, ''बता दिया। जाओ जो मन में आए कर लो।''

थाने में थानेदार तो था नहीं। हवलदार पण्डित जी से पूछने लगा, ''क्या कहते हैं?''

''हवलदारजी, वह ट्रैक्टर अभी लौटेगा, उसके ड्राइवर को पकड़कर हवालात में डालना चाहिए। उससे पता करने का यत्न करना चाहिए। मैं हल्द्वानी जा रहा हूँ।''

करुणानिधि हवेली में पहुंचे और रानी साहिबा से उनकी मोटर माँग हल्द्वानी को चल पड़े।

इनको एक ट्रैक्टर हरीकेन लालटेन से प्रकाश करता हुआ हल्द्वानी से निकलता मिला। इस समय रात के पौने ग्यारह बज चुके थे। करुणानिधि का विचार था कि यदि लड़की मर गई होगी तो उसे कहीं नदी-नाले में बहा दिया होगा और यदि अभी जीवित है तो हस्पताल पहुँचाया होगा। उन्होंने ट्रैक्टर वाले को खड़ा करने का यत्न किया। ट्रैक्टर रुका नहीं। इन्होंने मोटर घुमाकर उसके पीछे कर दी और एक फर्लांग पर ही उसे जा पकड़ा। पण्डित जी के साथ दो हवेली के सिपाही थे। वे लपककर ट्रैक्टर पर चढ़ गए और ट्रैक्टर रोकने में सफल हो गए।

ड्राइवर ने पण्डितजी को कार में देखा और पहचान गया। उसने पण्डितजी को बता दिया, ''फार्म पर एक अचेत लड़की पड़ी थी। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने आज्ञा दी थी कि लड़की को हस्पताल में पहुँचा दिया जाए। मैं उसे हस्पताल छोड़ आया हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हस्पताल में दाखिल करा आए हो ?''

''जी नहीं, यदि दाखिल कराता तो हस्पताल वाले वहाँ ही रोक लेते और पुलिस के हवाले कर देते। मैं लड़की को बाहर अँधेरे में फुटपाथ पर लिटा आया हूँ।''

करुणानिधि ने कहा, ''अच्छा भैया, हम तुम्हारा धन्यवाद करते हैं। पर यह तो बता दो कि वह किस ओर है ?''

''मुख्य दरवाजे पर तो रोशनी पर्याप्त थी। वहाँ उतारना कठिन था, इस कारण हस्पताल के दक्षिण बाजू में अंधेरे में छोड़ आया हूँ।''

करुणानिधि ने वहाँ समय गँवाना व्यर्थ मान मोटर उसी ओर भगा दी। ठीक हस्पताल के फाटक के दक्षिणबाजू में फुटपाथ पर एक लड़की घुटनों में सिर दिए बैठी थी।

जब इन्होंने मोटर उसके पास खड़ी की तो उसने घुटनों से सिर उठाया। करुणानिधि ने टार्च से उसपर प्रकाश डाल देखा और पहचान लिया। पण्डित जी ने आवाज़ दे दी, ''शालिनी !''

लड़की मुख देखने लगी थी। पण्डित जी ने कहा, ''मैं करुणानिधि हूँ। उठो, चलो। मैं तुम्हें लेने आया हूँ।''

लड़की ने हाथ बढ़ा आश्रय माँगा और जब करुणानिधि ने आश्रय दिया तो वह उठी और मोटर में बैठ गई। बैठते हुए उसने कहा, ''पिताजी, जल।''

आधी रात के समय ये मोटर को बाज़ार की ओर ले गए। एक चाय का स्टाल खुला था। वहाँ से एक प्याला चाय ले लड़की को पिलाई गई। तदनन्तर वे हथियापुर की ओर चल पड़े।

:: 3 ::

मोटर गाड़ी हथियापुर से कुछ अन्तर पर ही थी कि मार्ग में पुलिस सहकारी समिति के ट्रैक्टर को रोके हुए खड़ी मिली। ड्राइवर ट्रैक्टर-सहित पुलिस ने अपने अधिकार में कर लिया। मोटर भी समीप ला खड़ी कर दी गई।

पुलिस हवलदार ने करुणानिधि को पहचाना तो कह दिया, ''यह ड्राइवर ट्रैक्टर ले चलने से इन्कार करता है।''

''तो मैं क्या करूँ ?'

''हम ट्रैक्टर को यहाँ छोड़ना नहीं चाहते। आप मोटर को थाने में ले जाइए और वहाँ एक दर्जन सिपाहियों को हथकड़ी और बन्दूकों के साथ यहाँ भेज दें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवलदार ने मोटर में एक लड़की को बैठे देखा तो पूछ लिया, "लड़की मिल गई है क्या?"

"हाँ, भाई।"

"इसके भी बयान होंगे।"

"हो जाएँगे।"

पहले लड़की को घर पहुँचाया गया और पीछे पुलिस वालों को रुके ट्रैक्टर के स्थान पर भेज मोटर हवेली में पहुँचा दी गई। सुमति चिन्ता में गाड़ी के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसी समय पण्डितजी के घर पर जा पहुँची। लड़की विह्वल हो रो रही थी और माँ भी उसकी खाट के समीप बैठी आँसू बहा रही थी।

प्रातः थानेदार लौटा तो सबसे पहला काम उसने यह किया कि धारा 107 के मुकदमे के दोनों पक्ष के अभियुक्तों को पकड़कर हवालात में डाल दिया और उनकी पहली जमानतें जब्त करने की याचिका तैयार कर ली।

साधु मिला नहीं, तो उसके वारण्ट जारी कराने के लिए भी प्रार्थना तैयार कर दी गई। सबको वह हल्द्वानी ले गया।

गाँव में साधु का लड़का एक अल्पव्यस्क लड़की के अपहरण और उससे बलात्कार के अपराध में पकड़ा गया। लड़की के मुकदमे की जाँच होने लगी।

हल्द्वानी में लाला के आदमियों ने कहा कि उन्होंने जमानत की शर्तें नहीं तोड़ीं। इस कारण उनके जामिन की जमानत जब्त नहीं होनी चाहिए। दो दिन हल्द्वानी की हवालात में रहते हुए भवानीदास ने पुलिस और न्यायालय के लोगों को भारी रिश्वत देकर यह निर्णय करा दिया कि बड़ी रानी और करुणानिधि ने जिनकी जमानत दी थी, वे शान्तमय रहे हैं। अतः उनकी जमानत जब्त नहीं हो सकती। परन्तु साधु के पक्ष वालों की जमानतों के विषय में चाराजोई जारी रखी गई। साथ ही साधु के आदमियों पर बलवा करने का आरोप लगाकर मुकदमा चला दिया गया।

साधु चौथे दिन गाँव में लौटा तो पकड़कर हल्द्वानी हवालात में पहुँचा दिया गया। बाप-बेटा दोनों एक ही हवालात में रखे गए।

अभी ये मुकदमे चल ही रहे थे कि माँ के पत्र के उत्तर में सुमित्रानन्दन ने लिख भेजा। माँ ने पत्र लिखा था, 'रघुवीरसिंह ने बिहारीसिंह की छोटी लड़की विन्ध्यवासिनी से विवाह की बात लिखी है और बिहारीसिंह की बड़ी लड़की राधा ने तुमसे विवाह की इच्छा प्रकट की है। क्या तुमने अपनी आर्थिक स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वर्णन राधा से किया है? नहीं किया तो करो और बताओ कि अब वह क्या चाहती है?

''तुम्हारे पिताजी का विचार है कि यदि तुम्हारा विवाह होना है और तुम अपनी होने वाली पत्नी से मिलते रहते हो तो विश्वविद्यालय की पढ़ाई नहीं हो सकेगी। वह तुमको घर पर बुलाकर किसी काम पर लगा देंगे।''

इस पत्र के उत्तर में सुमित्रानन्दन ने लिखा—

''यहाँ पन्द्रह दिन तक पढ़ाई में गड़बड़ रही है। विश्वविद्यालय के नाम से हिन्दू शब्द निकालने पर एक सभा हुई थी, परन्तु यहाँ कुछ विद्यार्थी हैं जो हिन्दू शब्द के घोर विरोधी हैं। उन्होंने सभा भंग करने का यत्न किया। जब सभा भंग नहीं हुई तो विश्वविद्यालय के एक 'शेड' को आग लगा दी और पुलिस पर ईंट-पत्थर चलाए।

''इससे पढ़ाई में भारी विघ्न रहा है, परन्तु अब शान्ति है और पढ़ाई नियमित रूप में चलने लगी है।

''मिर्ज़ापुर वालों की लड़की को मैंने अपनी आर्थिक स्थिति बताई तो वह भौचक्की हो मुख देखती रह गई। वह मुझे रानी साहिबा का पुत्र मानती थी। मैंने उसे बताया कि मैं तो उनके पुरोहित पण्डित करुणानिधि का लड़का हूँ।

''मैंने सब बात, जो कुछ मुझको विदित थी, बता दी। वह दस मिनट तक मेरा मुख देखती हुई विचार करती रही और फिर एकाएक उठकर चल दी। मैं समझता हूँ कि उसे अपनी भूल का ज्ञान हो गया है। यह भेंट मेरे पूर्व की दो भेंटों की भाँति गंगातट पर स्वामी निखिलानन्दजी की कुटिया से कुछ अन्तर पर हुई थी। वह चली गई तो मैं रघुवीर को इस भेंट का वृत्तान्त बताने स्वामीजी की कुटिया पर गया। वहाँ रघुवीर गंगा पर जाने के लिए नौका में सवार हो रहा था। मैं भी उसके साथ चला। मार्ग में ही मैंने उसे सब बात बताई तो हम दोनों बहुत हँसे।

''पिताजी, मैं आशा करता हूँ कि अब वह मुझसे मिलने का यत्न नहीं करेगी।''

इस पत्र से करुणानिधि और उसकी पत्नी के चित्त को बहुत शान्ति मिली। करुणानिधि लड़की के मुकदमे में बहुत बुरी तरह फँसा हुआ था। शालिनी के बयान पुलिस और फिर अदालत में हो चुके थे, परन्तु राजनीतिक दबाव डाला जाने लगा था, जिससे साधु और उसका लड़का छोड़ दिए जाएँ।

करुणानिधि के परिचित ही इस समय लखनऊ की राजगद्दी पर आसीन थे, परन्तु वह अपने पुराने परिचय को काम में लाना नहीं चाहता था और पुलिस को यथासम्भव सहायता देता रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जी का विचार था कि यह पुलिस का मुकद्दमा है। अतः उन्हें भाग-दौड़ नहीं करनी चाहिए, परन्तु लाला भवानीदास साधु के परिवार को बरबाद करने पर तुला हुआ था। जब मैजिस्ट्रेट कुछ गड़बड़ करने लगा तो लाला के वकील ने मैजिस्ट्रेट बदलने की प्रार्थना सेशन कोर्ट में कर दी और मैजिस्ट्रेट बदलवाने में सफल हो गया। अब नया मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुआ तो लाला के वकील की धाक जम गई और मैजिस्ट्रेट डरने लगा। इसपर भी मैजिस्ट्रेट ने ऊपरी दबाव के कारण निर्णय लिखते हुए गरीबदास को बचाने के लिए बहुत कुछ लिख दिया। मुकदमा सेशन के सुपुर्द हुआ तो पुलिस का पक्ष दुर्बल प्रतीत होने लगा था। सेशन कोर्ट में पांसा पलटा। भवानीदास ने एक के स्थान पर दो वकील खड़े कर दिए थे।

इस समय गरीबदास के स्थान पर सहकारी फार्म का सुपरिण्टेण्डेण्ट मुहम्मदू का लड़का रमजान निर्वाचित हो गया और उसने गरीबदास के खाते में बहुत रुपयों का गबन निकाल दिखाया। परिणामस्वरूप गरीबदास और साधुराम पर सहकारी समिति के धन के गबन का मुकदमा भी चलने लगा।

एक दिन करुणानिधि ने कहा, ''भवानीदास, मुकदमे में बहुत समय और धन व्यर्थ गंवा रहे हो, कुछ घर की भी सुध लेनी चाहिए।''

''पण्डितजी, मैं घर की सुध ही ले रहा हूँ। लड़के को मैंने बरेली में कपड़े की दुकान खुलवा दी है। परिवार वहाँ चला गया है। यहाँ केवल मैं और मेरी पत्नी रहते हैं। मुझे यहाँ इसके अतिरिक्त कुछ काम नहीं कि साधु को दाने-दाने के लिए मोहताज कर दूँ। यह मैं उसी के रुपये से कर रहा हूँ।

''उसके साढ़े बारह हज़ार में से अभी छह हज़ार के लगभग शेष हैं इससे गरीब के मुकदमे को हाई कोर्ट तक चलवाऊँगा। पण्डित जी, साधु की अपनी भूमि परती पड़ रही है। इसका अर्थ यह है कि बीज डालने के लिए उसके पास दाम नहीं रहा।''

इस प्रकार फरवरी का महीना आ गया था। एकाएक बनारस से सुमित्रानन्दन का पत्र आया। इसमें सुमित्रानन्दन ने लिखा, 'राधा अपने भाई के साथ फिर मिलने लगी है। वह कल अपने भाई के साथ हमारे कमरे में आई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी माँ ने रघुवीर से विन्ध्यवासिनी का रिश्ता स्वीकार कर लिया है और वह कहती थी कि उसके भाई ने माँ से उसका विवाह मुझसे स्वीकार करवा लिया है।

''मैं आपको लिख रहा हूँ। इस कारण कि मेरे विवाह का प्रबन्ध करना आपका, और विशेष रूप से माँ का काम है। मैं इसमें अपने को स्वतन्त्र नहीं मानता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पत्र पर करुणानिधि ने बनारस जाने का निश्चय कर लिया। शालिनी के बयान सेशन कोर्ट में भी हो चुके थे और वह समझ रहा था कि अब उसको जाने की स्वतन्त्रता मिल गई है। इसपर भी अपनी पत्नी को वह लड़की की देख-रेख करने के लिए सचेत और सतर्क कर रहा था। जाने से पूर्व वह सुमति रानी से मिलने गया।

जब से शालिनी के साथ दुर्घटना हुई थी, दुर्गा के माता-पिता ने अपना व्यवहार करुणानिधि के परिवार के प्रति शीतल कर लिया था। वे लोग यह समझने लगे थे कि लड़की के साथ बलात्कार हो जाने से परिवार ही दूषित हो गया है। करुणानिधि और उनकी पत्नी ने उनसे सम्पर्क बनाने का यत्न किया था, परन्तु उनके शीतल व्यवहार को अनुभव कर वे भी मौन हो गए थे।

एक बात और विशेष हुई थी। सुमति ने सौमित्र और राधा के विषय में प्रमिला के विचार पूछे थे, परन्तु इस विषय में प्रमिला ने कुछ नहीं लिखा था। रघुवीर के सम्बन्ध में तो पत्र आते रहते थे। उन पत्रों में सुमित्रानन्दन अथवा राधा के विषय में उल्लेख नहीं होता था।

करुणानिधि के प्रस्थान से पूर्व सुमित्रानन्दन का एक पत्र और मिला। इसमें उसने लिखा था, ''विश्वविद्यालय में पुलिस-वैन के नीचे एक लड़का दबकर मर गया है और आजकल विश्वविद्यालय में पढ़ाई बन्द है। कुछ लड़के लाल झण्डे ले हड़ताल जारी रखने का यत्न कर रहे हैं।

इस पत्र के मिलते ही पण्डित करुणानिधि बनारस को चल पड़े। उन्होंने सौमित्र को लिखा नहीं कि वे आ रहे हैं। वह गुप्त रूप से राधा के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। अतः बनारस रेल के स्टेशन से वे सीधे स्वामी निखिलानन्द की कुटिया पर जा पहुँचे और वहीं रहने का प्रबन्ध कर टिक गए।

स्वामी जी ने पूछा, ''पण्डितजी बहुत दिन के उपरान्त आए हो?''

''हाँ, महाराज! गाँव में एक दुर्घटना हो गई थी।''

''क्या?''

करुणानिधि ने शालिनी की पूर्ण घटना सुना दी और मुकदमे की बात बता कर कह दिया, ''इसमें शालिनी के बयान भी होने थे और जब तक निम्न न्यायालय में और सेशन कोर्ट में बयान हो नहीं गए, मैं आ नहीं सका। यहाँ भी भारी गड़बड़ प्रतीत हो रही है और मैं यह विचार करने आया हूँ कि सौमित्र को यहाँ रखना उसके लिए हितकर भी है अथवा नहीं?''

''हाँ, देश के सभी विश्वविद्यालय कम्युनिस्टों के गढ़ हो गए हैं। यहाँ विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने कुछ विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय से निकाल दिया और विज़िटर ने आज्ञा भेज दी कि लड़कों से नरमी का व्यवहार ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहेगा। परिणाम यह हुआ कि पुनः उन्होंने सिर उठाना आरम्भ कर दिया है। एक साधारण-सी घटना पर जिसमें पुलिस वालों की गलती तो है, आग और मार-पीट भी हुई।

"एक लड़का पुलिस-वैन के नीचे आकर मर गया। पुलिस वालों ने भूल की कि दुर्घटनाग्रस्त लड़के को हस्पताल में पहुँचाने के लिए पुलिस-वैन रोकी नहीं और लड़का सड़क पर तड़पता रहा। इस पर विश्वविद्यालय के उन तत्त्वों ने, जो प्रत्येक बहाने से अव्यवस्था उत्पन्न करने के लिए तैयार रहते हैं, विश्वविद्यालय में हड़ताल करा दी है।"

"परन्तु," करुणानिधि का प्रश्न था, "पुलिस के विपरीत रोष का विश्वविद्यालय से क्या सम्बन्ध है और विश्वविद्यालय की पढ़ाई रुकवाने से क्या लाभ होगा?"

"उपाध्याय, तुम ठीक कहते हो, परन्तु हड़ताल की बात तो गांधी जी के काल से ही भारत में प्रचलित हो रही है। सरकार का विरोध करने के लिए काम-काज अपना ठप्प कर दिया जाए। अन्याय सरकार करती थी और भूख-हड़ताल कर महात्मा जी मरने के लिए तैयार हो जाते थे।

"इसका परिणाम यह होता था कि लोग हल्ला-गुल्ला कर सड़कों के लैम्प तोड़ सरकारी इमारतों और कहे जाने वाले सरकारी भक्तों के मकानों को आग लगा रोष निकालते थे। उनका विचार यह होता था कि सरकार भयभीत हो महात्मा जी की जान बचाने के लिए बीच-बचौले डालकर सुलह कर लेगी।

"यही बात अब समझी जा रही है।"

"इस समय यह नहीं होगा।" पण्डित जी का कहना था, "यों तो उस समय भी ऐसा नहीं होता था। मैं तो बड़े-बड़े कांग्रेसियों के साथ दो वर्ष तक जेल में रहकर उस समय की सब घटनाओं का ठीक-ठीक वृत्तान्त सुनता रहा हूँ। उन घटनाओं से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि महात्मा जी क्रान्तिकारियों और हिंसात्मक कार्यवाही करने वालों को जनता में बदनाम करते रहते थे; इस कारण सरकार अपने इतने प्रबल सहायक को मरने देना नहीं चाहती थी और जब-जब भी उनकी जान का भय उपस्थित होता था, सरकार किसी न किसी प्रकार की लीपा-पोती कर महात्मा जी को सन्तरों का रस लेने पर राजी कर लेती थी।

"इस पर भी अँग्रेज़ी सरकार ने अपने कार्य को कभी छोड़ा नहीं। यही बात यहाँ होगी। जब लड़के अपनी पर्याप्त हानि कर लेंगे तो सरकार इनकी बातों पर लीपा-पोती कर इनको काम करने पर राजी कर लेगी और सरकार पुनः विश्वविद्यालयों पर सरकारी अधिकार बढ़ाने में लग जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो कुछ सन् 1919 में क्रांतिकारी अंग्रेजों को देने पर विवश कर सके थे, कांग्रेस ने साम्प्रदायिक प्रातिनिध्य स्वीकार कर और क्रान्तिकारियों की निन्दा कर उसे विषाक्त कर दिया था।

गांधीजी ने स्वयं दो आन्दोलन चलाए और दोनों का सरकार पर वह प्रभाव नहीं हुआ, जो एक-आध बार बम चलाने और गोली से सरकारी कर्मचारी को मार देने से हुआ था। सरकारी कानून जो सन् 1935 में बना, वह देश के लिए सन् 1919 के कानून से भी अधिक विष से भरा हुआ था।

"और यदि सन् 1942 में व्यापक अहिंसा का प्रदर्शन न होता अथवा आजाद हिंद सेना के साठ सहस्त्र सैनिकों को छोड़ने पर सरकार विवश न होती तो स्वराज्य मिलता नहीं। ये साठ हज़ार सैनिक क्रान्ति लाने में सक्षम थे। इनसे तथा नौसेना के उपद्रव से भयभीत सरकार ने शीघ्रातिशीघ्र गांधी तथा उनके शिष्यों के हाथ में स्वराज्य देने का प्रयास किया।

"गांधी जी सदा दूसरों के प्रयास का फल भोगने को तैयार रहते थे और अँग्रेज़ी सरकार भारतीय जनता को प्रसन्न करने के लिए गांधी तथा कांग्रेस को प्रसन्न करती रहती थी।"

:: 4 ::

करुणानिधि को विदित था कि सायं साढ़े चार बजे रघुवीर स्वामी जी की कुटिया पर आ जाता है, अतः वह स्वामी जी को यह काम सौंप कि महिला कालेज में फर्स्ट ईयर में पढ़ने वाली मिर्ज़ापुर-निवासी बिहारीसिंह की लड़की राधा के चरित्र, मानसिक विकास तथा बौद्धिक प्रखरता के विषय में पता कराएँ, स्वयं वहाँ से टल जाने का विचार करने लगे।

स्वामी जी को इस विषय में कुछ तो पहले भी विदित था, परन्तु शेष पता करने के लिए राधेश्याम के द्वारा यत्न करने के विचार से वे मौन रहे। करुणानिधि वहाँ से नगर को चल दिए। वे नहीं चाहते थे कि रघुवीर को पता चले कि वे आए हुए हैं। परन्तु बात छुपी नहीं रह सकी।

कालेज में तो हड़ताल थी। राधेश्याम तथा ब्रजकिशोर दोनों पक्षों के लोग परस्पर सहयोग दे रहे थे। उसी दिन ब्रजकिशोर और यदुनाथ सिंह, राधेश्याम तथा रामविलास पाठक और तीन अन्य साथियों के साथ संयुक्त परामर्श कर रहे थे। ये मध्याह्न दो बजे यूनियन के कार्यालय में बैठे हुए थे। यदुनाथसिंह बता रहा था, इस समय पूर्ण विद्यार्थी समुदाय को एकमत देख सरकार भी दब रही है।"

"हाँ," सुमित्रानन्दन का कहना था, "संगठन में बल तो है। यह तो अन्धे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी जानते हैं, परन्तु यदुनाथ भाई, हमें तो अपने हितों का विचार करना है। क्या हमारा हित इसमें नहीं कि एक सप्ताह की गड़बड़ के उपरान्त अब यहाँ शान्ति स्थापित की जाए। उत्तर प्रदेश सरकार ने पुलिस के अत्याचार ठीक करने के लिए कमीशन नियुक्त कर दिया है। यह ही ठीक है। मेरा विचार है कि हमारी यह 'एक्शन कमेटी' कल से पढ़ाई आरम्भ करने की घोषणा कर दे।''

''अभी कोई घोषणा नहीं करनी चाहिए। हम उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त एक व्यक्ति कमीशन को स्वीकार नहीं करते।''

''क्यों नहीं करते?'' पाठक का प्रश्न था।

''इसलिए कि हमें सन्देह है कि पुलिस ने जो गदर तीन फरवरी को मचाया था, वह उत्तर प्रदेश के होम मेम्बर के प्रोत्साहन पर ही मचाया था। अतः उसी होम मेम्बर द्वारा नियुक्त कमीशन से हम न्याय की आशा नहीं रखते।''

''परन्तु उत्तर प्रदेश की पुलिस की कार्यवाही की जाँच भी तो उत्तर प्रदेश की सरकार ही कर सकती है।''

''वह! चोर का गवाह गिरहट।'' यदुनाथ का कहना था।

''तो फिर और कौन जाँच करे?''

''जाँच तो वाइस चान्सलर को करनी चाहिए।'' ब्रजकिशोर ने कहा।

''परन्तु ब्रजकिशोर जी, पिछली वार वाइस चान्सलर ने विश्वविद्यालय के विषय में जाँच की थी तो आप सबने उसका विरोध किया था और अब वे जाँच कर व्यर्थ में अपने को बदनाम नहीं करना चाहते।''

''तो केन्द्रीय सरकार अथवा विश्वविद्यालय का विज़िटर जाँच कमीशन नियुक्त कर सकता था।''

अब फिर सुमित्रानन्दन ने कहा, ''मैं तो यह कहता हूँ कि पढ़ाई आरम्भ हो जानी चाहिए। इस झगड़े में कि केन्द्रीय सरकार जाँच करे अथवा राज्य सरकार जाँच करे, हमें अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।''

इसपर यदुनाथ ने हँसते हुए कह दिया, ''ओह! तुम्हारे लिए तो परीक्षा पास करते ही विश्वविद्यालय में प्राध्यापक का कार्य प्रतीक्षा कर रहा है।''

''मैं तो इस विश्वविद्यालय में अथवा कहीं भी, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में काम करूँगा नहीं। मैं इसे देश के लिए अभिशाप मानता हूँ।

''तो फिर तुम्हें क्या अन्तर प्रतीत होता है कि किसी को यह शापित शिक्षा मिलती हैं अथवा नहीं मिलती?''

''परन्तु अन्य विद्यार्थी हैं, जो अपने माता-पिता के गाढ़े पसीने की कमाई खर्च करते हुए यहाँ अपना समय व्यर्थ गँवा रहे हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो सौमित्र!" यदुनाथ ने समझाते हुए कहा, "देश में क्रान्ति आ रही है और उस क्रान्ति को दिशा देने वाले हम ही हैं। इस कारण ठीक समय पर जब लोहा गर्म है, चुप बैठ जाना ठीक नहीं होगा।"

"यहाँ क्रान्ति नहीं आएगी।"

"क्यों?"

"सेना और पुलिस क्रान्तिकारियों के साथ सम्मिलित नहीं हो रही। बिना उनके सहयोग के देश में क्रान्ति नहीं हो सकती।"

"तो ऐसा करो। आज सब विद्यार्थियों की एक सभा कन्वोकेशन थियेटर में बुला लेते हैं और यह बात सबके सम्मुख निश्चय कर लेंगे। यदि किसी को अपने माता-पिता के धन की चिन्ता होगी तो हड़ताल खोलने की याचना के लिए मत दे देगा। जो बहुमत कहेगा, हम वही करेंगे।"

अत: यह निश्चय हो गया कि सायं पाँच बजे विद्यार्थियों की एक साधारण सभा कन्वोकेशन थियेटर में बुला ली जाए।

इसपर दोनों पक्ष सहमत हो गए। यह निश्चय हुआ कि ब्रजकिशोर यदुनाथसिंह एक ओर से बोलेंगे और राधेश्याम तथा रघुवीर दूसरी ओर से बोलेंगे और जो श्रोतागणों में से बोलना चाहे, उसे भी दो-दो मिनट बोलने की स्वीकृति दी जाएगी।

रघुवीर इस संयुक्त समिति का सदस्य नहीं था, परन्तु वह दक्षिण पक्ष वालों में सबसे प्रभावी वक्ता समझा जाने लगा था। अत: राधेश्याम ने सौमित्र से कहा, "उसे सभा में अवश्य लाना।"

सुमित्रानन्दन का कहना था, "वह नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"मेरी उससे आज बातचीत हुई है और वह कल से पढ़ाई आरम्भ करने के पक्ष में है। उसका विचार है यह बात, कि हड़ताल बन्द की जाए, सर्वसाधारण में विचार करने की नहीं है। उत्तरदायी छात्र तथा प्राध्यापकों एवं यूनियन की कार्यकारिणी का यह कार्य है कि इसका निर्णय बन्द कमरे में बैठ करें।"

राधेश्याम मुख देखता रह गया। कुछ देर तक विचार कर वह सुमित्रानन्दन से पूछने लगा, "वह इस समय कहाँ होगा? मैं उससे मिलकर उसको अपनी नीति समझाना चाहता हूँ।"

"वह अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा होगा।"

"तो चलो, वहाँ चलें।"

दोनों बिरला छात्रावास में जा पहुँचे। कमरे को ताला लगा था। राधेश्याम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुमित्रानन्दन दोनों एक-दूसरे का मुख देखने लगे। एकाएक सुमित्रानन्दन को विचार आया कि वह स्वामी निखिलानन्द की कुटिया में गया होगा। वह प्रातःकाल यह कह रहा था, 'यदि मेरी युक्ति में दोष है तो स्वामीजी से चलकर सम्मति की जा सकती है। मुझे विश्वास है कि वे मेरी बात को ठीक कहेंगे।'

इस बात के स्मरण आते ही उसने कहा, "वह गंगातट पर गया है।"

"परन्तु अभी तो तीन बजे हैं। वह साढ़े चार बजे आया करता है।"

"आज वह बहुत बेचैन था। पहले भी जब उसकी यह अवस्था होती थी, वह स्वामी जी के पास चला जाया करता था।"

"तो चलो, स्वामी जी से कहकर उसको व्याख्यान देने पर तैयार कर लें।"

दोनों गंगातट की ओर चल पड़े। रघुवीर सत्य ही उधर गया था और करुणानिधि से उसकी कुटिया के बाहर ही भेंट हो गई। करुणानिधि छुपने के लिए नगर की ओर जा रहे थे। वे कुटिया से तीन बजे चलने के लिए तैयार हुए थे। पाँच-चार मिनट उन्हें बाबा जी से छुट्टी लेने में लग गए। उन्होंने स्वामीजी को बताया था कि लड़की के सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिलने के उपरान्त ही वे अपना यहाँ आना लड़के को बताना चाहते हैं। परन्तु जब वह कुटिया से निकल सड़क पर आए तो रघुवीर बाइसिकल पर सवार सामने से आता दिखाई दिया। उपाध्याय की छिपने की योजना रद्द हो गई।

रघुवीर ने इन दिनों एक बाइसिकल ले ली थी और अब वह कुटिया पर बाइसिकल पर सवार हो आया करता था। रघुवीर ने गुरु जी को कुटिया से निकल सड़क की ओर आते हुए दूर से ही देख लिया था। अतः वह विस्मय करता हुआ बाइसिकल भगाकर उनके सामने पहुँच उतर पड़ा और बाइसिकल को स्टैण्ड पर खड़ा कर चरणस्पर्श करने लगा।

करुणानिधि ने लड़के को उठा पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए कहा, "आज जल्दी ही इधर आ गए हो?"

"पढ़ाई तो हो नहीं रही और मैं आज प्रातःकाल से ही मन में भारी बेचैनी अनुभव कर रहा था। एकाएक मन में विचार आया कि स्वामी जी के पास जाकर अपने मन के संशय निवारण करने चाहिए। अतः समय से पहले ही चला आया हूँ। आधा घण्टा-भर शान्ति से बैठकर पूर्ण समस्या समझाना चाहता था।"

"तो फिर आओ, स्वामी जी से बात कर लें।"

"पर आप तो कहीं जा रहे थे?"

"हाँ, मैं तुम दोनों से छिपा हुआ बनारस आया हूँ और छिपकर ही रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता था, परन्तु तुम्हारे मन की बेचैनी ने तो सब भेद ही खोल दिया है।''
दोनों हँसने लगे।

दोनों पुनः कुटिया की ओर चल पड़े थे। रघुवीर पैदल ही था। वह बाइसिकल हाथ से पकड़े हुए पण्डित जी के साथ ही चलते हुए पूछने लगा, ''गुरु जी! हमसे चोरी-चोरी आने की क्या आवश्यकता थी?''

करुणानिधि ने रघुवीर के मुख पर देखा। वह मुस्करा रहा था। उसके मुख पर काली रेखाओं में मूँछें उगती दिखाई दे रही थीं। करुणानिधि ने विचारकर कहा, ''आने का विचार तो दो महीने से कर रहा था। जब तुम दोनों ने होने वाली पत्नियों की अदला-बदली की, तब से ही तुम्हारी माता जी जाकर पूर्ण बात का पता करने को कह रही थीं, परन्तु वहाँ गाँव में एक दुर्घटना हो गई और मैं घर से बाहर निकल नहीं सका।''

''क्या? गुरुजी!''

''यह फिर बताऊँगा। पहले तुम बताओ कि यह कैसे हुआ कि तुम्हारे लिए नियुक्त पत्नी सौमित्र के पीछे चल पड़ी है? मैं इसमें कारण जानने आया हूँ। मुझे इसमें सौमित्र की कुछ दुष्टता प्रतीत हुई है।''

''नहीं, गुरुजी! ऐसी कोई बात नहीं। साथ ही हमसे चोरी-चोरी जाँच करने में कोई कारण नहीं। हम आपसे कभी झूठ नहीं बोलते।''

''परन्तु वह लड़की तुमको मूर्ख बना रही हो सकती है। मैं तो उसके विषय में भी जानने आया हूँ, परन्तु अब तुम सब जान गए हो तो सौमित्र को मत बताना। मैं नहीं चाहता कि वह लड़की को बता दे कि मैं उसके विषय में जाँच करने आया हूँ और वह मुझे भी मूर्ख बना ठग सकती है।''

रघुवीर मुस्कराता हुआ चुप रहा। दोनों स्वामी जी की कुटिया में पहुँचे तो स्वामी जी दोनों को आते देख हँस पड़े। हँसते हुए पूछने लगे, ''करुणानिधि, अब बताओ, क्या करोगे?''

''महाराज, आप अपनी जाँच कराइए। मैं इनके विषय में स्वयं निपट लूँगा।''

''हाँ तो लौट क्यों आए हो?''

''यह आपसे कुछ मन में संशय निवारण करने आया है। मैंने विचार किया है कि मैं भी सुनूँ कि इसके मन में किस प्रकार के संशय उत्पन्न हो रहे हैं?''

''हाँ, रघुवीर क्या बात है?''

''महाराज, आज विश्वविद्यालय में हड़ताल हुए दस दिन हो गए हैं। मैं जानता हूँ कि शरारत लड़कों ने आरम्भ की थी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे?" विस्मय में स्वामी जी ने पूछ लिया, "क्या यह सत्य नहीं कि लड़का पुलिस-वैन के नीचे आया है और पुलिस ने उसको हस्पताल पहुँचाने का यत्न भी नहीं किया?

रघुवीर स्वामीजी के प्रश्न को सुन दो मिनट तक चुपचाप बैठा रहा और फिर कहने लगा, "महाराज, इसमें दो बातें आप मिला रहे हैं। एक है लड़के का पुलिस-वैन के नीचे आ जाना। इसमें लड़का दोषी था। पुलिस की बहुत-सी गाड़ियाँ आ रही थीं और लड़का बिना सूचना दिए फुटपाथ से उतर भागकर सड़क पार करने लगा था। इसमें वैन-चालक ने हॉर्न बजाया अथवा नहीं, लड़के ने गाड़ियों के जाने पर सड़क पार करने के लिए प्रतीक्षा की थी अथवा नहीं? कौन- सी इतनी प्रबल आवश्यकता आ पड़ी थी कि वह भागकर सड़क पार करने लगा था। ये बातें जाँच का विषय हैं। मैं नित्य देखता हूँ कि लड़के बाइसिकल से दिन-दहाड़े टक्कर खा जाते हैं। वे फुटपाथ को छोड़ सड़क के बीचोंबीच चलने में रस लेते हैं।

"महाराज, कौन कितना दोषी है, यह जाँच करने से ही पता चल सकता है।"

"दूसरी बात यह कि पुलिस-वैन वालों ने वैन खड़ी कर लड़के को तुरन्त हस्पताल नहीं पहुँचाया। इसमें भी कुछ कारण हो सकता है। एक बात तो निश्चय थी कि उनके रिहर्सल का समय हो गया था और सबको अपने-अपने स्थान पर उपस्थित होना था। इस कारण भी यह भूल हो गई सम्भव है।

"कुछ भी हो, यह इनना बड़ा अपराध नहीं था कि लड़के कानून हाथ में लेकर सब पुलिस वालों को दण्डित करने लगें। पुलिस वालों को और उस गाड़ी के ऊपर जिसमें वे बैठे थे, पत्थर फेंकने अथवा उसको आग लगाने में कोई कारण नहीं था।

"इस विषय में निःसन्देह छात्र दोषी हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि वे छात्र कौन थे, जो पुलिस की गाड़ी को आग लगाने में सफल हुए थे। उनको आग लगाने का अभ्यास कराया गया है। जिन्होंने अभ्यास कराया है, उनकी आज्ञा से ही वे इस घटना पर बलवा कराने में सफल हो गए।

"अब एक तीसरी बात है। पुलिस वाले पुनः आए और विद्यार्थियों को मारने-पीटने लगे। यह निस्सन्देह केन्द्रीय सरकार के उन अधिकारियों के कहने पर हुआ होगा, जो अगले दिन कन्वोकेशन पर आने वाले थे।

"भला इस कथन में क्या आधार है?"

"यह मुझे किसी ने बताया है कि एक व्यक्ति है, जो दुर्भाग्य से प्रधानमन्त्री बनने की लालसा रखता है और वह बन नहीं सका। वह उस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनारस में था। अपनी निराशा का प्रदर्शन वह पुलिस से मारपीट करवाकर किया करता है।''

स्वामीजी और करुणानिधि मुख देखते रह गए। स्वामी जी ने ही पूछा, 'रघुवीर! यह तो बड़ा गम्भीर आरोप है।''

''स्वामीजी! मैंने किसी का नाम नहीं लिया। इस पर भी कांग्रेस में ऐसे लोग हैं जो जेल में सत्याग्रही कैदियों को नैतिक अपराधियों से पिटवाने में मज़ा लेते हैं।

''कुछ भी हो, पुलिस कांस्टेबलों का इतना साहस नहीं हो सकता कि वे आकर सबके सामने और दिन-दहाड़े चलते-फिरते व्यक्तियों को मारने-पीटने लगें। यह सरकार के उच्च अधिकारियों का ही काम है और इसका इलाज कमीशन नियुक्त करना नहीं, वरंच सरकार को बदलना है।''

''तो यह विद्यार्थियों का आन्दोलन सरकार बदलने में सहायक नहीं होगा क्या?''

''यह तो अराजकता फैलाने में सफल हो रहा है। इससे सरकार नहीं बदलेगी। इससे एक बात होगी कि सरकार बेईमानी पर तुल जाएगी।

''मैं इस विषय में आचार्य जी से वार्तालाप कर चुका हूँ। वह स्थिति के मेरे विश्लेषण से सहमत हैं। मैं समझता हूँ कि किसी जाँच की आवश्यकता नहीं। जाँच भले ही वह केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त अथवा राज्य सरकार द्वारा नियुक्त कमीशन से हो, सदा सरकार की सफाई देगी। अत: जाँच की आवश्यकता नहीं। मैं तो राजनीतिक कार्य और प्रचार की माँग करता हूँ। यह प्रचार राजनीतिक दलों द्वारा हो।''

''परन्तु राजनीति के कारण ही तो विद्यार्थी हड़ताल कर रहे हैं।''

''ऐसे कर्मों से राजनीतिक परिवर्तन अथवा प्रगति नहीं होती। इनसे अराजकता फैलती है।''

स्वामी जी ने मुस्कराकर कहा, ''करुणानिधि, तुमने चेला तो खूब तैयार किया है।

करुणानिधि उत्तर देने ही लगा था कि राधेश्याम और सुमित्रानन्दन वहाँ आ पहुँचे।

राधेश्याम के मुख से निकल गया, ''भगोड़े को पकड़ लिया है।'' परन्तु वह चुप कर गया, जब उसने देखा कि सुमित्रानन्दन रघुवीर के सामने बैठे व्यक्ति के चरणस्पर्श करने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 5 ::

राधेश्याम विस्मय में सुमित्रानन्दन और पण्डित करुणानिधि को देख रहा था। रघुवीर ने उसके विस्मय का कारण जान परिचय करा दिया, ''राधेश्याम जी, बैठिए। यह गुरुजी हैं और सौमित्र के पिताजी हैं।''

राधेश्याम ने भी हाथ जोड़ नमस्कार किया और सामने बैठ गया। बात राधेश्याम ने की। उसने कहा, ''मैं और सुमित्रानन्दन रघुवीर को ढूँढ़ते हुए यहाँ आए हैं। हम विद्यार्थियों की साधारण बैठक बुला रहे हैं उसमें यह निश्चय करने वाले हैं कि कल से पढ़ाई हो अथवा न हो।''

''तो रघुवीर इसमें क्या करेगा?'' स्वामी जी ने पूछ लिया।

''यह प्रस्ताव के पक्ष में व्याख्यान देगा।''

''क्यों रघुवीर, व्याख्यान दोगे?''

''स्वामी जी! इच्छा नहीं हो रही। मैं हड़ताल समाप्त कराना चाहता हूँ, परन्तु इस प्रकार की नीति की बातों को सर्वसाधारण के मत पर छोड़ने का पाप मानता हूँ।''

करुणानिधि रघुवीर की बात सुन फड़क उठा। वह स्वयं भी इस प्रकार के विचार रखता था अत: उसे समझ में आया कि रघुवीर तो बनारस आकर विचारों में और ज्ञान में विकास कर रहा है। इसके विपरीत उसे यह समझ आया था कि सौमित्र पशु ही हो रहा है। वह बुद्धि का प्रयोग करता प्रतीत नहीं हुआ था।

रघुवीर ने सबको चुप और गम्भीर भाव में देख अपनी बात की व्याख्या कर दी। उसने कहा, ''सर्वसाधारण में मोटी-मोटी सिद्धान्तों की बातें ही की जा सकती हैं। नीति की सूक्ष्म बातें दो-चार विद्वान ही मिलकर निश्चय कर सकते हैं।

''यह नीति का प्रश्न है कि हड़ताल से हम अपना हित कर रहे हैं अथवा अहित? हमारा हित इस बात में है कि शीघ्रातिशीघ्र शान्ति स्थापित हो और पढ़ाई आरम्भ हो जाए।

''देश की न्याय-व्यवस्था ठीक करना हमारा काम नहीं। विश्वविद्यालय में किसी की हत्या हो गई है अथवा पुलिस ने किसी पर लाठी चलाई है, इसकी जाँच करना तथा कराना विद्यार्थियों का काम नहीं है। विश्वविद्यालय के अधिकारी इसके लिए यत्न करें। इस पर भी वे पुलिस के कार्य की जाँच नहीं कर सकते। उन्हें सरकार से इसकी जाँच करवानी चाहिए। इस जाँच में उनको देश के राजनीतिक दलों से सहयोग प्राप्त करना चाहिए, परन्तु न तो विद्यार्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इसमें भाग लेना चाहिए और न ही इसके लिए किसी प्रकार का आन्दोलन करना चाहिए।''

अब राधेश्याम ने पूछा, ''विद्यार्थियों की जो शिकायतें हैं, उनका क्या होगा?''

''राधेश्याम जी, क्या आप विद्यार्थियों की समाज में एक पृथक् श्रेणी मानते हैं। मैं श्रेणी उसको मानता हूँ कि जिसके घटक सुगमता से उस श्रेणी से पृथक् न किए जा सकें। इस दृष्टि से विद्यार्थी कोई पृथक् श्रेणी नहीं। ये समाज का एक अति कोमल और उपकारी अंग है। इसके हितों की रक्षा के लिए समाज के अनुभवी घटकों को यत्न करना चाहिए।''

''जब समाज अर्थात् समाज का वह अंग जो इस कार्य के लिए नियुक्त है, विद्यार्थी की रक्षा न करे तो क्या किया जाए?''

''भैया! जब हम बड़े होंगे तो आज की समस्या को स्मरण रखेंगे और फिर इसके लिए यत्न कर लेंगे। इम समय न तो हमारे पास ऐसे कामों के लिए अवकाश है और न ही योग्यता।''

''रघुवीर, तुम्हारी बात कोई मानेगा नहीं।''

''पर मैं किसी को मानने के लिए आग्रह कर रहा हूँ क्या? देखिए, राधेश्यामजी! हमारा यह जीवन इस प्रकार के आन्दोलन चलाने के लिए नहीं है। मैं जानता हूँ कि कौन आपको कह रहे हैं कि विद्यार्थियों का अधिकार है कि अपने हितों की रक्षा करें। वे महामूर्ख हैं यदि इसी प्रकार दुकानदार, क्लर्क, चपरासी, सुपरिण्टेण्डेण्ट और फिर समाज का प्रत्येक वर्ग और घटक अपने-अपने हितों की रक्षा के लिए स्वयमेव आन्दोलन करने लगे तो देश-भर में अव्यवस्था फैल जाएगी।''

''तो तुम क्या करने को कहते हो?''

''विद्यार्थी यूनियन के दो-तीन अधिकारी वाइस चान्सलर तथा प्राध्यापक वर्ग से मिलकर विचार करें कि हड़ताल होनी चाहिए अथवा बन्द करनी चाहिए। जो कुछ निर्णय हो, वह निर्णय सब विद्यार्थियों को सूचित कर देना चाहिए।''

राधेश्याम, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में वहाँ की शाखा का कार्यवाहक था, यही ठीक समझता था। परन्तु वह देख रहा था कि यह बात चलेगी नहीं। अतः उसने कह दिया, ''यूनियन की कार्यकारिणी ने यह निश्चय नहीं किया कि हड़ताल की जाए। किसी प्राध्यापक अथवा उपकुलपति ने नहीं कहा कि हड़ताल करें। तो भला ये कब हड़ताल जारी रखने की बात करेंगे?''

रघुवीर ने कहा, ''और मैं जानता हूँ कि किसने कहा है कि हड़ताल की जाए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसने कहा है ?"

"जिसने पुलिस पर पथराव करने के लिए कहा था और पुलिस-वैन को आग लगाने के लिए कहा था। उसने अपने अपराध को छुपाने और उसके दण्ड से बचने के लिए हड़ताल करवाई है और हड़ताल जारी रखने के लिए कह रहा है।"

"और कौन है यह ?"

"एक शैतान है। वह कुछ मूर्ख और दुष्ट प्रवृत्ति के विद्यार्थियों के मन पर छाया हुआ है। वह सदा इस बात के लिए यत्नशील रहता है कि देश समाज और समाज के प्रत्येक वर्ग में अव्यवस्था व्याप्त रहे।"

"ठीक है, रघुवीर।" राधेश्याम ने कह दिया, "मैं तुम्हारी बात को समझता हूँ, परन्तु उस शैतान ने पूर्ण विद्यार्थी समाज को अपने पीछे लगा लिया है और यदि हम यूनियन के लोग, आर.एस.एस. के लोग अथवा कोई भी जो इस प्रवाह का विरोध करें तो वे इसके साथ ही बह जाएँगे।"

"पर मैं पूछता हूँ कि वे इस प्रवाह में कूदे ही क्यों हैं ? इनको तो आरम्भ में यह चाहिए था कि किनारे पर खड़े होकर प्रवाह में बह रहे विद्यार्थियों को समझाते कि वे पतन की ओर बहते हुए जा रहे हैं। उन्हें किनारे पर खड़े हुओं का हाथ पकड़कर बाहर आ जाना चाहिए।

"मैं समझता हूँ कि आप भी देश के प्राय: सभी राजनीतिक दलों की भाँति, पहले तो मिथ्या दिशा में जा रहे पथभ्रष्टों के साथ सम्मिलित हो जाते हैं, तदुपरान्त प्रवाह में बहते हुए न तो स्वयं बाहर निकल पाते हैं और न ही दूसरे बहते हुओं को बाहर निकाल सकते हैं। तब आप जैसे लोग मध्यम मार्ग की बात करने लगते हैं। यह आप कर नहीं सकते और अन्त में प्रवाह में बहते हुए सागर में जा डूब जाते हैं।"

करुणानिधि रघुवीर की युक्तियाँ सुन बहुत प्रसन्न हो रहा था। उसने अनायास ही वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "रघुवीर ठीक कहता है। भले समझदार विद्वान और किनारे पर खड़े लोगों को प्रवाह में कूदने की आवश्यकता नहीं होती। यह उचित उपाय भी नहीं। उनको तो प्रवाह में बह रहे लोगों को रस्से डालकर बचाने का यत्न करना चाहिए और अधिक से अधिक लोगों को किनारे पर घसीट लाना चाहिए। स्वयं प्रवाह में कूदकर बह रहे लोगों की संख्या बढ़ाने से लाभ के स्थान पर हानि ही होने का भय है।

"मैं आपको समझाता हूँ। गांधीजी के काल में पहले मुसलमानों का भूत खड़ा किया गया और फिर मुसलमान का समर्थन प्राप्त करने के लिए उनकी अराष्ट्रीयता के साथ बह जाना पड़ा था। परिणाम यह हुआ कि प्रवाह प्रबल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबलतर होता गया और अन्त में पाकिस्तान बनाना पड़ा। सन् 1916 में ही हमें शुद्ध राष्ट्रीयता का आश्रय लेना चाहिए था। दूसरों का सहयोग प्राप्त करने के लिए हम स्वयं उनकी अराष्ट्रीयता में सहयोग देने लगे थे।

"यही बात तुम कर रहे प्रतीत होते हो। कुछ अराजकता में रुचि रखने वालों को अराजकता उत्पन्न करने से रोकने के लिए तुम भी उनमें सम्मिलित हो गए और अब तुम उनको मना करने से भी डरते हो कि कहीं तुम्हारे अपने साथी भी तुम्हारे विपरीत न हो जाएँ।"

"बात तो आप ठीक कहते हैं।" राधेश्याम ने निरुत्तर होते हुए कहा, "हमारे साथ यही बात हुई है। जिस समय कुछ लड़कों ने पुलिस-वैन को आग लगाई थी, हम यही समझ रहे थे कि आग लगाने वाले दुष्ट और मूर्ख हैं। तब उनके नेताओं ने विद्यार्थी समाज को यह कह कर भड़काया था कि पुलिस ने एक विद्यार्थी को मार डाला है। जब विद्यार्थी भड़क उठे तो यूनियन के कार्यकर्ता अपनी नेतागीरी के लिए उन भड़के हुओं में सम्मिलित हो गए। बहुत कठिनाई से हमने एक 'एक्शन कमेटी' बनाई है। इस एक्शन-कमेटी में दस सदस्य हैं। उसमें सब विद्यार्थियों की प्रतिनिधि संस्था के पाँच सदस्य हैं और उन दंगा करने वालों के भी पाँच सदस्य हैं। दंगा करने वालों की संख्या पूर्ण विश्वविद्यालय में साठ-सत्तर से अधिक नहीं। हम अनुभव करते हैं कि हम लोग उनमें सम्मिलित हो उनसे पचास प्रतिशत पराजित हो चुके हैं। अब वे हम विद्यार्थियो की एक साधारण सभा कर उनमें भड़काने वाली बातें कर हम पर पूर्ण विजय प्राप्त करना चाहते हैं। हम जानते नहीं कि इस झमेले से कैसे बाहर जाएँ?"

अब स्वामी जी ने अपनी सम्मति दे दी। उन्होंने कहा, "मैं समझता हूँ कि तुमको साधारण सभा में नहीं जाना चाहिए। वहाँ सभा-भवन के बाहर एक विज्ञप्ति लगा देनी चाहिए कि यूनियन की कार्यकारिणी का यह निर्णय है कि कल सब कालेज खुलेंगे और विद्यार्थियों को अपनी-अपनी श्रेणियों में उपस्थित होना चाहिए।"

"परन्तु कार्यकारिणी की बैठक बुलानी सम्भव नहीं।"

"क्यों?"

"समय नहीं।"

"साधारण सभा कितने बजे है?"

"पाँच बजे।"

"और अब क्या समय है?"

"चार बज रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुरन्त जाओ, कार्यकारिणी की बैठक यूनियन के कार्यालय में बुला लो। जितने सदस्य भी उसमें उपस्थित हों, उनको पूर्ण स्थिति से अवगत कर यह निश्चय कर लो कि कल से हड़ताल खुलनी चाहिए। यदि तो मीटिंग के पहले निश्चय हो जाए तो वह निश्चय लिखकर सभा-भवन के बाहर लगवा दो।

"यदि कार्यकारिणी यह निर्णय न करे तो तुम त्याग-पत्र दे दो और यदि कार्यकारिणी मान जाए, परन्तु विद्यार्थी न मानें तो कल हड़ताल खुलवाने का यत्न करो। स्मरण रखो कि विद्यार्थियों को एक स्थान पर इकट्ठे होकर मनोद्गार प्रकट करने का अवसर नहीं मिलना चाहिए।

"शेष जब तुम लोग कल आओगे तो पूर्ण स्थिति पर विचार कर लिया जाएगा। जो भूल तुमने पहले की है, उसकी प्रतिक्रिया यह भी हो सकती है कि यूनियन तुम्हारे हाथ से निकल जाए, परन्तु मैं समझता हूँ कि इसके निकल जाने से तुम विद्यार्थियों का सन्मार्ग दिखाने का पुण्य-लाभ होगा।"

राधेश्याम, सुमित्रानन्दन और रघुवीर वहाँ से चलें गए। उनके जाने से पूर्व करुणानिधि ने कह दिया, "सौमित्र, रात का भोजन मेरे साथ करना। मैं तुम्हारी और रघुवीर की प्रतीक्षा विश्वविद्यालय के द्वार पर ठीक आठ बजे करूँगा।"

जल्दी-जल्दी में यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई। इसमें पन्द्रह सदस्यों में केवल दस ही एकत्रित हो सके। तीन तो नगर में रहते थे। वे मिल नहीं सके। दो थे यदुनाथ और ब्रजकिशोर। ये नहीं आए।

दस सदस्यों के सामने जब पूर्ण स्थिति का वर्णन किया गया तो सब सहमत हो गए, परन्तु वे कहने लगे कि विरोधी पक्ष वाले कार्यकारिणी की बैठक को अनियमित घोषित कर देंगे। कारण यह कि इसकी सूचना सबको मिल नहीं सकी।

रघुवीर ने इस समस्या का सुझाव दे दिया। उसने कहा, "यह निश्चय कार्यकारिणी का नहीं है। यह निश्चय और विज्ञप्ति मन्त्री की ओर से होगी परन्तु हम दस लोग ईमानदारी से सेक्रेटरी का समर्थन करेंगे तब कोई भी इस पर आपत्ति नहीं कर सकेगा।"

परिणाम यह हुआ कि जब एक्शन समिति की ओर से बुलाई गई विद्यार्थियों की साधारण सभा के लिए विद्यार्थी एकत्रित हो रहे थे तो यूनियन के मन्त्री सुमित्रानन्दन की ओर से उसके हाथ से लिखी एक विज्ञप्ति सभा स्थल के बाहर चिपका दी गई। विज्ञप्ति में यह लिखा गया।

"मैं विद्यार्थी यूनियन के सदस्यों के मत को जानकर यह घोषित करता हूँ कि हमारा हड़ताल करने का प्रयोजन सिद्ध हो गया है। हम यह प्रकट करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते थे कि विद्यार्थी पुलिस कार्यवाही की घोर निन्दा करते हैं। इस बात को प्रकट करने के लिए विद्यार्थियों ने पिछले दस दिन तक पूर्ण हड़ताल रखी है।

"हम यह भी प्रकट करना चाहते हैं कि हम उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त एक व्यक्ति-कमीशन पसन्द नहीं करते। इस बात के प्रकट करने के उपरान्त अब हड़ताल जारी रखने का कोई प्रयोजन नहीं रहा।

"अत: यूनियन यह चाहती है कि सब विद्यार्थी कल से अपनी-अपनी श्रेणियों में उपस्थित हो जाए।"

इस विज्ञप्ति के लग जाने के उपरान्त यदुनाथ इत्यादि भौचक्के रह गए। ब्रजकिशोर इस विज्ञप्ति को उखाड़-फाड़ देना चाहता था, परन्तु रामविलास पाठक वहीं खड़ा था। उसने यदुनाथ का हाथ पकड़ लिया।

"क्यों?" यदुनाथ ने पूछा।

"यह तो मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम इसे फाड़ने किसलिए आए हो?"

"यह मन्त्री का अनधिकारपूर्ण कार्य है।"

"यह तुम अकेले कैसे कह सकते हो। कल कार्यकारिणी की बैठक बुलाएँगे और उसमें उससे पूछा जा सकता है कि इसमें क्या कारण है?"

"मैं इसे फाड़ डालना चाहता हूँ।"

"मैं इसे फाड़ने नहीं दूँगा।"

यदुनाथ का विचार था कि पाठक का विरोध करने सब झपट पड़ेंगे, परन्तु विद्यार्थियों का मन हड़ताल बन्द करने पर तैयार हो रहा था। वे किसी का नेतृत्व चाहते थे।

इस समय किसी ने सभामंच पर जा यह घोषणा कर दी कि यूनियन का मन्त्री यह कहता है कि कल से हड़ताल समाप्त कर दी जाए।

इस पर दूसरे पक्ष के लोग उठकर यह घोषणा करने लगे कि यह अनियमित है। यह विज्ञप्ति एक्शन कमेटी की ओर से होनी चाहिए।

राधेश्याम ने उठकर उपस्थित गणों को सम्बोधन कर कह दिया, "यह विज्ञप्ति एक्शन-कमेटी की ओर से नहीं है। एक्शन-कमेटी यूनियन ने निर्माण की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि मन्त्री ने एक्शन-कमेटी को स्थगित कर दिया है और अब एक्शन के लिए कोई अवसर नहीं रहा। अत: इस कमेटी के ऊपर यूनियन की कार्यकारिणी के प्रतिनिधि के नाते मन्त्री ने कहा है कि कल से हड़ताल स्थगित की जाए।"

जो विद्यार्थी बेकार घूमने से ऊब चुके थे, उठ-उठकर सभा से जाने लगे। इस समय ब्रजकिशोर ने धुआँधार व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "यूनियन के मन्त्री ने विद्यार्थियों से गद्दारी की है। उनसे पूछे बिना हड़ताल बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दी है।'' उसने नारे लगाने आरम्भ कर दिए, ''मन्त्री मुर्दाबाद! मन्त्री मुर्दाबाद!!''

इस पर पाठक उठकर कुछ कहने लगा, ''परन्तु ब्रजकिशोर ने पाठक को धक्का देकर मंच से नीचे फेंकने का यत्न किया। पाठक और उसके सहायकों ने ब्रजकिशोर को पकड़कर मंच पर बैठा दिया। वह बैठा-बैठा भी नारे लगाता रहा, ''यूनियन मुर्दाबाद! मन्त्री मुर्दाबाद!! ''उपस्थित विद्यार्थीगण में से बहुत थे, जो नारों का समर्थन करते रहे। पाठक खड़ा हाथ कर संकेत से विद्यार्थियों को चुप कराने का यत्न करता रहा।

उपस्थित विद्यार्थियों में से जो पढ़ाई आरम्भ करने के लिए कोई बहाना तथा आश्रय चाहते थे, उठ-उठकर सभा से जाते रहे और उपस्थिति कम होती गई। पाँच.छः मिनट तक नारे लगाते-लगाते जब विद्यार्थी थक गए तो पाठक, जो खड़ा लोगों को चुप कराने का प्रयत्न कर रहा था, कहने लगा, ''एक्शन-कमेटी भंग कर दी गई है। मन्त्री ने यह घोषणा की है कि अब विद्यार्थियों को पढ़ाई आरम्भ कर देनी चाहिए।''

''इसका अभिप्राय यह है कि यूनियन कल से आपको ऐसा करने की सम्मति देती है। इसे मानना न मानना आपका काम है। यूनियन आदेश नहीं देती। वह आदेश दे सकती भी नहीं। जो लोग यूनियन की सम्मति के बिना भी हड़ताल जारी रखना चाहते हैं, वे यहाँ बैठे रहें और अपनी नई एक्शन-कमेटी का निर्वाचन कर लें।''

''पर मन्त्री ने ऐसा क्यों किया?'' एक ने ऊँची आवाज़ में पूछ लिया।

पाठक ने कहा, ''यह हम कल कार्यकारिणी में उससे पूछेंगे और विचार करेंगे। इस पर भी जो विद्यार्थी हड़ताल जारी रखना चाहते हैं, वे यहाँ बैठे रहें और अपनी एक्शन-कमेटी बना लें।''

एक ने आवाज़ लगा दी, ''आप क्या चाहते हैं?''

''मैं मन्त्री के कथन को उचित मानता हूँ।''

''आप हड़ताल जारी रखना चाहते हैं अथवा नहीं?''

''नहीं। मैं समझता हूँ कि हड़ताल का प्रयोजन सिद्ध हो चुका है।''

इस पर सभा से विद्यार्थी उठ-उठकर जाने लगे। अब पुनः ब्रजकिशोर उठा और यूनियन को गालियाँ निकालने लगा। उसका कहना था, ''हमें खेद है कि यूनियन गीदड़ों के हाथ में चली गई है और इसमें विश्वविद्यालय अधिकारियों के चमचे ही रह गए हैं। ये विद्यार्थी आन्दोलन चलाने के अयोग्य बिना रीढ़ की हड्डी के कीड़े-मकोड़े रह गए हैं।

''हमें इनके मुकाबले में एक अन्य यूनियन बनानी पड़ेगी। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात मनवाए बिना हम श्रेणियों में जाएँगे तो हमारे लिए लज्जायुक्त बात होगी।''

इस पर भी विद्यार्थी उठ-उठकर जा रहे थे। एकाएक रामविलास पाठक, राधेश्याम और उनके अन्य साथी भी उठे और मंच से उठ बाहर निकल गए। इस समय एक मिस्टर मण्डल उठे और कहने लगे, ''हम महात्मा गांधी के चेलों में नहीं हैं। हमने अहिंसा का व्रत नहीं लिया हुआ। हम सिंह हैं और हम अपने गुणों से इन भेड़ों को हाँककर ले जाएँगे....।''

इस समय दो सहस्त्र विद्यार्थियों में से जो पहले एकत्रित हुए थे अब चार-पाँच सौ से अधिक नहीं रहे थे।

इसपर ब्रजकिशोर ने घोषणा कर दी, हड़ताल नहीं खुलेगी और कल मध्याह्न एक बजे विद्यार्थियों की साधारण बैठक पुनः इसी स्थान पर होगी।''

:: 6 ::

सुमित्रानन्दन और रघुवीर रात ठीक आठ बजे, विश्वविद्यालय के द्वार पर जा पहुँचे। द्वार पर उपाध्याय, राधा और यदुनाथ खड़े थे। सुमित्रानन्दन इस बात की आशा नहीं करता था। रघुवीर को भी विस्मय हुआ कि यदुनाथ और राधा वहाँ कैसे आ गए हैं?

करुणानिधि भी मुस्करा रहा था। उसने सुमित्रानन्दन से पूछ लिया, ''सौमित्र, इनको पहचानते हो।''

''जी, यह मिर्ज़ापुर के एडवोकेट बाबू बिहारीसिंह की सुपुत्री हैं।''

''और वह मेरे परम मित्र हैं। इस कारण यह मेरी लड़की समान है। यदुनाथसिंह भी लड़का प्रतीत होता है। इस कारण इनको भी मैंने खाने पर आमन्त्रित कर लिया है।''

इसमें उत्तर देने के लिए कुछ नहीं था। अतः रघुवीर ने पूछ लिया, ''गुरुजी भोजन कहाँ होगा?''

''जहाँ तुम खिलाओगे।''

''इनकी माताजी ने तो मिनर्वा होटल में खाना खिलाया था।''

''वह कहाँ है?''

यहाँ से कुछ अन्तर पर है। हम चाहें तो रिक्शों में चल सकते हैं।''

''यह ठीक है।'' अतः तीन रिक्शा की गईं और ये पाँचों व्यक्ति रिक्शा में बैठ चल पड़े। रघुवीर अकेला था। करुणानिधि सुमित्रानन्दन के पास बैठा था। उसने राधा की वहाँ उपस्थिति का रहस्य बता दिया। उसने कहा, ''स्वामी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पास महिला छात्रावास की वार्डन का भाई आ गया था। उन्होंने उससे कहा तो वह 'वार्डन' को बुला लाया। मैंने उससे अपना प्रश्न किया तो वह राधा की प्रशंसा करने लगी। उसके रहन-सहन तथा पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति की प्रशंसा सुनी तो मैंने वार्डन को कह दिया, 'मैं लड़की से मिलना चाहता हूँ।' वार्डन का कहना था कि राधा का एक भाई यहाँ पढ़ता है। यदि वह चाहे तो उसके साथ राधा आ सकती है।

''मैंने कहा कि उसको सूचना भेज बुला दिया जाए। उस समय अभी पाँच बजे थे। इस कारण वार्डन यदुनाथ को सूचना भेजने को कह चली गई।

''परिणामस्वरूप यदुनाथ और राधा सात बजे स्वामी जी की कुटिया में आ गए। एक घण्टा-भर मेरी इन दोनों से बातचीत हुई है। लड़की का कहना है कि तुम्हारे साथ विवाह के लिए उसके माता-पिता नहीं माने और उसने उनको यह 'अंतिमेत्थम्' दे रखा है कि यदि वह विवाह करेगी तो तुमसे ही करेगी।

''मैंने उससे पूछा, 'सुमित्रानन्दन क्या कहता है?'

''उसने बताया है कि वह तो एक ही बात कहता है कि इस विषय में वह अपनी माताजी की स्वीकृति के बिना किसी प्रकार का वचन नहीं दे सकता। राधा ने यह भी कहा कि मैंने उनसे आग्रह किया था कि वह अपनी माता जी को लिखें और यदि माता जी चाहें तो मैं आगामी ग्रीष्म ऋतु के अवकाश के दिनों में हथियापुर चल माता जी के पास कुछ दिन रहकर उन्हें विश्वास दिला सकती हूँ कि मैं उनकी सेवा भलीभाँति कर सकूँगी।

''मैंने राधा से कह दिया है कि उसकी सुमित्रानन्दन से भेंट के पूर्व ही सुमित्रानन्दन की माता सुमित्रा से विवाह के लिए किसी लड़की की माता से वचनबद्ध हो चुकी हैं। ऐसी स्थिति में उनके सामने एक बहुत ही विकट समस्या उपस्थित हो गई प्रतीत होती है और वे अभी तक निर्णय नहीं कर सकीं कि सुमित्रानन्दन के पत्र का क्या उत्तर दें? किसी प्रकार का भी उत्तर देने से पूर्व उन्होंने मुझे भेजा है कि मैं तुमको देखूँ, समझूँ और फिर तुमको वस्तुस्थिति से अवगत कर दूँ।

''ऐसी स्थिति में यदि उसने अपना वचन भंग करना न चाहा तो तुम क्या करोगी?'' मेरा अगला प्रश्न था।

''इस पर यह लड़की मेरा मुख देखती रह गई। उसकी आँखें तरल हो गईं और बहुत देर तक चुप रहकर बोली, 'मैं भला कैसे कह सकती हूँ कि वह अपना वचन भंग करें? परन्तु संसार में मूल सत्य तो एक है—वह है परमात्मा। जिस बात में उनको परमात्मा की प्रसन्नता प्रतीत हो, वह करें। शेष रही मेरी बात। वह मैं समय आने पर विचार कर लूँगी। जब आपके सुपुत्र माता जी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर मुझे बताएँगे, तब मैं उनसे ही अपने मन की बात विचार कर बता सकूँगी।'

"सौमित्र! इस प्रकार मैंने तुम्हारी माता जी की मन:स्थिति का भास उसे कराया है। मैं उसके वार्त्तालाप से सर्वथा सन्तुष्ट हूँ। इसपर भी मैं दुर्गा को वरीयता देता हूँ। कारण यह कि मुझे राधा के भाई के हाव-भाव ठीक प्रतीत नहीं हो रहे, परन्तु गाँव में एक अकथनीय घटना हो गई है, जिससे गाँव में हमारे परिवार की स्थिति में कुछ अन्तर आ गया प्रतीत होता है।"

"क्या हुआ है, पिता जी?"

"तुम्हारी बहिन से किसी ने बलात्कार किया है और यह बात गाँवभर में विख्यात हो गई है। गाँव के अल्पशिक्षित लोग इससे हमारे परिवार में किसी प्रकार की हीनता आ गई समझने लगे हैं।

"इसका प्रभाव तुम्हारे दुर्गा के साथ विवाह पर भी पड़ सकता है। इस पर भी तुम्हारी माता का यह संकल्प है कि बात हमारी ओर से नहीं टूटेगी।

"अत: मैं न तो राधा को स्पष्ट बात बता सका हूँ और न ही तुम्हें किसी प्रकारकी अन्तिम सम्मति दे सकता हूँ।"

इस समय वे होटल पर जा पहुँचे। खाना खाते हुए विवाह के विषय में किसी प्रकार की बात नहीं हुई। वहाँ उस दिन की सभा के भंग होने की चर्चा चल पड़ी। बात यदुनाथसिंह ने ही की। रघुवीर को सम्बोधन कर पूछ लिया, "रघुवीर, तुम सभा में नहीं आए?"

"मैं इस प्रकार की नीति के प्रश्न सार्वजनिक सभाओं में विचारार्थ रखना पसन्द नहीं करता।"

"क्या दोष है इसमें?"

"बात यह है कि विचार करने के लिए सार्वजनिक सभास्थल नहीं होता। यहाँ कभी विचारयुक्त निर्णय नहीं हो सकता। सार्वजनिक सभास्थल विचारित नीति की घोषणा और प्रचार के लिए होते हैं।"

"तो विचार करने का कौन-सा स्थान है?"

"देखो भाई यदुनाथ, किसी व्यवहार के विषय में निर्णय करने के लिए दो बातें करनी होती हैं। एक है सिद्धान्त का ज्ञान और दूसरी बात है सिद्धान्तों का समर्थन करने वाली नीति। नीति सिद्धान्तों की विरोधी नहीं होनी चाहिए।

"सिद्धान्त तो सृष्टि के आदि से अटल चले आ रहे हैं। उनके विषय में विचार करने की आवश्यकता नहीं। हाँ, समझने की आवश्यकता रहती है। यह समझना भी गुरु-चरणों में बैठकर हो सकता है। इसके लिए सार्वजनिक सभा उचित स्थल नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूसरी बात है नीति की। यह समय-समय पर विचार की जा सकती है, परन्तु विचार करने का स्थान सभाएँ नहीं होतीं। यह तो विद्वान् अधिकारी ही कर सकते हैं।"

"और सार्वजनिक सभाओं का क्या प्रयोग है?" यदुनाथसिंह का प्रश्न था।

रघुवीर को उत्तर देने में देर नहीं लगी। उसने तुरन्त कह दिया, "सार्वजनिक सभाएँ विद्वानों से विचारित बात का प्रचार करने और विस्तार करने के लिए होती हैं।"

"तो क्या सर्वसाधारण को अधिकार नहीं कि वे अपना भला-बुरा विचार कर सकें?"

"व्यक्तिगत बातों में व्यक्ति स्वतन्त्र है, परन्तु समष्टिगत बातों में विद्वानों का मत जो व्यापक दृष्टि रखते हैं, माना जाना चाहिए। विद्वान् वे होते हैं, जो अपनी विचारित बात सर्वसाधारण को समझा सकें।"

"अभिप्राय यह कि तुम भी प्रजातन्त्र के विपरीत हो?"

"नहीं, मैं प्रजातन्त्र के विपरीत नहीं, परन्तु मैं प्रजातन्त्र का अर्थ उस तन्त्र को समझता हूँ जिससे लोक-कल्याण हो। लोगों का कल्याण, लोगों द्वारा कल्याण नहीं।"

"लोगों द्वारा कल्याण क्यों नहीं?"

"कोई अपना कल्याण स्वयं नहीं कर सकता। सबका कल्याण करने वाला परमात्मा है अथवा परमात्मा की विभूति से युक्त विद्वान् हैं।"

"कौन विद्वान् हैं?" यदुनाथ समझ रहा था कि सैद्धान्तिक दृष्टि से रघुवीर कम्युनिस्ट ही है।

"देखो यदुनाथ, मेरे गुरु जी यह बैठे हैं। ये ही तुमको विद्वान् की परिभाषा समझा सकेंगे। मैं यदि विद्वानों के लक्षण करने लगूँगा तो छोटा मुख और बड़ी बात हो जाएगी।"

यदुनाथ हँस पड़ा और कहने लगा, 'रघुवीर, तुम आज निरुत्तर हो गए हो। बहुत डींग हाँका करते थे अपनी बुद्धि के विकास की। अब तुम समझ गए हो कि तुम किसी गोरखधन्धे में फँस गए हो।"

"नहीं, यह बात नहीं। मैं विद्वान् के लक्षण तो जानता हूँ, परन्तु एक विद्वान् के सम्मुख विद्वान् के लक्षण एक बालक के मुख से शोभा नहीं देते। यदि गुरु जी यहाँ न होते तो मैं तुम्हें समझाने का यत्न करता, परन्तु यह इनका ही क्षेत्र है और यहाँ इनको ही पदार्पण करना चाहिए।"

"बहुत चतुर हो रघुवीर! खैर, तुम्हारी इच्छा है। यह पण्डित जी से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछूँगा। वे ही बताएँ कि विद्वान् किसको कहते हैं? आज तो विद्वान् की परिभाषा यह है कि जिसे अधिकांश लोग विद्वान् समझें।''

करुणानिधि रघुवीर के बात करने के ढंग पर प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने बात को समझ कह दिया, ''नहीं यदुनाथ! संसार में अधिक संख्या में लोग तो हीनबुद्धि होते हैं। बुद्धि का विकास और प्रकाश एक घोर तपस्या का कार्य है।

''पहले बुद्धि का विकास एक विशेष प्रकार के प्रयास द्वारा करना पड़ता है। वह सब नहीं कर सकते। इस प्रयास को योगाभ्यास कहते हैं। तदनन्तर विकसित बुद्धि के परिणामों का प्रकाश भी एक कठिन प्रक्रिया है। इसको सीखना एक कठोर तपस्या का काम है।

''यह काम सब लोग नहीं कर सकते। अच्छा, यह बताओ कि विश्वविद्यालय में सब हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण विद्यार्थी क्यों नहीं प्रवेश पा सकते?''

''यह इसलिए कि सबके लिए अभी स्थानों का प्रबन्ध नहीं हो सका। जब हो जाएगा तो फिर सबके लिए प्रवेश खुल जाएगा।''

''उनके लिए भी जो अनुत्तीर्ण होंगे और जो स्कूलों में पढ़ हायर सेकेण्डरी तक पहुँचे भी नहीं?''

इसपर सब हँसने लगे। करुणानिधि ने अपना कहना जारी रखा। उसने कहा, ''यदि तुम्हारी युक्ति मान लें कि विश्वविद्यालयों में प्रवेश पर प्रतिबन्ध इस कारण है कि सबके लिए स्थान नहीं तो फिर परीक्षाओं की आवश्यकता नहीं रहेगी।''

''सब बालक-बालिकाएँ जो किसी दो पैर पर चलने वाली स्त्री के पेट से उत्पन्न हो गए, वे प्रारम्भिक स्कूल, वहाँ से हाई स्कूल और फिर कालेज में आगे-आगे कक्षा में चलते जाने चाहिएँ। कारण यह कि पढ़ने में बाधा केवल स्थान की है और वह स्थान वर्तमान युग की समाजवादी सरकार निर्माण कर रही है। व्यय का प्रश्न भी नहीं रहेगा। कारण यह कि सब किसी का पेट भरना सरकार का कर्तव्य हो गया है।

''परन्तु यह बात स्वयंसिद्ध है कि यदुनाथ जी की बात ठीक नहीं। विश्वविद्यालयों में भरती की सीमा स्थान नहीं, वरन् प्रवेश पाने वालों की योग्यता है जो विद्यालयों की परीक्षा द्वारा उत्तीर्ण और अनुतीर्ण होने पर घोषित होती है।

''अर्थात् प्रत्येक विद्यार्थी में कुछ है जो सबमें एक समान नहीं और साथ ही उसका समान विकास नहीं हो सकता।

''जिनमें विकास हो जाता है, वे विद्वान् कहलाते हैं। इसके साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वत्ता का एक छोटा-सा अंग यह भी है कि विद्वान् व्यक्ति अपनी विद्वत्ता के प्रकट करने का ढंग भी जाने। तब ही विद्वान् का परिचय हो सकता हे। विद्यार्थी को अपना पढ़ा-लिखा परीक्षा में प्रकट करने का ढंग भी आना चाहिए।''

''तो आपका अभिप्राय यह है कि विश्वविद्यालयों में पढ़े विद्वान् होते हैं?''

''वर्तमान विश्वविद्यालयों में विद्वत्ता के उस छोटे-से अंग के निर्माण का यत्न किया जा रहा है जो विकास के उपरान्त आवश्यक है। बुद्धि का विकास तो योगाभ्यास से प्राप्त होता है। वह कालेजों में नहीं सिखाया जाता। यहाँ केवल जो कुछ भी और जैसी भी बुद्धि है, उसके प्रकाश करने का ढंग बताया जाता है।

''यह भी सब नहीं सीख पाते। जो सीख जाते हैं, वे विद्वान् माने जाते हैं, परन्तु वे पूर्ण विद्वान् नहीं हो सकते। विद्वत्ता का प्रथम अत्यावश्यक अंग बुद्धि का विकास यहाँ बहुत कम सीमा तक होता है। हाँ, यहाँ एक बात अन्य सम्पन्न हो रही है। बहुत-से बुद्धिविहीनों द्वारा संचित ज्ञान-अज्ञान भी विद्यार्थी के मस्तिष्क में ठूँसा जा रहा है।

''पढ़ने के लिए अनेकानेक पुस्तकों की रचना का यही अर्थ है। देखो मैं बताता हूँ। ज्ञान का स्रोत हम वेद मानते हैं, परन्तु वर्तमान युग के नास्तिक वेद को परमात्मा का ज्ञान नहीं मानते। वे तो परमात्मा को भी नहीं मानते। अत: ज्ञान की दूसरी परिभाषा है, जो युक्ति से सिद्ध हो सके। परन्तु युक्ति बुद्धि का विषय है। इस कारण बुद्धि के विकास का प्रबन्ध होना चाहिए। अर्थात् विद्वान् बनने के लिए धारणा, ध्यान और समाधि के प्रारम्भिक कर्म सीख लेने चाहिए।

''ज्ञान, बुद्धि का विकास और ज्ञान को प्रकाश करने की योग्यता—ये हैं विद्वान् के लक्षण। एक बात निश्चित है कि ऐसे व्यक्ति अंगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं और इनसे विचारित बात सर्वसाधारण के सम्मुख रखनी चाहिए। यह नहीं कि सर्वसाधारण द्वारा कही बात विद्वानों को माननी चाहिए।

''आजकल का प्रजातन्त्र यही है कि सर्वसाधारण का आदेश विद्वानों को मानने की योजना बने।''

''इसे जनता मानेगी नहीं और जनता एक महान् शक्ति है। इसका विरोध कुछ विद्वान् नहीं कर सकते।'' यदुनाथ का कहना था।

''मैं ऐसा नहीं मानता। यह सदा का नियम है कि वास्तविक विद्वान् जनता पर राज्य करते हैं। हुआ यह है कि वर्तमान शिक्षा में वक्ता बनने का ढंग सिखाया जाता है। यह विद्वत्ता का एक लघु अंग है। इसके मुख्य अंग ज्ञान और बुद्धि के विकास की बात तो होती नहीं। परिणाम यह हो रहा है कि नेता तो बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए अपनी वक्तव्य-शक्ति से, परन्तु नेता जी का ज्ञान शून्य के समान होता है और उनका अल्पज्ञान तथा अविकसित बुद्धि सब घोटाला कर रही है।

"जिस दिन वास्तविक ज्ञान के स्वामी और प्रखर बुद्धि रखने वाले इस देश में उत्पन्न हो गए, उस दिन वर्तमान प्रजातन्त्र अस्वीकार हो जाएगा।"

"कम्युनिस्ट भी तो यही कह रहे हैं?"

"क्या कह रहे हैं?" उपाध्याय ने पूछ लिया।

"यही कि कुछ बुद्धिमान पूर्ण देश पर राज्य करें।"

उपाध्याय ने मुस्कराते हुए पूछा, "बुद्धिमान का राज्य युक्ति और प्रमाण से स्थापित होता है अथवा तोप, बन्दूक और तलवार से?"

"तोप, बन्दूक और तलवार भी तो विद्वान् के हाथ में ही आते हैं।"

"अर्थात् हलाकू खां, तैमूर, नादिरशाह, हिटलर और मुसोलिनी—ये सब विद्वान् थे? क्योंकि सैनिक शक्तिमान् ही विद्वान् मानने चाहिए।"

"तो ये नहीं थे क्या?"

"जो परिणाम उन्होंने उत्पन्न किए, वे तो उनकी बुद्धिमत्ता तथा विद्वत्ता का प्रमाण नहीं कहे जा सकते।"

:: 7 ::

भोजन समाप्त हो गया था। यदुनाथसिंह ने अपनी बहन के विषय में बात को उपस्थित करते हुए पूछ लिया, "तो आप राधा को और उसके प्रयास को आशीर्वाद देते हैं?"

"आशीर्वाद तो होगा ही। बिहारीसिंह जी की लड़की मुझे अपनी लड़की ही समझ आई है। लड़की के रूप में तो उसके लिए शुभ कामना करता ही हूँ। जहाँ तक विवाह का सम्बन्ध है, यह सुमित्रानन्दन के विचार करने की बात है। जैसा यह कहेगा, वैसा ही होगा।"

साढ़े नौ बज रहे थे। अत: रिक्शा पर सवार हो यदुनाथसिंह राधा को लेकर चल दिया। पीछे रघुवीर और सुमित्रानन्दन पैदल ही विश्वविद्यालय की ओर चल पड़े। करुणानिधि विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के बाहर से ही स्वामी निखिलानन्द की कुटिया की ओर चल पड़े थे।

कमरे में पहुँच रघुवीर ने पूछ लिया, "सुमित्रानन्दन, क्या समझे हो?"

"किस विषय में पूछ रहे हैं?"

"राधा से विवाह के विषय में।"

"मैं समझ रहा हूँ कि मेरी माता जी राधा से मेरे विवाह की स्वीकृति दे देंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो तुम्हारा विवाह मुझसे पहले हो जाना चाहिए।"

"इसमें क्या युक्ति है ?"

"तुम मुझसे एक वर्ष बड़े हो, राधा विन्ध्यवासिनी से पाँच वर्ष बड़ी है।

"यह कोई कारण नहीं कि विवाह भी पाँच वर्ष पहले हो। विवाह की तिथि के निश्चय होने में हमारी पढ़ाई का हाथ अन्य सब बातों से अधिक है।"

वे वस्त्र बदल सोने की तैयारी कर रहे थे कि छात्रावास का वार्डन आया और इनसे कहने लगा, "वाइस चान्सलर साहब का सन्देश आया है कि कल सुमित्रानन्दन प्रातः सात बजे से पूर्व उनसे मिल ले।"

"क्या बात है सर ?" सुमित्रानन्दन ने पूछ लिया।

"चपरासी आया था और मौखिक ही यह सन्देश दे गया है। इससे मैं तुम्हारे बुलाए जाने का कारण नहीं बता सकता। हाँ, इतना कह सकता हूँ कि कोई गम्भीर बात होती तो लिखित आज्ञा होती। मैं समझता हूँ कि वह आज विद्यार्थी यूनियन के व्यवहार के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहते होंगे।"

इस पर भी यह सन्देश चिन्ता का विषय बना रहा। रात बहुत देर तक दोनों मित्र इस अप्रत्याशित बुलावे पर विचार-विनिमय करते रहे और कल्पना के घोड़े दौड़ाते रहे।

प्रातः दोनों मित्र स्नानादि से अवकाश पा सीधे कोचीन हाउस, जहाँ उपकुलपति रहते थे, जा पहुँचे। तदुपरान्त दोनों पण्डित जी से मिलने जाने का विचार रखते थे। रघुवीर बाहर बैठ गया। सुमित्रानन्दन ने अपने आने की सूचना भेज दी और बुलाए जाने पर भीतर चला गया।

आधे घण्टे के लगभग वह भीतर रहा। जब बाहर आया तो रघुवीर प्रश्न-भरी दृष्टि से उसका मुख देखने लगा। सुमित्रानन्दन के कहा, 'चलो।"

इसका अर्थ यह था कि सुमित्रानन्दन उस स्थान पर बात करना नहीं चाहता था। अतः वहाँ से वे सीधा गंगातट की ओर चल पड़े।

मार्ग में चलते हुए सुमित्रानन्दन ने कहा, "उपकुलपति ने मुझसे पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त किया है जिसमें मैंने हड़ताल वापस बुलाई है। मुझे ऐसा समझ आया है कि विश्वविद्यालय में हड़ताल खुल जाने से वे प्रसन्न नहीं हैं।"

"कैसे कहते हो यह ?"

"उनके बार-बार प्रश्न पूछने से मुझे यही समझ आया है। वहाँ डाक्टर इन्द्रजीत भी बैठे थे। वे स्वयं कुछ नहीं बोले, परन्तु मुझे सन्देह है कि उन्होंने उपकुलपति के व्यवहार को दिशा दी है।"

"तो किसी प्रकार का आदेश लेकर आए हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''न तो उन्होंने आदेश दिया है और न ही मैंने किसी प्रकार की बात स्वीकार की है। मैंने उन्हें यह कहा है कि मैंने बहुसंख्यक सदस्यों से सम्मति लेकर ही यूनियन के मन्त्री के नाते विज्ञप्ति प्रकाशित की थी।

''उपकुलपति जी का कहना था कि हड़ताल बन्द करने से पूर्व यूनियन के इन्चार्ज प्राध्यापक से सम्मति तो करनी चाहिए थी।

'' 'हम' मेरा कहना था, विश्वविद्यालय में सिद्धान्तात्मक पथ-प्रदर्शन एवं संरक्षण प्राध्यापक का प्राप्त करते हैं, परन्तु कार्य के काल, स्थान और ढंग के विषय में हम निर्णय करने में स्वतन्त्र हैं। उसमें विद्यार्थी अपना हित विचारकर कार्य करते हैं।'

''सिद्धान्त क्या है?'' उनका प्रश्न था।

''सिद्धान्त है कि हमें अपना समय ज्ञान-वृद्धि और विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने में लगाना है। वर्तमान निश्चय इस सिद्धान्त के विपरीत नहीं। इस कारण पूछने की आवश्यकता नहीं समझी गई।'

''नीति के विषय में मैंने बताया था कि सिद्धान्त का उन्मूलन करने वाली नीति कुनीति होती है। उनके पूछने पर कि फिर हड़ताल क्यों कराई थी, मैंने कहा, हड़ताल आरम्भ करने पर न तो यूनियन की कार्यकारिणी की ओर से और न ही मन्त्री ने अपने अधिकार से हड़ताल करने के लिए कहा था। विद्यार्थियों ने स्वतः बिना किसी से पूछे हड़ताल कर ली। जब एक्शन-कमेटी बनी तो उसमें बहुसंख्यक सदस्य यूनियन के थे। अतः यूनियन का नियन्त्रण स्वतः आन्दोलन पर हो गया था। जब बहुसंख्यक यूनियन के सदस्यों ने यह इच्छा व्यक्त की तो मैंने कल वाली विज्ञप्ति विख्यात कर दी। मैं समझता हूँ कि संवैधानिक रूप से मैंने कुछ भी खराबी नहीं की।''

''उपकुलपति महोदय ने पूछा, 'एक व्यक्ति-कमीशन जो उत्तर प्रदेश सरकार ने नियुक्त किया है, उस विषय में यूनियन का क्या मत है?'

''उस विषय में आज कार्यकारिणी की बैठक में विचार करेंगे।'

''उन्होंने मेरी सम्मति पूछी तो मैंने कह दिया, 'मन्त्री बिना सदस्यों से सम्मति किए बता नहीं सकता। हाँ, यदि सुमित्रानन्दन की सम्मति माँगें तो बता सकता हूँ। कारण यह कि मैंने इस विषय पर बहुत विचार किया है।'

''मैंने बताया, 'मैं यह नियुक्ति ठीक समझता हूँ। यह पुलिस के व्यवहार की जाँच पर है। मैं श्रीमान् जी को यह सम्मति दूँगा कि आप भी विश्वविद्यालय में जाँच करें। यह आपका अधिकार है। उस जाँच में यदि किसी प्रकार की मान-प्रतिष्ठा अथवा आर्थिक हानि हुई है तो उसकी माँग राज्य सरकार से कर लेनी चाहिए।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'इस पर तो सरकार पुलिस-वैन की हानि माँग लेगी।'

"मेरा कहना था—'यदि राज्य सरकार लड़कों के सिर फोड़ने और उनके अपमान का प्रतिकार देगी तो वह अपनी हानि माँगेगी भी और मैं समझता हूँ कि विद्यार्थियों को दण्ड देकर उनकी हानि पूरी करनी चाहिए।'

"इस पर उपकुलपति मुख देखते रह गए। फिर एकाएक वह कहने लगे, 'तुम जा सकते हो।'

"मैं चला आया।"

रघुवीर सुमित्रानन्दन के निर्भीकतापूर्ण एवं युक्तियुक्त उत्तरों को सुन बहुत प्रसन्न था। इस पर भी उसने कहा, "तुम्हारा भय ठीक ही है कि उपकुलपति चाहते थे कि अभी हड़ताल कुछ दिन और चल जाती तो उनकी माँग को समर्थन मिल जाता।"

"परन्तु रघुवीर, तुम क्या ठीक समझते हो ?"

"मैंने कल स्वामी जी और गुरु जी के सामने बताया था कि मैं इस जाँच आयोग के कुछ भी अर्थ नहीं समझता। ऐसी जाँच का लाभ ही क्या है, जब उसको समाप्त कर प्रकाशित करने और फिर उसको सरकार के सामने उपस्थित करने में दस-बारह मास लग जाते हैं।"

दोनों स्वामी जी की कुटिया में पहुँचे तो पण्डित करुणानिधि गंगा तट की ओर से स्नान-ध्यान कर लौट रहे थे। ये दोनों स्वामी जी की कुटिया के दूसरे कमरे के बाहर खड़े हो उनकी प्रतीक्षा करने लगे। अपने कमरे में स्वामी जी ध्यानावस्थित बैठे थे।

करुणानिधि आया तो तीनों बगल वाले कमरे में चले गए। करुणानिधि ने पूछा, "स्नानादि कर चुके हो ?"

"जी।"

"अल्पाहार किया है ?"

"जी नहीं, वह आपको साथ ले चल कर करेंगे।"

"कहाँ चलोगे ?"

"यहाँ समीप ही एक उपाहार-गृह है। वहाँ इस समय इडली, डोसा मिल जाएँगे।"

करुणानिधि ने पूजा के वस्त्र बदले और अपना पूजा का सामान तथा वस्त्र सूटकेस में बन्द किया और तीनों उपाहार-गृह की ओर चल पड़े। वास्तविक बात जिसके लिए करुणानिधि आया था, मार्ग में ही आरम्भ हो गई। करुणानिधि ने कहा, "यद्यपि मैं राधा से तुम्हारे विवाह को अनुचित नहीं मानता, परन्तु एक तो तुम्हारी माता जी का वचन जो उन्होंने दुर्गा की माँ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है, उससे मुक्ति प्राप्त नहीं हुई और दूसरे लड़की के माता-पिता की स्वीकृति आवश्यक है।

"लड़की का भाई यदुनाथसिंह माता-पिता का स्थानापन्न हो सकता था, परन्तु यह उस अवस्था में ही स्वीकार करने योग्य हो सकता है, जब वह स्वयं विवाहित होता और जीवन में पदार्पण कर चुका होता।

"देखो सौमित्र, विवाह में एक रीति है—वह है कन्यादान की। मैं उसका अर्थ यह समझता हूँ कि कन्या को विवाहने का कोई न कोई अधिकारी होना चाहिए। आजकल की परिस्थितियों में कन्यादान का अधिकार सरकार ने कानून से इस काम के लिए नियुक्त मैजिस्ट्रेट को ही दे रखा है। कानून से वह अधिकार मैजिस्ट्रेट तब ही प्रयोग कर सकता है, जब लड़की वयस्क हो और वह मैजिस्ट्रेट के समक्ष इस प्रयोजन की याचिका करे। उस समय तुमको भी उस याचिका में सम्मिलित होना पड़ेगा। लड़के-लड़की के माता-पिता की स्वीकृति की अवहेलना तब ही की जा सकती है, जब दोनों कानून से वयस्क होते हों।

"हमारी ओर से तुम्हें स्वीकृति मिल सकती है। इसमें आपत्ति केवल उस दशा में होगी, कि अगर दुर्गा की माँ ने तुम्हारी माता से वचन-पालन करने के लिए माँग की। उस अवस्था में तुम्हारा अधिकार है कि तुम माँ के वचन का आदर करो अथवा न करो।"

इस प्रकार करुणानिधि ने अपने पिछले बीस घण्टे के विचार का निष्कर्ष बता दिया। दोनों पण्डितजी के विचार की स्पष्टता और युक्तता को सुन चकित हो गए।

उपाहार-गृह में बैठते हुए करुणानिधि ने कहा, "मैं यही बात यदुनाथसिंह से मिलकर उसकी बहन तक पहुँचा दूँगा। एक बात मैं तुमको और बता देना चाहता हूँ कि इस बात का यह अभिप्राय नहीं है कि दुर्गा को तुम्हारे लिए उपयुक्त पत्नी नहीं मानते। यह नवीन सम्बन्ध उसके सम्भव न होने पर ही मुझे ठीक प्रतीत होता है।"

जब वे इडली, सांभर, चटनी इत्यादि खाने लगे तो सुमित्रानन्दन ने उपकुलपति से हुई बात बता दी। पूर्ण वृत्तान्त सुन करुणानिधि ने स्थिति का अपना विश्लेषण बता दिया। पण्डित जी ने कहा, कल तुम लोगों ने मेरी सम्मति का आदर कर हड़ताल समाप्त करने का निश्चय किया था। अत: अब इस नई परिस्थिति का विश्लेषण भी मैं तुमको बता देता हूँ।

"तुम्हारे प्राध्यापक इन्द्रजीत क्या और क्यों चाहते हैं, कह नहीं सकता। परन्तु उपकुलपति जी ने तुम्हें बुलाकर पूछ-ताछ करने का प्रयोजन, मैं यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा हूँ कि वे भी आजकल के नीतिज्ञों की भाँति अपने उचित-अनुचित कार्य को सफल करने के लिए नैतिकता-अनैतिकता का विचार छोड़ कार्य करने पर उद्यत हो गए हैं।

उपकुलपति ने अपना निर्णय ठीक अथवा गलत केन्द्रीय सरकार को लिखा है। सरकार उसको मानती है अथवा नहीं मानती, यह सरकार का काम है। सरकार को मनवाने के लिए हड़ताल जैसे अति हानिकारक उपाय का आश्रय लेना शोभा नहीं देता।

''मैं समझता हूँ कि वर्तमान उपकुलपति भी इसी प्रकार समझते हैं, परन्तु उन पर किसी प्रकार का दबाव पड़ रहा है, जिससे विवश हो वह हड़ताल अभी और चलाने की इच्छा करने लगे हैं।

''तुम्हारे कहने के अनुसार बाहरी दबाव में कारण इन्द्रजीत हो सकता है अथवा केन्द्रीय सरकार के पूर्व निर्णय भी हो सकते हैं, जिनमें उन्होंने 'हिन्दू' शब्द सम्बन्धी आन्दोलन के अपराधियों को दण्ड से मुक्त करने की बात की थी।

''कुछ भी हो, कुलपति को अपनी सूझ-बूझ के विपरीत दबाव में नहीं आना चाहिए।

''यह तो मैं नहीं बता सकता कि विद्यार्थी हड़ताल समाप्त करेंगे अथवा नहीं। न ही मैं यह बता सकता हूँ कि कुलपति की ओर से हड़ताल खुलने में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित होगी अथवा नहीं। हाँ, इतना मैं समझता हूँ कि अब पढ़ाई आरम्भ हो जानी चाहिए और भविष्य में विश्वविद्यालय के मुख्य काम पढ़ाई में बाधा अथवा प्रतिरोध किसी भी अवस्था में तथा किसी भी ओर से क्षम्य नहीं होना चाहिए।''

रघुवीर ने अपना अनुमान बता दिया। उसने कहा, ''मैं अपने ज्ञान के आधार पर यह अनुमान लगा रहा हूँ कि साठ-सत्तर प्रतिशत विद्यार्थी पढ़ाई के लिए उपस्थित हो जाएँगे। शेष भी दो-तीन दिन में आने लगेंगे।

''वर्तमान उपकुलपति अपना कार्यकाल समाप्त करके जा रहे हैं और नए कौन साहब आते हैं, उस पर ही निर्भर करता है कि यहाँ की स्थिति क्या होती है?''

''जहाँ तक विद्यार्थियों का सम्बन्ध है, उनको विवेक की शिक्षा देने वाला कोई नहीं। सरकार के उच्च से उच्च अधिकारी, मेरा अभिप्राय है कि राष्ट्रपति से लेकर विश्वविद्यालय के सामान्य अधिकारी तक, सब समय निकालने के लिए ही चिन्तित रहते हैं। वर्तमान नीति का दूरगामी प्रभाव क्या होगा, कोई भी विचार नहीं करता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुणानिधि के मुख से अनायास ही निकल गया, 'यह वर्तमान युग की प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का परिणाम है। प्रजातन्त्र जिस प्रकार से सम्पन्न हुआ है, उसमें स्थायी कुछ भी नहीं। इसमें कोई भी दूरगामी नीति हो नहीं सकती। प्रत्येक की दृष्टि पाँच वर्ष तक ही सीमित होती है। कोई नहीं जानता कि उस समय के उपरान्त उसकी क्या स्थिति होगी।''

''परन्तु गुरु जी,'' रघुवीर का प्रश्न था, ''आपने जिस प्रजातन्त्र का लक्षण कल किया था, उसे वर्तमान प्रजातन्त्र से भिन्न रखने के लिए उसका नाम भी भिन्न क्यों नहीं रखा जाता? एक ही नाम के दो वाद, जो एक दूसरे से आमूल-चूल भिन्न हैं, विभ्रम उत्पन्न करते रहेंगे।''

''परन्तु हमारे प्राचीन संविधान में तो समाज की व्यवस्था का भिन्न नाम है। हम उसे वर्णाश्रम व्यवस्था का नाम देते हैं। वर्ण-व्यवस्था की आधारशिला है गुण, कर्म और स्वभाव। इसके आधार पर सामाजिक उपलब्धियों का वितरण और उसके अनुसार ही समाज का व्यक्ति पर अधिकार माना है। समाज का कर्तव्यपालन करो तो समाज तुम्हारा सहायक है, अन्यथा नहीं।

''इसके साथ ही समाज के भी कुछ कर्तव्य हैं और अधिकार हैं। कर्तव्यों से ही अधिकार का जन्म होता है। जैसे कर्तव्य सीमित हैं, वैसे ही अधिकार सीमित हैं।

''हमारे समाज में व्यक्ति का अस्तित्व समाज से ऊँचा है। कोई भी व्यक्ति जब भी चाहे समाज को त्याग सकता है। अभिप्राय यह कि वह संन्यास ले सकता है। कोई उसे रोक नहीं सकता।

''इसके साथ ही यह भी ज्ञात होना चाहिए कि कोई भी संन्यासी समाज पर किसी प्रकार का अधिकार नहीं रखता। यदि किसी संन्यासी का समाज पर कोई अधिकार है तो वह उसकी समाज के प्रति सेवा ही है। सेवा भी स्वेच्छा से दी जाती है और इसके प्रतिकार में जीवन-यापन भी स्वेच्छा से मिलता है।''

''गुरुजी,'' रघुवीर के मन में एक संशय उत्पन्न हो गया था। एक दिन उनके संस्कृत के प्राध्यापक ने मनुस्मृति का एक श्लोक सुनाया था। वही श्लोक रघुवीर ने गुरुजी को सुना दिया। उसने कहा, ''गुरुजी इस विषय में आपका क्या मत है :

> यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः।
> ब्राह्मणस्य विशेषेण धार्मिके सति राजनि॥
> यो वैश्यः स्याब्दहुपशुर्हीनक्रतुरसोमयपः।
> कुटुम्बात्तस्य तद् द्रव्यमाहरेद्यज्ञसिद्धये॥

''क्यों, इसमें क्या दोष देखते हो तुम?'' करुणानिधि ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हमारे आचार्य जी ने बताया है कि वर्तमान समाजवाद का बीज इसमें है।''

''वह बेचारे या तो समाजवाद का अर्थ नहीं समझते अथवा इन श्लोकों का अर्थ नहीं समझ रहे।

''समाजवाद क्या है, देखो मैं बताता हूँ। धन की उपलब्धि समाज की सामूहिक उपलब्धि होती है, अतः उस उपलब्धि का भोग सबको मिलकर करना चाहिए। इस बटवारे में बाँटने वाला अधिकारी राज्य है।

''परन्तु उक्त दोनों श्लोक न तो धन की उपज के विषय हैं और न ही धन के वितरण के विषय में हैं।

''इनके द्वारा मनु ने कहा है कि यदि कोई द्विज, विशेष रूप में ब्राह्मण अपने यज्ञ की पूर्ति में धनाभाव से बाधा पाए तो वह किसी ऐसे वैश्य का धन ले सकता है जो स्वयं धनवान् हो, परन्तु ऋतुहीन हो और सोम यज्ञ से भी हीन हो और धर्मात्मा राजा उस यज्ञ करने वाले द्विज को दण्ड न दे।

''अब बताओ। इसमें कई शर्तें हैं। प्रथम है कि द्विज यज्ञ कर रहा हो। दूसरी शर्त है कि वैश्य धनवान् हो, तीसरी शर्त है कि वैश्य कर्तव्यहीन तथा वेद-पाठ भी न करता हो। सबसे अन्तिम शर्त यह है कि धर्मात्मा राजा इन सब शर्तों के पूर्ण होने पर यज्ञ करने वाले द्विज को दण्ड न दे।

''इस पर भी राजा इस कार्य में सम्मिलित न हो। अन्यथा वह उक्त सब शर्तों की पूर्ति कैसे देखेगा ? न्यायकर्त्ता अभियुक्त भी हो, यह ठीक नहीं।

''आचार्य जी को वर्तमानकाल के समाजवाद का अध्ययन करना चाहिए।''

:: 8 ::

रघुवीर का अनुमान लगभग ठीक था। पचास से साठ प्रतिशत विद्यार्थी पढ़ाई करने के लिए उपस्थित थे। इस कारण सायंकालीन हुई यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक में इन्द्रजीत और उनके साथी अति विक्षुब्ध अवस्था में उपस्थित हुए। कार्यकारिणी के पन्द्रह सदस्य थे। डाक्टर इन्द्रजीत बैठकों में निरीक्षक एवं परामर्शदाता के रूप में उपस्थित हुआ करते थे। तीन सदस्य थे जो सीधे डाक्टर साहब के प्रभाव में थे। दो सदस्य नगर में रहते थे। सुमित्रानन्दन कभी-कभी डाक्टर साहब के साथियों के साथ भी हो जाता था।

आज पन्द्रह के पन्द्रह सदस्य उपस्थित थे। बात डाक्टर साहब ने आरम्भ की। वे बोले, ''मैं यूनियन के कार्य को देखने के लिए उपकुलपति द्वारा नियुक्त हूँ। यह हड़ताल की समाप्ति मेरी सूचना के बिना हुई है। मैं इसके लिए मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अविश्वास का प्रस्ताव रखना चाहता हूँ।''

इस पर राधेश्याम ने कहा, ''पहले यह निश्चित हो जाए कि हड़ताल की समाप्ति ठीक हुई है अथवा गलत? तब ही विश्वास अथवा अविश्वास के विषय में विचार हो सकता है।''

''मैं यही तो कह रहा हूँ कि यह गलत हुआ है। बिना मेरे पूछे हड़ताल समाप्त नहीं की जा सकती थी।''

अब सुमित्रानन्दन ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''श्रीमान् डाक्टर जी को कुछ भ्रम हो गया है कि यूनियन का कोई भी काम बिना उनके पूछे चल नहीं सकता। यूनियन विद्यार्थियों की है। उपकुलपति का प्रतिनिधि हमें किसी सिद्धान्त का विरोध करने से रोकने के लिए है।

हड़ताल खोलना सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं, वरन् हड़ताल करना सिद्धान्त के विरुद्ध था। विद्यार्थियों को शान्त रख पढ़ाई में संलग्न रखना सिद्धान्त के विपरीत नहीं, वरन् एक दुखद घटना पर विद्यार्थियों को भड़काना और उनसे अशान्तिमय कार्य कराना सिद्धान्त का विरोध है। अत: मैंने कोई ऐसा कार्य नहीं किया, जिसकी उपकुलपति के प्रतिनिधि से स्वीकृति लेने की आवश्यकता थी।''

''यह हड़ताल किसने कराई थी?''

''मुझे पता नहीं।''

''यह एक्शन-कमेटी किसने नियुक्त की थी?''

''यह मैंने की थी। वह भड़के हुए छात्रों को नियन्त्रण में करने के लिए थी। एक्शन-कमेटी ने कल देखा कि बहुसंख्यक विद्यार्थी शान्त हो चुके हैं; इस कारण हड़ताल खुल जानी चाहिए।''

''उपकुलपति ने'' इन्द्रजीत का कहना था, ''कुछ कार्यवाही की थी, जिसके लिए वे समझते हैं कि हड़ताल जारी रहनी चाहिए।''

''देखिए श्रीमान्, पहले इस बात पर कार्यकारिणी अपना मत दे कि कल हड़ताल वापस लेना ठीक था अथवा नहीं? उसके उपरान्त ही उपकुलपति जी की बात पर विचार किया जा सकता है। मान लें कि हड़ताल जारी रखने का प्रस्ताव पारित होता है, उस अवस्था में उपकुलपति जी की समस्या पर विचार किया जा सकता है।''

इन्द्रजीत ने कहा, ''विश्वविद्यालय की ओर से केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री और राष्ट्रपति को यह सुझाव दिया गया है कि जाँच कमीशन वे नियुक्त करें। यह काम राज्य सरकार का नहीं, क्योंकि राज्य सरकार के व्यवहार पर ही तो जाँच होनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राज्य सरकार के कर्मचारी विश्वविद्यालय में बिना स्वीकृति के घुस आए थे। उन्होंने विश्वविद्यालय की सम्पत्ति को हानि पहुँचाई थी। अतः जाँच केन्द्र को करनी चाहिए थी।"

राधेश्याम ने पूछा, "डाक्टर साहब! यह बात ठीक है, परन्तु हड़ताल का इसके साथ क्या सम्बन्ध है?"

"हड़ताल यह प्रकट कर रही थी कि विद्यार्थी इस जाँच कमीशन को स्वीकार नहीं करते।"

"मैं समझता हूँ कि विद्यार्थी इस बात को कार्यकारिणी में प्रस्ताव पारित कर प्रकट कर सकते हैं।"

राधेश्याम यूनियन का प्रधान था। उसने पूछ लिया, "कोई और व्यक्ति कुछ कहना चाहता है?"

रघुवीर ने कह दिया, "मैं चाहता हूँ कि दोनों बातों को पृथक्-पृथक् रखकर मत लिये जाएँ। कल हड़ताल बन्द होना ठीक था अथवा नहीं? मन्त्री ने हमसे पूछकर हड़ताल वापस ली थी, अतः हमें मन्त्री के कार्य को ठीक घोषित करना चाहिए।

"दूसरा यह कि यह कमीशन ठीक है अथवा नहीं? यदि नहीं तो क्या होना चाहिए?"

प्रधान ने प्रथम विषय पर मत लिया। बारह मत मन्त्री के कार्य को ठीक मानते थे और दो सदस्य गलत। अतः यह निश्चय किया गया कि हड़ताल का खोल देना ठीक था और विद्यार्थियों को अब पढ़ाई में जुट जाना चाहिए।

दूसरा प्रस्ताव जाँच कमीशन के विषय में था। इसपर रघुवीर ने कहा, "विद्यार्थी समझते हैं कि जाँच विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त कमेटी को करनी चाहिए।"

अब पुनः इन्द्रजीत ने कहा, "विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त कमेटी शक्तिविहीन होती है।"

राधेश्याम ने कहा, "केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार जो भी कमीशन नियुक्त करती है, वह उतनी ही शक्तिविहीन होती है, जितनी कि किसी बाज़ार में खड़ी भीड़ से नियुक्त कमेटी। सरकार अपनी नियुक्त की हुई कमीशन की बात भी मानने के लिए बाध्य नहीं तो फिर ऐसे कमीशन की नियुक्ति का लाभ ही क्या है?

"मेरा प्रस्ताव यह है कि उपकुलपति को पुलिस के विश्वविद्यालय में घुस आने और विश्वविद्यालय के छात्रों को पीटने तथा सम्पत्ति को हानि पहुँचाने का अनुमान विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त कमेटी द्वारा लगवाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायालय में उतनी हानि का पुलिस पर दावा दायर कर देना चाहिए। न्यायालय में जो कुछ भी स्वीकार होगा, वह सरकार मानने पर बाध्य होगी।''

इस सुझाव के विपरीत इन्द्रजीत और यदुनाथ ने बहुत युक्तियाँ दीं, परन्तु मतदान के समय राधेश्याम के विचार के पक्ष में दस मत थे और विरोध में चार।

दोनों प्रस्ताव विख्यात कर दिए गए। इससे कुलपति को सन्तोष हुआ अथवा नहीं, कहा नहीं जा सका, परन्तु इन्द्रजीत इत्यादि तो आग-बबूला हो गए।

उसी सायंकाल इन्द्रजीत के क्वार्टर में उसके साथियों की एक सभा हुई। इसमें लगभग बीस व्यक्ति थे। इन्होंने यह निश्चय किया कि यूनियन की कार्यकारिणी को किसी प्रकार बदनाम कर नई कार्यकारिणी निर्वाचित करनी चाहिए, अन्यथा हमारा उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता।

इन्द्रजीत ने अपने साथियों को अपना उद्देश्य वर्णन कर दिया। उसने कहा, ''संसार-भर के सब देशों में विद्यार्थियों ने क्रांति उत्पन्न की है। यह भारत के लिए अति लज्जा की बात है कि आर०एस०एस० जैसी रूढ़िवादी संस्था गले-सड़े प्राचीन विचारों को लेकर अपने संगठन के बल पर जाति की प्रगति को रोके हुए है।''

सर्वसम्मति से यह बात स्वीकार की गई कि कार्यकारिणी को बदनाम किया जाए और इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दो सदस्यों, राधेश्याम और सुमित्रानन्दन को विश्वविद्यालय से निकलवाने का यत्न किया जाए।

इस कार्य के लिए तीन सदस्यों की एक समिति बनाई गई। सदस्य थे ब्रजकिशोर, द्विजेन्द्र मण्डल और इन्द्रजीत। इस समिति को कार्यवाही करने के लिए पूर्ण अधिकार दिए गए और प्रगति दल के सब सदस्यों को इस समिति के आदेश मानने के लिए आदेश दिया गया।

यदुनाथ का नाम इस समिति में रखने का यत्न किया गया था, परन्तु उसने कह दिया, ''मैं कुछ दिन के लिए अपने घर मिर्ज़ापुर जाने वाला हूँ। इस कारण समिति की योजना में भाग नहीं ले सकूँगा। उसके स्थान पर ही मण्डल का नाम रखा गया था।

अन्त में यह निश्चय हुआ कि इस कार्यक्रम को गुप्त रखा जाए और किसी को भी आज की बैठक का पता न दिया जाए।

इस बैठक के उपरान्त यदुनाथ बाहर निकला तो महिला विश्वविद्यालय का चपरासी उसको ढूँढ़ता हुआ आया। उसने उसको बताया कि उसकी बहन राधा ने कहा है कि वह पण्डित करुणानिधि से मिल ले। वह कल मिर्ज़ापुर जाने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदुनाथ डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर से सीधा गंगातट की ओर चल पड़ा। करुणानिधि ने शकुन्तला देवी को सन्देश भिजवाया था, "यदि राधा अपने विषय में मेरी सम्मति सुनना चाहती है तो उसे अपने भाई को मेरे पास भेज देना चाहिए। मैं यहाँ से कल मिर्ज़ापुर जाने वाला हूँ।"

अत: करुणानिधि यदुनाथ की प्रतीक्षा कर रहा था। जब वह पहुँचा तो वे यदुनाथ को गंगातट पर ले गए। वहाँ ले जाकर करुणानिधि ने कहा, "मैं कल यहाँ से जाना चाहता हूँ। मेरा विचार है कि मिर्ज़ापुर भी जाऊँ और वहाँ बाबू बिहारीसिंह जी से मिलूँ। मैं चाहता हूँ कि मैंने जो कुछ सुमित्रानन्दन को कहा है, वही राधा को भी बता दूँ। सो तुम यह बात उसे कह देना।

"मैं और मेरी पत्नी सुमित्रानन्दन के विवाह का वचन गाँव की एक लड़की दुर्गा से करने का दे चुके हैं, परन्तु कुछ कारणों से ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्गा के माता-पिता इस वचन का लाभ नहीं उठाएँगे। उन्होंने अभी तक इसमें अपना मत प्रकट नहीं किया। दुर्गा के बाद मैं राधा के पक्ष में हूँ। मेरा विचार है कि सुमित्रानन्दन की माता भी यही समझेगी।

"इस बात का निर्णय होने में कुछ समय लगेगा। यदि दुर्गा के माता-पिता ने सुमित्रानन्दन में कुछ भी अरुचि प्रकट की तो सुमित्रानन्दन राधा से विवाह के लिए मान जाएगा। यदि वह मान गया तो विवाह होगा, परन्तु इसमें एक शर्त है कि राधा का कन्यादान करने वाला कोई होना चाहिए।

"कन्यादान करने का अधिकार लड़की के माता-पिता रखते हैं। माता-पिता के स्थान भाई और भावज रख सकते हैं, अन्यथा न्यायालय का मैजिस्ट्रेट भी कन्यादान करने का कानूनी अधिकार रखता है।"

यदुनाथ हँस पड़ा। करुणानिधि हँसी का कारण जानते थे। इस कारण इसकी अवहेलना करते हुए उन्होंने अपनी बात जारी रखी। उन्होंने कहा, "तुम जिस कारण हँसे हो, वह तुम्हारी अज्ञानता को प्रकट करता है। कन्यादान के अर्थ तुम नहीं समझते। कन्यादान का अभिप्राय है कि लड़की को विवाह में पति के साथ कर देने का अधिकार। यह लड़की स्वयं नहीं कर सकती। वर्तमान कानून के अनुसार यह अधिकार मैजिस्ट्रेट को भी है परन्तु उसके अधिकार पर प्रतिबन्ध है। वह तुम किसी वकील से पूछ लेना। कानून से मैजिस्ट्रेट लड़की को लड़के के साथ जाने की और लड़के को लड़की ले जाने की स्वीकृति दे सकता है।

"मैं चाहूँगा कि राधा के माता-पिता अपना अधिकार स्वयं प्रयोग करें। यदि उन्होंने अरुचि प्रकट की तो यह तुम्हारा अधिकार भी हो सकता है, परन्तु उसके लिए तुम्हें पहले विवाह कर सपत्नीक अधिकार प्रयोग करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अन्यथा मैजिस्ट्रेट कानून के अनुसार अधिकार प्रयोग कर सकता है।

"यह तुम राधा को बता देना। मेरा आशीर्वाद उसके लिए है।"

:: 9 ::

इतनी बातों को समझकर हज़म करना यदुनाथसिंह के लिए एक कठिन बात थी, परन्तु करुणानिधि इतना कहकर कुटिया की ओर लौट पड़ा। एकाएक उसे एक बात सूझी। उसने पूछ लिया, "यदि आप मिर्ज़ापुर चल रहे हैं तो क्या मैं आपके साथ नहीं चल सकता?"

"कुछ लाभ नहीं होगा। परन्तु मैं तुमको मना नहीं कर सकता। सुमित्रानन्दन का विवाह उसकी पढ़ाई समाप्त करने पर होगा।"

"आप कितने बजे की गाड़ी से जा रहे हैं?"

"मैं कल प्रात: आठ बजे के लगभग बस में मुगलसराय जाऊँगा। तदनन्तर वहाँ से जो भी गाड़ी मिलेगी, उसीमें चला जाऊँगा।"

यदुनाथ वहाँ से महिला छात्रावास जा पहुँचा। वह राधा को मिला और उसने करुणानिधि को पूर्ण बात बता दी।

राधा ने बात सुनी, समझी और फिर कह दिया, "मैं समझती हूँ कि मैं सफल हो जाऊँगी। आज मध्याह्नोतर मैं रघुवीर जी के कमरे में उनसे मिली थी। उनका भी विचार है कि माता जी हमारे विवाह को स्वीकार कर लेंगी।

"अब रही बात माँ तथा पिता जी को राजी करने की। उनकी एक ही आपत्ति है कि घर में भांग भुजती है। उनका परिवार अति निर्धन है और उनके पिता धन को लात मार ब्राह्मणपन के अभिमान में निर्धनता का जीवन स्वीकार किए हुए हैं।

"मैं समझती हूँ कि यह आवश्यक नहीं कि ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही हो। मुझे उनमें क्षत्रिय वर्ण के गुण समझ आए हैं, क्षत्रियोचित कार्य वे ढूँढ़ लेंगे। मैं अपने को उनके संरक्षण में पा सुखी अनुभव करूँगी।"

"मैं कल पण्डित जी के साथ मिर्ज़ापुर जाना चाहता हूँ।"

"क्या काम है?"

"तुम्हारी सिफारिश करने जा रहा हूँ।"

"दादा, मत जाओ। पिता जी तुमसे बहुत रुष्ट हैं। उन्होंने मुझे लिखा है कि तुम्हारी रिपोर्ट समाचार-पत्रों में छपी पढ़ी है और उन्हें तुमसे वैसी अयुक्तिसंगत बातों की आशा नहीं थी। मुझे लिखा है कि मैं तुमको कह दूँ कि यूनियन का काम छोड़ पढ़ाई में चित्त लगाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''पिता जी का पत्र मुझको भी आया है। उन्होंने लिखा है कि दो सौ रुपया प्रतिमास का व्यय इसलिए नहीं दिया जा रहा कि पुलिस से झगड़ा कर अपना समय व्यर्थ गँवाऊँ। यदि मैंने अपना चित्त पढ़ाई में न लगाया तो रुपया भेजना बन्द हो जाएगा।''

''पर दादा, रघुवीर जी इस डाक्टर इन्द्रजीत के विषय में कुछ बता रहे थे। उसे सुन तो यही समझ आया है कि वह महामूर्ख है।''

''देखो राधा, बिना ठीक बात के ज्ञान के अपने से बड़ों पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।''

''पर दादा, सुना है कि वह हड़ताल खोलने के विरुद्ध है?''

''विरुद्ध तो उपकुलपति भी हैं।''

''वे क्यों हैं?''

''उनको एक डाँट दिल्ली से पड़ी है और सीधे हो गए हैं।''

''परन्तु वे तो जा रहे हैं?''

''हाँ।''

''फिर उनकी बात कि हड़ताल जारी रहे, उनके भयभीत मस्तिष्क की ही उपज हो सकती है। चाहिए तो यह कि वे विश्वविद्यालय को नियमपूर्वक काम करता अपने उत्तराधिकारी के हाथ में देकर जाएँ।''

''परन्तु डाक्टर साहब का विचार है कि हड़ताल में ही नए उपकुलपति आएँ।''

''इसी को तो रघुवीर जी मूर्खता कहते थे और उनका विचार है कि उपकुलपति को आपके डाक्टर ही अंगुलियों पर नचा रहे हैं।''

''इस पर भी मैं मिर्ज़ापुर जा रहा हूँ और मेरी सम्मति तो यह है कि यदि रघुवीर और सुमित्रानन्दन भी किसी प्रकार एक मास की छुट्टी ले बनारस से बाहर कहीं चले जाएँ तो ठीक रहेगा।''

''क्यों?''

''यहाँ उनकी जान की खैर नहीं।''

''क्या मतलब?''

''एक एक्शन-कमेटी निर्माण की गई है, उन सबको दण्ड देने के लिए, जिनके कारण विद्यार्थियों को प्रगति के पथ पर चलने से रोका जा रहा है।''

''तो यह कुकृत्य भी विद्यार्थी करने लगे हैं?''

''राधा, बात यह है कि कुकृत्य तो हो ही रहा है। रघुवीर का मस्तिष्क इस विषय में सुस्पष्ट है। वह समझता है कि विद्यार्थियों को पढ़ाई के काम से विचलित कर किसी भी अन्य काम में लगाने वाले कुकृत्य ही कर रहे हैं। उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुकृत्य को रोकने के लिए जो भी काम किया जाएगा, उसका कुकृत्य करने वाले विरोध करेंगे ही।

"आरम्भ ही इस बात से हुआ है कि विद्यार्थी आन्दोलनों में क्रियात्मक भाग लेने लगे हैं। एक समय महात्मा गांधीजी ने यह बात आरम्भ की थी। उन्होंने देश-भर के विद्यार्थियों को स्कूल, कालेज छोड़कर बाहर चले आने के लिए कहा था।

"यद्यपि वह काम महान् महत्त्व का था, परन्तु पूर्ण जाति की भावी सन्तान को आन्दोलन में झोंक देना और एक ऐसे परीक्षण के लिए जिसका अनुभव किसी को नहीं था, वैसा बड़ा ही महान् पाप भी था।

"तब से ही यह प्रथा चल गई है कि राजनीतिक दल अपने आन्दोलनों को बल देने के लिए विद्यार्थियों को भड़काकर अपने साथ लगा लेते हैं।

"मुझे तीन वर्ष हो गए हैं डाक्टर इन्द्रजीत के साथ कार्य करते हुए और मुझे रघुवीर से कही एक बात से ऐसी ठोकर लगी है कि मेरा मुख पश्चिम से पूर्व की ओर घूम गया है, परन्तु अपने पिछले तीन वर्ष की डाक्टर साहब की संगत के कारण न तो मैं उनको छोड़ सकता हूँ और न ही वे मुझको छोड़ना चाहते हैं।

"आज ऐसी बात की योजना बनी है कि मैं यहाँ से भाग जाने में ही अपना कल्याण मानता हूँ।"

राधा इस योजना के आभास से भौचक्की रह गई। यदुनाथ ने कह दिया, "अभी तो मैं यहाँ रुकना नहीं चाहता अतः कल सुमित्रानन्दन के पिता जी के साथ ही मिर्ज़ापुर चला जाना चाहता हूँ।"

"पर मेरी बात के लिए तुमको जाने की आवश्यकता नहीं। मैं स्वयं इस विषय में बात कर लूँगी। पहले उनके पिता के मिर्ज़ापुर जाने की प्रतिक्रिया का पता चल जाए, तब तक हमारी परीक्षाएँ हो जाएँगी और मैं जब ग्रीष्म ऋतु के अवकाश में घर जाऊँगी तो उन्हें अपनी बात समझा सकूँगी। आशा है तब तक उनके गाँव वाली दुर्गा का भी निश्चय हो जाएगा।"

"एक बात मुझे समझ में नहीं आई कि तुम सुमित्रानन्दन के ही पीछे क्यों पड़ी हो, संसार में अनेकों ही युवक तो हैं?"

"बस रहने दो, भैया! तुम इस विषय में न तो कुछ जानते हो और न ही जानने की क्षमता रखते हो। यह एक नारी के हृदय की बात है।"

"लगी हो न वही मूर्खों की सी बातें करने?"

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "अब दादा का बदला निकल गया है। मैंने उनके गुरु को मूर्ख कहा है और वह मुझे मूर्ख कहते हैं। इतनी बात है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने मेरे गुरु को मूर्ख नहीं कहा।''

''तो तुम्हारा भी कोई गुरु है?''

''हाँ, अब है। कल से पहले कोई नहीं था।''

''किसको गुरु बना बैठी हो? राधा, गुरु बहुत सोच-विचारकर बनाना चाहिए। नहीं तो मेरी भाँति पीछे पछताना भी पड़ सकता है।''

''नहीं पड़ेगा। मेरे गुरु मतभेद होने पर हत्या करने की बात नहीं कहते। सुनोगे, वह मेरी समस्या का सुझाव क्या देते हैं?''

''क्या सुझाव देते हैं?''

''यही कि संसार में मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं। उसके सफल होने में केवल दो बातें आवश्यक होती हैं—तपस्या और धैर्य। तपस्या है कि लक्ष्य-प्राप्ति के लिए निरन्तर यत्न करते रहना और धैर्य से अभिप्राय है कि अनुकूल समय के आने की प्रतीक्षा करना।''

''लक्ष्य चाहे कुछ भी हो? देखो राधा, किसी ने लक्ष्य बना लिया है कि विरोधियों को इस संसार से बाहर कर देना। तो क्या तब भी तपस्या और धैर्य का प्रयोग करना चाहिए?''

''लक्ष्य निश्चय करना पृथक् बात है। मैं तो लक्ष्य-प्राप्ति की बात कहती हूँ। लक्ष्य के लिए भी गुरु जी ने कहा है कि निष्काम भाव से यज्ञ रूप कर्म ही लक्ष्य हो सकता है। उन्होंने मुझे विवाह में पति पाने के लिए निष्काम भाव से कामना करने को कहा है।''

यदुनाथ हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''राधा, किसी मूर्ख के पल्ले पड़ गई हो। निष्काम भाव से कामना तो कोई मूर्ख ही कर सकता है।''

''ऐसा नहीं, दादा, निष्काम भाव का अभिप्राय है कि फल की इच्छा के बिना और यज्ञ रूप का अर्थ है लोक-हितार्थ। यज्ञ कार्य की कामना, फल से निष्काम भाव कहलाता है।''

यदुनाथ के लिए यह एक अन्य न समझ सकने की बात थी। वह चुप कर गया। राधा ने मुस्कराते हुए कहा, ''नहीं समझे न? दादा, पहले उस डॉक्टर की मिट्टी अपने मन से झाड़ लो। पीछे यह बात सहज ही समझ आ जाएगी।

''देखो, मैं मन में संकल्प करूँ कि मैं सबका कल्याण करूँ तो यह संकल्प यज्ञ की कामना होगी, परन्तु यज्ञ तो कहते ही उस कर्म को हैं जिसका फल केवल अपने को न मिलना हो।''

बात समझ में आने लगी थी, परन्तु पिछले तीन वर्षों से यज्ञ, धर्म, कर्म को रूढ़िवादिता कहते-सुनते हुए भलीभाँति मस्तिष्क में घुस नहीं पाती थी। यदुनाथ उठकर जाने लगा तो राधा ने पुनः कहा, ''मेरे लिए मिर्ज़ापुर जाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता नहीं। तुम्हें अपने लिए ठीक यह होगा कि डाक्टर की संगत छोड़ पढ़ाई में चित्त लगाओ। इस वर्ष बी०ए० की परीक्षा देनी है। परीक्षा में दो ही महीने तो रह गए हैं। पिता जी को प्रसन्न करने का उपाय यही है कि बी०ए० फर्स्ट डिवीजन में हो जाओ, तब वह प्रसन्न हो जाएँगे।''

यदुनाथ को दूसरा झटका लगा। पहला वह था, जब रघुवीर ने पुस्तकालय में बैठे हुए कहा था कि डाक्टर साहब के घर में कोई मानव तो था नहीं। हाँ, वहाँ कुछ कुत्ते-कुतियों को समागम करते देख द्वार बन्द कर वह चला आया था। आज राधा ने कहा था कि उसके काम के लिए उसकी सिफारिश की आवश्यकता नहीं। वह स्वयं अपना पक्ष उपस्थित करेगी।

उसे समझ आ रहा था कि रघुवीर और राधा तो डाक्टर साहब के सिद्धान्त की पुष्टि कर रहे हैं। आज का युवा प्रगतिशील हो रहा है। डाक्टर, वह स्वयं, रघुवीर और अब राधा ये उत्तरोत्तर उन्नत दिखाई देने लगे थे।

वह इन्हीं विचारों में डूबा हुआ अपने छात्रावास में पहुँचा और उस दिन की पूर्ण घटना को समझ वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मार्च मास तो आ गया। परीक्षा मई में होगी और एक वर्ष भर से उसने पुस्तकें खोलकर नहीं देखीं। उसकी पुस्तकों पर मिट्टी चढ़ रही थी।

पिताजी का पत्र भी उसको स्मरण आ रहा था। उन्होंने लिखा था, ''यदि तुम इस वर्ष अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण नहीं हुए तो आगे पढ़ने का प्रश्न ही नहीं रहता। तुम्हारे लिए मेरी मुंशीगीरी के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं रह जाएगा।''

यह चेतावनी थी। इस पर भी अगले दिन प्रात: वह स्नानादि से निवृत्त हो मुगलसराय के बस स्टैण्ड पर जा पहुँचा। वह वहाँ साढ़े सात बजे पहुँचा था। पौने आठ बजे रघुवीर आया और यदुनाथ को वहाँ खड़ा देख विस्मय करने लगा। इस पर भी उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। परन्तु यदुनाथ ने उसके समीप आ पूछ लिया, ''पण्डित जी से मिलने आए हो ?''

''हाँ। वह आज जा रहे हैं।''

''सुमित्रानन्दन कहाँ है ?''

''वह गुरु जी के साथ आ रहा है।''

सुमित्रानन्दन और करुणानिधि आए तो यदुनाथ को देख करुणानिधि ने पूछ लिया, ''तो तुम चले रहे हो।''

''जी नहीं। मैंने विचार बदल लिया है।''

''बहुत अच्छा किया है। जो कुछ निर्णय होगा, वह तुम्हें और राधा को सुमित्रानन्दन से विदित हो जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलिए, आपकी बस तैयार है।" रघुवीर ने कहा।

सब बस की ओर चल पड़े।

:: 10 ::

सप्ताह में एक दिन राधा सुमित्रानन्दन से मिलने आने लगी थी। प्राय: उसका भाई यदुनाथ उसके साथ होता था। पण्डित करुणानिधि के बनारस से आने के पाँच-छ: दिन उपरान्त राधा आई तो थी यदुनाथ के साथ, परन्तु यदुनाथ उसे वहाँ छोड़ चला गया था। आज रघुवीर भी कहीं गया हुआ था। इस प्रकार एकान्त देख राधा ने कहा, "मैं एक सप्ताह से आपसे एकान्त में बात करने के लिए चाह रही थी, परन्तु दादा के सामने होने से कह नहीं सकती थी।"

सुमित्रानन्दन जब भी राधा इनके कमरे में आती थी, कमरे का द्वार खुला रखा करता था। छात्रावास का वार्डन इस लड़की के यहाँ आने पर इस ओर चक्कर लगाया करता था। वह इस प्रकार खुले द्वार इनको बैठा देख सन्तोष अनुभव किया करता था।

आज राधा के एकान्त में बातचीत करने से सुमित्रानन्दन सतर्क हो गया। उसे सन्देह बना रहता था कि भाई की संगत में यह लड़की भी कहीं विकृत विचारों की होकर किसी प्रकार की उच्छृंखलता न कर बैठे। उसने पूछा, "हाँ, तो क्या बात है जो तुम अपने भाई के सामने नहीं कह सकीं?"

"आपके विषय में ही है। यहाँ विश्वविद्यालय में एक षड्यन्त्र रचा जा रहा है, जिसमें आपकी जान का भी भय हो सकता है।"

"तो यह यदुनाथ ने तुम्हें बताया है?"

"हाँ, तीन व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई है, जो यह निश्चय करेगी कि विश्वविद्यालय से अनिच्छित तत्त्वों को किस प्रकार निकाल बाहर किया जाए?

"वे यह समझ गए हैं कि विश्वविद्यालय में तीन-चार व्यक्ति ही हैं, जो उनकी दाल गलने नहीं देते।"

"कौन-कौन हैं उस समिति में?"

"यह तो दादा ने बताया नहीं, परन्तु आप जो इन लोगों में हैं, भली प्रकार समझ सकते हैं कि वे कौन हो सकते हैं। मैंने बहुत पूछा है। दादा ने यह बताया है कि वह स्वयं समिति में नहीं हैं।"

इस सूचना से सुमित्रानन्दन इस षड्यन्त्र को प्रकट करने की विधि पर विचार करने लगा। राधा के जाते ही वह राधेश्याम के पास पहुँचा। उसने राधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात उसे बताई तो राधेश्याम चौकन्ना हो बोला, ''कुछ दिन से मण्डल मुझसे हेल-मेल उत्पन्न करने का यत्न कर रहा है।''

''पर राधेश्यामजी, मण्डल तो आर०एस०एस० का घोर निन्दक है और तीन फरवरी को आग लगाने वालों में पकड़ा गया था।''

''मण्डल के साथ दो सेकेण्ड ईयर के विद्यार्थी सदा होते हैं। पर मैं अब सावधान रहूँगा।''

''केवल सावधान रहने से काम नहीं चलेगा। इनको रंगे-हाथ पकड़वाना चाहिए।''

''बताओ, क्या योजना है?''

''मैंने एक योजना विचार की है। कहो तो बताऊँ?''

''हाँ, हाँ।'' दोनों समीप-समीप हो गए और सुमित्रानन्दन धीरे-धीरे योजना बताने लगा। पूर्ण बात सुनकर राधेश्याम ने कहा, ''इसमें तो हमारे भी पकड़े जाने का भय है।''

''नहीं दादा, मैं नहीं समझता कि इनमें किसी प्रकार का भय है। हमें सतर्क तो रहना पड़ेगा, परन्तु हम विश्वविद्यालय को विवश कर देंगे कि इनके विपरीत किसी प्रकार का 'एक्शन' ले।''

''तो करो। मैं समझता हूँ कि कुछ तो करना ही चाहिए।''

जब से यूनियन राधेश्याम के साथियों के हाथ में आई थी 'कैफेटेरिया' जो एक सहकारी समिति के अधीन था, सीधा यूनियन के अधीन आ गया था। सुमित्रानन्दन उसका प्रबन्ध देखता था। उसकी सहायता के लिए एक समिति बनी हुई थी।

सुमित्रानन्दन यह यत्न करता रहता था कि 'कैफेटेरिया' की सहायक समिति में अधिक और अधिक उनके पक्ष के लोग आते जाएँ।

उसने दो बातें स्वामी निखिलानन्द से सीखी थीं। एक यह कि जिस नाम तथा सिद्धान्त को तुम पसन्द करते हो, उसको छुपाने का यत्न मत करो। यदि तुम हिन्दू नाम से प्रेम करते हो तो अपने को हिन्दू कहे जाने से डरो नहीं। यदि उसमें कुछ डरने की बात है तो उससे प्रेम मत करो। यदि तुमको विश्वविद्यालय के लड़कों को अपना समय पढ़ने में लगाने की बात पसन्द है तो इसे खुलेआम कहो और डरो नहीं। यही कारण था कि उसके पक्ष के विद्यार्थी अधिक और अधिक निर्भय होते जाते थे। वे अब कहते थे कि वे हिन्दू हैं, दक्षिणपंथी हैं। पहले तो वामपंथियों ने हिन्दू नाम और दक्षिणपंथ को निन्दनीय बना रखा था, परन्तु धीरे-धीरे अधिक और अधिक विद्यार्थी दक्षिणपंथ के पक्ष में होते जाते थे। वास्तव में पक्ष में तो वे पहले ही थे, परन्तु रघुवीर ने वामपंथियों का मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बन्द करने के लिए हिन्दू और दक्षिणपंथ की ऐसी व्याख्या कर दी थी कि लोग अब निर्भय होकर बात करते थे।

रघुवीर का कहना था कि हिन्दू वह है जो दूसरों से वैसा ही व्यवहार रखना धर्म समझता हो, जैसा कि दूसरे उसके साथ रखते हैं।

इसी प्रकार रघुवीर ने यह भी घोषित किया था कि दक्षिणपंथी वे हैं जो प्रत्येक का अपने गुण, कर्म, स्वभावानुसार मूल्यांकन करें। इन दो समाघोषों से विद्यार्थी अब वामपंथियों का विरोध करने लगे थे।

उपाहार-गृह की सहकारी समिति का प्रधान अभी वही था जो यदुनाथ के मन्त्रित्व-काल में निर्वाचित हुआ था। सुमित्रानन्दन की दृष्टि उसी पर थी कि उसे उस पद से निकलवा दिया जाए। वह इसके लिए कोई अवसर नहीं पा रहा था। उसका विचार था कि कैफेटेरिया में मण्डल इत्यादि की पिटाई कराई जाए। इसके लिए वह अपनी योजना चलवाने ही वाला था कि विश्वविद्यालय के कैफेटेरिया की समिति के प्रधान ने वह अवसर उपस्थित कर दिया।

प्रथम मई आने वाली थी और उसने बिना समिति और विद्यार्थी यूनियन से सम्मति किए प्रथम मई के दिन कैफेटेरिया को झण्डियों और फानूसों से सजाने का आदेश दे दिया। उसने मैनेजर को इस काम के लिए एक सौ रुपये की स्वीकृति भी दे दी।

कैफेटेरिया का मैनेजर अपने को राधेश्याम के पक्ष में समझता था। उसने सुमित्रानन्दन को यह सूचना दे दी। सुमित्रानन्दन ने उपाहार-गृह की समिति की मीटिंग बुलाकर यह निश्चय करा दिया कि मई दिवस कैफेटेरिया में न मनाया जाए। प्रधान ने कहा कि वह इस काम के लिए एक सौ रुपये व्यय करने के लिए स्वीकार कर चुका है।

''तो वह आज्ञा वापस ले लो।''

''मैं समझता हूँ कि इससे किसी को कोई हानि नहीं होगी।''

''यह प्रथम मई का दिन मनाने का क्या प्रयोजन है?''

''यह भूमण्डल पर मजदूर-दिवस के रूप में मनाया जाता है।''

''परन्तु यह उपाहार-गृह विद्यार्थियों का है, मजदूरों का नहीं।''

''हमारी मजदूरों से सहानुभूति है।''

''हम इस सहानुभूति के लिए दिवाली का दिन नियत कर देंगे।''

''परन्तु दिवाली तो मज़हबी दिन है। उस दिन हिन्दू लक्ष्मी देवी की पूजा करते हैं।''

''लक्ष्मी की पूजा मज़हबी बात नहीं है। यह तो अर्थ की पूजा है जो आज दुनिया-भर के लोग, मज़दूर और गैर-मज़दूर दोनों करते हैं। दिवाली के दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब प्रकार की आर्थिक व्यवस्था के लोग एक स्थान पर एकत्रित हो सकते हैं।''

''परन्तु हम मजदूरों को पृथक् संगठित करना चाहते हैं।''

''और हम समाज में वर्गयुद्ध नहीं चाहते।''

''मैंने तो आज्ञा दे दी है।''

इस पर सहकारी समिति के एक सदस्य ने कह दिया, ''हमें समिति का प्रधान बदल देना चाहिए।''

सुमित्रानन्दन ने इसका समर्थन कर दिया और बहुमत से समिति का प्रधान बदल दिया गया।

मई की पहली तारीख तक पुराने प्रधान ने नए निर्वाचित प्रधान को चार्ज नहीं दिया और उसने उस दिन कुछ विद्यार्थियों की सहायता से उपाहार-गृह को झण्डे-झण्डियों से सजाना आरम्भ कर दिया।

यह सजधज अभी की ही जा रही थी कि सहकारी समिति का नया प्रधान कुछ सदस्यों के साथ वहाँ पहुँच उन झण्डियों और झण्डों को हटवाने लगा। इसपर मण्डल, ब्रजकिशोर और अन्य वामपंथी वहाँ आए और पुन: उपाहार-गृह को सजाने लगे। दोनों में झगड़ा हो गया और वामपंथियों ने कैफेटेरिया को आग लगा दी। आग तो दमकल ने बुझा दी, परन्तु आग लगाते हुए मण्डल के साथ सात अन्य विद्यार्थी पकड़े गए।

उपकुलपति अपनी नियुक्ति की अवधि समाप्त कर जा चुका था और उसके स्थान पर नए उपकुलपति की नियुक्ति नहीं हुई थी। अत: विश्वविद्यालय का मुख्य प्रोक्टर स्थानापन्न उपकुलपति के रूप में काम कर रहा था। स्थानापन्न उपकुलपति ने आग लगाते पकड़े हुओं पर जाँच करवाई और परिणामस्वरूप मण्डल इत्यादि विश्वविद्यालय से निकाल दिए गए और कुछ विद्यार्थियों को एक-एक वर्ष तक परीक्षा में न बैठ सकने की आज्ञा दे दी गई।

इस घटना के तुरन्त ही उपरान्त परीक्षाएँ आरम्भ हो गईं अत: विद्यार्थियों का ध्यान स्वयमेव इस घटना से हट गया।

:: 11 ::

परीक्षाएँ हुईं। सब प्रसन्न थे, परन्तु सुमित्रानन्दन का विचार था कि झगड़े की जड़ डाक्टर इन्द्रजीत उपस्थित है और पुन: वह किसी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न करने के लिए अवसर देख रहा है।

इस पर भी परीक्षाओं के दिन शान्तिपूर्वक निकल जाने से उपकुलपति के स्थान पर काम करने वाले महानुभाव से लेकर विश्वविद्यालय की प्रथम श्रेणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के विद्यार्थी तक सब सन्तोष अनुभव करते थे।

यदुनाथ ने बी०ए० की परीक्षा दी थी और वह अनुभव कर रहा था कि अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होगा। परीक्षा-फल घोषित नहीं हुआ था कि वह मिर्ज़ापुर चल दिया।

राधा अभी विद्यालय में थी। उसकी परीक्षाएँ समाप्त नहीं हुई थीं और विद्यालय ग्रीष्मऋतु के अवकाश के लिए बन्द नहीं हुआ था। दो-तीन दिन उपरान्त की बात है। सुमित्रानन्दन और रघुवीर परीक्षा देकर लौटे ही थे कि राधा आ गई।

"आइए, राधा जी।" सुमित्रानन्दन ने कहा, "घर कब जा रही हैं?"

"मेरी परीक्षा आज समाप्त हो गई है और परसों विद्यालय बन्द होने वाला है। लड़कियाँ तो जानी आरम्भ हो गई हैं। मैं भी आज अथवा कल चली जाऊँगी।"

रघुवीर ने मुस्कराते हुए कहा, "अपनी छोटी बहिन को मेरी नमस्ते कहना। उसका पत्र आना क्यों बन्द हो गया है, मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ।"

"आपने कोई पत्र उसे लिखा था, जिसका उत्तर नहीं आया?"

"हाँ, दो लिख चुका हूँ।"

"तब तो कुछ बात होगी। पता करूँगी। पर मैं तो यह आपके मित्र से पूछने आई हूँ कि क्या मैं इनको पत्र लिख सकूँगी?"

"जहाँ तक मुझे ज्ञात है," सुमित्रानन्दन ने बताया, "दुर्गा की सगाई का प्रबन्ध कहीं अन्यत्र हो रहा है। इसपर भी माताजी ने लिखा है कि उसकी सगाई की घोषणा हो जाए तो फिर मेरे विषय में विचार आरम्भ होगा।"

"मेरे माता-पिता आपके विषय में पूछेंगे तो क्या कहूँ?"

"जो भी मन में आए, कह देना। एक बैल-बुद्धि से लेकर भगवान् शुक्राचार्य तक जो भी उपाधि उपयुक्त समझ आए, दे देना।"

"मैं आपकी प्रशंसा-निन्दा की बात नहीं पूछ रही। मैं तो यह पूछ रही हूँ कि आपका विवाह मुझसे होगा अथवा नहीं?"

"विवाह के विषय में जो व्यवस्था पिताजी दे गए हैं, वह ही अभी तक स्थित है। उन्होंने मुझे यह नहीं लिखा कि मिर्ज़ापुर में क्या बात हुई है। यह तुम अपने घर पर से जानकर लिखना। मैं उसकी तुलना पिताजी के कथन से करूँगा।

"देखो राधा! मेरी अन्तरात्मा कहती है कि हम लम्बे जीवन तक साथ-साथ चलते हुए सुख-दु:ख की नदी पार करेंगे। इसके लिए पिता जी का कहना है कि तपस्या और धैर्य से प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

"मेरे मन में एक योजना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या?"

"यदि सम्भव हो सका तो मैं और विन्ध्यवासिनी हथियापुर आएँगे और वहाँ हम रानी साहिबा के मेहमान रहेंगे।"

"यत्न करो! हो सका तो बहुत अच्छा रहेगा।"

राधा ने मिर्ज़ापुर जाकर इस बात के लिए यत्न आरम्भ किया। पहले तो इस दिशा में यत्न करने के लिए अपनी माँ से पूछा, "मां! हथियापुर के उपाध्याय यहाँ आए थे?"

"हाँ।"

"किसलिए आए थे?"

"तुम्हारी बहुत निन्दा करते थे।

"झूठ। मुझे विश्वास नहीं आता।"

"अपने पिता जी से पूछ लेना। मुझे तो उन्होंने यही बताया है।"

"क्या बताया है?"

"कहने थे कि आपकी बडी लड़की राधा महामूर्ख है,। जो एक निर्धन ब्राह्मण के लड़के को वरने का विचार करने लगी है। वह ब्राह्मण कुमार सुन्दर भी नहीं। शरीर का भद्दा और बुद्धि से बैल है।"

"पर माँ, तुमने तो उस ब्राह्मण कुमार को देखा है। क्या वह बैल दिखाई दिया है तुम्हें?"

"मैं तो रघुवीर को देखने के गई थी और उसे पसन्द कर आई थी। पसन्द तो तुम्हारे लिए किया था, परन्तु उसने तुमको मूढ़मति समझ तुम्हरी छोटी बहिन को ही पसन्द किया है।"

"तो इस मूढ़मति को उस ब्राह्मण बैल के साथ नत्थी कर दो।"

"हाँ, तुम्हारे पिता जी ने भी यही कहा है, परन्तु उसके बी०ए० का परीक्षा-फल देखकर ही विचार किया जाएगा। उन्होंने उपाध्याय जी से यह निश्चय किया है कि यदि सुमित्रानन्दन प्रथम डिवीजन में उत्तीर्ण हुआ तो तुम्हारे जैसी मूढ़मति को उसके घर भेज दिया जाएगा। तुम उसके घर की सफाई और चौका-बासन तो कर ही सकोगी।

"और यदि वह परीक्षा उत्तीर्ण न कर सका तो फिर दो मूर्खों को एक स्थान पर रखना ठीक नहीं। जीवन कलह-क्लेश में व्यतीत होगा।"

"और माँ, तुम भी यही कहती हो?"

"भला मैं तुम्हारे पिता की इच्छा के विपरीत कैसे कुछ कर सकती हूँ?"

इस वार्त्तालाप का प्रभाव यह हुआ कि राधा को अपनी इच्छा की पूर्ति के लक्षण दिखाई देने लगे। फिर एक दिन उसने विन्ध्यवासिनी के सम्मुख माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कहा, "रघुवीर जी ने कहा था कि यदि हमारी माता जी अपने परिवार सहित हथियापुर आने का समय निकाल सकें तो वे अपनी माता जी से निमन्त्रण दिलवा देंगे।"

"यह तो बहुत बड़ी बात है। बिना तुम्हारे पिता से सम्मति किए कैसे जा सकते हैं? साथ ही मेरे परिवार से वकील साहब बाहर कैसे रह सकते हैं और उनको तो यहाँ से अवकाश ही नहीं मिलता।"

"पर वह विधान परिषद् की बैठकों में तो जाते हैं?"

"पर वह समधिन के घर जाने में और विधान सभा के लिए जाने में अन्तर समझते हैं।"

"अन्तर तो है माँ, परन्तु यह उससे अधिक आवश्यक है। जैसे समय पर भोजन करना तथा सोना विधान सभा से अधिक आवश्यक है। विधान सभा मध्याह्न और रात को स्थगित कर दी जाती है। उसी प्रकार विधान सभा वर्ष-भर नहीं चलता। कुछ महीने चलाकर शेष समय सदस्यों को अपने निजी काम के लिए अवकाश दिया जाता है। उन निजी कामों में क्या समधिन के दर्शन करना सम्मिलित नहीं है?"

"बात तो ठीक है।"

"तो माँ, मान जाओ। अब पिताजी से पूछकर तिथि निश्चित कर दो तो मैं रघुवीर जी को लिख दूँ।"

माँ मुस्करा रही थी। राधा ने बात बदल दी। उसने विन्ध्यवासिनी से पूछ लिया, "तुमने रघुवीर जी को पत्र लिखने क्यों बन्द कर दिए हैं?"

"माता जी मेरे पत्र पढ़ लेती हैं और मुझे उनको वह कुछ लिखते हुए, जो लिखना मैं उचित समझती हूँ, लज्जा और संकोच होता है। जब से मुझे पता चला है कि मेरे पत्र खोलकर पढ़ लिये जाते हैं, मैंने पत्र लिखने बन्द कर दिए हैं।"

प्रमिला हँस पड़ी और बोली, "तुमने जो उचित लिखा है, उसपर मैंने कभी आपत्ति की है क्या?"

विन्ध्यवासिनी इसका अर्थ समझने के लिए माँ का मुख देखने लगी। माँ ने अर्थ समझा दिया, "जब आपत्ति नहीं की तो इसका अभिप्राय स्पष्ट है कि तुम कुछ अनुचित नहीं लिखती हो। जो अनुचित नहीं, वह लज्जास्पद भी नहीं और उसके लिखने में संकोच नहीं करना चाहिए।"

"हाँ।" राधा ने विन्ध्यवासिनी को कह दिया, "रघुवीर जी कहते थे कि उनके दो पत्रों का उत्तर अभी तुम्हारे जिम्मे है। दोनों का उत्तर अब एक साथ ही लिख दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

आखिर करुणानिधि की बैठक में साधु और लाला भवानीदास दोनों उपस्थित हो गए। जिन लोगों ने हल्द्वानी में भवानीदास को पीटा था, उनको छः-छः मास के लिए कारावास का दण्ड दिया गया। साधु यह सिद्ध करने में सफल हो गया कि वह उस दिन बस पर सवार होने के लिए बस स्टैण्ड पर गया ही नहीं। अतः वह इस दण्ड से बच गया। इसपर भी शान्ति बनाए रखने के लिए उसकी जमानत हो गई।

साधु के लड़के गरीबदास को पाँच वर्ष का कारावास का दण्ड हुआ। साधु का इन मुकदमों में पूर्ण संचित धन समाप्त हो गया था। उसकी सहकारी बैंक की अध्यक्षता और सहकारी समिति की सदस्यता ज़ब्त हो चुकी थी। अपनी भूमि पर डालने के लिए उसके पास धन ही नहीं रहा था। गाँव में ऋण देने वाला कोई नहीं था और सहकारी बैंक तथा समिति में उसके नाम के सामने काला निशान लग चुका था।

साधु करुणानिधि के पास सुलह के लिए पहुँचा तो करुणानिधि ने कह दिया, ''तुम दोनों में सुलह तो सरकार के न्यायालय ने करा दी है। अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?''

''पण्डित जी, अभी एक बात है, जिस पर मतभेद चल रहा है।''

करुणानिधि जानता तो था कि क्या बात है, परन्तु वह अपने मुख से कहना नहीं चाहता था। इस कारण उसने अपने ढंग पर ही बात जारी रखी। उसने कहा, ''तो उस विषय पर भी न्यायालय में निर्णय करा लो।''

इस पर साधु आवेश में कहने लगा, ''पण्डितजी, मान लीजिए, मैं मुहम्मदू की लड़की पर कुदृष्टि रखता था, परन्तु वही कुदृष्टि यदि केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार के मुख्य मन्त्री अथवा उनका कोई लड़का रखता तो क्षम्य हो जाती। हथियापुर का जुलाहा क्षमा के योग्य नहीं हुआ।

''ये मन्त्रीगण करोड़ों रुपये का गबन कर गए हैं और मैंने दस-बीस हज़ार तनिक शराब पीने के लिए निकाल लिए तो बस दण्डनीय हो गया। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझता हूँ कि मेरा विरोध इस कारण हो रहा है, क्योंकि मैं जुलाहा हूँ और ये मन्त्री तथा दूसरे सरकारी अधिकारी ब्राह्मण या क्षत्रिय हैं। इसका परिणाम यह होगा कि हम छोटी जाति वालों को जीवन-भर इनका विरोध करना ही पड़ेगा।''

करुणानिधि मुस्करा रहा था। उसने हल्की हँसी हँसकर कहा, ''तो मैं अब चमार हो गया हूँ, जो मुझसे सहायता लेने आए हो?''

साधू झेंप गया और मुख देखने लगा। इस पर पण्डितजी ने उसके विचारों को दिशा देने के लिए कहा, ''साधु भाई, तुम एक बात की भूल कर रहे हो। तुम्हारा विरोध इस कारण नहीं हो रहा कि तुम हथियापुर के एक जुलाहे के बेटे हो। वास्तव में यह ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा जुलाहे के बेटे का झगड़ा नहीं, वरन् एक चतुर बेईमान तथा एक बुद्धू बेईमान में भेद है। बेईमानी करने के लिए भी चतुराई की आवश्यकता होती है। चतुर बेईमान इस राज्य में मौज उड़ाते हैं और मूर्ख बेईमान बेईमानी करते हुए फँस जाते हैं।

''हमारा विरोध इस कारण भी नहीं कि पकड़े जाने वालों में एक जुलाहे का बेटा है, ब्राह्मण का बेटा नहीं।''

अब साधु ने अपने मतलब की बात कह दी। उसने कहा, ''आप हमारा फैसला करा दीजिए।''

इस आग्रह के अनुरूप पण्डित जी ने लाला भवानीदास और साधु को सायंकाल अपने बैठकघर में बुला लिया। लाला के सामने ही पण्डित जी ने पूछा, ''अब बताओ, साधु, क्या चाहते हो?''

''हमारा फैसला करा दीजिए।''

''विवाद का विषय क्या है?''

''लाला जी से ही पूछ लीजिए।''

''बताओ भवानीदास, अब झगड़े की बात क्या है?''

''पण्डित जी, एक बार मैंने आपको पहले भी बताया था कि मैंने साधु की बेईमानी के कुछ रुपये अपने अधिकार में कर लिये थे। इसने झगड़ा किया तो मैंने उस झगड़े में इसके रुपये ही व्यय करने आरम्भ कर दिए।

''अब झगड़े शान्त हो गए प्रतीत होते हैं, परन्तु इसकी बेईमानी के सब रुपये समाप्त नहीं हुए। साधु तथा साधु के लड़के से मचाए गए ऊधम पर इसके साढ़े बारह सहस्र रुपये में से पौने दस हज़ार व्यय हो चुके हैं। शेष पौने तीन हज़ार मेरे पास जमा है।

''पण्डित जी, यदि यह आप जैसे धर्मात्मा व्यक्ति के सम्मुख अपने गुनाहों के लिए क्षमा माँगे और आगे से ईमानदारी से जीवन चलाने की सौगन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ले तो वह पौने तीन हज़ार इसको दे दूँगा।

"इसकी बेईमानी की कमाई मैं अपने प्रयोग में नहीं ला रहा। सब इसी की बदमाशियों के प्रभाव को दमन करने के लिए ही लगा दी है।

"यदि यह आपके सामने बदमाशियों से बचने की सौगन्ध खाए तो इसका शेष रुपया इसको वापस कर दूँगा।"

"सुनाओ, साधु! क्या कहते हो?"

"तो महाराज, दिलवा दीजिए।"

पण्डित लाला का मुख देखने लगा तो लाला ने कह दिया, "पण्डित जी, मैं तो पहले भी इसकी बेईमानी का बोझ इसके कंधे पर ही डालना चाहता था। मैं केवल यह चाहता था कि इसने आप पर झूठे लांछन लगाए थे, उनके लिए आपसे क्षमा माँग ले।

"इसकी बेईमानी का धन प्रयोग कर नरक धाम में जाना नहीं चाहता था। यह अब आपकी शरण में आया है, अत: इसकी बेईमानी के धन में से जो बचा है, वह मैं इसे देने को तैयार हूँ।"

:: 2 ::

इस बार रघुवीर और सुमित्रानन्दन ग्रीष्म के अवकाश के दिनों में घर आए तो कुछ दिन यहाँ रह दोनों कश्मीर की यात्रा पर चले गए।

इन दिनों राधा का पत्र रघुवीर के नाम आया। पत्र कश्मीर भेज दिया गया, परन्तु सुमति रानी ने राधा को पत्र लिख दिया, "तुम्हारा पत्र रघुवीर को, जो कश्मीर-भ्रमण के लिए गया हुआ है, भेज दिया है। वह जुलाई के पहले सप्ताह में लौटेगा।"

राधा ने यह समाचार अपनी माँ को दिया तो उसने स्वयं अपनी सखी को लिख दिया, मैं हथियापुर भाइयों से मिलने के लिए आने वाली थी। विचार आया है कि इस बार परिवार सहित आऊँ, परन्तु रघुवीर कश्मीर में है। इस कारण अब उसके लौटने पर ही आऊँगी।"

प्रमिला अपनी तीनों अविवाहित लड़कियों और यदुनाथसिंह के साथ जुलाई की पहली तारीख को हथियापुर जा पहुँची। रघुवीर और सुमित्रानन्दन अभी लौटे नहीं थे। वह अपने बाल-बच्चों के साथ सुमति की हवेली में ही ठहरी थी। अगले दिन वह पण्डित जी तथा उनकी पत्नी गौरी से भी मिलने गई। वह अपनी लड़कियों और लड़के को साथ ले गई थी। पण्डित जी ने सबका स्वागत कर बैठाया और पूछ लिया, "वकील साहब नहीं आए क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं।"

"परन्तु बहन, आपने तो लिखा था कि आप सपरिवार आ रही हैं। वे आपके परिवार में नहीं हैं क्या?"

"मैं तो यह समझती थी, परन्तु वे कहते थे कि वे मेरे परिवार में नहीं, वरन् मैं और बच्चे उनके परिवार में हैं और वे नहीं आए।"

"आखिर वकील हैं न। अच्छा राधा! कैसा काम चल रहा है?"

"गुरुजी, कौन-सा काम?"

करुणानिधि उसके गुरु कहकर सम्बोधन करने पर हँस पड़े। परन्तु प्रमिला ने विस्मय में पूछ लिया, "राधा, इनकी शिष्या कब से बनी हो?"

"माँ, जब ये बनारस में आए थे, तब ये मुझे शिक्षा देने लगे थे। मैंने इनको कहा था कि आज इस शिक्षा के उपरान्त आप गुरु-पद पा ही गए हैं। भले ही दूसरा सम्बन्ध न बने। यह तो हो ही गया है।

"इस पर आपने कहा था, 'श्वसुर से गुरु-पद बहुत ऊँचा है। तुम गुरु मान रही हो तो ठीक है। शिष्या बनी रहोगी तो कल्याण की भागी बनोगी। पतोहू बनने से यह अतिरिक्त है।' माँ, तब से ये गुरु हैं।"

करुणानिधि ने कहा, "मैं चाहता था कि राधा के माता-पिता आकर हमारी घर-गृहस्थी देख जाते और बाद में राधा बेटी को यहाँ भेजने का विचार करते तो अधिक ठीक होता। वकील साहब नहीं आए तो कुछ हानि नहीं। परिवार का मुख्य प्राणी तो आ ही गया है।"

"गौरी!" उन्होंने अपनी पत्नी को सम्बोधन कर कहा, "तनिक राधा की माताजी को ले जाकर सौमित्र का कमरा दिखा दो, जिससे इनको पता चल जाए कि उसकी पत्नी को इस परिवार में क्या और कितना स्थान मिलने वाला है।"

प्रमिला ने देखा कि घर में अन्न, घी, दूध की कमी नहीं है, परन्तु फरनीचर का अभाव था। चटाइयाँ ही बैठने के लिए थीं। सोने के लिए तख्तपोश थे। सौमित्र की बड़ी भाभी का कमरा भी दिखा दिया गया। उसके एक बच्चा हो चुका था। राधा भी मकान देखने अपनी माँ तथा सुमित्रानन्दन की माँ के साथ थी। माँ का मुख यह देखकर मलिन हो रहा था और माँ की बेटी राधा का मुख प्रफुल्लित था।

जब सब लोग बैठक में आकर बैठे तो प्रमिला ने गम्भीर मुद्रा में कह दिया, "देखना तो राधा को था। मैं तो ऐसे ही साथ चली आई थी। यदि विवाह कर किसी को यहाँ आना है तो राधा को आना है।"

"परन्तु उसकी माता जी की सम्मति भी उसके लिए मूल्यवान् ही हो सकती है। देखो, बहन! मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सौमित्र शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त करने के पहले ही यहाँ आएगा और गाँव में ही कुछ काम करेगा।''

''क्यों ? राधा तो कहती थी कि आपका लड़का अपनी श्रेणी में चोटी का विद्यार्थी माना जाता है।''

''यह मैं जानता हूँ। उसके कालेज की परीक्षा का फल निकला है। वह सत्तर प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ है, परन्तु परीक्षा में अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होना ही तो पढ़ने का प्रयोजन नहीं है।

''बात यह है कि वहाँ असुर प्रवृत्ति के प्राध्यापक और विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त है और यह संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है। असुर में उनको मानता हूँ जो इन्द्रियों के दास हैं और इन्द्रिय विषयों की तृप्ति के लिए सब कुछ नैतिक-अनैतिक करने को तैयार हो जाते हैं।

''पिछले एक वर्ष का जो इतिहास सौमित्र ने बताया है, वह मेरे मन में संशय उत्पन्न कर रहा है कि उस जैसा लड़का या तो इन असुरों से लड़ता हुआ मारा जाएगा अथवा वहाँ के वातावरण से घबराकर घर चला जाएगा और कहेगा कि वह निर्धन और भिखारी होना पसन्द करेगा, परन्तु उन असुरों में रहना स्वीकार नहीं कर सकता।

''मैं उसके मन की भावनाओं का विरोध नहीं कर सकूँगा।''

''पर यह सब कुछ रोका नहीं जा सकता क्या ? असुरों को नियन्त्रण में नहीं रखा जा सकता क्या ?

''नहीं, कारण यह कि जो शिक्षा सन् 1832 से अपना विषाक्त प्रभाव उत्पन्न कर रही है, वह आज सन् 1969 में देश-भर में व्यापक रूप धारण कर चुकी है। किस-किसको बताऊँ अथवा किस-किसको समझाऊँ? देश के राष्ट्रपति से लेकर किसी स्कूल कॉलेज के चपरासी तक सब-के-सब जीवन का उद्देश्य सुख-भोग और धन-संचय मान चुके हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ करणीय, स्मरणीय, विचारणीय अथवा दर्शनीय रहा ही नहीं।

''देखो बहन, जब मैं जेल में था तो मेरे साथ आचार्य जी भी थे और उनसे नित्य होने वाली मेरी बातों का निष्कर्ष यह था कि इन लोगों के हाथ स्वराज्य अराजकता सूचक बन जाएगा और वह आज हो गया है।''

यदुनाथ सब समय चुपचाप पण्डित जी की बात सुनता रहा था। वह उनकी सत्यता को जानता और अनुभव करता था। वह सबसे अधिक प्रभावित हुआ था।

प्रमिला ने अपने रहने के स्थान पर जाकर राधा से पूछा, ''क्यों राधा, क्या समझी हो ?''

''किस विषय में माँ ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''विवाह कर इस घर में आने के विषय में?''

''माँ! यह घर सर्वथा 'रॉ-मैटेरियल' (कच्चे माल) की भाँति है। कोई भी इसे लेकर सुन्दर पदार्थ निर्माण कर सकता है। मूल बात है खाने-पीने और रहने की, वह यहाँ है।''

अगले दिन रघुवीर और सुमित्रानन्दन आ गए। उनके आने पर एक सप्ताह.भर पण्डित जी के घर और हवेली में धूम मची रही। सुमति ने रघुवीर की विन्ध्यवासिनी से और गौरी ने सुमित्रानन्दन की राधा से सगाई की घोषणा कर दी। गाँव वाला जो भी बधाई देने आता था, उसे मिठाई बाँटी जाती थी।

यदुनाथ को पण्डित जी की संगत पसन्द आई और वह उनकी दिनचर्या देखने और समझने का यत्न करने लगा।

करुणानिधि प्रात: छ: बजे तक सन्ध्योपासना से निवृत्त हो और अल्पाहार ले रानी जी के खेतों को देखने चले जाया करते थे। वहाँ उनका बड़ा लड़का मुंशी का काम करता था। वह काम करनेवालों की उपस्थिति लगा काम, जैसा पहले दिन पण्डित जी बता जाया करते थे, कराना आरम्भ कर देता था। दस बजे तक काम होता देख तथा जो कुछ कहने-सुनने को होता था, कह-सुन और उसके अनुसार आज्ञा रजिस्टर पर लिख वे घर पर लौट आते थे। अब उनको पीने को दूध मिल जाया करता था। दूध पी वे स्वाध्याय पर लग जाया करते थे। इन दिनों सुमति रानी के कार्यों की भरमार रहती थी। रघुवीर तथा सुमित्रानन्दन की सगाई के सम्बन्ध में कई प्रकार के कार्य तथा प्रबन्ध करने के लिए उपस्थित हो गए थे।

यदुनाथ पण्डित जी के साथ ही रहता था। वह खेतों में जाता था और वहाँ काम होते देखता था। एक-आध दिन पण्डित जी को स्वाध्याय करते भी उसने देखा था। मध्याह्न भोजन वह पण्डित जी के घर पर उनके साथ करता था। प्राय: इस समय विश्वविद्यालय, उसमें चल रही शिक्षा और अधिकारियों तथा विद्यार्थियों के व्यवहार पर चर्चा होती रहती थी। जो विशेष बात उसे पता तो थी, परन्तु वह उसे स्वाभाविक मान विचारणीय नहीं मानता था, अब सब गड़बड़ का मुख्य कारण प्रतीत होने लगी थी।

करुणानिधि का कहना था कि मुख्य दोष सरकार एवं सरकारी अधिकारियों का है। सरकार का कार्य विश्वविद्यालयों के कार्य से सर्वथा भिन्न है और उस भिन्न कार्य के अनुकूल ही सरकार शिक्षा को चला रही है। सरकार राजनीतिक संस्थान है, अत: सरकार से चलाई शिक्षा राजनीतिक दास बनाए बिना रह नहीं सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार जन-जन के मत पर चल रही है, अतः जनता को प्रसन्न करने की इच्छा विद्यार्थियों पर नियन्त्रण रखने में असमर्थ बन रही है। सरकार को राज्य की नीतियाँ चलाने के लिए कई प्रकार के छल-कपट करने पढ़ते हैं। इनका प्रभाव विद्यार्थियों पर होता है। कारण यह कि विद्यार्थी राज्य-कार्य के लिए तैयार किए जा रहे हैं।

करुणानिधि ने एक दिन बताया, 'सबसे बड़ी बात यह है कि प्रधान मन्त्री अथवा मुख्य मन्त्री की दया पर है राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल। इनके अधीन हैं प्रायः विश्वविद्यालयों के उपकुलपति। राजनीतिक सुविधाओं के लिए बच्चों की शिक्षा तोड़ी-मरोड़ी जाती है।

''राष्ट्रभाषा का उदाहरण लिया जा सकता है। इसकी दुर्दशा नीतिक शिक्षा में हस्तक्षेप का एक ज्वलन्त उदाहरण है। राजनीतिक गद्दियाँ हिन्दी का गला घोंट देने के लिए तैयार हो गई हैं।

''एक अन्य उदाहरण लिया जा सकता है। देश में शीघ्रातिशीघ्र औद्योगीकरण की आवश्यकता है, अतः इंजीनियरों की आवश्यकता है। उनके तैयार करने में धड़ाधड़ विद्यार्थी इंजीनियर बनाए जा रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि योग्य-अयोग्य, इस दिशा में रुचि रखने वाले और न रखने वाले सब इन श्रेणियों में भरती किए जा रहे हैं।

''इसी प्रकार विद्यार्थी अर्थशास्त्र में रुचि न रखते हुए, इसको समझने की योग्यता न रखते हुए अर्थशास्त्र की कक्षाओं में भरती किए जा रहे हैं।

''छात्र श्रेणियों में विषय को समझ नहीं सकते। उनकी रुचि भी अपनी पढ़ाई में है नहीं और वे श्रेणियों से निकल पढ़ाई के अतिरिक्त कार्य करने लगते हैं। पढ़ाई के कमरे से बाहर देश में राजनीति भर रही है, अतः ये विद्यार्थी इसमें लग जाते हैं और फिर राजनीतिक नेताओं की अंगुलियों पर नाचने लगते हैं।''

''परन्तु इसका इलाज क्या है?'' यदुनाथ रोग को तो समझने लगा था। सबसे कठिन बात थी रोग की चिकित्सा की।

करुणानिधि का कहना था, ''इसमें प्रथम पग है विश्वविद्यालयों को सर्वथा सरकारी नियन्त्रण से मुक्त कर दिया जाए। शिक्षा मन्त्री का पद उड़ा देना चाहिए। प्रत्येक विश्वविद्यालय के उपकुलपति अपनी योग्यता के लिए वहाँ कार्य करने वाले प्राध्यापकों की सम्मति से निर्वाचित हों। वे प्रबन्ध और शिक्षा के विषय में स्वतन्त्र न हों। उनको प्राध्यापकों की सम्मति से ही कार्य और प्रबन्ध करना चाहिए। धन सरकार और धनी-मानी दें। अच्छी बात तो यह होगी कि धनी-मानी दें, परन्तु उनका प्रबन्ध और शिक्षा में हस्तक्षेप न हो।

''सरकार, औद्योगिक तथा व्यावसायिक संस्थान विश्वविद्यालयों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपाधियों को देखकर नौकरी न दे। सबकी अपनी-अपनी परीक्षा लेकर सेवक नियुक्त करें। यदि किसी विशेष कला-कौशल की योग्यता की आवश्यकता हो तो उसकी शिक्षा वे चुने हुए सेवकों को दें। इस काल में वे उनको शिक्षार्थी के रूप में रखें।

''अभिप्राय यह कि शिक्षा पूर्णरूप से सरकारी नियन्त्रण से मुक्त और आचार्यों के नियन्त्रण में हो जाए।''

''इससे तो प्रगति रुक जाएगी।''

''हाँ; जिस दिशा में प्रगति हो रही है, वह अवश्य रुक जाएगी और इसी को रोकने के लिए ही यह योजना बता रहा हूँ। यह प्रगति भयंकर परिणाम उत्पन्न कर रही है और इससे भी अधिक भयंकर परिणाम होने वाले दिखाई देते हैं।''

:: 3 ::

विश्वविद्यालय खुलने पर सुमित्रानन्दन और रघुवीर वाराणसी जा पहुँचे। इस बार वे इन्द्रजीत के टोले के समीप भी नहीं जा सके। कारण यह कि बात स्पष्ट हो चुकी थी कि इन दोनों ने राधेश्याम से मिलकर मण्डल इत्यादि को फँसाने के लिए मई दिवस की सजावट का विरोध किया था। द्विजेन्द्र मण्डल और उसके साथ चार अन्य विद्यार्थी विश्वविद्यालय से निकाल दिए गए थे। कुछ को एक-एक वर्ष के लिए परीक्षा देने से रोका गया था।

विश्वविद्यालय में पढ़ाई शान्तिपूर्वक चल रही थी कि इस समय एक स्थायी उपकुलपति नियुक्त हो गए। नियुक्ति का ढंग ऐसा था कि केन्द्रीय सरकार का इसके निर्वाचन में भारी हाथ था। शिक्षा मन्त्री तो सर्वथा प्रधानमन्त्री के अधीन होता है, अतः वह विश्वविद्यालय के भाग्य का विधाता हो जाता है।

जिस दिन नए उपकुलपति आए, आचार्य देवेन्द्रनाथ, धर्मवीर तथा आयंगर इत्यादि को छोड़ इन्द्रजीत मुख्य परामर्शदाता बना लिया गया।

सबसे प्रथम बात यह हुई कि मण्डल इत्यादि विद्यार्थी, जो अनुशासन भंग करने तथा विद्यालय में तोड़-फोड़ करने के अपराध सिद्ध होने पर निकाल दिए गए थे, पुनः ले लिए गए। जो लड़के परीक्षा से वर्जित किए गए थे, उनके लिए सितम्बर के मध्य में होने वाली परीक्षाओं में अवसर प्रस्तुत कर दिया गया।

परिणाम यह हुआ कि परीक्षाएँ समाप्त होते ही पुनः विश्वविद्यालयों में दंगे होने लगे।

एक दिन जब रघुवीर और सुमित्रानन्दन भोजन करने गए हुए थे, उनके कमरे का ताला तोड़ एक युवक भीतर घुस गया। वह अभी अलमारी में रखे पर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उठा ही रहा था कि साथ के कमरे के लड़के को कुछ सन्देह हुआ। वह अपने कमरे से निकल रघुवीर के कमरे में झाँकने लगा तो उसे कोई अपरिचित सूरत शक्ल का युवक पर्स में से रुपये निकाल जेब में रखता दिखाई दिया। उसने शोर मचा दिया और लोग तुरन्त चोर को रंगे हाथ पकड़ने में सफल हो गए।

जब उसको पकड़कर वार्डन के कमरों की ओर ले जा रहे थे तो लड़कों को पता चला कि वार्डन कहीं गए हैं और यह न समझ कि उन्हें क्या करना चाहिए, चोर को छात्रावास के बाहर ले आए। वहाँ उसकी पिटाई आरम्भ हुई तो फिर पिटाई की सीमा नहीं रही। जब वह अचेत हो गया तो उसे उठाकर हस्पताल पहुँचा दिया गया। वहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

रघुवीर और सुमित्रानन्दन अभी भोजन ही कर रहे थे कि किसी ने आकर बताया कि उनके कमरे में से चोर चोरी करता पकड़ा गया है।

वे खाना छोड़ भागे। मार्ग में ही उनको कुछ लड़के किसी अचेत व्यक्ति को खाट पर डाले हुए हस्पताल की ओर जाते दिखाई दिए। साथ जाने वालों में से एक इनके साथ वाले कमरे का, जिसने चोर को चोरी करते देखा था, पूर्ण घटना का विवरण बताने लगा।

इस लड़के ने सुमित्रानन्दन को चोर के हाथ से छीने नोटों का बण्डल वापस करते हुए कहा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी पिटाई इतनी प्रबल हुई है कि वह बच नहीं सकेगा।''

इस पर रघुवीर को चिन्ता लग गई। वह कमरे को एक अन्य ताला लगा हस्पताल की ओर भागा। परन्तु उसके वहाँ पहुँचने से पहले चोर का देहावसान हो चुका था। उम समय विश्वविद्यालय का रैक्टर वहाँ उपस्थित था और वह लड़कों के बयान ले रहा था। मामला पुलिस के हाथ में दिया गया और जाँच आरम्भ हुई। एक स्थानीय कालेज के प्रिन्सिपल को भी जाँच के लिए नियुक्त किया गया।

दोनों पुलिस और प्रिन्सिपल की जाँच चलती-चलती रामकृष्ण छात्रावास के रहने वाले द्विजेन्द्र मण्डल तक जाकर समाप्त हो गई। यह पता चला कि मरने वाला युवक विश्वविद्यालय का छात्र नहीं था। वह पम्पिंग स्टेशन पर काम करने वाला एक मिस्त्री था। कई दिन से मण्डल और वह परस्पर मेल-मुलाकात करते देखे जा रहे थे। मण्डल का कहना था कि वह उसके द्वारा विश्वविद्यालय के 'सी' क्लास सेवकों की यूनियन का नवीन निर्माण चाहता था। उमका सम्बन्ध इसी के निमित्त था।

मृत व्यक्ति के साथियों का कहना था कि वह चोर नहीं था। हाँ, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबों से हमदर्दी अवश्य रखता था, उसकी मृत्यु को एक साम्प्रदायिक रूप दिया जाने लगा। यह घोषित किया जाने लगा कि हिन्दुओं ने एक मुसलमान को पीट-पीटकर मार डाला है। परिणामस्वरूप नगर में भी छुटपुट झगड़े होने लगे।

रघुवीर के पुलिस में तथा जाँच करनेवाले प्रिन्सिपल दोनों के समक्ष बयान हुए। रघुवीर का बयान यह था कि वह सुमित्रानन्दन के साथ भोजनालय में भोजन कर रहा था कि एक लड़का भागा-भागा आया और कहने लगा कि उसके कमरे में से चोर चोरी करता पकड़ा गया है। वे दोनों खाना छोड़कर कमरे की ओर लपके। मार्ग में बीस तीस विद्यार्थी एक खाट पर किसी को डाले हुए हस्पताल ले जाते मिले। पड़ौस के कमरे में रहने वाले अमरनाथ ने उसे रुपये दिए, जो वह कहता था कि चोर के हाथ से छीने गए थे।

कमरे को ताला लगा वे हस्पताल पहुँचे, परन्तु इसके पूर्व चोर की मृत्यु हो चुकी थी। उपकुलपति का विचार था कि घटना विश्वविद्यालय कैम्पस के भीतर हुई थी, इस कारण इसकी रिपोर्ट पुलिस को नहीं करनी चाहिए थी और उन्होंने पुलिस की जाँच के साथ-साथ स्थानीय कालेज के एक प्रिन्सिपल को जाँच करने के लिए नियुक्त कर दिया।

उस जाँच आयोग के सामने भी रघुवीर के बयान हुए। मृत को पीटने वालों में जाँच-पड़ताल करने पर पता चला कि सबसे आगे बढ़कर पीटने वाले तीन विद्यार्थी थे। उन तीनों की मित्रता भी मण्डल से अधिक पाई गई और मण्डल के इनके विषय में भी बयान हुए। मण्डल का कहना था कि वे मित्र अवश्य हैं, परन्तु उसकी मित्रता का उनके चोर को पीटने से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं।

पुलिस का विचार था कि यह चोरी करवाना मण्डल का काम था और उसको मरवा डालना भी उसी का काम है। परन्तु जब उपकुलपति ने इस अनुमान के प्रमाण माँगे तो पुलिस ने कह दिया, "हम इस मामले को खुफिया पुलिस के पास भेज देते हैं और वह जाँच करेगी।"

उपकुलपति ने इसकी स्वीकृति नहीं दी। इस प्रकार की जाँच से विश्वविद्यालय के वातावरण के बिगड़ने की सम्भावना समझी गई।

इन्हीं दिनों जब नगर में हिन्दू-मुसलमान तनाव बढ़ा हुआ था।

नगर से आने वाले कुछ विद्यार्थी बिना टिकट के यात्रा करते पकड़े गए। उन विद्यार्थियों को मैजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया तो मैजिस्ट्रेट ने उनको दस-दस रुपये जुर्माना और अदालत के उठने तक कैद का दण्ड दिया। इस पर विद्यार्थियों में रोष फैल गया और एक दिन कुछ विद्यार्थियों ने उसी रूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आने वाली कारपोरेशन की बस को विश्वविद्यालय में कैम्पस के द्वार के बाहर आग लगा फूँक डाला।

इसकी जाँच भी उपकुलपति ने कराई और छात्रों से सहानुभूति रखने वाली जाँच समिति किसी भी आग लगाने वाले छात्र को नहीं पकड़ सकी। नगर निगम के अधिकारियों के कहने पर पुलिस जाँच करने कैम्पस में आई, परन्तु उपकुलपति ने पुलिस मैजिस्ट्रेट को कैम्पस से निकल जाने की आज्ञा दे दी।

:: 4 ::

विश्वविद्यालय में होने वाली इन घटनाओं का दोष प्रगतिशील धड़े वाले राधेश्याम और उसके साथियों पर लगाते थे। राधेश्याम और उसके साथी इसका प्रतिवाद करते थे। वे कहते थे कि विश्वविद्यालय से बाहर किसी निष्पक्ष न्यायाधीश के द्वारा जाँच कराई जाए। परन्तु इस प्रकार की जाँच नहीं हुई। विश्वविद्यालय के अधिकारी ऐसी जाँच से पुनः विद्यालय में हलचल की आशंका करते थे।

रघुवीर और सुमित्रानन्दन देख रहे थे कि विश्वविद्यालय में भीतर ही भीतर किसी प्रकार की खिचड़ी पक रही है। इससे दोनों मित्र विश्वविद्यालय की शिक्षा और प्रबन्ध से अधिक से अधिक विक्षुब्ध होते जाते थे। इनके विचार-विनियमों में यदुनाथ और राधा भी सम्मिलित होने लगे थे। यदुनाथ का कहना था, ''रघुवीर भैया, आप लोगों से मेल-जोल के कारण मैं अब इन्द्रजीत के साथियों में 'परसोना नान ग्राटा' (एक अविश्वसनीय व्यक्ति) हो गया हूँ, परन्तु कभी-कभी उस मण्डली के सदस्य मिलते हैं तो वहाँ की बातें बताते रहते हैं।

''यह बात वहाँ खुलेआम कही जाती है कि विश्वविद्यालय के नाम में 'हिन्दू' शब्द रखकर हिन्दुओं ने विश्वविद्यालय को ही विनष्ट कराने का प्रयास किया है। अब कोई भी ईमानदार व्यक्ति इस विश्वविद्यालय की ईंट से ईंट बजाए बिना दम नहीं ले सकता।''

राधा ने कह दिया, ''मेरी एक सहेली कह रही थी कि कुछ लोग यह भी प्रचार कर रहे हैं कि कैम्पस में विश्वनाथ जी का मन्दिर एक काला धब्बा है। इसे मिटाने का यत्न होना चाहिए।''

''विश्वविद्यालय में तो कोई भी छात्र इस मन्दिर की ओर अंगुली नहीं कर सकता। बाहर का ही व्यक्ति कोई कुछ खराबी करे तो करे।'' सुमित्रानन्दन ने अपनी सम्मति बता दी।

रविवार का दिन था। यह विचार था कि रघुवीर, सुमित्रानन्दन, यदुनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राधा प्रातः का अल्पाहार लेकर स्वामी जी की कुटिया में जाएँगे और वहाँ स्वामीजी से नौका माँग दिन-भर नौका-रोहण करेंगे। राधा ने अपने वार्डन से दिन-भर की छुट्टी ले रखी थी।

यह निश्चय था कि यदुनाथ ठीक साढ़े आठ बजे रघुवीर के कमरे में आएगा और रघुवीर तथा सुमित्रानन्दन दिन-भर के खाने का सामान लेकर चलने के लिए तैयार रहेंगे। वहाँ से तीनों महिला छात्रावास के द्वार पर पौने नौ बजे राधा को मिलेंगे और फिर चारों स्वामी जी की कुटिया पर पहुँचेंगे। नौका-विहार के उपरान्त तीन बजे के लगभग वे वापस होंगे और चार-साढ़े चार बजे छात्रावास में पहुँच जाएँगे।

यदुनाथ समय पर नहीं आया। उसे डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर पर बुलाया गया था। रघुवीर इत्यादि यदुनाथ की प्रतीक्षा नौ बजे तक करते रहे, परन्तु जब वह नहीं आया तो दोनों मित्र कारण जानने के लिए रामकृष्ण छात्रावास को चल पड़े। यदुनाथ के कमरे को ताला लगा देख वे कुछ देर तक वहाँ खड़े उसकी प्रतीक्षा करते रहे। जब उसका कहीं पता नहीं चला तो यह विचार बना कि राधा अपने छात्रावास के द्वार पर खड़ी प्रतीक्षा करती होगी, उसे चलकर कह दें कि नौका-रोहण का कार्यक्रम स्थगित किया जा रहा है।

जब ये महिला छात्रावास के बाहर पहुँचे तो राधा वहाँ खड़ी नहीं मिली। इन्होंने विचार किया कि बहन-भाई कहीं इकट्ठे ही गए हैं। कदाचित् मिर्ज़ापुर से कोई आने वाला है और ये उसे स्टेशन पर लेने गए हैं। यह विचार कर वे स्वामी जी की कुटिया को चल पड़े।

पीछे एक दुर्घटना घट गई। यदुनाथ डाक्टर इन्द्रजीत के क्वार्टर पर पहुँचा तो डाक्टर साहब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। डाक्टर माहब ने यदुनाथ को बैठाया और उसे मार्क्सवाद पर व्याख्यान देने लगा। डाक्टर साहब का कहना था, "संसार एक अति विकट स्थान है। यहाँ जीवित वही रह सकता है, जो प्रत्येक प्रकार का छल-कपट करना जानता है। मनुष्य की सफलता की मात्रा उसमें सफलता से छल-कपट चला सकने की योग्यता पर निर्भर करती है। पुराने काल के राजा, रईस, इस काल के प्रधानमन्त्री से लेकर चपरासी पर्यन्त, एक साधारण सड़कों पर खौंचा लगाने वाले से लेकर बिरला और टाटा तक और एक मन्दिर के बाहर खड़े भिखारी से लेकर विश्वविद्यालय के धनी मानी विद्यार्थी पर्यन्त सब-के-सब दूसरों से धोखा, छल, कपट का व्यवहार करते देखे जाते हैं।

"इस पृष्ठभूमि पर ही हमें अपना व्यवहार निश्चय करना है। हम साधनविहीन प्रोलिटेरिएट की हिमायत में खड़े हुए हैं और अपना कार्यक्रम निश्चय कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो यदुनाथ, मैं पुनः अपने सब पुराने साथियों को नवीन साथियों के साथ मोर्चे पर खड़ा कर एक बड़ी योजना बनाना चाहता हूँ। तुम कुछ दिन से बुर्जुआ मानसिक अवस्था वालों की संगत में घूमते हुए मोर्चे से विचलित होते चले जाते हो। बताओ, तुम कहाँ खड़े हो?"

यदुनाथ ने शीघ्र ही छुट्टी लेने के विचार से कह दिया, "डाक्टर साहब, मैं अभी भी वही विचार रखता हूँ, जो पहले रखता था। केवल मैं जीवन का यह समय इस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं समझता।

"मैंने पिछले दो वर्ष प्रोलिटेरिएट योजना में बहुत समय दिया है और परिणाम यह हुआ है कि मैं बी०ए० की परीक्षा में द्वितीय डिवीजन में उत्तीर्ण हो सका हूँ और बहुत कठिनाई से 'लॉ-कालेज' में प्रवेश पा सका हूँ। इस कारण मैंने यह निश्चय किया है कि आगामी दो वर्ष तक सार्वजनिक कार्यों से छुट्टी पाकर पढ़ाई में चित्त लगाऊँगा। तदुपरान्त मैं साम्यवाद के मोर्चे पर डट जाऊँगा।"

"तब तुम कर चुके। तब तक तुम्हारा विवाह हो जाएगा और फिर बच्चे होने लगेंगे और तुम उनके खाने-पीने के लिए पैदा करने के लिए धनियों के मुकदमे ले-लेकर छल-कपट का जीवन चलाओगे।"

यदुनाथ विचार कर रहा था कि डाक्टर स्वयं क्या कर रहा है? पन्द्रह सौ रुपये महीना वेतन पाता हुआ बीवी को गाँव में रखे हुए यहाँ सुकुमार विद्यार्थियों को खराब करता हुआ जीवन व्यतीत कर समझ रहा है कि यह किसी प्रकार का कल्याण.कार्य कर रहा है।

वह कहने लगा, "मैं चाहता हूँ कि कम से कम आप जितनी आय कर लूँ, तब विवाहादि की बात विचार करूँगा...."

इस समय मण्डल ड्राइंगरूम में घुस आया और यदुनाथ को वहाँ बैठा देख झिझककर खड़ा हो गया।

डाक्टर ने प्रश्न-भरी दृष्टि से मण्डल की ओर देखा तो उसने डाक्टर साहब को संकेत से द्वार के समीप ही बुला लिया।

यदुनाथ समझ गया कि उससे चोरी-चोरी कोई बात की जा रही है। इस पर भी वह उसका अपने से सम्बन्ध न देख बैठा था। मण्डल और डाक्टर बैठक के द्वार पर जाकर धीरे.धीरे बात करने लगे थे।

एकाएक यदुनाथ को स्मरण हो आया कि उसकी प्रतीक्षा रघुवीर इत्यादि करते होंगे। वह उठा और छुट्टी माँगने के लिए दोनों के समीप जा खड़ा हुआ। डाक्टर की पीठ बैठक की ओर थी और मण्डल बता रहा था, "सुमित्रानन्दन इत्यादि वहाँ नहीं थे और लड़की अब द्वार के बाहर खड़ी रो रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और साथी?" प्रोफेसर साहब का प्रश्न था।

मण्डल का ध्यान यदुनाथ की ओर चला गया। उसने बात को बदल उससे पूछ लिया, "हाँ, यदुनाथ, क्या चाहते हो?"

चौंककर डाक्टर घूमा और यदुनाथ की ओर प्रश्न.भरी दृष्टि से देखने लगा। यदुनाथ ने कह दिया, "इस समय मैं एक आवश्यक काम से जा रहा हूँ। फिर किसी समय बात कर सकूँगा।"

डाक्टर चुप रहा और यदुनाथ उनके समीप से ही क्वार्टर से निकल गया। वह यह सुन विस्मित था कि सुमित्रानन्दन इत्यादि वहाँ नहीं हैं और वह कमरे के बाहर खड़ी रो रही है? शंकित मन वह बिरला छात्रावास की ओर चल पड़ा।

जब यदुनाथ चला गया तो डाक्टर ने कहा, "मण्डल, तुम्हारे सब काम गधों के-से होते हैं। चाहिए तो यह था कि लड़की को रघुवीर के कमरे में जाने दिया जाता और बाहर से उनका द्वार बन्द कर हल्ला कर दिया जाता। मैं चाहता था कि सुमित्रानन्दन अनाचार के अपराध में विश्वविद्यालय से निकाल दिया जाता। यदि रघुवीर भी छुट्टी पा जाता तो और भी ठीक था और अब तुम्हारे साथियों ने लड़की से दुराचार किया और भाग गए हैं। भला, बताओ कि इसमें हमारी योजना का क्या बना?"

"डाक्टर साहब, जो कुछ हुआ है, स्वाभाविक बात थी। पका आम सामने देख वे चूसने लगे थे। मैं उनको दोष नहीं दे सकता।"

"अच्छा, अब जाओ और देखो मैं यत्न करता हूँ कि मामला पुलिस में न जाए।"

:: 5 ::

राधा अपने छात्रावास के द्वार पर प्रतीक्षा करती-करती ऊब गई तो रघुवीर के कमरे के बाहर आ पहुँची। कमरे को ताला लगा था। वह अभी विचार ही कर रही थी क्या करे कि साथ के कमरे में से एक विद्यार्थी निकला और राधा को देख पूछने लगा, "बहन जी, सुमित्रानन्दन को देख रही हैं?"

"हाँ।"

"दोनों मित्र मुझे कह गए हैं कि आप आएँ तो आपको अपने कमरे में बैठाऊँ। एकाएक दोनों को वार्डन साहब ने बुला भेजा है।"

"तो मैं यहाँ प्रतीक्षा करती हूँ।"

"यह ठीक प्रतीत नहीं होता। आप भीतर आ बैठिए न।"

राधा झिझकती हुई साथ के कमरे में चली गई। वहाँ एक अन्य विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठा था। इससे राधा आश्वस्त हो एक कुर्सी पर बैठ गई।

एकाएक दूसरा लड़का उठा, कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर खड़ा हो गया। तदनन्तर दोनों ने राधा से दुराचार किया। वह छटपटाती रही। एक उसके मुख पर हाथ रख उसकी आवाज़ मुख से निकलने को रोकता रहा और दूसरा दुष्कृत्य करता रहा।

इसके उपरान्त उन्होंने राधा को कमरे से निकाला और स्वयं अपने कमरे को ताला लगा चल दिए। राधा किंकर्त्तव्यविमूढ़ वहाँ खड़ी रोती रही। आते-जाते लड़के उसे देख पूछने लगे, ''क्या बात है, बहन जी? रो क्यों रही हो?'' वह उत्तर नहीं दे सकी। बात वार्डन तक पहुँची। वह भागा-भागा आया और राधा को अपने कमरे में ले गया। वहाँ राधा ने हिचकियाँ लेते हुए अपने साथ बीती बात बताई तो उसने तुरन्त उपकुलपति के पास तदनन्तर पुलिस में रिपोर्ट कर दी।

इस समय यदुनाथ वहाँ आ पहुँचा और वार्डन के यहाँ से राधा को महिला छात्रावास में ले गया।

पुलिस जाँच करने आई तो उपकुलपति ने वार्डन को बुला भेजा।

रघुवीर और सुमित्रानन्दन मध्याह्नोत्तर साढ़े चार बजे छात्रावास में आए तो वहाँ पुलिस को बैठे जाँच करते देख विस्मय में खड़े रह गए। पुलिस ने दोनों के बयान लिखे और पीछे ये पूछने लगे, ''इंस्पेक्टर साहब! बात क्या है?''

पुलिस इंस्पेक्टर ने वार्डन की रिपोर्ट और बयान पढ़कर सुना दिए। इस पर तो दोनों के मुख क्रोध से लाल हो गए। पुलिस इंस्पेक्टर ने बताया कि लड़की और उसके भाई के बयान ले आए हैं। लड़की का बयान है कि आपके कमरे के बगल के कमरे में यह कुकृत्य हुआ है।

सुमित्रानन्दन उलटे पाँव वार्डन के पास पहुँचा तो उसने बताया, ''पौने दस बजे के लगभग लड़कों ने मुझे बताया कि एक लड़की तुम्हारे द्वार पर खड़ी रो रही है। मैं वहाँ पहुँचा तो यदुनाथसिंह की बहन को पहचान गया। मैं उसे अपने कमरे में ले आया तो उसने बताया कि पूर्व निश्चयानुसार वह आपकी प्रतीक्षा अपने छात्रावास के द्वार पर करती रही थी। वहाँ से वह तुम्हारे कमरे पर पहुँची और पीछे साथ के कमरे वाले लड़कों ने यह दुराचार किया है।

''मैंने पुलिस में रिपोर्ट की थी और उपकुलपति को भी सूचना भेज दी है। पुलिस तो ग्यारह बजे के लगभग आ गई थी और उपकुलपति ने, कह नहीं सकता कि क्यों, कोई कार्यवाही नहीं की। जब पुलिस की जाँच आरम्भ हुई तो उन्होंने मुझे बुला भेजा। उनका विचार था कि इस घटना का समाचार पुलिस में नहीं देना चाहिए था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पुलिस तो आ गई है और वे क्या करते हैं, अभी देखना है।"

रघुवीर और सुमित्रानन्दन वहाँ से यदुनाथ के कमरे को चले गए। यदुनाथ वहाँ भी नहीं था। उसके कमरे को ताला लगा था। सुमित्रानन्दन ने रघुवीर को कहा, "तुम अपने कमरे में चलो। वहाँ यदुनाथ की प्रतीक्षा करो। मैं राधा से मिलकर आता हूँ।"

रघुवीर चाहता था कि इस विषय में यदुनाथ से मिलकर विचार करना चाहिए कि किस प्रकार कुकृत्य करने वाले दोनों विद्यार्थियों को पूर्ण दण्ड दिलवाया जाए? वह यह उचित ही समझता था कि सुमित्रानन्दन अकेला ही राधा से मिले और उसे भावी जीवन के विषय में आश्वासन दे। अत: वह सुमित्रानन्दन को यह कह कि वह उसकी भी अपने कमरे में प्रतीक्षा करेगा, कमरे को चला गया।

सुमित्रानन्दन महिला छात्रावास की ओर चल पड़ा और रघुवीर अपने कमरे में उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता जाता था रघुवीर बेचैन होता जाता था। वह कमरे में सवा पाँच बजे पहुँचा था और अब सायं के आठ बज गए थे। न तो यदुनाथ आया और न सुमित्रानन्दन। वह समझ नहीं सका था कि दोनों किधर गए हैं और क्यों नहीं आ रहे? वह यदुनाथ के कमरे में गया। वह वहाँ नहीं था और उसका कमरा खाली पड़ा था। वह समझ गया कि यदुनाथ मिर्ज़ापुर चला गया है, परन्तु सुमित्रानन्दन का क्या हुआ? वह विचार कर रहा था कि उसके लापता होने की रिपोर्ट पुलिस में करे अथवा वार्डन के पास करे। वह इन्हीं विचारों में लौटने लगा तो उसे एक विद्यार्थी को आश्रय दिए कुछ विद्यार्थी हस्पताल से लाते दिखाई दिए। वह आगे बढ़कर देखने लगा तो उसे पता चला कि द्विजेन्द्र मण्डल बुरी तरह घायल और सिर-पाँव पर पट्टियाँ बँधा हुआ है और तीन विद्यार्थी उसे ले जा रहे हैं। रघुवीर समझा कि हो न हो इसे सुमित्रानन्दन ने पीटा है, परन्तु वार्डन और पुलिस के कहने से वह समझ नहीं सका कि मण्डल का आज की घटना से सम्बन्ध है अथवा नहीं।

अब उसे सुमित्रानन्दन की चिन्ता लग गई। एकाएक उसको विचार आया कि सुमित्रानन्दन अवश्य कमरे की ओर गया होगा।

वह अपने कमरे पर पहुँचा तो अपने कमरे में प्रकाश देख सन्तोष अनुभव करने लगा। उसने कमरे का द्वार जो भीतर से बन्द था, खटखटाया तो सुमित्रानन्दन ने द्वार खोल दिया।

सुमित्रानन्दन अपना और रघुवीर का सामान बाँध रहा था।

"क्या है दादा?" रघुवीर ने विस्मय में पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानन्दन ने मुस्कराते हुए कहा, "द्वार बन्द कर दो और सामान बाँधो।"

"क्यों?"

"हम घर जा रहे हैं। यहाँ पढ़ाई समाप्त हो गई। जल्दी करो, गाड़ी पकड़ने के लिए दौड़ना पड़ेगा।"

रघुवीर बिना कुछ और पूछे सामान बाँधने लगा। दस मिनट में सामान बाँधा गया। सुमित्रानन्दन ने कहा, "भैया! दो रिक्शा ले आओ। मैं वार्डन को सूचना देने जा रहा हूँ।"

सुमित्रानन्दन ने वार्डन को बताया, "मैं और रघुवीर घर जा रहे हैं और कमरा खाली कर रहे हैं।"

"क्यों?"

"अभी तो हम अपने माता-पिता से सम्मति करने जा रहे हैं कि इस विश्वविद्यालय में पढ़ने से कुछ लाभ भी है अथवा नहीं। मेरा विचार है कि वे हमारे यहाँ से चले जाने पर आपत्ति नहीं करेंगे। यदि आना हुआ तो एक सप्ताह तक आ जाएँगे।"

वार्डन अवाक् बैठा रह गया। सुमित्रानन्दन ने हाथ जोड़ नमस्ते कही और वहाँ से निकल आया।

:: 6 ::

सुमित्रानन्दन और रघुवीर जब रेल के डिब्बे में बैठ गए और गाड़ी चल पड़ी तो रघुवीर ने पूछा, "दादा, अब तो बताओ कि कहाँ रहे हो इतनी देर तक और राधा मिली अथवा नहीं?"

"मिली थी। वह जब वार्डन के कमरे में आई तो कितनी देर तक बैठी आँसू बहाती रही। मैं कुछ देर तक उसके शान्त होने की प्रतीक्षा करता रहा। आखिर मैंने पूछा, 'मैं यदुनाथ से मिलना चाहता हूँ।'

"इस पर वह सतर्क हो बोली, 'चलिए, मैं आपको छात्रावास के बाहर तक छोड़ आऊँ।'

"इस पर मैं समझ गया कि अवश्य कुछ रहस्य की बात है। मैं उठकर बाहर चला आया। उसने द्वार की ओर चलते हुए कहा, दादा कहता था कि वह जब तक इस अपमानजनक कृत्य का बदला नहीं ले लेता, तब तक जल का एक घूँट भी नहीं ले सकता। उसने बताया है कि मण्डल की योजना से यह हुआ है और वह इन तीनों में से जिसको भी पा जाएगा, उसकी हत्या करके ही पानी पिएगा। एक ठाकुर की बहन के साथ यह दुराचार सहन नहीं हो सकता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''उसने मुझे कहा है 'यदि वह न लौटा तो मैं मिर्ज़ापुर चली जाऊँ। मैं अभी तक उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। यह बात मैं वहाँ अपने वार्डन के सामने नहीं बता सकती थी।''

''मैंने कहा, 'अच्छा राधा, फिर मिलेंगे। मैं कुछ ऐसा ही विचार कर रहा हूँ, जैसा कि यदुनाथ ने कहा है।''

''इतना कह मैं वहाँ से चला आया। मेरा विचार है कि हमारे पड़ौस के कमरे वाले तो बनारस छोड़ गए हैं। मैं उनकी बात किसी दूसरे दिन के लिए छोड़ अँधेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा। सात बजे मैं मण्डल के कमरे के बाहर जा पहुँचा। उसको वहाँ न देख मैं उनकी भोजनशाला को चल पड़ा। वह वहाँ कुछ लड़कों के साथ खाना खा रहा था। मैं बाहर प्रतीक्षा करता रहा। साढ़े सात बजे वह अकेला निकला और भगवान् जाने किस कारण 'लॉ कालेज' की ओर घूम गया और वहाँ से वह कालेज की इमारतों की ओर चल पड़ा। उधर इस समय आने-जाने वाला कोई नहीं होता। मैंने पग तेज किए और उसके साथ जा पहुँचा। उसने अपने पीछे घूमकर मेरी ओर देखना चाहा तो पूर्व इसके कि वह मुझे पहचाने, मैंने तानकर एक मुक्का उसकी कनपटी पर जड़ दिया। मुक्का लगते ही वह चक्कर खाकर सड़क पर गिर पड़ा। मैंने उसे उठने का समय नहीं दिया और लातों से उसकी मरम्मत करने लगा। भगवान् जाने कितने प्रहार किए होंगे। जब मैंने उसे हिलते-डुलते नहीं देखा तो चुपचाप मैं अपने कमरे को लौट रहा था कि मुझे डाक्टर इन्द्रजीत की याद आई। मैं सीधा उसके क्वार्टर पर पहुँचा। मेरे सौभाग्य से वह अकेला बैठा था। मैंने उसको एक ही घूँसा लगाया तो वह 'बाथ रूम' में घुस भीतर से द्वार बन्द कर जा बैठा। मैं कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा; फिर यह विचार कर कि कोई डाक्टर साहब से मिलने वाला न आ जाए, घर लौट जाने का विचार बनाए अपने कमरे पर जा पहुँचा। तुम वहाँ नहीं थे। इस कारण समय व्यर्थ न गँवाने के लिए सामान बाँधने लगा था।''

इस पर रघुवीर ने भी अपनी बात बता दी, ''मुझे शोक है कि मैंने वह पुण्य-लाभ नहीं किया, जो तुम कर आए हो।

''पर अब क्या होगा?'' रघुवीर ने आगे पूछ लिया।

''घर तो हम जा ही रहे हैं। वहाँ पिता जी तथा रानी जी से सम्मति करेंगे। मेरा मन कहता है कि वे हमें विश्वविद्यालय नहीं भेजेंगे। मुझे शोक है कि मैंने इन्द्रजीत की वह गत नहीं बनाई, जो मण्डल की बना सका था। यदि वह मर नहीं गया तो जीवन.भर याद रखेगा कि किसी ब्राह्मणकुमार से पाला पड़ा था।''

हथियापुर में दोनों पण्डित करुणानिधि के सामने विश्वविद्यालय में हुई दुर्घटना सुना कहने लगे, ''हम वहाँ से चले आए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि तुमने ठीक किया है। मैं उस शिक्षा को व्यर्थ समझता हूँ, जो मनुष्यों को पशु बनाने में संलग्न है।

"परन्तु रघुवीर! तुम्हारी माता जी क्या कहती हैं?"

"वह आपको बुला रही हैं।"

"तो चलो।"

रघुवीर और पण्डित करुणानिधि रानी सुमति के पास पहुँचे तो सुमति ने पण्डित जी को सम्बोधन कर कहा, 'रघुवीर विश्वविद्यालय से चला आया है।"

"जी, दोनों लड़कों ने वहाँ दुर्घटना की कहानी बताई है।"

"मैंने रघुवीर को मिथ्या प्रलोभन के छोड़ आने पर आशीर्वाद दिया है।"

"रानी बहन, आपने ठीक किया है। वह मृगतृष्णा है। सरलचित्त राही उस मरीचिका को देख उधर चल पड़ते हैं और जीवन की सब श्रेष्ठ भावनाओं को विनष्ट कर जीवन-भर रेतीले मैदान में भटकते रहते हैं।"

"तो आप भी ऐसा ही समझते हैं?"

"हाँ, बहन!"

"परन्तु इनकी शिक्षा आपको अपने हाथ में लेनी पड़ेगी।"

"मैं समझता हूँ कि जो कुछ मैं पढ़ा सकता हूँ, ये पूर्वजन्म के कर्मों से पढ़ चुके हैं। अब हम तीनों इकट्ठे बैठा करेंगे।"

रघुवीर और सुमित्रानन्दन को हथियापुर पहुँचे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि राधा वहाँ आ पहुँची, अकेली और बिना किसी प्रकार का सामान लिये हुए, केवल शरीर पर के वस्त्रों के साथ।

उसने पण्डित करुणानिधि के घर का द्वार खटखटाया तो गौरी ने द्वार खोला और वहाँ राधा को खड़े देख आश्यर्यचकित रह गई। राधा ने चरणस्पर्श किए और कहा, "माँ जी, मैं...."

वह आगे कह नहीं सकी। उसकी आँखें डबडबा आई थीं और गला रुँध गया।

गौरी उसकी कथा जानती थी। उसने राधा को गले लगा लिया और पीठ पर हाथ फेर प्यार देती हुई भीतर ले गई।

करुणानिधि को राधा के आने की सूचना मिली तो वह गाँव के डाकघर में गया और मिर्ज़ापुर तार दे आया।

●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (बहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना बदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरू की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३६६१३

स्वाधीनता के पथ पर (स्वाधीनता ...)
पथिक (स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान (स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात (स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या (स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप (1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे (1949-.... का काल

श्री गुरुदत्त की समाजिक रचनाएं

अमानत	प्रारब्ध और पुरुषार्थ
अनदेखे बन्धन	प्रेयसी
आवरण	बन्धन शादी का
अन्तरिक्ष में	भगवान भरोसे
आकाश पाताल	भाग्य का सम्बल
इबलीस	भूल
कला	भूत और भविष्य
घर की बात	ममता
आशा निराशा	मायाजाल
अपने पराए	मै न मानूँ
कामना	यह संसार
गुंठन	यात्रा का अंत
चंचरीक	लालसा
ज़िन्दगी	विकार
जीवन ज्वार	विलोम गति
न्यायाधिकरण	विकृत छाया
नए विचार नई बातें	स्वार्थ
नगर परिमोहन	घर एक रंग
नास्तिक	सभ्यता की ओर
पंकज	स्नेह का मूल्य
परिमल	संस्कार
परिवर्तन	सफलता के चरण
पड़ोसी	सर्वमंगला
प्रवंचना	साहित्यकार
प्रतिशोध	सुमति

Central Library
167965
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167965

www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चैम्बर्स,10/54 डी बी गुप्ता रोड,करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143

वर्ग संख्या..........GUR-M

आगत संख्या 167965

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएं

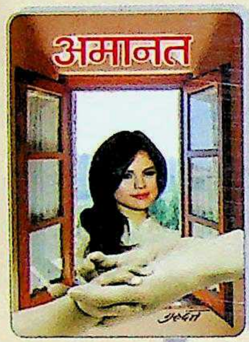

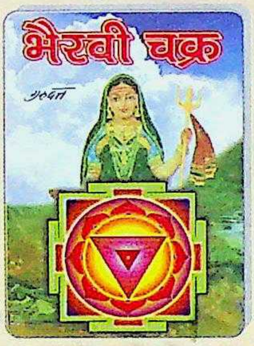

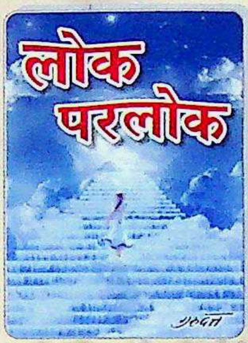

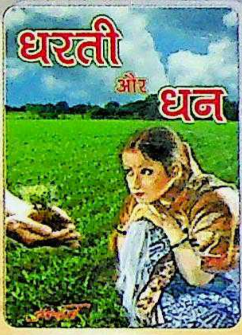

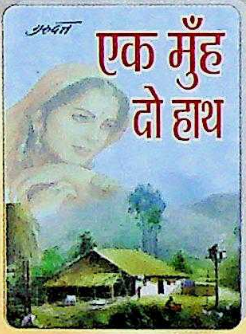

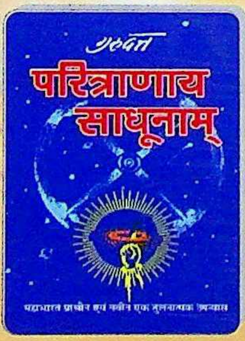

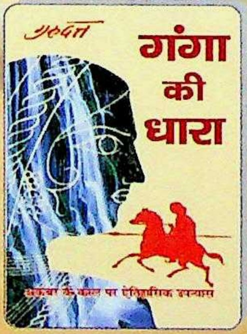

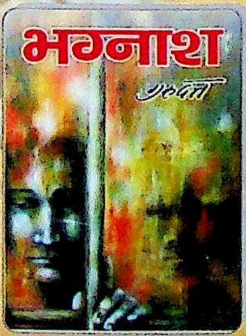

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
www.hindisahityasadan.com
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar